बुन्देलखण्ड क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत बी.टी.सी. प्रशिक्षित शिक्षकों तथा विशिष्ट बी.टी.सी. प्रशिक्षित शिक्षकों के कृत्य-संतोष, समायोजन एवं शिक्षण में रुचि का तुलनात्मक अध्ययन

A COMPARATIVE STUDY OF JOB-SATISFACTION, ADJUSTMENT AND INTEREST IN TEACHING OF B.T.C. AND SPECIAL B.T.C. TRAINED TEACHERS OF PRIMARY SCHOOLS IN BUNDELKHAND REGION

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय के शिक्षा संकाय में
पी-एच.डी. (शिक्षा शास्त्र) उपाधि हेतु प्रस्तुत
शोध प्रबन्ध
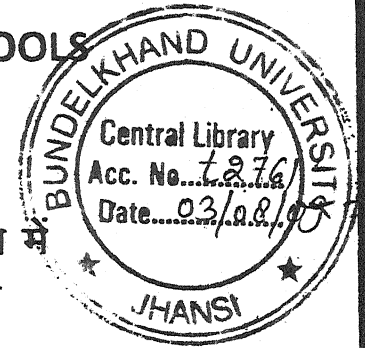
2008
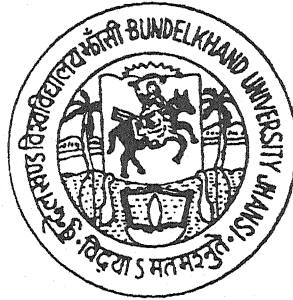
शोध निर्देशक
डॉ. ओमकार चौरसिया
विभागाध्यक्ष
शिक्षक-शिक्षा विभाग
पं. जवाहरलाल नेहरू स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, बाँदा

शोध कर्ता
रविकुमार चौरसिया
प्रवक्ता
शिक्षक-शिक्षा विभाग
सुकदेव सिंह लवकुश महाविद्यालय
बबेरू (बाँदा)

शोध केन्द्र
पं० जवाहरलाल नेहरू स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बाँदा (उ०प्र०)

डॉ. ओमकार चौरसिया
विभागाध्यक्ष
शिक्षक-शिक्षा विभाग
पं. जवाहरलाल नेहरू पी.जी. कॉलेज
बाँदा (उत्तर प्रदेश)

मोबाइल : 9415182169
सह-समन्वयक : इग्नू
कार्यक्रम प्रभारी : बी.एड. (इग्नू)
केन्द्र संख्या : 2767 पं. जे.एन. पी.जी. कॉलेज,
बाँदा (उत्तर प्रदेश)

प्रमाण–पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि **श्री रवि कुमार चौरसिया** ने **"बुन्देलखण्ड क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत बी०टी०सी० प्रशिक्षित शिक्षकों तथा विशिष्ट बी०टी०सी० प्रशिक्षित शिक्षकों के कृत्य–संतोष, समायोजन एवं शिक्षण में रुचि का तुलनात्मक अध्ययन"** विषय पर मेरे निर्देशन में बड़े परिश्रम, लगन व अध्यवसाय से 200 दिन से अधिक उपस्थित रहकर प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध पूर्ण किया है। इसकी विषय सामग्री मौलिक है और यह पूर्ण या आंशिक रूप से किसी अन्य परीक्षा के लिए प्रयोग नहीं की गई है।

यह शोध–प्रबन्ध बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी की पी–एच०डी० परीक्षा की नियमावली के सभी उपबन्धों की पूर्ति करता है। मैं संस्तुति करता हूँ कि यह इस योग्य है कि मूल्यांकन हेतु विश्वविद्यालय को प्रस्तुत किया जाय।

दिनाँक : 27.9.2008

(डॉ० ओमकार चौरसिया)
विभागाध्यक्ष
शिक्षक–शिक्षा विभाग
पं०जे०एन० पोस्टग्रेजुएट कॉलेज
बाँदा, (उ०प्र०)
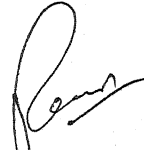
घोषणा–पत्र

मैं **रवि कुमार चौरसिया** घोषित करता हूँ कि **"बुन्देलखण्ड क्षेत्र के प्राथमिक** विद्यालयों में कार्यरत बी॰ टी॰ सी॰ प्रशिक्षित शिक्षकों तथा विशिष्ट बी॰ टी॰ सी॰ प्रशिक्षित शिक्षकों के कार्य–संतोष, समायोजन एवं शिक्षण में रुचि का तुलनात्मक अध्ययन" विषय पर प्रस्तुत शोध प्रबन्ध **डॉ0 ओमकार चौरसिया**, विभागाध्यक्ष शिक्षक–शिक्षा विभाग, पं0जे0एन0पी0जी0 कालेज, बाँदा के कुशल निर्देशन में मैंने 200 दिन से अधिक उपस्थित रहकर बड़ी ही मेहनत एवं लगन से पूर्ण किया है।

यह शोध–प्रबन्ध मेरा मौलिक कार्य है। इसकी विषय सामग्री पूर्ण या आंशिक रूप से किसी अन्य परीक्षा के लिये प्रयोग नहीं की गई है।

दिनाँक : 27/9/2008

(रवि कुमार चौरसिया)
प्रवक्ता
शिक्षक–शिक्षा विभाग
सुखदेव सिंह लवकुश महाविद्यालय, बबेरू
(बाँदा) उ0प्र0

आभार-पत्र

किसी भी राष्ट्र की प्रगति एवं उसके नागरिकों के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान होता है। इसीलिए सभी राष्ट्र अपने देश नागरिकों के लिए समुचित शिक्षा की व्यवस्था करने का प्रयास करते हैं। अध्यात्म एवं संस्कृति प्रधान देश भारत में तो शिक्षा और भी अधिक महत्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि भारतीय शिक्षा में अध्यात्म एवं भौतिकता का अनोखा समन्वय किया गया है। श्रेष्ठ शिक्षा व्यवस्था हेतु श्रेष्ठ शिक्षकों का होना अति आवश्यक है। शिक्षकों की कार्य कुशलता, कार्य के प्रति संतुष्टि, समायोजन, शिक्षण में रूचि होने पर ही आशा की जा सकती है कि हमारी शिक्षा प्रगति के मार्ग पर अग्रसर है।

उपर्युक्त विषय पर आधारित प्रस्तुत शोधकार्य पी–एच0डी0 उपाधि हेतु किया गया है, समयाभाव तथा साधनों की सीमितता के कारण इस शोधकार्य में अनेक न्यूनताओं का रह जाना स्वाभाविक है। उन न्यूनताओं के प्रति शोधकर्ता विनम्र भाव से क्षमा प्रार्थी है।

मैं इस शोधकार्य के प्रेरणा स्रोत, शोध निर्देशक परमश्रद्धेय प्रातःकाल स्मरणीय, सरस्वती पुत्र **डॉ0 ओमकार चौरसिया जी** का विशेष रूप से आभारी हूँ, जिन्होंने अपने व्यस्ततम् जीवन से समय निकाल कर मेरे इस शोध कार्य को पूर्ण करने में मेरा कुशल मार्गदर्शन किया तथा समय–समय पर शोध कार्य में आयीं जटिलताओं का निवारण कर मेरा मनोबल बढ़ाने में सहायता की। इन्हीं के कुशल संचालन एवं मार्गदर्शन पर यह शोध कार्य सम्पन्न कर सका। मैं इन्हें हृदय से आभार ज्ञापित करता हूँ।

मैं अपने गुरु की कृपा दृष्टि पड़ने से पूर्व अंधेरे में पड़े निष्प्राण पत्थर के समान था। गुरु की कृपा दृष्टि के ओज से मुझमें सजीवता का संचार हुआ, तत्पश्चात् गुरु के चरण कमलों के स्पर्श मात्र से ही ज्ञान के अथाह सागर की बूँदों से अभिसिंचित होने पर मैं ज्ञान और शिक्षा के क्षेत्र में कुछ करने के लिए प्रेरित हुआ। गुरु के अनवरत् आशीर्वाद एवं सानिध्य तथा निर्देशन में मैं अपने शोध कार्य को पूर्ण कर जीवन के भौतिक तथा आध्यात्मिक लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु अग्रसर हूँ। ऐसे गुरु के प्रति ईश्वर से मेरी कामना है कि जन्म जन्मान्तर तक मुझे इनके श्री चरणों में स्थान प्राप्त होता रहे।

मैं पं0 जवाहर लाल नेहरू पोस्ट ग्रेजुएट महाविद्यालय, बाँदा के शिक्षक–शिक्षा विभाग के समस्त गुरुजनों एवं अतर्रा पोस्ट ग्रेजुएट महाविद्यालय के शिक्षक–शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष गुरू शिरोमणि डॉ0 डी0एस0 श्रीवास्तव जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ, जिनके प्रोत्साहन एवं सक्रिय सहयोग से यह शोध कार्य पूर्ण किया जा सका है।

मैं उन सभी महानुभावों, सहशोधार्थियों, मित्रों, पारिवारिक सदस्यों का भी हृदय से आभारी हूँ जिनका शोध कार्य के दौरान समय–समय पर सक्रिय सहयोग मिलता रहा है।

मैं शोध कार्य में आँकड़ों के संकलन के लिए प्रयुक्त सभी सरकारी, गैर सरकारी संस्थाओं के प्रशासनिक अधिकारियों एवं कर्मचारियों के प्रति कृतज्ञता सहित आभार व्यक्त करता हूँ तथा बुन्देलखण्ड क्षेत्र में परिषदीय विद्यालयो में कार्यरत शिक्षक–शिक्षिकाओं का हृदय से आभारी हूँ कि आँकड़े एकत्र करने हेतु उन्होंने अपना मत दिया, जिनके सहयोग के अभाव में यह शोध कार्य पूर्ण नहीं हो सकता था।
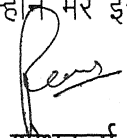
मैं शोध कार्य में प्रयुक्त आँकड़ों, निर्देशों, तथ्यों को उपलब्ध कराने वाले लेखकों, प्रकाशकों का भी आभार व्यक्त करता हूँ, जिनके सहयोग से शोध कार्य सफल हुआ है।

मैं अपने पिता तुल्य अग्रज श्री घनश्याम दास चौरसिया एवं श्री राजकुमार चौरसिया तथा अनुज श्री मोहन लाल चौरसिया जी का आभारी हूँ जिन्होंने शोध कार्य हेतु सभी प्रकार की सुविधायें प्रदान कर सदैव मेरा मनोबल बढ़ाया।

यह आभार–पत्र तब तक पूर्ण नहीं हो सकता, जब तक कि मैं अपने देवतुल्य पिता स्वर्गीय श्री बिन्दा प्रसाद चौरसिया तथा माता श्रीमती पतोलन देवी जी का आभार व्यक्त न करूँ, जिनका वरदहस्त मुझे सदैव प्राप्त है।

अन्त में मैं अमेय प्रिंटर्स के आपरेटर श्री जयन्त गोरे का आभार व्यक्त करना चाहूँगा, जिन्होंने मेरे शोध कार्य की टाइपिंग उचित समय से पूर्ण लगन और मेहनत से पूर्ण की है।

मैं अन्त में अपनी धर्मपत्नी श्रीमती शिखा चौरसिया द्वारा प्रदान किये गये अतुलनीय सहयोग के प्रति उनका हृदय से धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ जिन्होंने मेरे इस कार्य को सम्पादित करने में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से सहायता की है।

शोधकर्ता

रवि कुमार चौरसिया

(एम0ए0, एम0एड0)

प्रवक्ता, शिक्षक–शिक्षा विभाग

सुकदेव सिंह लवकुश महाविद्यालय, बबेरू (बाँदा)

E-mail id chaurasia_ravikumar@yahoo.co.in

अनुक्रमणिका

अध्याय–प्रथम

(समस्या की पृष्ठभूमि तथा महत्व)

पृष्ठ संख्या (1 – 52)

अध्याय–द्वितीय

अध्याय–तृतीय

(बुन्देलखण्ड क्षेत्र की पृष्ठभूमि) (114 – 153)

अध्याय–चतुर्थ

(शोध–विधितन्त्र) (153 – 180)

अध्याय-पंचम

अध्याय-षष्टम्

सारणी-सूची

ग्राफ-सूची

अध्याय–प्रथम
(समस्या की पृष्ठभूमि तथा महत्व)

1.1. प्रस्तावना
1.2. समस्या और उसकी पृष्ठभूमि
1.3. समस्या का उदय
1.4. प्राथमिक शिक्षा का महत्व
1.5. प्राथमिक शिक्षा की वर्तमान स्थिति
1.6. शिक्षक का महत्व
1.7. आदर्श शिक्षक के गुण
1.8. शिक्षक–प्रशिक्षण
1.9. कृत्य–संतोष तथा उसे प्रभावित करने वाले कारक
1.10. समायोजन का अर्थ तथा इसकी व्यावहारिक जीवन के लिए उपयोगिता
1.11. शिक्षण में रुचि का आशय एवं उसका व्यक्ति के कार्य पर प्रभाव
1.12. समस्या कथन
1.13. शोध उद्देश्य
1.14. शोध की परिकल्पना
1.15. शोध प्रबन्ध की योजना

1.1. प्रस्तावना :–

आदि काल से ही 'शिक्षा' सभ्यता का आधार रही है। शिक्षा के बिना व्यक्ति का विकास समुचित दिशा में नहीं हो सकता है। भारत वर्ष में शिक्षा की महत्ता आदि काल से ही रही है। **डॉ0 अलतेकर**[1] के अनुसार –

"वैदिककाल से ही भारत में शिक्षा का मूल तात्पर्य यह रहा है कि शिक्षा प्रकाश का वह स्रोत है जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में सच्चे मार्ग का प्रदर्शन करता है।"

आज के वैज्ञानिक युग में मानव ने जो उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं उन्हीं से वह अपने आपको गौरवान्वित महसूस कर रहा है और उन्हीं से उसे अपने अस्तित्व का खतरा भी स्पष्ट दिखाई दे रहा है। आज एक ओर जहाँ मानव चाँद पर बस्तियाँ बनाने की योजना बना रहा है। वहीं दूसरी ओर अपने विनाश के सारे समान इकठ्ठा किये हुए है। ऐसी परिस्थितियों में शिक्षा की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि शिक्षा ही मनुष्य को अपने अस्तित्व को बनाये रखने का सही रास्ता दिखा सकती है।

शिक्षा की प्रक्रिया में जहाँ प्रकृतिवादियों ने बालक को महत्वपूर्ण माना है वहीं आदर्शवादियों ने शिक्षक को महत्वपूर्ण माना है। वास्तव में शिक्षा की प्रक्रिया के तीन अंग शिक्षक, शिक्षार्थी और पाठ्यक्रम तीनों ही महत्वपूर्ण हैं। परन्तु गहराई से विचार किया जाए तो शिक्षा का प्रमुख आधार शिक्षक ही है, क्योंकि पाठ्यक्रम या पुस्तक स्वयं में सक्रिय नहीं होते तथा बालक अविकसित अथवा अल्पविकसित दशा में होता है परन्तु शिक्षक पूर्ण चैतन्य होता है।

शिक्षक से समाज की अनेक अपेक्षाएं हैं। आखिर हों भी क्यों न ? अभिभावक अपने बच्चों को सुखद भविष्य की कल्पना को साकार करने के लिए ही तो स्कूल भेजते हैं। विद्यालयीय जीवन और शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया के केन्द्र में शिक्षक और छात्र होते हैं। इनके परस्पर सम्बन्ध की परिणति बच्चों के व्यक्तित्व विकास के रूप में होती है। यह परस्पर सम्बन्ध तभी पुख्ता होंगे जब शिक्षक बच्चों की जरूरत के अनुसार अपनी कार्य योजना बनायें। माँ के बाद शिक्षक ही है जो बच्चों को खेल–खिलौंने, कविता, कहानियों के संसार में ले जाकर भाषा सीखने के अवसर प्रदान करता है, लेखन और वाचन के माध्यम से अभिव्यक्ति का अवसर देता है, उनकी प्रतिभा एवं सृजनात्मकता की पहचान कर उन्हें नई दिशा देता है, बच्चों की शिक्षा में रुचि बनायें रखने के लिए नये–नये तरीके ईजाद कर इन्हें कक्षा में प्रयोग करता है तथा बच्चों को व्यावहारिक ज्ञान देने के साथ–साथ सामाजिक, सांस्कृतिक एवं पर्यावरणीय सरोकारों से भी परचित कराता है। शिक्षक का दायित्व केवल विषय ज्ञान देना ही नहीं अपितु बच्चों में जीवन कौशलों का विकास करना भी है ताकि वे विषम परिस्थितियों का धैर्य के साथ सामना कर सकें। शिक्षक बच्चों की पढ़ने में रुचि, उनकी शैक्षिक–उपलब्धि तथा उनकी भावनात्मक

---

1. डॉ0 अनन्त सदाशिव अलतेकर, 'प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धति', वाराणसी; मनोहर प्रकाशन, 1979–80, पृष्ठ–3

सुरक्षा को लेकर समाज के प्रति जवाबदेह भी है। शिक्षक अगर इन सब बातों को ध्यान में रखे तो सुविधाओं की कमी या प्रचुरता उसके संतोष को प्रभावित नहीं कर सकेगी।

वर्तमान समय में मानव भौतिक सुख–सुविधाओं से खुशी का अनुभव करता है, साथ ही सामाजिक उत्थान के लिए आर्थिक प्रगति को महत्वपूर्ण समझता है। आर्थिक प्रगति के लिए कुशल श्रमिकों की आवश्यकता होती है, शारीरिक श्रम की जगह मानसिक श्रम अधिक आय सृजित कर सकता है। तीव्र गति से बढ़ती हुई जनसंख्या के पालन–पोषण हेतु प्राकृतिक संसाधनों का कुशलता पूर्वक सदुपयोग के लिए भी शिक्षित एवं प्रशिक्षित जनसमूह की आवश्यकता है। विकसित देशों के साथ–साथ जापान, ताईवान, सिंगापुर और अब विश्वव्यापार में सबसे ज्यादा सफल चीन जैसी अर्थव्यवस्थाएं शिक्षा के मामले में काफी सफल रहीं हैं। दुर्भाग्य से स्वतन्त्रता के बाद भी भारत में शिक्षा की स्थिति दयनीय दशा में रही, अभी पिछले दशक से सरकार ने इस ओर विशेष ध्यान दिया है, जिसके परिणामस्वरूप शिक्षा में संख्यात्मक वृद्धि तो हुई है परन्तु गुणात्मक वृद्धि अभी भी दूर है।

अतः कहा जा सकता है कि **राष्ट्र के सर्वागींण विकास का एक मात्र विकल्प शिक्षा ही है।** शिक्षा के द्वारा ही राष्ट्र को विकसित, क्रियाशील, सर्वसुविधा–सम्पन्न और समृद्धिशाली बनाया जा सकता है। शिक्षा का प्रसार जन–जन तक किया जाय। कोई भी व्यक्ति, बालक या बालिका निरक्षर न रहे, ऐसी शिक्षा की व्यवस्था की जानी चाहिये। ऐसी शिक्षा–व्यवस्था के लिए उन शिक्षकों की आवश्यकता है जिनमें शिक्षण–योग्यता के साथ–साथ कृत्य–संतोष, व्यवसाय की कार्यदशाओं से समायोजन तथा कार्य एवं जिम्मेदारी के निर्वाहन में रुचि स्थापित करने की क्षमता हो।

1.2. समस्या और उसकी पृष्ठभूमि :–

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और संसार के सभी प्राणियों में श्रेष्ठ समझा जाता है। वैसे तो सभी प्राणियों में कुछ न कुछ समझने की प्रवृत्ति होती है, सभी प्राणी एक दूसरे के मनोभाव, प्रेम, क्रोध आदि को समझते हैं, किन्तु सोचने, समझने, विचारने, निर्णय लेने आदि जैसीं बौद्धिक प्रवृत्तियों का सर्वाधिक गुण मानव में ही पाया जाता है और यही उसे सभी प्राणियों में श्रेष्ठ बनाता है। खाना, पीना, सोना, चलना, बोलना, प्रजनन आदि जैसी जैविक क्रियायें तो सभी प्राणियों में देखने को मिलती हैं, किन्तु मानव अपनी सामाजिकता के कारण सभी प्राणियों में श्रेष्ठ है।

आदि काल में मनुष्य खानाबदोश व पशुवत जीवन व्यतीत करता था। पेड़ों के पत्तों व छालों के वस्त्रों से शरीर ढ़कना, कन्द–मूल–फल व जानवरों का कच्चा माँस उनका भोजन था, किन्तु पुरापाषण काल में अग्नि के आविष्कार व नवपाषाण काल में पहिये के अविष्कार ने मानव सभ्यता के परिवर्तन में एक अभूतपूर्व क्रान्ति ला दी और यहीं से चल पड़ा मानव सभ्यता के विकास का एक क्रान्तिकारी सिलसिला। तत्पश्चात् मनुष्य खेती करना, पशुपालन एवं खुले पेड़–पौधों के नीचे तथा

गुफाओं में रहने के बजाय घास–फूस की झोपडियाँ एवं कच्ची मिट्टी के घर बनाकर उनमें रहने लगा।

मानव सभ्यता के विकास के साथ–साथ मानव पहले धूल, रेत, मिट्टी में अपनी उंगली से अनेक प्रकार के चिह्न व संकेत लिखने का प्रयास करता था। धीरे–धीरे पक्षियों के पंखों की कलम से वृक्षों के पत्तों में लिखना आरम्भ किया। स्याही व कागज का आविष्कार होने के पश्चात् लिपि का आविष्कार हुआ और धीरे–धीरे हाथ से लिपियों में लिखना आरम्भ हुआ।

वर्षों पहले अनेक प्रकार की कहानी, साहित्य, उपदेश, ज्ञान–विज्ञान के नुस्खों आदि को साहित्य के रुप में लिख कर आज की तरह वर्षों तक सुरक्षित रखने की व्यवस्था नहीं थी। उस समय जुबानी ही एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को पढ़ाया–सिखाया जाता था और दूसरे उसको याद रखते थे, जिसका कुछ भाग भूल जाते थे, किन्तु वर्तमान समय में छापे खाने और प्रिंटिग मशीन के अविष्कार से साहित्य को वर्षों सुरक्षित रखा जा सकता है, जो दूसरे लोगों व नई पीढ़ी के काम आ सकता है।

मानव के जीवन में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षा विहीन व्यक्ति जीवन के परम लक्ष्य की प्राप्ति में सदैव असफल रहता है। जीवन के सर्वांगींण विकास के लिए शिक्षा ही मात्र ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा मनुष्य अपनी जन्मजात शक्तियों को विकसित करके अपने व्यवहार तथा विचारों में निरन्तर परिवर्तन, परिमार्जन एवं परिवर्द्धन कर सकता है। शिक्षा के द्वारा ही वह अपनी सभ्यता एवं संस्कार को समझकर उसे सुव्यवस्थित रखने एवं विकसित करने में सामर्थ्यवान हो सकता है। जीवन के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक आदि सभी क्षेत्रों में शिक्षा अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षा ही जीवन में सफलता की कुंजी है। इसीलिये सभी लोग राष्ट्र के विकास के लिए शिक्षा को अनिवार्य मानते रहे हैं। शिक्षा के द्वारा ही मानसिक शक्ति का विकास हो सकता है। शिक्षा के आधार पर ही अनुसंधान और विकास को बल मिलता है। शिक्षा वर्तमान तथा भविष्य निर्माण का अनुपम साधन है। शिक्षा मानव जीवन का एक सुसंस्कृत एवं महत्वपूर्ण पक्ष है। इसके द्वारा ही मानव अपना आर्थिक एवं सामाजिक विकास करता है एवं जीवन में पूर्णता प्राप्त करता है। इसी से वह अपने आचार–विचार तथा रहन–सहन में परिवर्तन एवं परिमार्जन करता है। शिक्षा किसी न किसी रुप में आदि काल से ही दी जाती रही है। सर्वप्रथम शिक्षा बालक को माता–पिता द्वारा ही दी जाती थी और वे ही बालक को जीवन की विभिन्न परिस्थितियों से अवगत कराते थे, परन्तु धीरे–धीरे समाज में ज्ञानार्जन की भावना बलवती होती गई और अधिकाधिक शिक्षा की आवश्यकता महसूस की जाने लगी। समाज का स्थान गौण माना जाने लगा और इस दृष्टिकोंण को अपनाया गया कि शिक्षा विशेष व्यक्तियों द्वारा विशेष स्थानों पर ही प्रदान की जाय इसी के फलस्वरूप शिक्षा संस्थाओं का विकास हुआ।

शिक्षा प्रक्रिया में शिक्षक का स्थान सबसे अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। भारतवर्ष में शिक्षक के महत्व को प्राचीनकाल से ही स्वीकारा गया है। आज भी इसकी महत्ता पर कोई संदेह नहीं करता।

शिक्षक समाज का आईना है। जिस समाज में शिक्षक का सम्मान जितना अधिक होता है, वह समाज उतना ही अधिक सभ्य एवं विकसित माना जाता है। हमारे देश में शिक्षक को सम्मान देने की प्राचीन काल से ही परम्परा रही है। यहाँ पर शिक्षक को ईश्वर से भी ऊँचा माना गया है। इतिहास पर दृष्टि डालने पर प्रतीत होता है कि हमारे देश के शिक्षकों की ख्याति सम्पूर्ण विश्व में फैली हुई थी।

शिक्षक, शिक्षा और समाज को जोड़नें वाली महत्वपूर्ण कड़ी है। अन्य लोग जहाँ वस्तुयें और पदार्थ बनाते हैं, वहीं शिक्षक एक अविकसित और अनगढ़ चेतना को अभीष्ट दिशा में मोड़कर उसे विकसित, सुदृढ़ एवं सुघड़ इंसान के रुप में विकसित करता है, इसलिए शिक्षक का कार्य संसार के सर्वाधिक जटिल कार्यों में से एक है।

शिक्षक के महत्व पर प्रकाश डालते हुए **हैनरी वैन डाइक**[2] ने कहा है –

"शिक्षक वह है जो सुप्त आत्माओं की तन्द्रा भंग करता है (सोने से जगाता है), अकर्मण्यों व आलसियों को चेताता है, उत्सुकों को और अधिक उत्साहित करता है, और जो चल रहे है, उनकी गति को तीव्रता प्रदान करता है।"

शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षकों का महत्व प्राथमिक स्तर की शिक्षा से लेकर महाविद्यालय स्तर तक है। प्राथमिक स्तर पर ही शिक्षक को बालक का रुप निर्धारित करना पड़ता है। एक कुम्हार की तरह चाक पर चढ़ी मिट्टी को उपयोगी स्वरुप प्रदान करना पड़ता है।

कहा भी गया है –

"गुरु कुम्हार शिष्य कुम्भ है, गढ़–गढ़ काढ़ै खोट।
भीतर हाथ सहाय दे, बाहर मारै चोट।।"[3]

अपने आस–पास के वातावरण, आचार–विचार, रहन–सहन को एक बालक किस प्रकार ग्रहण करता है, यह बहुत कुछ शिक्षक पर निर्भर करता है। साधारणतः एक शिक्षक में बालक को जानने की शक्ति, उसके साथ कार्य करने की सामर्थ्य, शिक्षण–योग्यता व सहकारिता आदि गुणों का होना अति आवश्यक है, अर्थात शिक्षण कार्य वह व्यक्ति ही कर सकता है, जिसमें कुछ विशिष्ट शारीरिक, बौद्धिक, सामाजिक, नैतिक तथा सांवेगिक गुण मौजूद हों। ऐसा नहीं है कि शिक्षकों के यह गुण या आचरण केवल प्राथमिक अथवा माध्यमिक स्तर की शिक्षा के लिए ही उपयोगी हों, शिक्षकों के इन गुणों की आवश्यकता शिक्षा के प्रत्येक स्तर में महसूस होती है। प्राथमिक स्तर पर ठीक ढंग से तैयार किया गया बालक एक श्रेष्ठ शिक्षक के निर्देशन में लगातार माध्यमिक और उच्च शिक्षा के क्षेत्र में पारंगत

---

2. उद्धृत डॉ0 अमरनाथ दत्त गिरि, 'भारतीय आधुनिक शिक्षा' (त्रैमासिक पत्रिका), नई दिल्ली; राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण प्रशिक्षण परिषद्, जनवरी 1996, पृष्ठ–2
3. अभिलाष दास, 'कबीर अमृत वाणी', इलाहाबाद; कबीर पारख संस्थान, 2001, पृष्ठ–10 एवं 11

होकर स्वयं को एक जिम्मेदार नागरिक के रुप में विकसित कर समाज के विकास में योगदान करता है। वैसे भी मनुष्य में सीखने की प्रवृत्ति हमेशा से विद्यमान रही है।

प्रकृति के गूढ़ रहस्यों से परचित होने के लिए मनुष्य सदा से ही प्रयत्नशील रहा है। इन जिज्ञासाओं को शान्त करने के लिए मानव के मार्गदर्शक की आवश्यकता महसूस की गई तथा व्यक्ति को उसके भटकाव से अपने एकाग्र मार्ग तक लाने वाले की आवश्यकता का अनुभव किया गया और शायद यहीं पर आकर संसार का पथ–प्रदर्शन करने वाले और सर्वोत्कृष्ट माने जाने वाले शिक्षक–वर्ग की उत्पत्ति हुई होगी।

गुरु की महिमा प्राचीन काल से ही लोगों के संज्ञान में है। बुद्ध, ईसा, सुकरात आदि किसी न किसी रुप में मानव जाति के शिक्षक ही रहे हैं। शिक्षक का अर्थ किसी जाति, धर्म या वर्ग विशेष से न होकर सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याणकारी व्यक्ति के रुप में लिया जाता है। प्राचीन काल में इसी पवित्र सोच के कारण शिक्षा को व्यवसाय न मानकर एक आध्यात्मिक कार्य माना जाता था। बालक घर से दूर गुरुकुल में रहकर ज्ञानार्जन करता था। माता–पिता भी बालक को इतनी दूर गुरु के संरक्षण में सौंप देते थे। तब गुरु ही बालक का मानस–पिता माना जाता था। गुरु की सन्तुष्टि बालक की उन्नति में ही होती थी। प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था में जब कई वर्षों की शिक्षा के उपरान्त गुरु की गुरु दक्षिणा का समय आता था तब अभावग्रस्त शिष्य सिर्फ पुष्प अर्पित कर गुरु के चरणों में अपनी सर्वोच्च श्रृद्धा प्रकट करते थे तो गुरु सहर्ष स्वीकार किया करते थे।

लेकिन जैसे–जैसे युग परिवर्तन होना शुरु हुआ और सामाजिक परिवेश बदला लोगों की आदतों, मनोवृत्तियों में परिवर्तन होना शुरु हुआ। गुरुकुल विद्यालयों में बदल गये। शिक्षा प्रदान करके मात्र अध्यापन द्वारा सन्तुष्ट होने वाला शिक्षक अब शिक्षा को अध्यात्मिक कार्य या सेवा कार्य न समझ कर जीवकोपार्जन के साधन के रुप में स्वीकार्य कर चुका है। अब शिक्षक बालक को उसकी रुचियों, मनोवृत्तियों के अनुसार नहीं बल्कि शिक्षा क्षेत्र में तय मानदण्डों के अनुसार शिक्षा प्रदान कर रहा है। पाठ्य विषयों को रटवाकर बालक को मात्र उत्तीर्ण करवा देना ही अब प्रमुख उद्देश्य प्रतीत हो रहा है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली भी पढ़ा–लिखा बाबू–वर्ग उत्पन्न करना ज्यादा श्रेयस्कर समझती है। अधिकांश छात्र भी सिर्फ परीक्षा में पास होने के ध्येय को सामने रखकर शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं चलते है। वर्तमान शिक्षा व्यवसाय तथा राष्ट्रीय चरित्र में आये ह्रास की समस्याओं पर विचार करते हुए प्राचीन एवं अर्वाचीन शिक्षा व्यवस्था को प्रसिद्ध कर्मयोगी एवं साहित्य–मनीषी **श्री बाबूलाल शर्मा**[4] ने बड़े ही सुन्दर शब्दों में प्रस्तुत किया है :–

"In Ancient India We were moulding the behaviour of students in the Ashrams while to day we are simply pouring the knowledge in the classes".

---

4. श्री बाबूलाल शर्मा, परिवर्तन, सतयुग संदेश यात्रा समिति, बाँदा, फरवरी 2003

परन्तु स्पष्टतः शिक्षा के मूलभूत उद्‌देश्यों में कोई परिवर्तन नहीं आया है। आज भी शिक्षा का उद्‌देश्य बालकों का सर्वांगींण विकास करना व उन्हें राष्ट्र उपयोगी तथा सम्मानित नागरिक बनाना है। इसीलिये शिक्षक को शिक्षा प्रक्रिया में अधिक स्वतन्त्रता दी जानी चाहिये, उसे अपनी सूझ–बूझ एवं मौलिकता के आधार पर शिक्षण–विधियों एवं पाठ्‌यक्रम में सुधार लाने का मौका दिया जाना चाहिए ।

1.3. समस्या का उदय :–

समाज में माता को प्रथम शिक्षक का दर्जा प्राप्त है, क्योंकि बालक सर्वप्रथम अपनी माँ से ही शिक्षा ग्रहण करता है। ज्यों–ज्यों उसका विकास होता है, त्यों–त्यों उसकी शिक्षा का प्रबन्ध अलग–अलग व्यक्तियों द्वारा किया जाता है। शिक्षा के मुख्यतः तीन स्तर माने जाते हैं– प्राथमिक–स्तर, माध्यमिक–स्तर, और उच्च–स्तर। इन तीनों स्तरों का अपना विशेष महत्व है और तीनों परस्पर अवलम्बित है। **जहाँ प्राथमिक–स्तर शिक्षा का मूल है, वहीं माध्यमिक–स्तर तना एवं उच्च–स्तर उसका विकासात्मक पक्ष है।**

अंग्रेजी कहावत है :–

Well being is helf done.

यदि किसी काम की शुरुआत अच्छी हो, तो समझिये वह आधा हो गया और फिर शेष आधा सरल ढंग से हो जायेगा। शिक्षा के सन्दर्भ में भी इसे अक्षरशः सत्य माना जा सकता है। उपरोक्त का आशय यह है कि अगर बालक की प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था व्यवस्थित तरीके से पूर्ण हो जाती है, तो इस प्राथमिक शिक्षा के आधार पर माध्यमिक, उच्च एवं अन्य तकनीकी तथा व्यावसायिक शिक्षा रूपी इमारतें सरलता से विकसित की जा सकतीं हैं।

यह निर्विवाद सत्य है कि अच्छी शिक्षा के लिए अच्छे शिक्षक होने चाहिये, क्योंकि वे ही समस्त शिक्षा की धुरी हैं। भारत की सर्वाधिक जनसंख्या उत्तर प्रदेश में निवास करती है। स्वाभाविक ही है कि उत्तर प्रदेश में प्राथमिक विद्यालयों में छात्रों की संख्या भी अधिक है, जिनके शिक्षण हेतु निर्धारित छात्र–शिक्षक अनुपात 1:40 के अनुरूप शिक्षक नहीं हैं, वहीं निकट के वर्षों में एक–तिहाई शिक्षक सेवानिवृत्त हो रहे हैं, जबकि उत्तर प्रदेश में प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों को प्रशिक्षित करने के लिए बी0टी0सी0 की ट्रेनिंग विभिन्न जिलों में स्थापित जिला शिक्षा प्रशिक्षण संस्थान (डायट) में दी जाती है, परन्तु प्राथमिक शिक्षा में प्रशिक्षित शिक्षकों की माँग के अनुरूप पूर्ति बी0टी0सी0 की ट्रेनिंग द्वारा विगत वर्षों में नहीं की जा सकी। दूसरी ओर माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षण के लिए प्रशिक्षण प्राप्त बी0एड0 डिग्रीधारी बेरोजगार, रोजगार के लिए इधर–उधर भटक रहे थे तथा आये दिन धरना और प्रदर्शन करते थे, अतः इस समस्या के समाधान के लिए वर्षों से चले आ रहे आन्दोलन तथा समय की माँग को ध्यान में रखकर उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षण हेतु बी0एड0/बी0पी0एड0/एल0टी0 प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके प्रशिक्षणार्थियों को प्राथमिक विद्यालयों में

शिक्षक के रुप में नियुक्ति प्रदान करने हेतु विशिष्ट बी0टी0सी0 योजना चलायी गयी, जिसमें प्रशिक्षण प्राप्त बी0एड0/बी0पी0एड0/एल0टी0 डिग्री धारी अभ्यर्थियों की हाईस्कूल, इण्टरमीडिएट, स्नातक एवं प्रशिक्षण की 'शैक्षिक–उपलब्धि' को आधार मानकर बनाई गई मैरिट–सूची के आधार पर अभ्यर्थियों को प्राथमिक शिक्षा में अध्यापन हेतु 6 माह विशिष्ट बी0टी0सी0 का प्रशिक्षण प्रदान कर, इन्हें प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षक पद पर समायोजित (नियुक्त) किया गया है।

यह कहा जाता है कि कोई व्यक्ति अपने कार्य में तब तक सफल नहीं हो सकता जब तक वह उस कार्य को अपने पूर्ण मनोयोग से न करे और व्यक्ति उसी कार्य को पूर्ण मनोयोग से करता है, जो उसकी रुचि और क्षमता के अनुकूल होता है। व्यवहार में यह देखा गया है कि यदि किसी व्यक्ति को उसकी योग्यता और क्षमता के अनुरुप कार्य करने का अवसर नहीं मिलता है, तो वह उस कार्य को ठीक ढंग से नहीं करता है और न ही वह ठीक ढंग से अपने आप को उस कार्य में समायोजित कर पाता है। इससे दो तरह का नुकसान होता है, पहला– उसे जो कार्य दिया जाता है, वह सफल ढंग से पूरा नहीं होता और दूसरा– वह व्यक्ति मन ही मन निराशा से ग्रसित हो जाता है, जिससे उसका स्वयं का संतुलित विकास नहीं हो पाता।

शोधकर्ता ने जब यह देखा कि एक ऐसा व्यक्ति, जिसने माध्यमिक स्तर पर शिक्षण करने हेतु प्रशिक्षण एवं शिक्षा प्राप्त की है, समय के साथ समझौता कर विशिष्ट बी0टी0सी0 का प्रशिक्षण प्राप्त करके प्राथमिक स्तर पर शिक्षण कर रहा है, तो उसके मन में यह जानने की तीव्र जिज्ञासा हुई कि क्या ऐसा व्यक्ति, उस व्यक्ति की तरह, जिसने प्राथमिक शिक्षक बनने के लिए ही प्रशिक्षण प्राप्त किया है, अपने कार्य से सन्तुष्ट होगा ? क्या वह उसी व्यक्ति की तरह अपना कार्य रुचिपूर्वक करेगा ? क्या वह उसी व्यक्ति की तरह अपने आपको समायोजित कर पायेगा ? इन्हीं प्रश्नों के उत्तर जानने की जिज्ञासा शोधकर्ता के मन में है।

1.4. प्राथमिक शिक्षा का महत्व :–

प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री **कार्टर वी0 गुड**[5] ने प्राथमिक शिक्षा को परिभाषित करते हुए लिखा है कि– **"यह प्रारम्भिक विद्यालय का वह भाग है जिसमें मुख्यतया आधारभूत कौशलों का शिक्षण दिया जाता है और उन सामाजिक अभिवृत्तियों के विकास पर बल दिया जाता है, जो जनतांत्रिक जीवन के लिए आवश्यक हैं।"** यहाँ पर आधारभूत कौशलों से तात्पर्य पढ़ना, लिखना और सामान्य गणितीय योग्यता (रीडिंग, राइटिंग, अर्थमेटिक) से हैं, जिन्हें संक्षेप में 'थ्री–आर्ट' कहतें हैं।

प्राथमिक शिक्षा के द्वारा जिन सामाजिक अभिवृत्तियों के विकास का प्रयास किया जाता है, वह हैं श्रम के प्रति आदर का भाव, वैज्ञानिक दृष्टिकोंण, वसुधैव–कुटुम्बकम आदि का भाव है। इन कौशलों

---

5. उद्धृत जगमोहन सिंह, 'प्राथमिक शिक्षा दिशाएँ और सम्भावनाएँ', इलाहाबाद; साहित्य संगम, 2000, पृष्ठ–32

एवं अभिवृत्तियों के विकास के लिए 5 वर्ष की शिक्षा आवश्यक मानी गई है, जिसमें प्रायः 6–11 वर्ष की आयु वर्ग के बच्चों को सम्मिलित किया जाता हैं।

प्राथमिक शिक्षा का महत्व इसीलिये सर्वाधिक है, क्योंकि बालक को दी जाने वाली यह पहली औपचारिक शिक्षा कहलाती है। जितनी अच्छी तरह से इस शिक्षा का प्रबन्ध होगा, आगे का कार्य उतना ही सरल होगा। स्वतन्त्र भारत में जब संविधान की रचना हुई तब इसके महत्व को समझते हुए ही उसमें **धारा–45** में कहा गया था, कि **"राज्य इस संविधान के प्रारम्भ से दस वर्ष की कालावधि के भीतर सभी बालकों को चौदह वर्ष की अवस्था समाप्ति तक निःशुल्क और अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा उपलब्ध कराने का प्रयास करेगा।"**[6]

हालांकि राज्य कतिपय कारणों से संविधान के इस प्राविधान की पूर्ति आज तक नहीं कर सका अतः मजबूर होकर अब उसने संसद में बिल पास करके 93 वें संविधान संशोधन के द्वारा 6 से 14 वर्ष आयु वर्ग के बालकों की शिक्षा को उनके मूल अधिकारों में सम्मिलित कर दिया है।

1.5. प्राथमिक शिक्षा की वर्तमान स्थिति :–

2001 में साक्षरता दर 65.37 प्रतिशत रिकार्ड की गई, जबकि 1991 में यह दर 52.21 प्रतिशत थी। इस तरह एक दशक के दौरान साक्षरता दर में 13.16 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई। इसके बावजूद भी 2001 की जनगणना के अनुसार निरक्षरों की संख्या 30 करोड़ 40 लाख है। अतः प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण हेतु सरकार चिंतित है, जिसके लिए सर्वशिक्षा अभियान (एस.एस.ए.) की योजना 2001 में शुरू की गयी थी।

विश्व बैंक ने भारत को सर्वशिक्षा अभियान के लिए 60 करोड़ डॉलर का ऋण दिया है। 6–14 वर्ष के बच्चों को प्राथमिक शिक्षा दिलाने के लिए अभियान चलाया जा रहा है। परियोजना का उद्देश्य दूर–दराज क्षेत्रों में रहने वाले उन बच्चों को शिक्षा उपलब्ध कराना है जो स्कूलों तक नहीं पहुँच सकते। वर्ष 2002 में 86 वाँ संविधान संशोधन कर प्राथमिक शिक्षा को प्रत्येक बच्चे के मूल अधिकार में शामिल किया गया था। इसके पश्चात् 2003–2005 में चौंकाने वाले आंकड़े सामने आए। इस दौरान स्कूल छोड़ने वाले बच्चों की संख्या घटकर 25 करोड़ से 13 करोड़ 4 लाख तक रह गयी।

सर्वशिक्षा अभियान के लक्ष्य निम्न प्रकार हैं –

1. सन् 2005 तक सभी स्कूलों, शिक्षा गारंटी योजना केन्द्रों/ब्रिज पाठ्यक्रमों में 6–14 वर्ष आयु वर्ग के समस्त बच्चों का नामांकन।
2. सभी प्रकार के लैगिंक एवं सामाजिक भेदभाव सन् 2007 तक प्राथमिक शिक्षा के स्तर पर तथा सन् 2010 तक बुनियादी शिक्षा स्तर पर समाप्त करना।

---

6. सुभाष कश्यप, 'हमारा संविधान', नई दिल्ली; नेशनल बुक डिपो, 2000, पृष्ठ–115

3. 2010 तक सभी के लिए शिक्षा। जीवन हेतु शिक्षा पर विशेष ध्यान देते हुये संतोषप्रद गुणवत्ता की प्राथमिक शिक्षा पर जोर।

4. एस.एस.ए. कार्यक्रम के अन्तर्गत नौवीं योजना में केन्द्र और राज्य सरकारों के मध्य 85:15 की सहभागिता प्रबन्ध के आधार पर सहायता दी गयी, दसवीं योजना के दौरान सहभागिता प्रबन्ध 75:25 है तथा इसके बाद यह 50 : 50 के आधार पर दी जाएगी।

यह कार्यक्रम पूरे देश में लागू किया जायेगा तथा इसमें बालिकाओं, अनुसूचित जाति/ अनुसूचित जनजाति के छात्रों तथा दुष्कर परिस्थितियों में रह रहे छात्रों की शैक्षिक आवश्यकताओं पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत जिन आबादी क्षेत्रों में अभी तक स्कूल नहीं है, वहाँ नये स्कूल खोलना तथा अतिरिक्त कक्षाओं हेतु नए कमरे, शौचालय, पेयजल, रखरखाव एवं स्कूल सुधार अनुदान के माध्यम से नये स्कूल खोलना और पुष्ट करना शामिल है। एस.एस.ए, में बालिकाओं एवं समाज के कमजोर वर्गों के बच्चों पर विशेष ध्यान देने का प्रावधान है। इसके तहत ऐसे बच्चों के लिए निःशुल्क पाठ्यपुस्तकों की व्यवस्था सहित कई अन्य कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। शिक्षा के अन्तर को समाप्त करने के लिए एस.एस.ए. के अन्तर्गत ग्रामीण क्षेत्रों में कंम्प्यूटर शिक्षा दिलाने का भी प्रावधान है।

वर्ष 2005–2006 की अवधि में एस.एस.ए. ने 35,306 नए स्कूल; 1,56,610 नए अध्यापकों की नियुक्ति; 34,262 स्कूल भवनों के निर्माण; 1,41,886 अतिरिक्त कक्षाऐं; 65,771 शौचालयों के निर्माण तथा 40,760 विद्यालयों में पेयजल उपलब्ध कराने को अपनी स्वीकृति दी है। साथ ही 600 जिलों के लिए वार्षिक जिला बुनियादी शिक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत 6 करोड़ 12 लाख बच्चों के लिए निःशुल्क पाठ्य पुस्तकें उपलब्ध कराना और 32,52,785 शिक्षकों को सेवा कालीन प्रशिक्षण दिलाना शामिल है। इन कार्यों के लिए सरकार की ओर से राज्यों और केन्द्रशासित प्रदेशों को मार्च 2006 तक 7527.23 करोड़ रुपये जारी किये गये हैं।

1.6. शिक्षक का महत्व :–

शिक्षक, शिक्षा प्रक्रिया की एक महत्वपूर्ण कड़ी है। शिक्षक ही वह शक्ति है जिससे कि शिक्षा पद्धति को एक सकारात्मक दिशा प्रदान की जा सकती है। शिक्षक ही व्यक्तियों की मूल–पृवत्तियों का नियंत्रण, मार्गान्तीकरण तथा शोधन करते हुए उसकी जन्मजात शक्तियों के विकास में इस प्रकार सहायता करता है, कि उसका सर्वांगीण विकास हो जाये। शिक्षक अपने आस–पास के वातावरण, भौगोलिक सीमा से परे जाकर भी अपने ज्ञान के द्वारा लोगों को शिक्षित करता है। सच ही कहा जाता है कि किसी देश और समाज का विकास उसके शिक्षित और जागरुक नागरिकों पर निर्भर है, यहीं यह भी सत्य है कि शिक्षित और जागरूक नागरिकों का निर्माण शिक्षक के ऊपर ही निर्भर है। किसी भी क्षेत्र में, चाहे वह चिकित्सा हो या विज्ञान, अन्तरिक्ष, रक्षा, यातायात एवं सूचना आदि सभी क्षेत्रों में

कार्य–कुशलता बढ़ाने में, इन सभी क्षेत्रों में योग्य व्यक्तियों को पहुँचाने में शिक्षक का बहुत बड़ा योगदान था, है और रहेगा।

इस सम्बन्ध की पुष्टि करते हुए **श्री हुमाँयू कबीर**[7] लिखते है कि –

"अध्यापक वास्तविक रुप में राष्ट्र के सौभाग्य के निर्माता हैं।"

1.7. आदर्श शिक्षक के गुण :–

वास्तव में शिक्षक वह प्रकाश स्तम्भ है जिसके ज्ञान रूपी प्रकाश के सहारे कोई व्यक्ति अज्ञान के अंधकार से निकलकर सफलता का मार्ग प्राप्त करता है। बालकों में मुदिता, आनन्द, ज्ञानपिपासु, अनुशासित बनने का भाव शिक्षक ही पैदा करता है। शिक्षक की महत्ता को देखते हुए शिक्षकों का यह कर्तव्य भी होता है कि वे जातिगत, धर्मगत और क्षेत्रगत भावनाओं से ऊपर उठकर बालकों में ऐसे संस्कारो को उत्पन्न करें जो कि उन्हें एक जिम्मेदार, ईमानदार नागरिक बनाने में सहायक सिद्ध हों।

अध्यापक के कन्धों पर बालक, समाज, देश व मानवता की उन्नति, विकास एवं रक्षा का बड़ा ही महत्वपूर्ण बोझ होता है। एक महान शिक्षक सोचता है कि वह भारी बोझ से भरा हुआ एक मजदूर है और इस बोझ को ढ़ोकर निर्दिष्ट स्थान तक सुरक्षित रुप से पहुँचाना उसका पहला कर्तव्य है। वह पग–पग पर सावधान होकर चलता है कि ठोकर लग जाने से उसका लदा हुआ बोझ धरती पर गिरकर चूर–चूर न हो जाय और उसकी आशाओं पर पानी न फिर जाय।

राष्ट्र के निर्माण की बागडोर शिक्षक के हाथों में ही होती है। यदि वह चाहे तो दौड़ते हुए घोड़े को शान्ति पूर्वक पथ पर चलाये या एकत्रित भीड़ पर कुदवा कर कुचला डाले। अध्यापक क्या नहीं कर सकता। वह देश के निर्माण की एक ज्योतिर्मय मशाल है। अंधकार में भटकने वालों का वह पथ–प्रदर्शक है, समाज के उत्थान एवं पतन का सबसे बड़ा उत्तरदायित्व शिक्षक पर होता है।

एच0जी0 वेल्स[8] के अनुसार –

"शिक्षक वास्तविक इतिहास का निर्माता होता है।"

शिक्षक की भूमिका निःसन्देह अति महत्वपूर्ण है। माता–पिता बालक के भौतिक शरीर को जन्म देते हैं, लेकिन उसे बौद्धिक दृष्टि से विकसित करने और जीवन की कला सिखाने का भार आचार्य या गुरु पर ही है। इसीलिये गुरु के घर जाना (अर्थात शिक्षा प्राप्त करना) बालक का दूसरा जन्म माना गया है। उन सभी लोगों को जिन्हें उपनयन (गुरु के घर जाने) का सौभाग्य मिला है 'द्विज' कहा गया

---

7. उद्धृत आर0एन0 सफाया व अन्य, 'आधुनिक शैक्षिक प्रशासन एवं प्रबन्ध', नई दिल्ली; धनपत राय पब्लिशिंग कम्पनी, 2005, पृष्ठ–137
8. उद्धृत आर0एन0 सफाया व अन्य, 'आधुनिक शैक्षिक प्रशासन एवं प्रबन्ध', 'वही' पृष्ठ–137

है। शिक्षक का महत्व समाज तथा शिक्षा पद्धति दोनों में ही होता है। वस्तुतः शिक्षक उन सभी भावी नागरिकों का निर्माण करता है, जिनके ऊपर राष्ट्र के उत्थान का भार है।

राधाकृष्णन शिक्षा आयोग[9] ने अपने प्रतिवेदन में लिखा है –
"आयोग का यह दृढ़ विश्वास था कि कोई भी शिक्षण बिना उचित उपकरणों तथा कुशल शिक्षकों के सफल नहीं हो सकता। शैक्षिक प्रक्रिया की सफलता शिक्षकों की गुणवत्ता पर निर्भर करती है।"

डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृण्णन – के अनुसार "समाज में अध्यापक का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। वह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को बौद्धिक परम्पराओं व तकनीकी कौशलों के हस्तान्तरण के साधन के रूप में तथा सभ्यता की ज्योति को प्रज्ज्वलित रखने में सहायता प्रदान करता है।"

अपेक्षित शिक्षा के पुनर्निर्माण में सबसे महत्वपूर्ण तत्व शिक्षक एवं उसके व्यक्तिगत गुण, उसकी शैक्षिक योग्यतायें, उसका व्यावसायिक–प्रशिक्षण और उसकी स्थिति है, जो वह विद्यालय व समाज से ग्रहण करता है। विद्यालय की प्रतिष्ठा तथा समाज के जीवन स्तर का प्रभाव निःसन्देह उन शिक्षकों पर पड़ता है, जो कि उस विद्यालय में कार्य कर रहे हैं।

उपरोक्त पंक्तियों को देखते हुए शिक्षक की महत्ता समझ में आती है और यह भी स्पष्ट होता है कि शिक्षक में बहुत से गुण व विशेषतायें होना आवश्यक है। एक शिक्षक में उत्तम चरित्र का होना अत्यन्त आवश्यक है। चरित्र अमूल्य निधि है, इसे सभी नहीं पा सकते, इसके लिए दृढ़ संकल्प, त्याग एवं संयम की आवश्यकता होती है।"

यदि अध्यापक एक उत्तम चरित्र का व्यक्ति है तो वह छात्रों के चरित्र को भी अच्छा बना सकता है। अध्यापक को अपने अध्यापन कार्य में रुचि होनी चाहिये। अध्यापकों में यदि अपने कार्य में रुचि नहीं है, तो वह एक प्रकाश रहित दीपक के समान है। उसका व्यक्तित्व बालकों को प्रभावित नहीं कर सकता है। ब्रे महोदय का भी यही मानना है कि – **अध्यापक का उत्साह सीमित नहीं होना चाहिये उसके उत्साह को देखकर ही छात्रों में उत्साह की वृद्धि होती है।**

अध्यापक को मनोवैज्ञानिक विधियों का ज्ञान होना चाहिए और इसी ज्ञान के द्वारा वो छात्रों के व्यक्तिगत भेद को ध्यान में रखकर उन्हें शिक्षा प्रदान करता है और उन्हें योग्य नागरिक तथा प्रगतिशील व्यवसायी बनाता है। शिक्षक को समय का पाबन्द होना चाहियें, ज्ञानार्जन की उत्सुकता रखने वाला एवं हमेशा कुछ नया जानने की इच्छा रखने वाला होना चाहिये। अध्यापक में धैर्य का गुण तथा अध्यापक को छात्रों के व्यक्तित्व का सम्मान करने वाला होना चाहिये। अध्यापक में सहयोग की

---

9. उद्धत सुरेश भटनागर, 'आधुनिक भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ', मेरठ; मेरठ पब्लिशिंग हाउस, 1991–92, पृष्ठ–276

भावना भी बलवती होनी चाहिये, जब शिक्षक सहयोग से कार्य करने वाला होगा तब छात्रों में भी सहयोग की भावना का संचार होगा और यही कक्षा की सहयोगी भावना जब अपना वृहद् रुप लेती है तो **"वसुधैव–कुटम्बकम"** की भावना का संचार होता है।

इसलिए शिक्षक का गुणवान होना कितना आवश्यक है, यह बात शिक्षा आयोग के इस वक्तव्य से स्पष्ट होती है – **"उन सभी विभिन्न कारकों में जो शिक्षा के गुण और राष्ट्रीय विकास में इसके योगदान को प्रभावित करते हैं, उनमें शिक्षक का गुण, प्रवीणता एवं चरित्र निःसन्देह प्रमुख भूमिका निभाते हैं।"**

अतः स्पष्ट है कि राष्ट्रीय विकास व शिक्षा दोनों को शिक्षक के गुण प्रभावित करते हैं। इन विशिष्ट गुणों से शिक्षकों को पूर्ण करने के लिए उन्हें प्रशिक्षित किया जाना चाहिये जिसके लिए उन्हें प्रशिक्षण प्राप्त करना परम आवश्यक है। प्रशिक्षण के द्वारा एक शिक्षक को निश्चित समयावधि व परिस्थितियों में उचित ढंग से विद्यार्थियों को शिक्षा देने के योग्य बनाया जाता है। अतः शिक्षक–प्रशिक्षण सामाजिक पुनर्निर्माण के लिए अति आवश्यक है। शिक्षा, शिक्षक और शिक्षार्थी के बीच चलने वाली प्रक्रिया है। शिक्षकों के सम्बन्ध में वर्तमान शिक्षा शास्त्री मानते हैं कि प्रत्येक शिक्षक प्रशिक्षित होना चाहिये। अर्थात् किसी भी विद्यालय में शिक्षण कार्य करने से पूर्व शिक्षण कार्य का पूर्ण प्रशिक्षण किसी भी प्रशिक्षण विद्यालय से प्राप्त कर लेना चाहिये, इसीलिये स्थान–स्थान पर प्रशिक्षण महाविद्यालय खोले गये हैं, जहाँ विभिन्न श्रेणियों के शिक्षकों को विभिन्न अवधियों में शिक्षण कला सिखाई जाती है।

1.8. शिक्षक–प्रशिक्षण :–

वर्तमान काल में शिक्षा के स्वरूप को सुधारने के लिए जो प्रयत्न किये जा रहे हैं, उनमें शिक्षक–प्रशिक्षण की ओर भी ध्यान जाना स्वाभाविक है।

श्री एम0सी0 छागला[10] के अुनसार –

"प्रशिक्षित व योग्य शिक्षकों की सहायता के अभाव में कोई भी शिक्षा–क्रम उन्नति नहीं कर सकता। योग्य शिक्षकों का देश एक उज्जवल भविष्य का देश है।"

परन्तु खेद का विषय है कि अभी तक इसकी महत्ता को भली भाँति स्वीकार नहीं किया गया है। अब तक केवल शिक्षक–प्रशिक्षण की सुविधाओं के संख्यात्मक विकास पर ही ध्यान दिया गया, गुणात्मक विकास की दिशा में नहीं। इसका परिणाम यह हुआ कि देश में शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थानों की संख्या में वृद्धि तो हुई परन्तु प्रशिक्षण विधि निरन्तर रुप से अप्रभावशाली बनी हुई है।

---

10. उद्धृत के0जी0 रस्तोगी एवं एम0एल0 मित्तल, 'भारतीय शिक्षा का विकास एवं समस्यायें', मेरठ; रस्तोगी पब्लिकेशन्स, पाँचवा संस्करण, पृष्ठ–322

अध्यापन व्यवसाय नहीं वरन् यह एक जीवन निर्माण की विद्या है। शिक्षक केवल जीविका आर्जित करने के लिए ही अध्यापन नहीं करता। अध्यापन आत्म–प्रेरित आनन्ददायिनी प्रक्रिया है। इसमें शिक्षक की सहज निष्ठा, आत्म–प्रेरणा तथा सामाजिक सेवा की भावना होती है। अतः अध्यापन को व्यावसायिक शिक्षा के अन्तर्गत सम्मिलित करना तर्कसंगत नहीं है, लेकिन फिर भी आधुनिक शिक्षक शिक्षण को एक व्यवसाय समझकर ही उसमें प्रवेश करता है।

1.8.1. शिक्षक–प्रशिक्षण का उद्‌भव व विकास :–

वैदिक काल में अध्यापकों के लिए किसी भी प्रकार के औपचारिक प्रशिक्षण की प्रथा न थी। छात्र अच्छे अध्यापक के सम्पर्क में रह कर अध्यापन कला का अनौपचारिक ढंग से व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त कर अपने अनुभवों के आधार पर स्वतन्त्र रुप से अध्यापन कार्य प्रारम्भ कर देते थे। ये छात्र शिक्षण कार्य किस प्रकार सीखते थे इस विषय में **डॉ0 श्रीधर नाथ मुखोपाध्याय**[11] ने लिखा है –

"आचार्य या गुरु सबसे ऊपर के वर्गों के छात्रों को पढ़ाते थे, ये विद्यार्थी अपने से निम्नवर्ग के छात्रों को सिखाते थे और वे अपने से नीचे वालों को।"

उच्च कक्षाओं के अग्रिम छात्रों या नायकों द्वारा निम्न कक्षाओं के छात्रों को शिक्षा देने की प्रणाली को 'कक्षा–नायकीय–पद्धति' कहते थे। इस पद्धति में शिक्षा सिद्धान्त नामक विषय नहीं था, जिन नायकों को शिक्षण कार्य सौंपा जाता था, उनको कालान्तर में शिक्षण–विधियों एवं विद्यालय संचालन का पर्याप्त व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त हो जाता था।

बौद्ध युग में शिक्षक शिक्षा का महत्व स्वीकार किया जाने लगा। शिक्षक शिक्षा को प्रसार मिलने लगा। यह भी स्वीकार किया जाने लगा कि शिक्षण का अधिकार केवल ब्राह्मणों को ही नहीं है। वह प्रत्येक जागरुक तथा प्रबुद्ध व्यक्ति जिसकी शिक्षण में रुचि है, चाहे वह किसी भी वर्ण अथवा जाति का हो, अध्यापन का अधिकारी है। गुरू श्रेष्ठ व योग्य शिष्यों को अपने निर्देशन में अपने से जूनियर छात्रों को पढ़ाता था। इसे अग्रशिष्य–प्रणाली के नाम से जाना जाता था। इस काल में शिक्षक बनने के लिए पूर्ण भिक्षु बनना आवश्यक था ताकि वह मठों के रखरखाव, संगठन, संचालन में निपुणता हासिल कर ले तथा विभिन्न धर्मशास्त्रों में उच्च ज्ञान प्राप्त कर ले।

मुस्लिमकाल में भी अध्यापक प्रशिक्षण प्रायः उपेक्षित ही रहा। इस काल में मकतब तथा मदरसों में मौलवी व उस्ताद अध्यापन का कार्य करते रहे। ये उस्ताद व मौलवी अध्यापन हेतु किसी विशेष प्रशिक्षण को प्राप्त नहीं करते थे। चौदहवीं शताब्दी में कक्षा नायकीय प्रणाली का प्रचलन था। अध्यापक अपने प्रिय व योग्य छात्रों को कक्षा नायक कहते थे। वे छात्र अध्यापक की भांति कक्षा पर

---

11. उद्‌धृत के0जी0 रस्तोगी एवं एम0एल0 मित्तल, 'भारतीय शिक्षा का विकास एवं समस्यायें', मेरठ; रस्तोगी पब्लिकेशन्स, पाँचवा संस्करण, पृष्ठ–322

नियंत्रण रखते थे तथा अपने से कम योग्य छात्रों को पढ़ना सीखने में सहायता प्रदान करते थे। कक्षा नायकीय प्रणाली में श्रेष्ठ छात्रों को अनायास ही अध्यापन का व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त हो जाता था।

भारत में शिक्षक–प्रशिक्षण के क्षेत्र में डेन मिसनरियों ने सन् 1716 में ट्रानक्यूबर में शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए सर्वप्रथम नार्मल स्कूल स्थापित किया। यहाँ के प्रशिक्षित शिक्षकों को प्राथमिक विद्यालयों में नियुक्त किया जाता था। तदुपरान्त, उन्होंने सन् 1793 में सीरामपुर में एक और नार्मल स्कूल स्थापित किया। इनके उत्कृष्ट उदाहरण से प्रभावित होकर मद्रास, मुम्बई, और कलकत्ता की शिक्षा–परिषदों ने प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों को प्रशिक्षण देने के लिए प्रशिक्षण संस्थाओं का निर्माण किया। महिलाओं के प्रशिक्षण के लिए नार्मल स्कूलों की स्थापना की गयी इनकी स्थापना का श्रेय इंग्लैण्ड की विदुषी मिस मेरी कारपेन्टर को था। जिसने इस अवधि में अनेक बार भारत पधार कर, महिला नार्मल स्कूलों के निर्माण के लिए व्यक्तिगत रूप में अथक प्रयास किये। सन् 1815 में भारत में वुड का घोषणापत्र प्रकाशित हुआ इसमें विभिन्न प्रकार की शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थायें स्थापित करने की घोषणा की गई। यहाँ से भारत में शिक्षक–प्रशिक्षण का एक नया अध्याय शुरु हुआ तथा 1856 में मेरठ एवं 1857 में बनारस में नार्मल स्कूल स्थापित हुऐ।

ब्रिटिश शासन में सन् 1859 में लार्ड स्टैनलें जो कि भारतीय शासन के सचिव थे, के प्रयासों से शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थायें तेजी से स्थापित की गई तथा सन् 1881–82 में भारत में 106 नार्मल स्कूल तथा 2 शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालय स्थापित हो गये थे।

शिक्षक प्रशिक्षण की वास्तविक आवश्यकता का अनुभव 'हण्टर कमीशन' की सिफारिशों के फलस्वरुप् किया गया। इनकी सिफारिशों के फलस्वरूप सरकार ने इस ओर कदम उठाए तथा इसी के फलस्वरूप सन् 1900 तक भारत में नार्मल स्कूलों की संख्या बढ़कर 133, ट्रेनिंग स्कूलों की संख्या 50 तथा ट्रेनिंग कालेजों की संख्या 6 हो गई ये ट्रेनिंग कालेज लाहौर, मद्रास, कुरसारा, इलाहाबाद और राजमुन्दरी में स्थापित थे।

शिक्षा प्रेमी लार्ड कर्जन की शिक्षा नीति ने शिक्षा के प्रसार के लिए प्रान्तीय सरकारों को सहायता–अनुदान देने की प्रथा आरम्भ की। उसने शिक्षक–प्रशिक्षण कालेजों की स्थापना के साथ–साथ इनमें सुधार हेतु कई कार्यक्रम प्रस्तुत किये। परिणामस्वरूप 1906 में एस0टी0 कालेज, बम्बई, 1908 में डेविस हायर ट्रेनिंग कालेज कलकत्ता, एवं पटना ट्रेनिंग कालेज, पटना तथा 1911 में स्पेन्स ट्रेनिंग कालेज, जबलपुर की स्थापना की गई तथा इन कालेजों के पाठ्यक्रमों को समुन्नत किया गया। शिक्षानीति सम्बन्धी सरकारी प्रस्ताव 1913 ने निम्नांकित नीति निर्धारण करके, शिक्षक–प्रशिक्षण के विकास में अतिशय योग दिया– **"शिक्षा की आधुनिक प्रणाली में किसी भी शिक्षक को उस समय तक शिक्षण कार्य की अनुमति प्रदान न की जाए, जब तक कि उसके पास तत्सम्बन्धी प्रमाणपत्र न हो।"**

सन् 1917 में सैडलर कमीशन (कलकत्ता विश्वविद्यालय आयोग) ने माध्यमिक स्कूलों में शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए विश्वविद्यालयों में शिक्षा विभाग खोलने तथा स्वत्रंत रूप से प्रशिक्षण महाविद्यालयों को खोलने की सिफारिश की। फलस्वरूप 1921 तक 13 शिक्षा विभागों की स्थापना हुई। सन् 1929 में हर्टांग समिति ने प्रशिक्षित शिक्षकों के लिए पुनर्बोधन कार्यक्रम चलाने का सुझाव दिया। सन् 1937 में गाँधी जी की वर्धा योजना के फलस्वरूप 'बेसिक ट्रेनिंग स्कूल' तथा कालेज खोले गये। 1938 में इलाहाबाद में बुनियादी शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालय की स्थापना हुई।

1.8.2. शिक्षक प्रशिक्षण की नवीन अवधारणा :–

सन् 1947 को देश आजाद हो गया और शिक्षक–प्रशिक्षण के सम्बन्ध में भी शिक्षा प्रक्रिया में बदलाव के साथ परिवर्तन देखे गये। स्वतन्त्रता से पूर्व शिक्षक–प्रशिक्षण में अद्वितीय, संख्यात्मक और गुणात्मक उन्नति हुई। केवल उसे प्रशिक्षण क्षेत्र में आविर्भूत होने वाले नवीन विचारों के अनुकूल बनाने का कोई प्रयास नहीं किया गया। परिणामस्वरूपा उसका विकास सीमित हो गया। अतः स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् देश के शिक्षा शास्त्रियों एवं राजनीतिज्ञों ने 'शिक्षक–प्रशिक्षण' को नवीन रूप प्रदान करके, इसको अधिक व्यापक बनाया। 'शिक्षक–प्रशिक्षण को नया नाम दिया जाने का समर्थन किया जाने लगा।

अमरीका के प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री, **किलपैट्रिक के अनुसार**[12] –

"सर्कस में काम करने वाले नटों व पशुओं को प्रशिक्षण दिया जाता है, लेकिन शिक्षकों को शिक्षा दी जाती है।"

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद से भारत में शिक्षक शिक्षा की सुविधायें बढ़ीं है। पंचवर्षीय योजनाओं में शिक्षक–शिक्षा के विस्तार, गुणवत्ता, सुधार और धनराशि आंवटन में उदारता बरती गई। महिलाओं के लिए प्रशिक्षण सुविधाओं के विस्तार को वरीयता दी गई तथा उनके लिए पृथक प्रशिक्षण विद्यालय खोले गये तथा विभिन्न शिक्षा आयोगों, शिक्षा समितियों, शिक्षा नीतियों में शिक्षक शिक्षा के सम्बन्ध में अनेक महत्वपूर्ण सुझाव व सिफारिशे की गयी।

इस क्षेत्र में सर्वप्रथम राधाकृष्णन आयोग (1948–49) ने सुझाव दिए। इस आयोग ने शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सैद्धान्तिक ज्ञान की अपेक्षा प्रायोगिक प्रशिक्षण पर अधिक बल दिया और साथ ही छात्राध्यापकों के सैद्धान्तिक ज्ञान और प्रायोगिक कौशल के मूल्यांकन की विधियों में सुधार करने पर बल दिया। यहीं से देश में शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थाओं की स्थापना और उनके कार्यक्रमों में सुधार की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई। प्रसार की दृष्टि से 1951 में हमारे देश में नार्मल स्कूलों की संख्या बढ़कर 800 हो गई और प्रशिक्षण महाविद्यालयों की संख्या बढ़कर 53 हो गई।

---

12. उद्धृत के0जी0 रस्तोगी एवं एम0एल0 मित्तल, 'भारतीय शिक्षा का विकास एवं समस्यायें', मेरठ; रस्तोगी पब्लिकेशन्स, पाँचवा संस्करण, पृष्ठ–327

1952 में हमारे देश में मुदालियर कमीशन की नियुक्ति की गई। इस कमीशन ने शिक्षक शिक्षा के सम्बन्ध में कई सुझाव दिये जिनमें चार सुझाव मुख्य थे– पहला यह कि शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थाएँ केवल दो स्तर की होनी चाहिए– प्राथमिक शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थाएँ और माध्यमिक शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थाएँ। दूसरा यह कि इन्हीं संस्थाओं में प्रशिक्षित शिक्षकों की पूर्ति के लिए अल्पकालीन शिक्षक–प्रशिक्षण की व्यवस्था की जाए। तीसरा यह की इन्हीं संस्थाओं में प्रशिक्षित शिक्षकों को अपने क्षेत्र के अद्यतन ज्ञान देने हेतु पुनर्बोधन पाठ्यक्रम चलाए जाएँ। और चौथा यह कि शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में शोध कार्य हो। सरकार ने इन चारों सुझावों का अमल शुरू किया। प्रसार की दृष्टि से 1961 तक हमारे देश में प्राथमिक शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थाओं की संख्या बढ़कर 1150 हो गई और प्रशिक्षण महाविद्यालयों की संख्या 147 हो गई।

1961 में हमारे देश में 'राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंथान एवं प्रशिक्षण परिषद् की स्थापना की गई। इस परिषद् के मुख्य कार्य हैं–

प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा के स्तरमान को निर्धारित करना, इसके लिए पाठ्यचर्या की रूपरेखा तैयार करना, इन स्तरों के लिए विभिन्न विषयों की मानक पाठ्य पुस्तकें तैयार करना और साथ इन दोनों स्तरो के शिक्षकों के प्रशिक्षण कार्यक्रमों को निश्चित करना। यह परिषद् ये कार्य सतत् रूप से कर रही है– समय–समय पर इन शिक्षा संस्थाओं का सर्वेक्षण कराती है और उनमें सुधार के लिए सुझाव देती है। इस परिषद् ने प्रारम्भ में चार क्षेत्रीय शिक्षक महाविद्यालय स्थापित किये जिन्हें अब क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों में बदल दिया गया है। वर्तमान में इनकी संख्या पाँच है। ये संस्थान अजमेर, भोपाल, मैसूर, भुवनेश्वर और शिलाग में स्थापित हैं। इन संस्थानों में माध्यमिक शिक्षकों के प्रशिक्षण (बी0एड0), शिक्षक शिक्षा में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम (एम0एड0) और शिक्षा के क्षेत्र में शोध कार्य (पी0एच0–डी0) की उत्तम व्यवस्था है। जिनमें दो वर्षीय बी0एड0 पाठ्यक्रम के साथ–साथ चार वर्षीय संकलित पाठ्यक्रम भी चलाए जा रहे हैं। संकलित पाठ्यक्रमों में कक्षा 12 उत्तीर्ण छात्रों को प्रवेश दिया जाता है। इन्हें पूरा करने वालों को स्नातक और बी0एड0 की सयुक्त उपाधि दी जाती है। इनमें पत्राचार पाठ्यक्रम भी चलाए जा रहे हैं। सेवारत अप्रशिक्षित शिक्षकों के लिए दो वर्षीय ग्रीष्मकालीन शिक्षक शिक्षा की भी व्यवस्था है, अभ्यर्थियों को दो ग्रीष्मावकाशों में पूरा कोर्स करा दिया जाता है। साथ ही प्रशिक्षित शिक्षकों के लिए पुनर्बोधन पाठ्यक्रमों (Refresher Courses), विचार गोष्ठियों (Seminars), कार्यशालाओं (Workshops) और सम्मेलनों (Conferences) की व्यवस्था भी की जाती है। 1963–64 में कई राज्यों में राज्य शिक्षा संस्थान (State Institutes of Education, SIEs) की स्थापना की गई। ये संस्थान शिक्षक शिक्षा में सुधार हेतु मार्गदर्शन करने के साथ सेवाकालीन प्रशिक्षण की व्यवस्था भी करते हैं।

1964 में देश में कोठारी कमीशन की नियुक्ति की गयी। इसने शिक्षक–शिक्षा के विषय में विचार प्रस्तुत किये। उसके शिक्षक–शिक्षा सम्बन्धी चार सुझाव प्रमुख है– पहला यह कि पत्राचार

पाठयक्रम और अल्पकालीन शिक्षक–शिक्षा की सुविधाओं का विस्तार किया जाए। दूसरा यह कि सेवारत अप्रशिक्षित शिक्षकों के लिए ग्रीष्म कालीन संस्थाओं का सृजन किया जाए। तीसरा यह कि सभी राज्यों में शिक्षक–शिक्षा के सघन कॉलेज स्थापित किये जाए जिनमें सभी स्तरों की शिक्षा के लिए शिक्षक तैयार किये जा सके। चौथा यह कि सभी शिक्षक शिक्षा संस्थाओं में प्रसार सेवा विभाग स्थापित किये जाए और इनके द्वारा सेवारत शिक्षकों और शिक्षक–शिक्षकों दोनों की समस्याओं का समाधान किया जाए।

5 सितम्बर (शिक्षक दिवस), 1982 को केन्द्रीय सरकार ने शिक्षकों के प्रशिक्षण एवं उनके उन्नयन आदि बिन्दुओं पर विचार कर उनमें सुधार हेतु सुझाव देने के लिए शिक्षक आयोग प्रथम एवं शिक्षक आयोग द्वितीय का गठन किया। इन आयोगों ने शिक्षकों के प्रशिक्षण एवं उनके स्तर को ऊँचा उठाने के सम्बन्ध में अनेक सुझाव दिये। इन आयोगों के सुझाव पर सभी स्तर के शिक्षकों के वेतनमानों में वृद्धि की गयी और उनके प्रशिक्षण एवं पुनर्बोधन कार्यक्रमों में सुधार की प्रक्रिया शुरू की गयी।

1986 में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति की घोषणा की गई। इसमें शिक्षक–शिक्षा संस्थाओं के लिए अभ्यर्थियों की चयन प्रक्रिया में सुधार करने, उनके प्रशिक्षण कार्यक्रमों को प्रभावी बनाने और उनकी उपलब्धियों की मूल्यांकन पद्यति में सुधार करने पर विशेष बल दिया गया। साथ ही सेवारत शिक्षकों के वेतनमान बढ़ाने और उनकी सेवा शर्तों में सुधार करने की घोषणा की गई। साथ ही शिक्षकों की जवाबदेही निश्चित करने पर बल दिया गया। शिक्षक–शिक्षा में सुधार के लिए एक कार्ययोजना भी बनाई गई जिसके तहत –

1. 1987 में सभी जिलों में एक–एक जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान की स्थापना का कार्य शुरू किया गया। 2002 तक देश में 485 शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान स्थापित किये जा चुके थे। ये संस्थान निम्नलिखित कार्यों का संपादन कर रहे हैं –

(i) प्राथमिक शिक्षा, अनौपचारिक शिक्षा और प्रौढ़ शिक्षा के शिक्षकों के प्रशिक्षण की व्यवस्था।

(ii) सेवारत प्रशिक्षित शिक्षकों के लिए सतत शिक्षा की व्यवस्था।

(iii) प्राथमिक, अनौपचारिक और प्रौढ़ शिक्षा के क्षेत्र में शोध कार्य की व्यवस्था।

(iv) जिले की अन्य प्राथमिक शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थाओं का मार्गदर्शन।

2. 1987 में ही कुछ अच्छे शिक्षक–प्रशिक्षण कालेजों को (शिक्षक–शिक्षा महाविद्यालय) में समुन्नत करने का कार्य शुरू किया गया। 2002 तक 86 शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों को शिक्षक–शिक्षा कालेजों में समुन्नत किया जा चुका था। ये कालेज इन निम्नलिखित कार्यों का सम्पादन कर रहे हैं –

(i) माध्यमिक शिक्षा के लिए शिक्षकों के प्रशिक्षण की व्यवस्था और साथ ही शिक्षक शिक्षा में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम की व्यवस्था।
(ii) माध्यमिक विद्यालयों और जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों में सेवारत शिक्षकों के लिए सतत शिक्षा की व्यवस्था और उनका मार्गदर्शन।
(iii) माध्यमिक शिक्षा के क्षेत्र में शोधकार्य की व्यवस्था।
(iv) अन्य शिक्षक–शिक्षा महाविद्यालयों एवं विभागों का मार्गदर्शन।

3. 1987 से ही कुछ बहुत अच्छे स्तर के शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों और विभागों को (शिक्षा उच्च अध्ययन संस्थानों) में समुन्नत करने का कार्य शुरू किया गया। 2002 तक देश के 38 शिक्षक–शिक्षा महाविद्यालयों को शिक्षा उच्च अध्ययन संस्थानों में समुन्नत किया जा चुका था। ये संस्थान निम्नलिखित कार्यों का सम्पादन कर रहे हैं –

(i) स्नातक (बी0एड0) एवं परास्नातक (एम0एड0) स्तर के उच्च पाठयक्रमों की व्यवस्था।
(ii) शिक्षक–शिक्षा कालेजों के शिक्षकों के लिए सेवारत कार्यक्रमों की व्यवस्था।
(iii) शिक्षा के क्षेत्र में उच्च स्तरीय शोधकार्य की व्यवस्था।
(iv) शिक्षक–शिक्षा महाविद्यालयों एवं विभागों की समस्याओं का निवारण।

4. मई 1993 में राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् की स्थापना की गई जिसे 1995 में संसद के एक एक्ट द्वारा संवैधानिक मान्यता प्रदान की गई और उसके अधिकार एवं कार्यक्षेत्र का विस्तार किया गया। वर्तमान में यह शिक्षक–शिक्षा की केन्द्रीय नियंत्रक संस्था है अतः इसके विषय में थोड़ी जानकारी होना आवश्यक है वर्तमान में इस संस्था में तीन पूर्णकालीन अधिकारी हैं – अध्यक्ष, उपाध्यक्ष एवं सचिव और 52 सदस्य हैं जिनमें से कुछ पदेन हैं और शेष मनोनीत। पदेन सदस्यों में मुख्य सदस्य हैं– केन्द्रीय सरकार का शिक्षा सचिव, यू0जी0सी0 का अध्यक्ष, एन0सी0ई0आर0टी0 का अध्यक्ष, सी0बी0एस0ई0 का अध्यक्ष, प्लानिंग कमीशन का परामर्शदाता, वित्त सलाहकार, निदेशक नीपा और क्षेत्रीय कार्यालयीय अध्यक्ष। और मनोनीत सदस्यों में मुख्य सदस्य हैं – 3 सदस्य संसद से, 3 सदस्य प्राथमिक, माध्यमिक और प्रसिद्ध शिक्षा संस्थानों से, 9 सदस्य प्रान्तीय सरकारों में प्रतिनिधित्व करने वालों में से और 13 सदस्य विभिन्न स्तर की शिक्षा के विशेषज्ञों में से होगा इस प्रकार कुल मिलाकर यह 55 सदस्यों की एक बड़ी जमात है। जिसमें शिक्षक–शिक्षा विशेषज्ञों का प्रतिनिधित्व बहुत कम है।

इस परिषद् का मुख्य कार्यालय देलही में है। इसकी चार क्षेत्रीय समितियाँ है जिसके कार्यालय क्रमशः – उत्तरी का जयपुर में, दक्षिण का बंग्लौर में, पूर्वी का भुवनेश्वर में और पश्चिमी का भोपाल में है। यह परिषद् अपने कार्यों का सम्पादन इन क्षेत्रीय समितियों के माध्यम एवं सहयोग से करती है।

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् के कार्य निम्नलिखित हैं :–

1. शिक्षक–शिक्षा संस्थाओं के लिए स्तर तथा मार्गदर्शी सिद्धान्त निर्धारित करना तथा उनके कार्यो को देखना।
2. शिक्षक–शिक्षा के सभी क्षेत्रों में नवीनता तथा अनुसंधान को बढावा देना तथा उनके परिणामों का प्रसार करना।
3. शिक्षकों तथा शिक्षक–शिक्षा के शिक्षकों की सतत् शिक्षा तथा व्यावसायिक विकास के लिए मार्गदर्शी सिद्धान्तों को तैयार करना।
4. प्रौढ तथा अनौपचारिक शिक्षा के कार्मिकों के प्रशिक्षण के लिए व्यवस्था करना।
5. शिक्षक–शिक्षा से सम्बन्धित सभी मामलों तथा उसके कार्यक्रमों में क्रेन्द्रीय सरकार, राज्य सरकारों, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, विश्वविद्यालयों तथा अन्य शैक्षिक एजेन्सियों को सलाह देना।

1.9. कृत्य–संतोष तथा उसे प्रभावित करने वाले कारक :–

1.9.1. अर्थ एवं परिभाषा :–

कृत्य–संतोष की अवधारणा पश्चिम की देन है आधुनिक भौतिकवादी युग में व्यवसाय से मिलने वाले संतोष को पश्चिम समाज में जीवन का अभीष्ट लक्ष्य माना जाता है। भारतीय समाज में सन्तुष्टि की जिस धारणा का उल्लेख मिलता है वह अत्यन्त व्यापक है और अनेक क्षेत्रों से उत्पन्न होती है, कृत्य–संतोष केवल उनका एक पक्ष है।

कृत्य–संतोष क्या है ? इसे बताना सरल कार्य नहीं है। हिन्दी शब्द कोष अथवा शैक्षिक व समाज शास्त्रीय ग्रन्थों में इसकी निश्चित और सटीक परिभाषा नहीं मिलती है। वाक्य विन्यास के आधार पर कृत्य–संतोष दो शब्दों से मिलकर बना है। प्रथम, कार्य और द्वितीय सन्तुष्टि। कार्य का अर्थ होता है– अपनाया गया कोई व्यवसाय, जिसके लिए कार्य किया जाता है और संतुष्टि का अर्थ होता है– संतोष अथवा प्रसन्नता। शाब्दिक अर्थ में इस प्रकार अपने कार्य अथवा पेशे से प्राप्त होने वाले आनन्द और संतोष को कृत्य–संतोष कहा जा सकता है।

ब्लम तथा नेलर[13] ने इसका अर्थ स्पष्ट करते हुऐ कहा है –

"कृत्य–संतोष कर्मचारी की उन अभिवृत्तियों का परिणाम है जिन्हें वह अपने कार्य या व्यावसाय से सम्बन्धित अनेक कारकों एवं सामान्य जीवन के प्रति बनाऐ रखता है।"

---

13. उद्धृत डॉ0 आर0के0 ओझा, औद्योगिक मनोविज्ञान', आगरा; विनोद पुस्तक मन्दिर, 1986, पृष्ठ–100

व्यवसाय के किन पक्षों अथवा रीतियों से संतोष प्राप्त होता है, यह मनोविज्ञान का विषय है। एक व्यक्ति को काम की अच्छी दशायें, सामाजिक सम्मान और प्रतिष्ठा, उत्तम वेतन, मनोवांछित स्थान पर नियुक्त होने के बावजूद भी वह संतोष प्राप्त नहीं होता है जो समान योग्यता रखने वाले किसी दूसरे व्यक्ति को कम सुविधाजनक अवस्थाओं और कम वेतन में प्राप्त हो जाता है। कहने का अभिप्राय यह है कि संतोष अथवा संतुष्टि एक आंतरिक अनुभूति है, बाह्य नहीं। इसका सम्बन्ध मनुष्य के हृदय से होता है।

ऐसे अनेक व्यक्ति होते हैं, जो श्रेष्ठतम अवस्थाओं में भी असन्तुष्ट दिखाई देते हैं और इसके विपरीत ऐसे भी अनेक व्यक्ति होते हैं, जो प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अपने कार्य से सन्तुष्ट नजर आते हैं। लेकिन इसके बावजूद इस तथ्य को झुठलाया नहीं जा सकता है कि सन्तुष्टि अथवा संतोष की भावना के मूल में भी कुछ प्रवृत्ति मूलक और भौतिक परिस्थितियाँ होतीं हैं। एक व्यक्ति किसी व्यवसाय को इतना अधिक पसन्द करता है कि वह अच्छी से अच्छी भौतिक सुविधायें और सम्मान मिलने वाले किसी बड़े पद को ठुकरा सकता है। इसके विपरीत कुछ लोग उसी व्यवसाय या कार्य को पसन्द करते हैं और उसी में सर्वाधिक तृप्ति अनुभव करते हैं जिसमें श्रेष्ठतम आर्थिक सुविधायें मिलती हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि व्यवसाय से मिलने वाले संतोष के लिए सबसे पहली आवश्यकता प्रवृत्तिजन्य होती है, अर्थात अपने स्वभाव, प्रवृत्ति, रुचि और इच्छाओं के अनुकूल कार्य मिलना सन्तुष्टि की पहली शर्त है।

कृत्य–संतोष का दूसरा आधार भौतिकता है। आधुनिक युग में भौतिक सुख और समृद्धि को संतोष का कारक माना गया है, हालांकि यह मत विवादास्पद हो सकता है क्योंकि अर्थ प्रधान समाज में व्यक्ति सबसे अधिक असन्तुष्ट देखने को मिलता है। अमरीकी समाज, जो भौतिक रूप से सर्वाधिक सम्पन्न है, मानसिक रूप से सर्वाधिक असन्तुष्ट है, लेकिन भौतिकता का फिर भी संतोष सें अटूट रिश्ता है। संतुष्टि के लिए यह आवश्यक है कि मनुष्य की रोटी, कपड़ा, मकान, अथवा दूसरे शब्दों में आने वाले कल की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति केवल भौतिक स्तर पर ही सम्भव है। इसके लिए आवश्यक है कि आय का ऐसा साधन हो, जिससे कम से कम मनुष्य औसत स्तर पर अपने जीवन का निर्वाह कर सके।

संक्षेप में, कार्य में सन्तुष्टि मुख्यतः दो आधारों पर प्राप्त हो सकती है प्रथम व्यक्ति को उसकी प्रकृति अथवा स्वभाव व रुचि के आधार पर कार्य मिला हो तथा दूसरा, अपने व्यवसाय से कम से कम इतनी आर्थिक सुविधायें अथवा वेतन मिलता हो, जो उस समाज में औसत स्तर के व्यक्ति को अथवा परिवार के जीवन यापन के लिए आवश्यक है।

कृत्य–संतोष से तात्पर्य किसी भी कर्मचारी द्वारा किये जा रहे कार्यों में ली जाने वाली उसकी रुचि से है। इसी रुचि के कारण वह अपने कार्य को अच्छी तरह से करता है तथा उस कार्य विशेष का कुशलता पूर्वक निर्वहन कर दक्षता प्राप्त करता है और किये गये कार्य से संतोष प्राप्त करता है।

अपनी इस् सन्तुष्टि से वह स्वयं सुखी रहता है और समाज का भी हित करता है। यही कारण है कि प्रत्येक व्यक्ति को किसी न किसी व्यवसाय विशेष अथवा कार्य विशेष में रुचि होती है और अपनी पसन्द के अनुसार कार्य करने की चाह के कारण वह उस व्यवसाय के लिए अपेक्षित योग्यता प्राप्त करता है। किसी कार्य को करने के पीछे व्यक्ति की सन्तुष्टि की चाह ही सर्वोपरि होती है। जिससे वह उस कार्य विशेष में कुशल मार्गदर्शक की मदद लेकर अपना व्यवसाय चुनता है। यह कहना अतिशयोक्ति न होगा कि व्यक्ति की रुचि, कार्यदशाओं, अपेक्षाओं की पूर्ति जिस व्यवसाय में अधिकतम होगी, व्यक्ति उसी व्यवसाय विशेष को चुनने का प्रयास करेगा। ठीक यही स्थिति शिक्षा के क्षेत्र में भी लागू होती है। अपनी रुचि के अनुसार जो व्यक्ति शिक्षण कार्य कर रहे हैं तथा उनकी अपेक्षाओं के अनुकूल उन्हें स्तर एवं कार्यदशायें प्राप्त हैं, वे अधिकतम सन्तुष्टि का एहसास कर रहे हैं।

व्यक्ति की रुचि के अतिरिक्त अन्य बहुत से कारक और भी है जो कि व्यक्ति के अधिकतम संतोष प्राप्ति में सहायक होते हैं। चाहे व्यक्ति शिक्षा के क्षेत्र से जुडा हो या फिर किसी और क्षेत्र में कार्य कर रहा हो, आधुनिक आर्थिक युग में उसको सन्तुष्टि का एक प्रमुख कारक आर्थिक कारक है, जो कि किसी भी व्यक्ति की कार्यक्षमता को प्रभावित करता है। चूँकि शिक्षक भी एक सामाजिक प्राणी है, और इस नाते उसे समाज में तमाम उत्तरदायित्वों को भी पूरा करना होता है। जिसकी पूर्ति के लिए उसे अर्थ (धन) की भी आवश्यकता पड़ती है वह छात्रों को शिक्षण के साथ ही साथ मार्गदर्शन भी प्रदान करता है तथा शिक्षण व्यवसाय से सम्बन्धित अन्य दायित्यों की पूर्ति और आदर्श जीवन प्रस्तुत करने का प्रयास करता है। इन जिम्मेदारी एवं दायित्वों की पूर्ति के लिए उसे पारिश्रमिक प्रदान किया जाता है। राष्ट्र के निर्माता एवं समाज के पथ–प्रदर्शक शिक्षक के कृत्य–संतोष में तब कमी आती है जब उसे उसकी मेहनत, कार्यक्षमता, योग्यता एवं कार्य दशाओं के अनुरुप समाज द्वारा उसका आंकलन नहीं किया जाता है।

कृत्य–संतोष सम्बन्धी जो शोध हुऐ हैं उस आधार पर कह सकते हैं कि कृत्य–संतोष एक प्रकार की अभिप्रेरणा है। जिसके फलस्वरुप शिक्षक अपना कार्य सम्पादित करने में असीम आनन्द की अनुभूति करता है। यह सन्तुष्टि सदैव वैयक्तिक स्तर पर अनुभूत की जाती है। कृत्य–संतोष शिक्षक में अन्तर्निहित उसकी विभिन्न मनोवृत्तियों का परिणाम होता है। संकीर्ण अर्थ में इन मनोवृत्तियों का सम्बन्ध मात्र कार्य से ही होता है तथा इसे कई विशिष्ट तत्व प्रभावित करते हैं, **जैसे** – पारिश्रमिक, पर्यवेक्षण, रोजगार की निरन्तरता, कार्य की अवस्थायें, प्रोन्नति के अवसर, योग्यता की स्वीकृति, कार्य का न्यायपूर्ण मूल्यांकन, शिकायतों समस्याओं का शीघ्र निराकरण, नियुक्ति कर्ता द्वारा न्याय संगत व्यवहार आदि। इसके अतिरिक्त कृत्य–संतोष शिक्षक की आयु, स्वास्थ्य, मनोवृत्ति, इच्छा तथा उसके आकांक्षा स्तर से भी प्रभावित होती है। साथ ही शिक्षक की कृत्य–संतोष पर उसके पारिवारिक सम्बन्ध उसकी सामाजिक प्रतिष्ठा, मनोरंजनात्मक प्रसाधन की उपलब्धता, सामाजिक तथा श्रम सम्बन्धी क्रियायें आदि किसी न किसी रुप में कृत्य–संतोष पर अवश्य प्रभाव डालती है।

1.9.2. <u>कृत्य–सन्तुष्टि को प्रभावित करने वाले कारक</u> :–

कृत्य–संतोष को प्रभावित करने वाले कारकों को निम्न तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है –

1.9.2.1. **<u>वैयक्तिक कारक</u>** :– कृत्य–संतोष को प्रभावित करने वाले वैयक्तिक कारक निम्नवत् है–

1.9.2.1.1. **<u>अहं धारणा</u>** :–

अच्छे समुन्नत संस्थान और उसमें उच्च पद पर आसीन होने पर व्यक्ति की जो सामाजिक स्थिति बनती है, उससे वह समाज में अपनी एक पहचान बनाता है। वह व्यवसाय के माध्यम से अपने वर्ग, अपने स्टेट्स में परिवर्तन कर समाज का एक इज्जतदार सदस्य बनता है। जिससे उसको सामाजिक रुप से एक उत्तम व्यक्ति होने की मान्यता मिलती है। जिससे उसका अहं (ego) सन्तुष्ट होता है, इसलिए वह अपने व्यवसाय में सन्तुष्टिकरण का अनुभव करता है। वहीं जहाँ ऐसा नहीं हो पाता, वह अपनें व्यवसाय से संतुष्ट नहीं दिखता है।

1.9.2.1.2. **<u>लिंग</u>** :–

कृत्य–संतोष को प्रभावित करने वाले कारकों में लिंग एक प्रमुख कारक है। शारीरिक बनावट एवं क्षमता में अन्तर के कारण जहाँ महिला यात्रा एवं कार्यक्षेत्र के दूर–दराज के क्षेत्रों में अवस्थित की समस्या को अति महत्वपूर्ण मानती हैं, वहीं पुरुषों के लिए यह छोटी समस्या है। इसी प्रकार पुरुषों के लिए आर्थिक स्थिति बहुत महत्व रखती है, क्योंकि उसके ऊपर पूरे परिवार के पालन पोषण का भार होता है, वहीं महिलाओं की आय परिवार की आय में अधिकांशतः अतिरिक्त वृद्धिकारक होती है क्योंकि प्रायः उसके पति किसी न किसी व्यवसाय से अधिक या अल्प आय तो अर्जित कर ही रहे होते है। यह सभी तथ्य व्यक्ति के कृत्य–संतोष को प्रभावित करते हैं।

1.9.2.1.3. **<u>आश्रितों की संख्या</u>** :–

किसी व्यक्ति के ऊपर कितने लोगों की जिम्मेदारी है, यह बात भी व्यक्ति के कृत्य–संतोष को प्रभावित करती है। जहाँ एकल परिवार में कम लोगों की जिम्मेदारी होती है, वहीं संयुक्त परिवार में आश्रितों की संख्या बढ़ जाने से अधिक जिम्मेदारी एवं अधिक आर्थिक बोझ पड़ता है। एक व्यक्ति के ऊपर कितनी जिम्मेदारियाँ हैं ? और उसकी आय कितनी है ? इन बातों के आधार पर व्यक्ति के कृत्य–संतोष का स्तर निर्धारित होता है।

1.9.2.1.4. **<u>आयु</u>** :–

व्यक्ति की आयु के साथ–साथ उसकी आकांक्षाऐ, उसकी विचारधारा एवं जीवन के प्रति दृष्टिकोंण में बदलाव आता रहता है तथा उसके शौक, खान–पान, जिम्मेदारियाँ व रुचियाँ भी बदलतीं रहतीं हैं जिस कारण व्यक्ति की कृत्य–संतुष्टि में परिवर्तन हो जाता है।

1.9.2.1.4. **अनुभव** :–

किसी कार्य विशेष में व्यतीत किये गये समय या अनुभव का उस व्यक्ति के कृत्य–संतोष पर गहरा प्रभाव पड़ता है, क्योंकि कार्य विशेष की जटिलताओं से वह भलीभाँति परचित हो जाता है और उनसे निपटने की उसे आदत हो जाती है। अनुभव के साथ–साथ उसके पद और प्रतिष्ठा, आय एवं सुविधाओं में भी वृद्धि होती रहती है, जिस कारण वह अपने कार्य से अधिक संतुष्टि का अनुभव करता है।

1.9.2.1.5. **कार्य के घण्टे एवं समय–सारणी** :–

व्यक्ति के कृत्य–संतोष में उसके कार्य के घण्टों एवं समय–सारणी का भी प्रभाव पड़ता है। अगर कार्य के घण्टे कम हैं तो स्वाभाविक है कि वह व्यक्ति उन दूसरे व्यक्तियों की अपेक्षा अधिक संतुष्ट होगा, जिनके कार्य के घण्टे अधिक होंगे। जैसे– यदि एक शिक्षक के समय–सारणी में आवंटित चक्र एवं विषय उसकी सुविधा के अनुकूल हैं तो व्यक्ति की संतुष्टि में वृद्धि होती है, वहीं समय–सारणी प्रतिकूल होने पर व्यक्ति की संतुष्टि बाधित होती है। ठीक ऐसी ही स्थिति सिफ्ट–वाइस ड्यूटी करने वाले कर्मचारियों की कृत्य–संतुष्टि की अपेक्षा निश्चित समय वाली ड्यूटी करने वाले कर्मचारी की कृत्य–संतुष्टि अन्य बातें समान रहने पर अधिक होती है।

1.9.2.1.6. **आकांक्षा स्तर** :–

उच्च आकांक्षा–स्तर रखने वाला व्यक्ति जहाँ पद व कार्य के अनुरूप आय व सुविधाओं से भी संतुष्ट नहीं होता, वहीं सामान्य आकांक्षा–स्तर रखने वाला व्यक्ति पद व कार्य के अनुरूप आय व सुविधाओं से संतुष्ट हो जाता है तथा निम्न आकांक्षा स्तर रखने वाला व्यक्ति पद व कार्य के अनुरूप कम आय व सुविधाओं से भी संतुष्ट हो जाता है।

1.9.2.1.7. **बुद्धि** :–

व्यक्ति की बुद्धि का प्रभाव भी उसके कृत्य–संतोष पर पड़ता है। उच्च बुद्धि–लब्धि वाला व्यक्ति पहले तो अपने कार्यों का सम्पादन कुशलता पूर्वक करता है और यदि कोई समस्या आ भी जाती है तो समस्या पर विचार कर उसे हल करने का धैर्य पूर्वक प्रयास करता है जबकि कम बुद्धि–लब्धि वाला व्यक्ति छोटी–छोटी समस्याओं से भी विचलित हो जाता है। उच्च बुद्धि–लब्धि वाले व्यक्ति आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति मितव्ययिता पूर्वक खर्च करते हुये सामान्य आय में भी जीवन–यापन करते हुए बचत भी कर लेते हैं, जिससे भविष्य की चिंताओं से मुक्त रहते हैं जबकि निम्न बुद्धि–लब्धि वाले व्यक्ति अपनी आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने में कठिनाई का अनुभव करते हैं।

1.9.2.1.8. **शिक्षा** :–

शिक्षा का व्यक्ति के कृत्य–संतोष पर अत्यधिक प्रभाव पड़ता है क्योंकि शिक्षा व्यक्ति के स्वास्थ्य, व्यक्तित्व, विचारधारा, जीवन के प्रति दृष्टिकोंण, आर्थिक क्रियाओं के सम्पादन व बचत, अन्य

आय के स्रोत के सृजन, समस्याओं के निस्तारण, उपलब्ध संसाधनों के आधार पर लक्ष्य एवं आवश्यकताओं का निर्धारण व समायोजन, नवीन ज्ञान के प्रति रुचि, अवकाश का सदुपयोग तथा सहकर्मी, छात्र, संस्था व संस्था के प्रमुख के साथ संतुलन स्थापित करने में प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है। जब व्यक्ति को अपनी योग्यतानुसार कार्य मिल जाता है तो वह संतुष्ट रहता है और यदि उसे अपनी योग्यतानुसार कार्य नहीं मिल पाता तो वह पूर्ण संतुष्टि का अनुभव नहीं कर पाता है।

1.9.2.1.9. व्यक्तित्व :–

कृत्य–संतोष आंतरिक अनुभूति का विषय होने के कारण व्यक्ति के व्यक्तित्व से अवश्य प्रभावित होती है। विभिन्न आधारों पर वर्गीकृत भिन्न–भिन्न व्यक्तित्व वाले व्यक्तियों का अपने कार्य, कार्यदशाओं, भविष्य की प्रति आशा, कार्य से प्राप्त आय व अन्य सुविधाओं के प्रति दृष्टिकोंण भी प्रायः भिन्न–भिन्न होता है जिसके कारण एक स्थिति विशेष से कुछ लोग संतुष्टि का अनुभव करते हैं वहीं अन्य असंतुष्टि का अनुभव करते हैं।

1.9.2.1.10. आवश्यकताएँ :–

व्यक्ति की तात्कालिक तथा दीर्घकालिक आवश्यकताएँ भी उसके कृत्य–संतोष को प्रभावित करती हैं अगर किसी को पैतृक सम्पत्ति में घर और घरेलू आवश्यकताओं की वस्तुएँ प्राप्त हो गई हैं तो उसकी आवश्यकताएँ अन्य से कम होंगी। इसी प्रकार जिनके परिवार में सभी स्वस्थ होंगे उनकी आवश्यकताएँ भी उनसे कम होंगी जिनके परिवार में कुछ सदस्य बड़ी बीमारी से ग्रसित होंगे। अतः अधिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अच्छी आर्थिक आय भी कम पड़ जाती है जिससे आवश्यकताओं की पूर्ति में कठिनाई या ऋण–ग्रस्तता के चलते उसके कृत्य–संतोष का स्तर प्रभावित होता है।

1.9.2.1.11. मूल्य (आदर्श) :–

पारिवारिक व सामाजिक मान्यताओं, संस्कृति, मूल्य व आदर्शों के प्रभाव द्वारा व्यक्ति के मूल्यों व आदर्शों का निर्माण होता है। प्रायः प्रत्येक व्यक्ति अपने मूल्यों, आदर्शों के अनुरूप जीवन शैली अपनाता है। जिससे कुछ लोग 'सादा जीवन उच्च विचार' में विश्वास करते हैं वहीं कुछ लोग भौतिकतावादी जीवन जीना चाहते हैं तथा कुछ लोग मध्यम मार्ग का अनुसरण करते हुए पास–पड़ोस व अपने स्तरानुसार जीवन शैली पसन्द करते हैं। अपने स्तर को बनाये रखने में सफलता/असफलता का उनके कृत्य–संतोष में प्रभाव पड़ता है।

1.9.2.1.12. स्वास्थ्य :–

"स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है"। इस उक्ति से स्पष्ट है कि व्यक्ति का स्वास्थ्य उसके शरीर के साथ–साथ मानसिक स्थिति का भी परिचायक है। संतुलित शरीर वाले व्यक्ति अपनी जिम्मेदारियों को सहजता पूर्वक सम्पन्न कर लेते हैं, नवीन कार्य दशाओं व जिम्मेदारियों

को उत्साह पूर्वक सम्पादित करते हैं तथा अतिरिक्त कार्य को आनन्द के साथ पूर्ण करने का प्रयास करते हैं। वहीं शारीरिक दृष्टि से कमजोर व्यक्ति अपनी जिम्मेदारियों को भी कभी–कभी बोझ समझ कर करते हैं अथवा टालने का प्रयास करते है। स्वस्थ व्यक्ति प्रसन्नचित रहता है जिस कारण वह अपने कार्य से संतुष्टि का अनुभव कार्य की प्रकृति के अनुसार करता है वहीं अस्वस्थ व्यक्ति अपने कार्य से असंतुष्टि अपने खराब स्वास्थ्य के कारण भी रख सकता है।

1.9.2.2. <u>कार्य में सन्निहित कारक</u> :–

कृत्य–संतोष को प्रभावित करने वाले कार्य में सन्निहित कारक निम्नवत् है –

1.9.2.2.1. <u>कार्य का स्वरुप तथा प्रकार</u> :–

कार्य का स्वरूप तथा प्रकार व्यक्ति के कृत्य–संतोष को प्रभावित करता है। शिक्षा के स्तर के अनुसार यदि कार्य मिलता है तो व्यक्ति के संतुष्ट होने की प्रबल सम्भावना रहती है। समाज विभिन्न प्रकार के कार्यों में संलग्न व्यक्तियों के प्रति अलग–अलग धारणा रखता है और कार्य के स्वरूप के अनुसार ही समाज में कार्य विशेष में कार्यरत व्यक्ति को स्थान, सम्मान एवं प्रतिष्ठा मिलती है। वहीं दूसरी ओर कार्य विशेष के स्वरूप तथा प्रकार की कार्यदशाओं के साथ व्यक्ति का तादाम्य स्थापित हो जाने पर व्यक्ति अधिक कुशलता एवं रुचि के साथ कार्य करते हुए आनन्द का अनुभव करता है।

1.9.2.2.2. <u>अपेक्षित कौशल</u> :–

वर्तमान समय में जीवन के प्रत्येक छोटे से छोटे कार्य को कुशलता पूर्वक सम्पादित करने के लिए प्रशिक्षण की आवश्यकता की अपेक्षा की जाती है। यह पूर्णतया सत्य भी है कि कार्य विशेष में सफलता के लिए अपेक्षित कौशल का होना नितान्त आवश्यक है, क्योंकि अकुशल व्यक्ति की अपेक्षा कुशल (प्रशिक्षित) व्यक्ति द्वारा जहाँ एक ओर कार्य का सम्पादन सहजता से पूर्ण हो जाता हैं, वहीं उस कार्य विशेष के अभीष्ट् (लक्ष्य) की पूर्ति की अधिकाधिक सम्भावना रहती है। अपेक्षित कौशल प्राप्त व्यक्ति का आत्मबल उच्च रहता है, क्योंकि उसे यह एहसास रहता है कि उक्त कार्य को वह बिना किसी बाधा के पूर्ण कर लेगा और जब व्यक्ति अपने लिए निर्धारित कार्य को सफलता पूर्वक पूरा कर लेता है तो उसे कृत्य–संतोष का अनुभव होता है अन्यथा की स्थिति में उसको असंतोष बना रहता है।

1.9.2.2.3. <u>व्यवसाय सम्बन्धी प्रतिष्ठा</u> :–

कार्य के प्रति सामाजिक दृष्टिकोंण व्यक्ति के कृत्य–संतोष को प्रभावित करता है क्योंकि समाज में व्यक्ति को उसके कार्य, पद एवं व्यवसाय की प्रतिष्ठा के आधार पर महत्व मिलता है। व्यवसाय की प्रतिष्ठा के आधार पर व्यक्ति अपना मूल्यांकन करता है और संतुष्ट होने पर उस कार्य में स्थायित्व का प्रयास करता है। कई बार तो ऐसा देखने को मिलता है कि उच्च आय और उच्च पद को छोड़कर ऐसे व्यवसाय में जाते है जिसकी सामाजिक प्रतिष्ठा उच्च होती हैं।

1.9.2.2.4. <u>भौगोलिक एवं भौतिक स्थिति</u> :–

कार्य स्थान की भौगोलिक स्थिति, निवास से कार्यस्थल की दूरी, शहरी व ग्रामीण परिवेश, वहाँ की जलवायु, मार्ग की उपलब्धता, यातायात के साधन, भौतिक संसाधनों की उपलब्धता, भवन की स्थिति, खेलकूद के मैदान व शान्ति पूर्ण वातावरण आदि व्यक्ति के कृत्य–संतोष को प्रभावित करते हैं।

1.9.2.2.5. **कार्य में आधुनिक तकनीकी का प्रयोग** :–

जिस कार्य में व्यक्ति संलग्न है यदि उस कार्य में आधुनिक तकनीकी के उपकरण उपलब्ध हों तथा इनका प्रयोग किया जा रहा हो तो व्यक्ति के कार्य सम्पादन में आसानी के साथ–साथ कार्य में रुचि भी बनी रहती है तथा कार्य उद्देश्य की अधिकतम पूर्ति की सम्भावना रहती है। कार्य के ससमय पूर्ण हो जाने से कर्मी को स्वत्रन्ता व विश्वास की अनुभूति होती है। जिसका प्रभाव उसके कृत्य–संतोष में पड़ता है।

1.9.2.2.6. **सहकर्मियों का व्यवहार** :–

व्यक्ति जिन लोगों के बीच रहकर कार्य करता है वह उनके व्यवहार, आपसी सम्बन्ध, विनोदप्रियता, सहयोग की भावना आदि से प्रभावित होता है। अगर सहकर्मियों का व्यवहार सकारात्मक है तो वह अच्छा महसूस करता है इसके विपरीत नकारात्मक व्यवहार के सहकर्मी होने से अन्य अच्छी सुविधाएँ भी उसे संतुष्ट नहीं रख पाती क्योंकि सहकर्मियों के व्यवहार से होने वाली हानि के प्रति वह आशंकित बना रहता है तथा अनजान भय से ग्रसित रहता है। इस प्रकार सहकर्मियों के व्यवहार का उसके कृत्य–संतोष पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

1.9.2.3. **नियोक्ता से सम्बन्धित कारक** :–

कृत्य–संतोष को प्रभावित करने वाले नियोक्ता से सम्बन्धित कारक निम्नवत् है –

1.9.2.3.1. **सुरक्षा** :–

व्यवसाय की निश्चितता भी कार्य में सन्तुष्टिकरण को बहुत प्रभावित करती है। अगर कर्मचारी अल्पकालीन नियुक्त हुआ है, तो उसका कार्य के प्रति रूझान भी कम रहेगा और वों अपनी जिम्मेदारियों कों कम महसूस करेगा। तदर्थ नियुक्त कर्मचारियों की अपेक्षा स्थाई रूप से नियुक्त कर्मचारियों में कृत्य–संतोष अधिक पाया जाता है। इसका कारण पूर्णतः मनोवैज्ञानिक है जब हमारे कार्य की निश्चितता होती है तब हम अपने व्यवसाय के प्रति पूर्णतः निश्ंचित और समर्पित हो जाते हैं और इसके न होने पर अनिश्चितता की स्थिति में मन से हम कार्य नहीं करते क्योंकि हमे अपने व्यवसाय में सन्तुष्टिकरण का अनुभव नहीं होता। जिस कार्य में व्यक्ति संलग्न है अगर वह स्थायी है तथा भविष्य के प्रति निश्चिंतता के साथ आर्थिक सुरक्षा (पेंशन, भविष्य निधि, दुर्घटना लाभ आदि) होती है तो व्यक्ति पूर्ण मनोयोग से उस कार्य में रुचि रखता है तथा अपने उत्तरदायित्व की पूर्ति करने का प्रयास करता है। रोजगार एवं आर्थिक सुरक्षा की स्थिति से उसका कृत्य–संतोष प्रभावित होता है।

1.9.2.3.2. **वेतन** :–

आजकल के भौतिक युग में पैसा (धन) किसी भी व्यक्ति को संतुष्ट रखने के लिए एक महत्वपूर्ण कारक है। चाहे वह शिक्षक ही क्यूँ न हो, क्योंकि शिक्षक भी तो एक सामाजिक प्राणी ही है। उसकी भी अपनी आवश्यकतायें और जिम्मेदारियाँ हैं। इन आवश्यकताओं और जिम्मेदारियों को पूर्ण करने के लिए धन की आवश्यकता पड़ती है। शिक्षक को धन उसके वेतन के माध्यम से उपलब्ध होता है अर्थात सन्तुष्टिकरण का एक मुख्य कारक शिक्षक का वेतन भी है। उत्तम वेतन प्राप्त शिक्षक अपने व्यवसाय से आर्थिक रूप से पूर्णतः सन्तुष्ट होता है। जिसके परिणामस्वरूपा वह अपने व्यवसाय में पूर्णतः समर्पित रहता है। जहाँ तक अध्ययनों के निष्कर्ष का प्रश्न है, वे एक ओर वेतन को महत्वपूर्ण मानते हैं और दूसरी ओर वे अन्य कारकों को अपेक्षाकृत कम महत्वपूर्ण मानते हैं। कभी वेतन कृत्य–संतोष के लिए प्रधान कारक होता है तो कभी गौण। कुछ उद्योगपतियों और प्रबन्धकों का विचार है कि वेतन–वृद्धि कर्मचारियों के संतोष/असंतोष में औषधि की भूमिका निभाती है। पाया भी ऐसा ही गया है। उस कम्पनी के कर्मचारी कृत्य–असंतोष के अधिक शिकार थे, जहाँ वेतन कम था, चाहे उन्हें अन्य सुविधाएँ प्राप्त थीं, जैसे– चिकित्सा, पेंशन, आवास की सुविधा, बच्चों के लिए शिक्षा सुविधा, भविष्य के लिए अन्य गारण्टी। किन्तु उस कम्पनी के कर्मचारी अपने कार्यों से संतुष्ट थे जहाँ वेतन अधिक था किन्तु अन्य सुविधाएँ नाममात्र को थीं। अध्ययनों द्वारा यह ज्ञात होता है कि अधिक वेतन देने वाले व्यवसायों की प्रायः सामाजिक प्रतिष्ठा अधिक होती है जिसके कारण उनमें कार्यरत कर्मचारी को अधिक कृत्य–संतोष की अनुभूति होती है।

1.9.2.3.3. **प्रोन्नति के अवसर** :–

व्यक्ति के व्यवसाय में यदि प्रोन्नति के अवसर मिलते हैं, तो यह प्रेरक का कार्य करते हैं। यदि व्यवसाय में प्रोन्नति होने के अवसर नजर आते हैं और उत्तम कार्य पर उन्नति की जाती है, तो ऐसी दशाओं में कर्मचारी मन से कार्य करने के लिए प्रेरित होता है। अधिक समय तक एक ही व्यवसाय में एक जैसा कार्य करते रहने से वह अरुचिकर लगने लगता है, जबकि प्रोन्नति मिलने से व्यक्ति के कार्य व जिम्मेदारी में नवीनता आ जाने के कारण कार्य रुचिकर बना रहता है, जिससे व्यक्ति के कृत्य–संतोष में वृद्धि होती है।

1.9.2.3.4. **कार्य की अवस्थायें** :–

कार्य की अवस्थायें यदि सहज होती है तो व्यक्ति खुशी–खुशी अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन करता है। अच्छे, स्वास्थ्य तथा मैत्रीपूर्ण वातावरण में व्यक्ति अगर कार्य करता है, तो वह अपनी और परेशानियों को नजरअंदाज कर उतनी देर खुशी और सन्तुष्टि का अनुभव करता है जबकि कार्य की अवस्थायें जटिल अथवा प्रतिकूल होने पर व्यक्ति कुंठित होने लगता है और यही कुंठा व्यक्ति की कार्य के प्रति रुचि को शनैः शनैः समाप्त कर अरुचि में बदल देती है, जिससे व्यक्ति के कृत्य–संतोष का स्तर निम्न होने लगता है। इसप्रकार कार्य की दशाओं पर भी व्यक्ति का कृत्य–संतोष निर्भर करता है। एक ही संस्थान में यदि कुछ कर्मचारियों के साथ स्नेहपूर्ण और मैत्रीपूर्ण ढंग से कार्य लिया जाए,

उनके कार्य की सराहना की जाए और कुछ कर्मचारियों के साथ इसके विपरीत व्यवहार किया जाए, तो प्रथम प्रकार के कर्मचारियों का कृत्य–संतोष दूसरे वालों की तुलना में अधिक होगा।

1.9.2.3.5. **उत्तरदायित्व** :–

व्यक्ति के कृत्य–संतोष को उसके ऊपर कार्य के भार का स्तर भी प्रभावित करता है। जब पद और योग्यता के अनुरूप उत्तरदायित्व होते हैं, तो उन्हें पूरा करने में कोई परेशानी नहीं होती परन्तु कर्मियों की कमी अथवा अन्य सहकर्मियों की अनुपस्थित में अतिरिक्त कार्य का भार होने पर व्यक्ति दबाव महसूस करने लगता है तथा जब अतिरिक्त कार्य को पूरा करने के लिए उसे कोई अतिरिक्त आय नहीं मिलती तब वह छोटे से अतिरिक्त कार्य को भी भार समझने लगता है जिस कारण उसका कृत्य–संतोष प्रभावित होता है। उदाहरण के लिए प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षक शिक्षण के अतिरिक्त मतगणना, जनगणना, पशुगणना, पल्स–पोलियो अभियान, चुनाव ड्यूटी, विभिन्न स्तर की वार्षिक परीक्षाओं में ड्यूटी, शिक्षा से वंचित बच्चों की गणना, विद्यालय भवन निर्माण, मिडडेमील (भोजन–व्यवस्था), विद्यालय सम्बन्धी अन्य प्रलेख आदि की पूर्ति की अतिरिक्त जिम्मेदारी के बोझ से अपने मूल शिक्षण कार्य में कम समय दे पाते हैं, जिससे उसके कृत्य–संतोष में गिरावट आने लगती है।

1.9.2.3.6. **पर्यवेक्षक** :–

नियोक्ता अथवा उसके प्रतिनिधि द्वारा निरीक्षण भी किसी भी व्यवस्था में सन्तुष्टिकरण का एक कारक है। प्रायः पर्यवेक्षक (निरीक्षण–कर्ता) द्वारा नियमित, साप्ताहिक, मासिक पर्यवेक्षण को अच्छा माना जाता है तथा इससे त्रुटियों को सुधारने के लिए मार्गदर्शन प्राप्त होते रहते हैं, परन्तु कभी–कभी पर्यवेक्षक का व्यवहार कटु होने, आये दिन कार्य में बाधा पहुँचाने, प्रत्येक कार्य में कमी निकालने की प्रवृत्ति आदि व्यक्ति के कृत्य–संतोष में बाधक बन जाती है।

1.9.2.3.7. **व्यावसायिक निर्देशन** :–

व्यावसायिक निर्देशन का व्यवसाय विशेष की लक्ष्य पूर्ति में महत्वपूर्ण भूमिका है। समय–समय पर कार्य से सम्बन्धित जटिलताओं को दूर करने में व्यावसायिक निर्देशन सहायक होता है तथा उत्पादन (आउटपुट) अधिक व गुणवत्तापूर्ण होता है। नियोक्ता कार्य से संतुष्ट होकर कर्मियों को किसी प्रकार का लाभ देकर कार्य के प्रति उत्साह बनाये रखता है। जिससे कार्य सरल व रुचिपूर्ण हो जाता है और कर्मी के संतोष में वृद्धि होती है।

1.9.2.3.8. **मौखिक प्रशंसा और स्वीकृति** :–

उत्तम कार्य के परिणामस्वरूप व्यक्ति प्रशंसा का अभिलाषी होता है। अगर उचित समय पर कर्मचारी के कार्य की, उसकी कार्यशैली की प्रशंसा की जाती है। तो उसको अपने कार्य से सन्तुष्टि प्राप्त होती हैं। कार्य का उचित मूल्यांकन भी शिक्षक को उसके व्यवसाय में सन्तुष्टि प्रदान करता है। समय–समय पर कार्य का उचित मूल्यांकन भी व्यक्ति को उसके व्यवसाय में सन्तुष्ट करने में सहयोग

देता है। पक्षपात पूर्ण व्यवहार व्यक्ति के असन्तुष्ट होने में प्रभावी भूमिका निभाता है। किसी के कार्य का उचित मूल्यांकन कर यदि सकारात्मक मौखिक प्रशंसा की जाती है तो व्यक्ति आगामी कार्यों को और अच्छे से सम्पादित करने का प्रयास करता है जबकि उचित मौखिक प्रशंसा व स्वीकृति न मिलने से व्यक्ति हतोत्साहित हो जाता है, जिससे वह योग्यता सम्पन्न होते हुए भी कार्य को किसी तरह पूरा करने का ही प्रयास करता है। उसमें नवीनता व कुशलता के लिए कोई प्रयास नहीं करता। उचित मौखिक प्रशंसा व स्वीकृति मिलने से व्यक्ति का आत्मबल बढ़ जाता है, जिससे उसके कृत्य–संतोष के स्तर में वृद्धि होती जाती है।

1.9.2.3.9. अन्य समस्याओं का निराकरण :–

जिस विद्यालय अथवा संस्थान में हम कार्य कर रहे हैं, उसमें यदि नियोक्ता द्वारा हमारीं व्यवसाय सम्बन्धी परेशानियों का हल कर दिया जाता है, तो वह संस्थान अपने कर्मचारियों को अवश्य ही सन्तुष्ट रखेगा। प्रायः यह देखा गया है कि यदि व्यक्ति 30 साल की सेवाओं के उपरान्त भी अपने फन्ड (भविष्य निधि) पेन्शन आदि के लिए सालों परेशान रहते हैं तो वे अन्त में यही कहते देखे जाते हैं कि इस व्यवसाय में उम्र भर सेवा करने के बावजूद उनकी समस्याओं का निवारण करने में प्रबन्ध–तंत्र ने नाम मात्र भी अपना रूझान नहीं दिखाया। इसी प्रकार की अन्य समस्याओं का निवारण न होने पर भी व्यक्ति की सन्तुष्टि प्रभावित होती है।

1.10. समायोजन का अर्थ तथा इसकी व्यावहारिक जीवन के लिए उपयोगिता :–

हम जिस स्थान में रहते है। वहाँ पर विद्यमान समस्त भौतिक–अभौतिक वस्तुओं अर्थात अपने चारों ओर विद्यमान वातावरण से हमें (मानव को) सामंजस्य करना पडता है, इस सामंजस्य को समायोजन कहते है। समायोजन दो तरीके से हो सकता है, या तो हम वातावरण, परिवेश के अनुकूल अपने को बदले अथवा वातावरण परिवेश को अपने अनुकूल बदलें, अन्यथा हमारा जीवन संभव नहीं होगा या अत्यधिक जटिलतायें आयेंगी। उदाहरण स्वरुप गर्मी के पश्चात् जाड़ा (ठन्ड़) आने पर जिस प्रकार मौसम के अनुकूल हम अपनी वेशभूषा (कपड़ों) में परिवर्तन करते हैं यही समायोजन है। वैज्ञानिक आधुनिक युग में इस विचार धारा को अधिक बल मिला है कि कुछ हम बदलें और कुछ वातावरण को बदलने का प्रयास करें। शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षक के समायोजन हेतु उसकी कार्य दशायों, आवश्यकताओं की पूर्ति, रुचि आदि को ध्यान में रखकर तथा शिक्षक को मानसिक रुप से कार्य विशेष हेतु प्रशिक्षित कर समायोजन कराया जा सकता है। समायोजन हो जाने से व्यावहारिक जीवन में व्यक्ति मानसिक एवं शारीरिक रुप से पूर्ण स्वस्थ रहता है। जिससे उसकी कार्य क्षमता में वृद्धि के साथ ही साथ कार्य कुशलता में भी वृद्धि होती है तथा शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति के स्तर में भी वृद्धि हो जाती है। जिससे समाज एवं राष्ट्र दोनों के विकास को बल मिलता है।

1.10.1. समायोजन का अर्थ एवं परिभाषाऐं :–

मानव जीवन की परिस्थितियाँ बराबर बदलतीं रहतीं हैं। शैशव से लेकर वृद्धावस्था तक मनुष्य के सम्मुख नई–नई समस्यायें और नई–नई परिस्थितियाँ आतीं रहतीं हैं और वह अपनी बुद्धि तथा अन्य सामर्थ्यों से काम लेते हुए बराबर इन समस्याओं को सुलझाने और परिस्थितियों से निपटने की चेष्टा करता है। दूसरे शब्दो में, इस सतत प्रक्रिया का नाम ही जीवन है। यह समायोजन की प्रक्रिया है।

इस प्रकार समायोजन की प्रक्रिया के दो मुख्य तत्व होते हैं, एक तो जीव की आवश्यकतायें, और दूसरा, उन आवश्यकताओं को प्रभावित करने वालीं परिस्थितियाँ। ये आवश्यकतायें जैव–जनित अथवा समाज जनित, व्यक्तिगत अथवा समूहगत किसी भी प्रकार की हो सकतीं हैं। दूसरी ओर इन आवश्यकताओं को प्रभावित करने वाली परिस्थितियाँ व्यक्ति में भी हो सकती हैं और उसके बाहर भी। व्यक्ति में उसकी शारीरिक और मानसिक स्थितियाँ, सामर्थ्य, अभिरुचियाँ, अभिवृत्तियाँ आदि इसकी आवश्यकताओं को प्रभावित करती है। उदाहरण के लिए निर्बल व्यक्ति अपनी अनेक मनोवैज्ञानिक प्रेरणाओं को सन्तुष्ट नहीं कर पाते और उनकी निर्बलता का उनकी आवश्यकताओं पर महत्वपूर्ण प्रभाव पडता है। परिवेश जनित परिस्थितियों में भौगोलिक परिस्थितियाँ, सामाजिक परिस्थितियाँ, राजनैतिक परिस्थितियाँ और सांस्कृतिक परिस्थितियाँ मुख्य हैं। इन परिस्थितियों से कभी तो आवश्यकताओं की तुष्टि में सहायता मिलती है और कभी उनमें रुकावट पड़ती है। इस प्रकार जीव की आवश्यकताओं पर परिस्थितियों का प्रभाव दो तरह का हो सकता है – अनुकूल अथवा प्रतिकूल। अनुकूल प्रभाव से आवश्यकताओं की सन्तुष्टि में सहायता मिलती है, जबकि प्रतिकूल प्रभाव से उनकी तुष्टि में बाधा पड़ती है।

समायोजन को विभिन्न विद्वानों द्वारा निम्नवत् परिभाषित किया गया है –

लॉरेंस एफ0 शैफर के शब्दों में –

"समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक जीवित प्राणी अपनी आवश्यकताओं और इन आवश्यकताओं की तुष्टि को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों में एक सन्तुलन बनाये रखता है।"

डॉ0 आत्मानन्द मिश्र[14] के शब्दों में –

"पर्यावरण या उसमें होंने वाले परिवर्तनों के अनुकूल अपने व्यवहार के तरीकों को ढूँढ़ने और उनके अनुसार चलने की प्रक्रिया। किसी विशेष पर्यावरण में रहने की उपयुक्तता अर्जित करने की प्रक्रिया। सामाजिक शक्तियों के साथ व्यक्ति या समूह की स्वीकार करने, अनुमति देने, या समझौता करने की प्रक्रिया। इसमें व्यक्ति अपने पर्यावरण से अपना सम्बन्ध समरस करने का प्रयास करता है। वह अपना आचरण सामाजिक मान्यताओं, मूल्यों और आदर्शों के अनुकूल बना लेता है। इससे उसे

14. आत्मानन्द मिश्रा, 'शिक्षाकोश', कानपुर; ग्रन्थम रामबाग, 1977, पृष्ठ–10 एवं 11

समाज में आदर मिलता है, स्वयं कार्यकुशल बनता है और प्रसन्नचित्त रहता है। जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए किसी सीमा तक परिस्थितियों से समायोजन करना आवश्यक होता है। इसी अर्थ में शिक्षा का जैविक उद्देश्य पर्यावरण से समायोजन कराना माना जाता है।''

डॉ0 एस0एस0 माथुर[15] के शब्दों में, –

''जो अपनी असफलता को यथार्थ में रूप में ले लेते हैं और जो कुछ उनके पास है, उससे संतुष्ट हो जाते हैं और परिस्थितियों का साहस से सामना करते हैं, वे व्यक्ति भली प्रकार समायोजित कहे जा सकते हैं। किन्तु वे लोग जो सदैव अपनी असफलताओं के बारे में सोचते रहते हैं, अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए, धन की पूर्ति के लिए, शक्ति आदि के लिए जो असाधारण ढंगों का सहारा लेते हैं, या बड़े अभिमानी या हठी हो जाते हैं या कल्पना की अधिकता के कारण दिवा–स्वप्न देखने लगते हैं, ऐसे व्यक्तियों के व्यक्तित्व को कुसमायोजित व्यक्तित्व कहा जाता है।''

1.10.2. **समायोजन में बाधक तत्व** :– शिक्षकों के समायोजन में बाधक तत्व निम्नलिखित है –

1.10.2.1. नैतिक संकट :–

आज के विद्यार्थी को क्या उचित और क्या अनुचित है, इसका पता नहीं है। अपने अध्यापकों से ही वह इस सम्बन्ध में इतने अधिक परस्पर विरोधी विचार सुनता और परस्पर विरोधी व्यवहार देखता है कि उसकी बुद्धि काम नहीं करती। उदाहरण के लिए एक ओर वह भौतिकवादी विचार धारा को सुनता है तो दूसरी ओर उसे अध्यात्मवादी विचारधारा के पक्ष में उतने ही अच्छे तर्क सुनाई पड़ते हैं। एक ओर धर्म का समर्थन करने वाले हैं तो दूसरी ओर कुछ शिक्षक घोर नास्तिक भी होते हैं। इस प्रकार के परस्पर विरोधी नैतिक सिद्धान्तों के उपस्थित होने पर विद्यार्थी किंकर्तव्यविमूढ़ हो जाता है और उसकी समझ में कुछ नहीं आता कि वह क्या करे और क्या न करे। परिणाम यह होता है कि जिसे जो अच्छा लगता है वह वही करता है और पाशविक प्रवत्तियों की अभिव्यक्ति कुसमायोजन में दिखलाई पड़ती है।

1.10.2.2. आदर्श शिक्षकों का अभाव :–

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में शिक्षकों में आदर्श बहुत कम रह गये हैं। इसके मुख्य कारण उनकी हीन आर्थिक स्थिति, कार्य करने की विषम दशायें, नियुक्तियों में घोर पक्षपात, समाज में अध्यापक की सम्मान हीन स्थिति इत्यादि हैं। आज का शिक्षक समाज से दिशा लेता नजर आ रहा है दिशा देने की शक्ति अपने अन्दर नहीं पाता। सरकार भी इस ओर से उदासीन है, सरकारी सेवा में कार्यरत शिक्षक तो अपना जीवन–यापन कर रहे हैं परन्तु प्राईवेट स्कूल/कालेजों में शिक्षकों को सरकार द्वारा निर्धारित दैनिक मजदूरी से भी कम वेतन में अधिक काम लिया जाता है जिसके सम्बन्ध में आजादी से अभी तक किसी भी सरकार ने सफल कदम नहीं उठाये। कुछ अनुदानित व सरकारी शिक्षकों द्वारा

---

15. एस0एस0 माथुर, 'शिक्षा मनोविज्ञान' आगरा; विनोद पुस्तक मन्दिर, द्वादश संस्करण पृष्ठ–518

उच्च अधिकारियों से सम्बन्ध के चलते एवं शिक्षक संघ के पदाधिकारी शिक्षकों द्वारा आये दिन विद्यालय से अनुपस्थित रहना देखकर अन्य शिक्षक भी खानापूर्ति के लिए प्रेरित होते है और अपने आदर्श खो देते है।

1.10.2.3. दूषित शिक्षा–प्रणाली :–

भारत के स्वतन्त्र होने के पश्चात् से आज तक कितने ही शिक्षा आयोगों एवं समितियों में हमारे शिक्षा प्रणाली की आलोचना की गई है और उसके दोषों की ओर ध्यान आकर्षित किया गया परन्तु कम्पनी सरकार ने भारत में जो शिक्षा प्रणाली सरकारी क्लर्क पैदा करने के लिए स्थापित की थी वह आज भी उसी रुप में चलती प्रतीत होती है। परीक्षक पद पर शिक्षा प्रणाली में घोर भ्रष्टाचार दिखलाई पड़ता है। विश्वविद्यालयों की परीक्षाओं में परीक्षकों से मिलकर नम्बर बढ़वा लेना, विभिन्न परीक्षकों का आपस में मिलकर एक दूसरे के विद्यार्थियो को उच्च प्राप्तांक दे देना, अनुसंधान कार्य की जाँच में पक्षपात इत्यादि सामान्य बाते हैं, सच तो यह है कि– आज की शिक्षा प्रणाली में पढ़ने लिखने में और अच्छे अंक पाने में कोई सम्बन्ध नहीं रह गया है।

परीक्षा प्रणाली के अतिरिक्त कक्षाओं में शिक्षक शिक्षार्थी की संख्या में विषमता, पाठ्यक्रमेत्तर क्रियाकलापों का अभाव, पाठ्यक्रमों में अधकचरी पाठ्यपुस्तकों को रखना आदि कितने ही ऐसे दोष हैं, जो कि आधुनिक शिक्षा प्रणाली को दूषित बनाये हुए हैं। दूषित शिक्षा प्रणाली के रहते विद्यार्थियों एवं शिक्षकों में कुसमयोजन को दूर करने की आशा करना घोर अज्ञान का परिचायक है।

1.10.2.4. राजनैतिक दल बन्दी :–

आजकल भारतीय कॉलेज और विश्वविद्यालय राजनैतिक दलों के दांव–पेंचों के अड्डे बने हुए हैं। विद्यार्थी संघो में सब कहीं ऐसे विद्यार्थी होते हैं, जो राजनैतिक दलो के एजेन्ट है, और जिनका काम विद्यार्थी संघ में अपने दल की स्वार्थसिद्धि है। विभिन्न राजनैतिक दलों के द्वारा शिक्षकों को अपनी ओर झुकाव करने हेतु उनमें राजनैतिक हस्तक्षेप एवं गुटबन्दी करायी जाती है जिससे कुछ शिक्षक शिक्षण कार्य की जगह राजनैतिक लाभ उठाकर अपना स्थानान्तरण एवं अन्य व्यक्तिगत लाभ के कार्यों में संलग्न रहते हैं।

1.10.2.5. शिक्षकों में दलबन्दी :–

किसी भी कॉलेज और विद्यालय के शिक्षक संघ के कार्यक्रमों में जो व्यक्ति दो चार बार जायेगा उसे यह स्पष्ट दिखाई देगा कि शिक्षकों में जितना अधिक परस्पर वैमनस्य और गुटबन्दी दिखलाई पड़ती है उतनी शायद ही किसी अन्य व्यवसाय के लोगों में देखी जाती हो। इस गुटबन्दी को विद्यार्थी भी जान जाते हैं। कुछ विद्यालय और कालेजों में तो स्वयं संस्था प्रधान विद्यार्थियों को शिक्षक के पीछे लगाये रखते हैं और उनसे विभिन्न शिक्षकों की गतिविधियों के बारे में रिपोर्ट लेते हैं। इन सब बातों का शिक्षक के समायोजन में बुरा प्रभाव पड़ता है।

1.10.2.6. सरकार की दमन नीति :–

आज देश के अनेक राज्यों में विभिन्न स्थानों पर पुलिस और विद्यार्थियों की आये दिन मुठभेंड होती रहती है। अनेक स्थानों पर पुलिस ने विद्यार्थियों और शिक्षकों को लाठियों से पीटा है। शिक्षा संस्थाओं में घुसकर तोड़–फोड़ की है। होस्टलों में घुस कर विद्यार्थियों को अपमानित किया है और अनेक स्थानों पर गोली चलाकर हत्यायें की है, जब विद्यार्थियों को सामान्य गुण्डे और अपराधी जैसा मानकर उनके साथ व्यवहार किया जाता है तो वह व्यवहार निश्चित ही अनुचित है। विद्यार्थियों को अनुशासन हीनता की तुलना बलवे और दंगे से नहीं की जा सकती। उसके मूल में कुछ ठोस कारण होते हैं और उन कारणों को समझ कर दूर करने की आवश्यकता है। इन कारणों का भी शिक्षक के समायोजन में बुरा प्रभाव पड़ता है।

1.10.2.7. सामाजिक विघटन :–

सामाजिक विघटन एक ऐसी स्थिति है जिसमें समाज की विभिन्न संस्थाओं और समितियों में संघठन एवं नियंत्रण पर परस्पर समन्वय का अभाव हो जाता है। सामाजिक विघटन से परिवार और विवाह जैसी मौलिक संस्थाओं का विघटन होता है। इस विघटन से व्यक्तिगत विघटन होता है, जिसका एक उदाहरण अनुशासनहीनता है। अस्तु, वर्तमान में समायोजन न हो पाने के मूल में एक प्रमुख कारण हमारे समाज का सामान्य विघटन होना है।

1.10.2.8. शिक्षक–अभिभावक सम्पर्क का अभाव :–

सामान्य स्थिति में शिक्षकों में समायोजन न हो पाने का एक प्रमुख कारण शिक्षक अभिभावक के मध्य सम्पर्क का अभाव है। इसका परिणाम यह होता है कि न तो अभिभावक शिक्षकों की कठिनाइयों को समझ पाते हैं और न शिक्षक अभिभावकों की कठिनाइयों को जान पाते हैं। इससे विद्यार्थी के दोषों के लिए वे दोनों एक दूसरे को उत्तरदायी ठहराते हैं और कोई भी विद्यार्थी के सुधार का प्रयास नहीं करता। सच तो यह है कि शिक्षक में समायोजन के लिए जितने उत्तरदायी स्वयं शिक्षक हैं उतने ही विद्यार्थी और अभिभावक भी हैं। अतः शिक्षक और अभिभावकों में परस्पर सहयोग बनाये रखने से ही समायोजन स्थापित किया जा सकता है।

1.10.2.9. मनोवैज्ञानिक कारण :–

मूल रुप से समायोजन एक मनोवैज्ञानिक कारक है। समायोजन न हो पाने के प्रमुख मनोवैज्ञानिक कारण – हीनता अथवा श्रेष्ठता, यौन सम्बन्धी विकृतियाँ, मानसिक ग्रन्थि, असुरक्षा की भावना, उद्देश्यहीनता आदि हैं। इनसे शिक्षकों में भग्नाशा बढ़ती है जिसके परिणाम स्वरुप हिंसा की प्रवृत्ति उत्पन्न होती है और यह प्रवृत्ति अनुशासन हीनता की विभिन्न घटनाओं के रुप में दिखलाई देती है। इन मनोवैज्ञानिक लक्षणों को उत्पन्न करने का उत्तरदायित्व गन्दी व निम्न स्तर की फिल्मों, गन्दे व निम्न स्तर के साहित्य, शिक्षकों की दुश्चरित्रता, समाजिक दुश्चरित्रता, समाजिक वर्ग–भेद, नैतिक शिक्षा की उपेक्षा इत्यादि हैं।

1.10.2.10. **शिक्षकों से शिक्षण के अतिरिक्त अन्य कार्यो का कराया जाना** :–

प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों से प्रायः शिक्षण कार्य के अतिरिक्त अन्य बहुत से कार्य लिए जाते है, जैसे–जनगणना, मतगणना, आयगणना, परिवार गणना, चुनाव ड्यूटी, पल्सपोलियों अभियान, बोर्ड परीक्षा ड्यूटी, छात्रवृत्ति वितरण, मिड डे मील योजना के भोजन की व्यवस्था। इन कार्यों के अतिरिक्त बोझ के कारण शिक्षक अपने मूल कार्य शिक्षण को पूर्ण मनोयोग से नहीं कर पाते जिसके कारण भी उनमें समायोजन की समस्या उत्पन्न होती है।

1.10.2.11. **क्षमता से अधिक कार्य** :–

वर्तमान प्राथमिक विद्यालयों में छात्र संख्या के अनुपात में शिक्षकों का नितान्त अभाव है। जिसके चलते अधिकाशं विद्यालय एक ही शिक्षक के सहारे चल रहे है, कुछ में दो या तीन अध्यापक हैं जबकि कक्षायें पाँच होतीं हैं तथा छात्रों की संख्या प्रायः 300 से 400 के लगभग है। ऐसे में अधिक कार्य के दबाव के कारण भी शिक्षकों को समायोजन में परेशानी होती है।

उपरोक्त समायोजन में बाधक तत्वों में सबसे अधिक महत्वपूर्ण दूषित शिक्षा प्रणाली है। अन्य सभी कारण इस एक कारण पर ही आधारित हैं। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में थोड़े बहुत सुधार की नहीं बल्कि आमूल–चूल परिवर्तन की आवश्यकता है। इसको भारतीय संस्कृति के अनुरुप रुपान्तरित किया जाना चाहिये। इसमें शिक्षकों के काम करने की परिस्थितियाँ तथा परीक्षा प्रणाली में व्यापक सुधार किये जाने चाहिये। शिक्षकों में स्तर आधारित विलगता को समाप्त करने की ओर कदम बढ़ाये जाने चाहिए। शिक्षकों में समायोजन की समस्या न रहे इसके लिऐ निम्न तरीके अपनाऐ जाने चाहिए –

1.10.3. **समायोजन हेतु उपाय** :–

शिक्षकों के समायोजन हेतु निम्न उपाय अपनाये जाने चाहिये–

1.10.3.1. **शिक्षकों की स्थिति में सुधार** :–

इसमें वेतन वृद्धि, कार्य करने की अच्छी परिस्थितियाँ, निष्पक्ष नियुक्ति प्रक्रिया, निश्चित नियमों के अनुसार प्रगति इत्यादि सम्मिलित हैं। इससे अध्यापक सन्तुष्ट रहेंगे और विद्यार्थियों के सम्मुख अच्छे आदर्श उपस्थित करने को प्रोत्साहित होंगे।

1.10.3.2. **शिक्षक द्वारा अच्छे आदर्श प्रस्तुत करना** :–

यह तो सर्व विदित है कि विद्यार्थी शिक्षकों का अनुकरण करते हैं, परन्तु यह भी सत्य है कि शिक्षण कार्य में संलग्न नये शिक्षक भी वरिष्ठ शिक्षकों का अनुकरण करते हैं। अस्तु, व्यवहार के प्रत्येक पहलू में शिक्षकों को उनके सामने अच्छे उदाहरण उपस्थित करने चाहिये और इस प्रकार नेतृत्व करना चाहिये कि नये शिक्षक भी आदर्श प्रस्तुत करें तथा कार्य परिस्थितियों से समायोजन स्थापित कर सकें।

1.10.3.3. **शिक्षा प्रणाली में सुधार** :–

विभिन्न आयोगों और समितियों ने तथा नवीन शोधकर्ताओं ने जो वर्तमान शिक्षा–प्रणाली में दोष दिखलायें हैं, वे अविलम्ब दूर किये जाने चाहिये।

1.10.3.4. **परीक्षा प्रणाली में सुधार** :–

शिक्षा, व्यक्तित्व का सर्वांगींण विकास करती है। परीक्षा प्रणाली में इसी सर्वांगींण विकास की परीक्षा होनी चाहिये न कि केवल रटने की शक्ति की, जैसी कि वह आज कल है।

1.10.3.5. **विद्यालयों को राजनैतिक गुटबन्दी से अलग करना** :–

किसी भी राजनैतिक दल को विद्यालय के जीवन में प्रवेश करने का अवसर नहीं दिया जाना चाहिये तथा शिक्षक को अपने शैक्षणिक दायित्व की पूर्ति के पश्चात् ही राजनैतिक क्रियाओं में भाग लेना चाहिये।

1.10.3.6. **सरकार द्वारा अनुचित हस्तक्षेप न करना** :–

प्रायः देखा जाता है कि शिक्षकों के चयन एवं विद्यालय शिक्षण हेतु चलाई गई योजनाओं में सरकार द्वारा अनुचित हस्तक्षेप किया जाता है, जिसके कारण शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति में बाधा उत्पन्न होती है। अतः सरकार द्वारा आवश्यक एवं न्यूनतम हस्तक्षेप किया जाय, जिससे शिक्षण की प्रक्रिया में सजीवता बनी रहे और शिक्षक अधिकतम समायोजित रह सकें।

1.10.3.7. **शिक्षा संस्थाओं की स्वतन्त्रता का संरक्षण** :–

वर्तमान प्राथमिक शिक्षा से सम्बन्धित कार्यों में ग्राम प्रधान एवं ग्राम सचिव की भूमिका निश्चित की गई है, जिसके कारण प्रधान, सचिव इत्यादि विद्यालय की गतिविधियों में अनावश्यक हस्ताक्षेप कर शिक्षण कार्य में बाधा पहुँचाते हैं अतः शिक्षण संस्थाओं की स्वतन्त्रता बनाये रखी जाये।

1.10.3.8. **शिक्षक अभिभावक सम्पर्क** :–

शिक्षक और अभिभावकों को परस्पर मिलने के अवसर दिये जाने से छात्रों से सम्बन्धित समस्याओं का विचार विनिमय होने के कारण दोनों पक्ष शिक्षण में सुधार व गुणवत्ता हेतु प्रयास करते हैं तथा शिक्षक को उचित आदर व आत्मसम्मान प्राप्त होता है। जिससे वह मानसिक रुप से अपने को समायोजित करने का प्रयास करता है।

1.10.3.9. **नैतिक शिक्षा का प्रचार–प्रसार** :–

नैतिक शिक्षा के प्रचार–प्रसार के फलस्वरुप शिक्षकों को अपेक्षित मान सम्मान प्राप्त होता है तथा अनुशासन स्थापित करने में सहायता मिलती है। जिससे समायोजन की प्रक्रिया को बल मिलता है।

1.10.3.10. विद्यालय में स्वस्थ वातावरण का निर्माण :–

विद्यालयों में स्वस्थ वातावरण के निर्माण से समायोजन स्थापित करने में सहायता मिलती है। इस सम्बन्ध में एक आधार भूत सूत्र यह है, कि विद्यालय में एक बड़ें परिवार का सा वातावरण होना चाहिये, जिसमें लडकें–लडकियों, विद्यार्थियों और शिक्षकों के परस्पर सम्बन्ध नैतिक और मनोवैज्ञानिक दृष्टि से स्वस्थ हों। ऐसे वातावरण में समायोजन की प्रक्रिया स्वतः ही पूर्ण हो जाती है।

1.11. शिक्षण में रुचि का आशय एवं उसका व्यक्ति के कार्य पर प्रभाव :–

शिक्षण में रुचि के कारक– कार्य दशायें, पूर्वधारणा, आर्थिक स्थिति, सामाजिक सम्मान (प्रतिष्ठा), मूल्य, आदर्श, दृष्टिकोंण, विषय का ज्ञान, कक्षा स्तर, मनोवृत्ति, प्रशंसा, विकास के अवसर, प्रभाव छोड़ने के अवसर इत्यादि ऐसे कारक हैं जो शिक्षण में रुचि अथवा अरुचि को प्रभावित करते हैं।

1.11.1. शिक्षण में रुचि का अर्थ एवं परिभाषा :–

'शिक्षण में रुचि' दो शब्दों से मिलकर बना है, जिसमें प्रथम चर शिक्षण एवं दूसरा चर रुचि है, इसलिए शिक्षण में रुचि चर को समझने से पूर्व दोनों का अलग–अलग समझना आवश्यक है।

शिक्षण – शिक्षण को परिभाषित करते हुए **जेक्सन**[16] महोदय ने कहा है कि –

"शिक्षण को सामान्य रुप से दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच आमने–सामने चलने वाली प्रक्रिया के रुप में परिभाषित किया जा सकता है।"

एडमंड एमीडन का मानना है कि –

"शिक्षण एक अन्तः क्रियात्मक प्रक्रिया है, जो कक्षागत परिस्थितियों में वांक्षित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए शिक्षक तथा विद्यार्थियों के मध्य होती है।"

रुचि – रुचि को **मैक्डूगल**[17] महोदय ने निम्न तरह परिभाषित किया है –

"रुचि किसी प्रवृत्ति का क्रियात्मक रुप है, रुचि उत्पन्न किया हुआ ध्यान है।"

बिंघम[18] महोदय ने भी रुचि को एक प्रवृत्ति मानकर उसे निम्न तरह परिभाषित किया है –

"रुचि किसी अनुभव में संविलीन होने एवं इसमें संलग्न रहने की प्रवृत्ति है, जबकि विरक्ति उससे दूर हट जाने की प्रवृत्ति।"

---

16. उद्धृत डॉ0 रामपाल सिंह, 'शिक्षा में नवचिंतन', आगरा; विनोद पुस्तक मन्दिर, 1983, पृष्ठ–186
17. उद्धृत एस0एस0 माथुर, 'शिक्षा मनोविज्ञान', 'वही', पृष्ठ–408
18. उद्धृत विपिन आस्थना एवं आर0एन0 अग्रवाल, 'मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन', विनोद पुस्तक मन्दिर, 1985, पृष्ठ–317

मैक्डूगल व बिंघम की परिभाषा से स्पष्ट है कि रुचि किसी कार्य विशेष में कार्य करने की स्वाभाविक इच्छा है। स्वाभाविक इच्छा से कार्य करने के कारण व्यक्ति में थकावट कम होती है या वह थकावट का कम अनुभव करता है। रुचि के कार्य को करने में व्यक्ति का उत्साह बना रहता है। जिसके परिणामस्वरूप कार्य विशेष के लक्ष्यों की पूर्ति एवं विकास का क्रम निरन्तर चलता रहता है।

अतः कहा जा सकता है कि किसी वस्तु, प्रक्रिया, तथ्य, कार्य आदि को पसन्द करने, उसके प्रति आकर्षित होने, उस पर ध्यान केन्द्रित करने तथा उससे सन्तुष्टि पाने की प्रवृत्ति को ही रुचि कहते हैं। रुचि का व्यक्ति की योग्यताओं से कोई प्रत्यक्ष सम्बन्ध नहीं होता है परन्तु जिन कार्यों में व्यक्ति की रुचि होती है वह उसमें अधिक सफलता प्राप्त करता है। रुचियाँ जन्मजात भी हो सकतीं हैं तथा अर्जित भी हो सकतीं हैं। यद्यपि थोड़े समय अन्तराल में रुचियाँ प्रायः स्थिर रहती हैं परन्तु आयु व अनुभव के साथ रुचियों में भी अन्तर आता रहता है।

शिक्षण में रुचि से सामान्यतः यह अर्थ स्पष्ट होता है कि कक्षा शिक्षण एवं शिक्षण से सम्बन्धित अन्योन्य कार्यों को सम्पादित करने में व्यक्ति को आनन्द की अनुभूति होती है अथवा वह इन कार्यों को सहर्ष करता है।

उपरोक्तानुसार शिक्षण में रुचि रखने वाले अध्यापक शिक्षण कार्य को स्वेच्छा व आनन्द के साथ करते हैं जिससे उसका शिक्षण प्रभावी, सजीव एवं रुचिकर रहता है। परिणामस्वरूप छात्रों के ज्ञान व बोंध स्तर में भी अभूतपुर्व वृद्धि होती है।

अतः हम संक्षेप में कह सकते हैं कि 'शिक्षण में रुचि' वह है जो शिक्षक को शिक्षण में प्रवृत्त करती है, उत्साह बनाये रखती है तथा शिक्षक को नवाचार के लिए प्रेरित करती है, वहीं दूसरी ओर छात्रों की शिक्षा में लाभ पहुँचाती है।

1.11.2. <u>शिक्षण में रुचि के कारक</u> :–

शिक्षण में रुचि को प्रभावित करने वाले कारक निम्नलिखित है–

1.11.2.1. <u>शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति</u> :–

शिक्षक बनने के इच्छुक व्यक्ति में शिक्षा के प्रति स्पष्ट तथा लक्ष्यात्मक दृष्टिकोंण होना अत्यन्त आवश्यक है। यदि व्यक्ति की शिक्षण में अभिरुचि है तथा वह शिक्षा के प्रति लक्ष्यात्मक दृष्टिकोंण रखता है तो उसके लिए शिक्षा मात्र औपचारिक न होकर जीवन के लिए उपयोगी तथा सर्वांगीण विकास के लिए सहायक होती है। ऐसा व्यक्ति शिक्षा के महत्व को स्वीकारते हुए शिक्षण कार्य पूर्ण निष्ठा, परिश्रम तथा ईमानदारी के साथ करेगा। शिक्षक में शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोंण का होना अत्यन्त आवश्यक है यदि वह अपनी पूर्व प्राप्त शिक्षा को मूल्यवान, उपयोगी, ज्ञान

वर्द्धक तथा जीवन के सर्वांगीण विकास में सहायक मानता है, तभी वह शिक्षा के महत्व को समझते हुए रुचि के साथ शिक्षण कार्य कर सकेगा तथा देश के भविष्य निर्माण में रचनात्मक सहयोग कर सकेगा।

1.11.2.2. छात्रों के प्रति अभिवृत्ति :–

शिक्षक का प्रमुख दायित्व अपने छात्रों को शिक्षण तथा निर्देशन प्रदान करके देश के भविष्य निर्माण में सहायक होना है। शिक्षक के लिए छात्र कुम्हार की गीली मिट्टी के समान होता है। जिसे उचित मार्गदर्शन के द्वारा वह एक अच्छे नागरिक के रुप में ढाल सकता है। शिक्षक पर सर्वाधिक महत्वपूर्ण सामाजिक जिम्मेदारी देश के भविष्य निर्माण में सहायक नौनिहालों के पथ प्रदर्शन की है। अतः माता के बाद एक बच्चे की सार्वजनिक ज़िम्मेदारी शिक्षक की होती है। शिक्षण कार्य में शिक्षक की सफलता केवल उसकी विषय वस्तु सम्बन्धी योग्यता पर ही आधारित नहीं होती बल्कि शिक्षण के प्रति उसकी अभिरुचि एवं विधेयात्मक अभिवृत्ति द्वारा भी निर्धारित होती है। शिक्षक को बाल केन्द्रीय शिक्षा पद्वति अपनाकर बालकों में दबी हुई विशिष्ट विशेषताओं, योग्यताओं को उजागर करना चाहिये। मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोंण अपनाकर छात्रों के अन्दर की क्षमताओं को पहचानने में उनकी मदद करनी चाहिये ताकि आगे चल कर वे राष्ट्र की उन्नति व प्रगति में अपना सहयोग कर सकें।

1.11.2.3. सामाजिक परिपक्वता :–

आदि काल से ही मानव समूह में रहना पसन्द करता आया है, क्योंकि समूह में उसे सुरक्षा एवं सहयोग प्राप्त होता है। यह समूह ही आधुनिक काल में समाज कहलाता है। चूँकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, इसलिए वह समाज में रहता है। समाज में रह कर ही मनुष्य अपना विकास तथा सुरक्षा प्राप्त करता है। समाज से बाहर रहकर कोई भी व्यक्ति अपने विकास की सम्पूर्णता प्राप्त नहीं कर सकता। समाज में रह कर यदि कोई व्यक्ति समाज के मूल्य और आदर्शों के अनुसार नहीं चलता है, तो उसके जीवन का कोई अर्थ नहीं है।

जन्म के समय मनुष्य एक प्राणीशास्त्रीय इकाई होता है व सामाजिक व्यवहारों एवं संस्कृति से अनभिज्ञ होता है। समाज के सम्पर्क में आने पर ही वह संस्कृति और सामाजिक व्यवहारों को सीखता है। सीखने की इस प्रक्रिया को समाजीकरण कहते है। समाज की संस्कृति को जीवन में उतारना और संस्कृति के अनुसार सामाजिक व्यवहार करना ही, सामाजिक परिपक्वता कहलाती है अर्थात सामाजिक परिपक्वता व्यक्ति के सामाजिक विकास का परिणाम होती है।

सामाजिक परिपक्वता पर अनेक तत्वों का प्रभाव पड़ता है। इन सब तत्वों में प्रमुख है बालक की बुद्धि। जिन बालकों में बुद्धि की मात्रा अधिक होती है, वे सामाजिक मूल्यों को जल्दी समझते है और ग्रहण भी जल्दी कर लेते हैं। बुद्धि के अलावा दूसरा तत्व है परिवार, जो सामाजिक परिपक्वता की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। परिवार में ही रहकर बालक सामाजिक रीति–रिवाजों, परम्पराओं, व्यवहारों तथा चाल–चलनों का प्रथम पाठ पढ़ता है। पारिवारिक चरित्र बालक के चरित्र का निर्माण करते हैं। परिवार का खानपान तथा आचार–विचार बालक के खान–पान और व्यवहार को

प्रभावित करते हैं। परिवार द्वारा बालक को जो स्नेह दिया जाता है उसका प्रभाव निश्चित रुप से बालक के समाजीकरण पर पड़ता है। मित्र–मंडली एवं विद्यालय भी सामाजिक परिपक्वता को प्रभावित करते हैं। अनुकरण के द्वारा बालक बहुत से व्यवहारों को अपने मित्रों एवं अपने शिक्षकों से सीख लेता है। इसी प्रकार विद्यालय की विशेषतायें बालक के समाजीकरण को प्रभावित करतीं हैं। विद्यालय के अध्यापक, साथी छात्र, विद्यालय का समाजिक वातावरण परम्परायें आदि सभी बातें बालक के सामाजिक विकास को प्रभावित करतीं हैं। आयु के बढ़ने के साथ–साथ सामान्यतः सामाजिक परिपक्वता भी उसी क्रम में बढ़ती जाती है।

1.11.2.4. <u>नेतृत्व गुण</u> :–

किसी समूह विशेष पर नियन्त्रण करना या प्रभाव डालना 'नेतृत्व' कहलाता है। जब हम नेतृत्व को शिक्षा के सन्दर्भ में लेते हैं तो पाते है कि नेतृत्व के बहुत से कारक, उसकी सभी परिस्थितियों के लिए सामान्य होते हैं, किन्तु कुछ कारक विशिष्ट भी होते हैं। नेता एक समूह का प्रमुख सदस्य होता है, जो समूह के व्यवहारों को उल्लेखनीय रुप से प्रभावित करता है। नेता के व्यवहारों को परिस्थितिजन्य कारक भी प्रभावित करते हैं।

समूह का जो मार्गदर्शक होता है, वही समूह का नेता होता है। नेता को नेतृत्व सम्बन्धी अनेक क्रियायें करनी पड़ती है। नेता को प्रमुख रुप से यह तय करना होता है कि क्या करना है और कैसे करना है। उसे विभिन्न स्रोतों तथा साधनों का परिस्थितिजन्य उपयोग भी करना पड़ता है।

जहाँ तक विद्यालयीय नेतृत्व का प्रश्न है, सहयोगी सदस्य ही नेता के गुणों को मान्यता देते है, जबकि नेता उनकी आवश्यकताओं, आकांक्षाओं तथा वरीयताओं को पूरा करता है। इस दृष्टिकोंण से विद्यालय में प्रधानाध्यापक ही नेता होता है व कक्षा में शिक्षक नेता का पद सम्भालता है। प्रधानाध्यापक एक नेता के रुप में पाठ्यक्रम समन्यवक के रुप में कार्य करता है और आवश्यक व उपलब्ध साधनों से पाठ्यक्रम के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए प्रभावी अनुदेशात्मक कार्य को दिशा तथा गति प्रदान करता है। प्रधानाध्यापक ही भौतिक तथा मानवीय संसाधनों की व्यवस्था तथा नियत्रंण करता है। शिक्षा अनुदेशनों को सुधारने के लिए आवश्यक कदम उठाने का दायित्व भी उसी का होता है। विद्यालय में अनुशासन स्थापना, पाठ्यक्रम नियोजन, समुचित वातावरण निर्माण आदि से सम्बन्धित कार्य भी प्रधानाध्यापक एक नेता के रुप में करता है। निर्णय, निर्माण, विभिन्न शैक्षिक तथा प्रशासनिक क्षेत्रों से सम्बन्धित सुझाव देना, इनका क्रियान्वयन कराना और विचारों का आदान–प्रदान प्रधानाध्यापक का ही कार्य होता है।

1.11.2.5. <u>व्यावसायिक प्रतिबद्धता</u> :–

किसी भी व्यवसाय में सफल होने के लिए यह आवश्यक है कि व्यक्ति की उस व्यवसाय के प्रति सकारात्मक सोच हो। किसी व्यवसाय में हमारी रुचि न हो या उसके प्रति सकारात्मक दृष्टिकोंण न रखते हों तथा विवशता के कारण हमें वहीं व्यवसाय अपनाना पड़े, तो हम न तो उस व्यवसाय के

साथ न्याय कर सकेंगे, न अच्छा कार्य कर सकेंगे, न उन्नति कर सकेंगे और न ही उस व्यवसाय में रहते हुए मानसिक शान्ति एवं सन्तुष्टि का ही अनुभव कर सकेंगे। यही तथ्य शिक्षण व्यवसाय के साथ लागू होता है। यदि हम शिक्षण व्यवसाय के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति न रखते हों तो हम कभी भी सफल शिक्षक नहीं बन सकते हैं। हमारा मन पढ़ाने में नहीं लगेगा, हम छात्रों के प्रति न्याय नहीं कर पायेंगे, हमारा कक्षा में व्यवहार ठीक नहीं होगा, हम विद्यालय में किसी के साथ समायोजन स्थापित नहीं कर सकेंगे तथा हमें कभी भी मानसिक शान्ति तथा संतोष नहीं मिलेगा। अतः शिक्षण व्यवसाय के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोंण एवं व्यावसायिक प्रतिबद्धता का होना सफल अध्यापक बनने के लिए अति आवश्यक है।

1.11.3. शिक्षण में रुचि की आवश्यकता एवं शिक्षक :–

यह सामान्य सी बात है कि मानव अपने रुचि के अनुसार ही कार्य का चुनाव करता है तथा कार्य की सफलता कार्य करने वाले की कार्य विशेष के प्रति रुचि पर ही निर्भर है। कार्य विशेष को जितनी अधिक रुचि के साथ सम्पादित किया जायेगा कार्य में उतनी ही अधिक सफलता प्राप्त होगी।

शिक्षण व्यवसाय में कार्यरत शिक्षकों पर भी यही नियम लागू होता है। यदि शिक्षक की शिक्षण कार्य एवं विद्यालय से सम्बंधित क्रियाओं के संचालन में रुचि है तो वह इन कार्यो को पूर्ण कर अपने आप में खुशी, गर्व एवं सन्तुष्टि का अनुभव करने लगता है, जिससे उसकी कार्य क्षमता में भी बृद्धि होती है। वहीं दूसरी ओर रुचि का कार्य होने के कारण उसे कार्य विशेष में थकावट का अनुभव भी अन्य अरुचि के कार्यो की तुलना में कम होता है। जिससे वह अपने कार्य में निरन्तर कार्य करने पर भी ऊब का अनुभव नहीं करता, बल्कि कार्य में सफल होने पर और अधिक अच्छे से कार्य संम्पादित करने के लिए अभिप्रेरित होता है।

शिक्षक में शिक्षण के प्रति रुचि होने के कारण वह अपने कार्य के लिए तत्पर बना रहता है जिससे वह अपने कार्य से बचने के बजाय उसमें संलग्न रहने का प्रयास करता है। आधुनिक शिक्षण पद्यति में मनोविज्ञान के अधिकाधिक प्रयोग के कारण शिक्षण कार्य सामान्य कार्य नहीं रह गया है। शिक्षा में केवल छात्रों को कुछ तथ्य याद कराना भर नहीं रह गया है बल्कि शिक्षा में बालक के सर्वांगींण विकास पर ध्यान दिया जाता है, जिसके लिए शिक्षकों का शिक्षण में रुचि का होना अत्यन्त आवश्यक है। बिना रुचि के कार्य केवल दिखावा बनकर रह जाता है।

1.12. समस्या कथन :–

प्राथमिक स्तर की शिक्षा व्यवस्था के गिरते हुए स्तर के कारणों की जाँच के परिपेक्ष्य में शिक्षा के अंग शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि **'कृत्य–संतोष', 'समायोजन' एवं 'शिक्षण के रुचि'** को शोधकर्ता ने अपने अध्ययन का शोध विषय माना है। शिक्षा के व्यवसायीकरण के बावजूद भी शिक्षकों को अपने

कार्य दशाओं से सन्तुष्टि प्राप्त नहीं हो रही है। अपने उत्तर दायित्वों के निवर्हन के बाद भी बहुत से शिक्षक शिक्षण कार्य को महज जीवकोपार्जन के उद्देश्य से कर रहे हैं भले ही उनकी इस कार्य में रुचि हो या न हो ऐसे में जबकि एक बहुत बड़ा शिक्षक–वर्ग अपने व्यवसाय में संतुष्टि प्राप्त नहीं कर पा रहा है अथवा समायोजन में कठिनाई का अनुभव कर रहा है जिनके कारणों एवं परिस्थितियों को जानना आवश्यक हो जाता है।

प्राथमिक स्तर पर विशिष्ट बी0टी0सी0 अध्यापकों की नियुक्तियाँ उत्तर प्रदेश सरकार (मुख्यमंत्री–श्री कल्याण सिंह वर्ष 1998) ने प्राथमिक विद्यालयों के लिए संचालित बी0टी0सी0 का प्रमाण पत्र प्राप्त सभी छात्राध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं की नियुक्ति हो जाने के उपरान्त भी प्राथमिक स्तर के विद्यालयों से सेवानिवृत्त होने वाले शिक्षकों एवं नये विद्यालयों के लिए प्रशिक्षित शिक्षकों का अभाव हो जाने कै कारण प्रशिक्षित स्नातकों को विशिष्टि बी0टी0सी0 का प्रशिक्षण देकर प्राथमिक विद्यालयों में नियुक्त कर समायोजन कर दिया अतः इस समय बी0टी0सी0 का प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापक तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 का प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापक प्राथमिक स्तर पर शिक्षण कार्य कर रहे हैं। चूंकि बी0एड0 उत्तीर्ण छात्र माध्यमिक शिक्षक बनने के योग्य हो जाता है लेकिन वर्तमान अनिश्चितता के आर्थिक युग में वह हाथ आयी नौकरी को नहीं छोड़ना चाहता है और यदि वह मैरिट के आधार पर विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षण के लिए चुन लिया जाता है तो वह उसका प्रशिक्षण लेकर प्राथमिक शिक्षक बन जा रहा है।

यहाँ शोधकर्ता के मन में यह जानने की जिज्ञासा है कि क्या परिस्थितियोंवश प्राथमिक शिक्षक बने व्यक्ति (विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित) तथा वास्तव में प्राथमिक शिक्षक बनने के लिऐ प्रशिक्षण प्राप्त किये व्यक्ति (बी0टी0सी0 प्रशिक्षित) समान रूप से अपने–अपने व्यवसाय से संतुष्ट है ? क्या समान रूप से वे समायोजित हैं ? और क्या उनमें शिक्षण के प्रति रुचि भी एक समान है ? उक्त प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने के लिए शोधार्थी द्वारा निम्न समस्या को अध्ययन हेतु चयनित किया गया है –

"बुन्देलखण्ड क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों के कृत्य–सन्तोष, समायोजन एवं शिक्षण में रुचि का तुलनात्मक अध्ययन"

1.12.1. समस्या का परिभाषीकरण :–

बुन्देलखण्ड क्षेत्र :– यहाँ बुन्देलखण्ड क्षेत्र का तात्पर्य उत्तर प्रदेश के अति पिछड़े बुन्देलखण्ड क्षेत्र जिसके अन्तर्गत झाँसी मण्डल (झाँसी, ललितपुर एवं जालौन जिला) चित्रकूटधाम मण्डल (बाँदा, चित्रकूट, महोबा एवं हमीरपुर जिला) से हैं।

प्राथमिक विद्यालय :– यहाँ प्राथमिक विद्यालयों से तात्पर्य उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा परिषद् द्वारा संचालित सरकारी प्राथमिक विद्यालयों से हैं।

बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक :– इनसे तात्पर्य उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा प्राथमिक स्तर के शिक्षकों के लिऐ निर्धारित प्रशिक्षण को पूरा कर, प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों से है।

विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक :– इनसे तात्पर्य बी0एड0/बी0पी0एड0/एल0टी0 प्रशिक्षित व्यक्तियों को सरकारी प्रक्रिया द्वारा चयनित कर जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों (डायट) में 6 माह का प्रशिक्षण प्राप्त कर, प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों से है।

कृत्य–संतोष :– कृत्य–संतोष से तात्पर्य **डॉ0 एस0.के0 सक्सेना** द्वारा प्राथमिक स्कूल टीचर्स के लिए निर्मित एवं प्रमाणीकृत, **'कृत्य–संतोष स्केल फार टीचर्स'– (फार्म–बी0)** (JST) के प्रशासन से प्राप्त प्राप्तांकों से है।

समायोजन :– समायोजन से तात्पर्य **एस0.के0. मंगल** द्वारा निर्मित **'मंगल टीचर एडजस्टमेन्ट इन्वेटरी'** (MTAI) के प्रशासन से प्राप्त प्राप्तांकों से है।

शिक्षण में रुचि :– शिक्षण में रुचि से तात्पर्य **एस0.बी0 कक्कर** द्वारा निर्मित **'कक्कर इन्ट्रेस्ट इन टीचिंग स्केल'** (KITS) के प्रशासन से प्राप्त प्राप्तांकों से है।

1.12.2. समस्या का परिसीमन :–

साधनों की उपलब्धता, समय व श्रम को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक शोध की एक सीमा तय करनी पडती है। क्योंकि किसी भी विषय पर शोध एक व्यापकता लिए हुए होता है और ऐसे में यदि शोध–समस्या को सीमांकित न किया जाये तो शोध विषय अत्यधिक विस्तृत हो जाता है। सम्भव है कि साधनों की उपलब्धता, समय एवं श्रम की अपर्याप्ता के कारण शोधकार्य अपूर्ण अथवा अत्यधिक जटिल हो जाये। इस समस्या के निदान हेतु पूर्व में ही साधन, श्रम,समय एवं धन के अपव्यय से बचने के लिए शोध विषय की एक सीमा तय कर दी जाती है। इन्हीं बातों को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता ने अपने शोध को निम्नवत् सीमांकित किया है –

(i) प्रस्तुत शोध केवल उत्तर प्रदेश में स्थित बुन्देलखण्ड क्षेत्र के चित्रकूट धाम कर्वी, बाँदा, हमीरपुर, महोबा, झाँसी, ललितपुर एवं जालौन जनपद के प्राथमिक विद्यालयों पर आधारित है।

(ii) प्रस्तुत शोध कार्य में प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक–शिक्षिकाओं को सम्मिलित किया गया है।

(iii) प्रस्तुत शोध 200 बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (100 पुरुष + 100 महिला) तथा 200 विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (100 पुरुष + 100 महिला) के न्यादर्श पर आधारित है।

1.13. शोध उद्देश्य :–

प्रस्तुत शोध कार्य के निम्नांकित उद्देश्य हैं :–

1. बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) के कृत्य–संतोष का अध्ययन करना।
2. बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) के समायोजन का अध्ययन करना।
3. बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की शिक्षण में रुचि का अध्ययन करना।
4. बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के कृत्य–संतोष का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।
6. बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की शिक्षण में रुचि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
7. विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) के कृत्य–संतोष का अध्ययन करना।
8. विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) के समायोजन का अध्ययन करना।
9. विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की शिक्षण में रुचि का अध्ययन करना।
10. विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के कृत्य–संतोष का तुलनात्मक अध्ययन करना।
11. विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

12. विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की शिक्षण में रुचि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

13. बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) और विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) के कृत्य–संतोष का तुलनात्मक अध्ययन करना।

14. बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) और विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

15. बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) और विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की शिक्षण में रुचि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

1.14. शोध की परिकल्पना :–

1.14.1. अर्थ एवं परिभाषा :–

परिकल्पना का शाब्दिक अर्थ है 'पूर्व चिन्तन'। इसका तात्पर्य यह है कि किसी समस्या के विश्लेषण और परिभाषीकरण के बाद उसमें कारणों तथा कार्य–कारण के सम्बन्ध में पूर्व चिन्तन कर लिया गया है, अर्थात समस्या का यह कारण हो सकता है अथवा एक या एक से अधिक चरों के मध्य सम्बन्धों अथवा तुलना की कल्पना की जाती है। यह निश्चय करने के पश्चात् उसका परीक्षण शुरु हो जाता है। अनुसंधान कार्य इस परिकल्पना के निर्माण और उसके परीक्षण के बीच की प्रक्रिया है। **बेकन** आदि का विश्वास था कि ज्यों ही समस्या की जानकारी हो जायें उसकी परिकल्पना का निर्माण कर लेना चाहिये। परिकल्पना किसी भी प्रकार के शोध को एक आधारभूत चिन्तन देती है।

परिकल्पना किसी भी अनुसंधान के लिए एक प्रकाश स्तम्भ की भाँति कार्य करती है। बिना इसके किसी भी प्रकार के अनुसंधान की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। परिकल्पना की मदद से ही अनुसंधान का कार्य सम्भव होता है। वैज्ञानिक अध्ययनों में तो परिकल्पना का विशेष महत्व है, क्योंकि परिकल्पना आँकडों के संग्रहण में ही मदद नही करती बल्कि अध्ययन कार्य को एक विशिष्ट दिशा प्रदान करती है। परिकल्पना एक अस्थाई रुप से माना हुआ पूर्वानुमान है। परिकल्पना को विभिन्न विद्वानों ने निम्नवत् परिभाषित किया है –

जॉन0 सी0 टाउनसेण्ड[19] ने परिकल्पना की सबसे स्पष्ट और सरल परिभाषा देते हुए कहा है–

"परिकल्पना समस्या का प्रस्तावित उत्तर होती है।"

19. उद्धृत डॉ0 डी0एन0 श्रीवास्तव, 'अनुसंधान विधियाँ', आगरा; साहित्य प्रकाशन, चतुर्थ संस्करण, पृष्ठ–96

गुड तथा स्केट्स[20] के अनुसार –

"परिकल्पना एक अनुमान है जिसे अन्तिम अथवा अस्थायी रूप में किसी निरीक्षित तथ्य अथवा दशाओं की व्याख्या हेतु स्वीकार किया गया हो एवं जिसके अन्वेषण को आगे पथ–प्रदर्शन प्राप्त होता हो।"

मैक्गुइगन[21] के शब्दों में –

"परिकल्पना एक ऐसा पूर्वानुमान होती है। जिसका निर्माण वस्तु स्थिति घटनाओं एवं परिस्थितियों की व्याख्या करने हेतु अस्थाई रुप से किया जाता है और जो अनुसंधान कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता करती है।"

करलिंगर[22] **के अनुसार –**

"एक परिकल्पना दो अथवा दो से अधिक चरों के सम्बन्ध के विषय में एक कल्पनात्मक कथन होता है।

1.14.2. **परिकल्पना का महत्व** :–

किसी भी अनुसंधान में परिकल्पना की भूमिका अहम होती है। क्योंकि इसके द्वारा कई उद्देश्यों की पूर्ति एक साथ हो जाती है। किसी भी अनुसंधान को पूर्ण करने के लिए एक प्रकार के दिशा निर्देशों की आवश्यकता होती है और परिकल्पना के माध्यम से उस अनुसंधान को एक प्रकार का मार्ग दर्शन प्राप्त हो जाता है और इसी परिकल्पना के सामने होने से अनुसंधान को पूर्ण करने में मदद मिलती है। इसके साथ परिकल्पना के सामने होने से अनुसंधान को हल करते समय आवश्यक तथ्यों के समन्वय में आसानी हो जाती है। किसी परिकल्पना के सामने होने से यह ज्ञात होता है कि शोध विषय की सीमा रेखा क्या है ? और वह समस्या जो कि हल करनी है किस प्रकार के हल से सम्भव होगी। परिकल्पना का महत्व हार्डनेट के इस कथन से समझा जा सकता है –

"परिकल्पना शोधकर्ता की दो आँखें होती हैं। जिनके द्वारा वह समस्यागत अव्यवस्था (अव्यवस्थित तथ्यों) तथा उसमें समस्या का समाधान खोजता है।"

परिकल्पनाएँ इस प्रकार का सम्भावित उत्तर होतीं हैं जो कि कभी–कभी स्वयं अपने में से ही किसी दूसरे अनुसंधान के लिए परिकल्पना को जन्म देतीं है। इस प्रकार एक परिकल्पना अपने अगले चरण में एक और नवीन परिकल्पना को जन्म देती है और इस प्रकार परिकल्पना पद्धति में लगातार विकास होता रहता है। साथ ही साथ परिकल्पना का निर्माण किसी भी समस्या के निष्कर्ष को

---

20. उदधृत पारस नाथ राय, 'अनुसंधान परिचय', आगरा; लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, 2004, पृष्ठ–64
21. उदधृत डॉ0 डी0एन0 श्रीवास्तव, 'अनुसंधान विधियाँ', आगरा; साहित्य प्रकाशन, चतुर्थ संस्करण, पृष्ठ–96
22. उदधृत एच0के0 कपिल,'अनुसंधान विधियाँ', आगरा; एच0पी0 भार्गव बुक हउस, 2006, पृष्ठ–37

निकालने में भी मददगार साबित होता है। परिकल्पना के कारण शोधकर्ता को यह ज्ञात रहता है कि अमुक समस्या का हल इसी परिकल्पना के आस–पास ही प्राप्त होगा और शोधकर्ता मनोयोग से अपनी समस्या निवारण में लगा रहता है। इससे एक ओर तो निष्कर्ष ज्ञात करने में सहायता प्राप्त होती है साथ ही सत्य की स्थापना अत्यधिक सुगमता से हो जाती है। परिकल्पना के निर्माण से किसी भी हल को सत्यता के काफी निकट तक प्राप्त किया जा सकता है। परिकल्पना इस प्रकार से अनुसंधान के प्रथम चरण में प्राप्त मार्गदर्शन से लेकर उसके अन्तिम चरण परिणाम की सत्यता तक अपनी महत्ता सिद्ध करती है। अतः कहा जा सकता है कि परिकल्पना निम्न कारणों से महत्वपूर्ण होती है –

1. यह अनुसंधान का मार्गदर्शन करती है।
2. समस्या को सुनिश्चित करती है।
3. तथ्यों का ठीक चुनाव में उपयोगी है।
4. अनुसंधान की प्रेरक के रूप में कार्य करती है।
5. निष्कर्ष प्राप्ति में सहायक होती है।
6. अध्ययन पद्धति के विकास में सहायक है।
7. समस्या को सीमांकित करती है।
8. शोध की सार्थकता बढ़ाने में महती भूमिका निभाती है।
9. परिणामों को सत्यता के निकट लाती है।

1.14.3. <u>परिकल्पना के प्रकार</u> :–

विभिन्न व्यवहार वैज्ञानिकों ने अपने अनुसंधानो में अनेक प्रकार की परिकल्पनाओं का प्रयोग किया है और विभिन्न लेखकों ने इसी आधार पर इन परिकल्पनाओं को वर्गीकृत किया है। **गुड एवं हैट** (1952) ने परिकल्पना के तीन प्रकार माने हैं। यह वर्गीकरण उन्होंने इस आधार पर किया कि परिकल्पना में अभिव्यक्त अमूर्तता का स्तर क्या है ? इस दृष्टिकोंण से परिकल्पनांए तीन तरह की निर्धारित की गई –

1. निम्न स्तरीय या साधारण परिकल्पना
2. उच्च स्तरीय या जटिल परिकल्पना
3. उच्चतम स्तरीय या जटिलतम् परिकल्पना

एक अन्य दृष्टिकोंण से परिकल्पनाओं को दो भागों में बाँटा गया है –

1. प्रायोगिक परिकल्पनाएँ
2. सांख्यिकीय परिकल्पनाएँ।

यहाँ पर प्रायोगिक परिकल्पनाओं में मौलिक परिकल्पना, वैज्ञानिक परिकल्पना, अनुसंधान परिकल्पना, व्यावहारिक परिकल्पना, सामान्य परिकल्पना, अनुभवगम्य परिकल्पना तथा विकल्प

परिकल्पना, आतीं हैं। जबकि सांख्यिकीय परिकल्पनाओं में सकारात्मक परिकल्पना, नकारात्मक परिकल्पना तथा शून्य परिकल्पना आती है।

अच्छी परिकल्पना की निम्न विशेषतायें होतीं हैं –

1. एक अच्छी परिकल्पना तथ्यों से सहमति रखती है।
2. अच्छी परिकल्पना प्राकृतिक नियमों या जो सत्य प्रमाणित किये जा चुके हैं, उनके विरोध में नहीं होती है।
3. अच्छी परिकल्पना को सरल रूप में विकसित किया जाता है।
4. अच्छी परिकल्पना निगमन (Deductive) चिन्तन पर आधारित होती है।
5. अच्छी परिकल्पना को स्पष्ट शब्दों में प्रस्तुत किया जाता है।
6. अच्छी परिकल्पना की पुष्टि हेतु विधि तथा प्रविधियाँ शोधकर्ता की पहुँच तथा उसके नियन्त्रण में होतीं हैं।
7. अच्छी परिकल्पना की पुष्टि हेतु उपकरण तथा आंकड़ें प्रभावशाली ढंग से प्रयुक्त किये जा सकते हैं तथा सुगमता से उपलब्ध हो सकते हैं।

1.14.4. शून्य परिकल्पना का अर्थ :–

शून्य परिकल्पना (Null-Hypothesis) वह है जिसमें किसी चर के होने या न होने की कोई पुर्व धारणा नहीं रहती। इसी कारण इसे शून्य परिकल्पना कहते हैं। इसका प्रयोग केवल सांख्यिकी की सार्थकता के परीक्षण के लिए किया जाता है। इस प्रकार की परिकल्पना को नकारात्मक रूप से विकसित किया जाता है। चरों के सह–सम्बन्ध को नकारात्मक कथन के रूप में लिखा जाता है। इसी प्रकार चरों के अन्तर को भी नकारात्मक रूप से प्रकट करते हैं। इस प्रकार की परिकल्पना के लिए कोई सैद्धान्तिक आधार या औचित्य प्रस्तुत नहीं करना होता है। यह शोधकर्ता को वस्तुनिष्ठ रखती है। इसको विकसित करना अपेक्षाकृत सरल होता है। इससे सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा की भी आवश्यकता नहीं होती।

1.14.5. वर्तमान शोध की परिकल्पनाएँ :–

प्रस्तुत शोध की परिकल्पनायें निम्नलिखित हैं –

1. **बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के कृत्य–संतोष में कोई अन्तर नहीं है।**
   (अ) शहरी क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक–शिक्षिकाओं के 'कृत्य–संतोष' में कोई अन्तर नहीं है।
   (ब) ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक–शिक्षिकाओं के 'कृत्य–संतोष' में कोई अन्तर नहीं है।

2. **बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के समायोजन में कोई अन्तर नहीं है।**
   (अ) शहरी क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के समायोजन में कोई अन्तर नहीं है।
   (ब) ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के समायोजन में कोई अन्तर नहीं है।

3. **बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की 'शिक्षण में रुचि' में कोई अन्तर नहीं है।**
   (अ) शहरी क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की 'शिक्षण में रुचि' में कोई अन्तर नहीं है।
   (ब) ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की 'शिक्षण में रुचि' में कोई अन्तर नहीं है।

4. **विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के 'कृत्य–संतोष' में कोई अन्तर नहीं है।**
   (अ) शहरी क्षेत्र में कार्यरत विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के 'कृत्य–संतोष' में कोई अन्तर नहीं है।
   (ब) ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के 'कृत्य–संतोष' में कोई अन्तर नहीं है।

5. **विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के समायोजन में कोई अन्तर नहीं है।**
   (अ) शहरी क्षेत्र में कार्यरत विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के समायोजन में कोई अन्तर नहीं है।
   (ब) ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के समायोजन में कोई अन्तर नहीं है।

6. **विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की 'शिक्षण में रुचि' में कोई अन्तर नहीं है।**
   (अ) शहरी क्षेत्र में कार्यरत विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की 'शिक्षण में रुचि' में कोई अन्तर नहीं है।
   (ब) ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की 'शिक्षण में रुचि' में कोई अन्तर नहीं है।

7. **बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) के 'कृत्य–संतोष' में कोई अन्तर नहीं है।**

(अ) बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों के 'कृत्य–संतोष' में कोई अन्तर नहीं है।

(i) बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शहरी क्षेत्र के शिक्षकों एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शहरी क्षेत्र के शिक्षकों के 'कृत्य–संतोष' में कोई अन्तर नहीं है।

(ii) बी0टी0सी0 प्रशिक्षित ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षकों एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षकों के 'कृत्य–संतोष' में कोई अन्तर नहीं है।

(ब) बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं के 'कृत्य–संतोष' में कोई अन्तर नहीं है।

(i) शहरी क्षेत्र में बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं के 'कृत्य–संतोष' में कोई अन्तर नहीं है।

(ii) ग्रामीण क्षेत्र में बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं के 'कृत्य–संतोष' में कोई अन्तर नहीं है।

(स) बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं के 'कृत्य–संतोष' में कोई अन्तर नहीं है।

(i) शहरी क्षेत्र में बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं के 'कृत्य–संतोष' में कोई अन्तर नहीं है।

(ii) ग्रामीण क्षेत्र में बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं के 'कृत्य–संतोष' में कोई अन्तर नहीं है।

(द) बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों के 'कृत्य–संतोष' में कोई अन्तर नहीं है।

(i) शहरी क्षेत्र में बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों के 'कृत्य–संतोष' में कोई अन्तर नहीं है।

(ii) ग्रामीण क्षेत्र में बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों के 'कृत्य–संतोष' में कोई अन्तर नहीं है।

8. बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) के 'समायोजन' में कोई अन्तर नहीं है।

(अ) बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों के 'समायोजन' में कोई अन्तर नहीं है।

(i) शहरी क्षेत्र के बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों के 'समायोजन' में कोई अन्तर नहीं है।

(ii) ग्रामीण क्षेत्र के बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों के 'समायोजन' में कोई अन्तर नहीं है।

(ब) बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं के 'समायोजन' में कोई अन्तर नहीं है।

(i) शहरी क्षेत्र के बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं के 'समायोजन' में कोई अन्तर नहीं है।

(ii) ग्रामीण क्षेत्र के बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं के 'समायोजन' में कोई अन्तर नहीं है।

(स) बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं के 'समायोजन' में कोई अन्तर नहीं है।

(i) शहरी क्षेत्र के बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं के 'समायोजन' में कोई अन्तर नहीं है।

(ii) ग्रामीण क्षेत्र के बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं के 'समायोजन' में कोई अन्तर नहीं है।

(द) बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं एवं विशिष्ट बी0 टी0 सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों के 'समायोजन' में कोई अन्तर नहीं है।

(i) शहरी क्षेत्र के बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों के 'समायोजन' में कोई अन्तर नहीं है।

(ii) ग्रामीण क्षेत्र के बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों के 'समायोजन' में कोई अन्तर नहीं है।

9. बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की 'शिक्षण में रुचि' में कोई अन्तर नहीं है।

(अ) बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों की 'शिक्षण में रुचि' में कोई अन्तर नहीं है।

(i) बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शहरी क्षेत्र के शिक्षकों एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शहरी क्षेत्र के शिक्षकों की 'शिक्षण में रुचि' में कोई अन्तर नहीं है।

(ii) बी0टी0सी0 प्रशिक्षित ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षकों एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षकों की 'शिक्षण में रुचि' में कोई अन्तर नहीं है।

(ब) बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं की 'शिक्षण में रुचि' में कोई अन्तर नहीं है।

(i) शहरी क्षेत्र में बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं की 'शिक्षण में रुचि' में कोई अन्तर नहीं है।

(ii) ग्रामीण क्षेत्र में बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं की 'शिक्षण में रुचि' में कोई अन्तर नहीं है।

(स) बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं की 'शिक्षण में रुचि' में कोई अन्तर नहीं है।

(i) शहरी क्षेत्र में बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं की 'शिक्षण में रुचि' में कोई अन्तर नहीं है ।

(ii) ग्रामीण क्षेत्र में बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं की 'शिक्षण में रुचि' में कोई अन्तर नहीं है।

(द) बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों की 'शिक्षण में रुचि' में कोई अन्तर नहीं है।

(i) शहरी क्षेत्र में बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों की 'शिक्षण में रुचि' में कोई अन्तर नहीं है।

(ii) ग्रामीण क्षेत्र में बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों की 'शिक्षण में रुचि' में कोई अन्तर नहीं है।

1.15. शोध प्रबन्ध की योजना :–

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध को छः अध्यायों में विभक्त किया गया है –

प्रथम अध्याय में समस्या और उसकी पृष्ठभूमि को स्पष्ट करते हुए समस्या का उदय, प्राथमिक शिक्षा का महत्व, प्राथमिक शिक्षा की वर्तमान स्थिति, शिक्षक का महत्व एवं भूमिका, शिक्षक–प्रशिक्षण एवं उसका संक्षिप्त इतिहास, शिक्षक प्रशिक्षण की नवीन अवधारणा, कृत्य–संतोष का अर्थ एवं परिभाषा तथा उसे प्रभावित करने वाले कारक, समायोजन का अर्थ एवं परिभाषाऐं, समायोजन में बाधक तत्व, समायोजन हेतु किये जाने योग्य उपाय, शिक्षण में रुचि का अर्थ, शिक्षण में रुचि के कारक, शिक्षण में रुचि की आवश्यकता एवं शिक्षक, समस्या कथन, समस्या का परिभाषीकरण, समस्या का परिसीमन, शोध उद्देश्य, शोध परिकल्पना का अर्थ एवं परिभाषा, परिकल्पना का महत्व, परिकल्पना के प्रकार, वर्तमान शोध की परिकल्पनाओं आदि का निरूपण किया गया है।

द्वितीय अध्याय में सम्बन्धित साहित्य का अर्थ, महत्व एवं उपादेयता, तथा सम्बन्धित साहित्य के स्रोत के विवरण के पश्चात् समस्या से सम्बन्धित शोधों का विधिवत विवेचन किया गया है। विदेश में, भारत में एवं उत्तर प्रदेश में सम्पन्न हुए अध्ययनों की समीक्षा करते हुए सामग्री का विवेचन तथा प्रस्तुत शोध से उनकी तुलना की गयी है।

तृतीय अध्याय में बुन्देलखण्ड की भौगोलिक संरचना, बुन्देलखण्ड की सामाजिक एवं राजनैतिक पृष्ठभूमि, झाँसी का संक्षिप्त इतिहास (स्थापना से अंग्रेजों के हस्तक्षेप के पूर्व तक), बुन्देलखण्ड में अंग्रेजी राज्य का उत्थान, बुन्देलखण्ड क्षेत्र की वर्तमान स्थिति, शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़े होने के कारण, पिछड़ापन दूर करने के उपाय, बुन्देलखण्ड क्षेत्र की प्राथमिक शिक्षा पर एक दृष्टि तथा माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा की वर्तमान स्थिति का वर्णन किया गया है। बुन्देलखण्ड क्षेत्र की प्राथमिक शिक्षा प्रस्तुत शोध से प्रत्यक्ष रूप सम्बन्धित होने के कारण, इससे सम्बन्धित आँकड़ें व इस क्षेत्र में प्राथमिक शिक्षा में संचालित योजनाओं का विवरण प्रस्तुत किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में शोध विधि का अर्थ, परिभाषा एवं प्रकार को स्पष्ट करते हुए वर्तमान शोध की विधि, शोध न्यादर्श का अर्थ, न्यादर्श चयन की विधियों का विवरण देते हुए वर्तमान शोध का न्यादर्श, शोध उपकरण का आशय, अच्छें उपकरण की कसौटियाँ, वर्तमान शोध में प्रयुक्त उपकरणों का संक्षिप्त परिचय उनकी वैधता, विश्वसनीयता, अंकीकरण, मैनुअल आधारित वर्गीकरण की सारणी, शोध विश्लेषण में प्रयुक्त सांख्यिकी – समान्तर माध्य, मानक विचलन एवं टी–टेस्ट के सूत्र तथा शोध उपकरणों के प्रशासन प्रक्रिया का उल्लेख किया गया है।

पंचम अध्याय में उपकरणों के प्रशासन से प्राप्त आँकड़ों का सारणीयन, आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या करते हुए प्रथम अध्याय में उल्लेखित उद्देश्यों एवं परिकल्पनाओं का क्रमानुसार सत्यापन करने हेतु उपयुक्त सांख्यिकी विधियों का प्रयोग कर सार्थकता की जाँच की गयी है।

षष्टम् अध्याय में निष्कर्ष तथा सुझाव दिये गये हैं, अध्ययन के लिए प्रस्तावित शोध उद्देश्यों के आलोक में शोध से प्राप्त निष्कर्ष तथा शोध से सम्बन्धित सुझाव दिये गये हैं।

अन्त में प्रस्तुत शोध की उपयोगिता तथा भावी शोध–अध्ययनों हेतु सुझाव पर भी प्रकाश डाला गया है।

****

अध्याय-द्वितीय

(समस्या से सम्बद्ध साहित्य)

2.1. सम्बन्धित साहित्य का अर्थ
2.2. सम्बन्धित साहित्य का महत्व एवं उपादेयता
2.3. सम्बन्धित साहित्य के स्रोत
2.4. समस्या से सम्बन्धित शोध–अध्ययन
2.5. सामग्री का विवेचन तथा प्रस्तुत शोध से तुलना

2.1. सम्बन्धित साहित्य का अर्थ :–

ज्ञान के किसी क्षेत्र में उपयुक्त अध्ययन के लिए शोधकर्ता को किसी विशिष्ट क्षेत्र में, जिसमें से वह शोध हेतु समस्या का चयन करता है, सैद्धान्तिक एवं क्रियात्मक दृष्टि से क्या हो चुका है, इसकी नवीनतम् जानकारी होनी नितान्त आवश्यक है। सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन के बिना शोधकर्ता का कार्य अन्धे तीर के समान है। ज्ञान के किसी भी क्षेत्र में किसी भी उपयुक्त अध्ययन के लिए शोधकर्ता को पुस्तकालय तथा अनेक साधनों से पर्याप्त परिचय प्राप्त करना आवश्यक है, तदुपरान्त ही नवीन ज्ञान के लिए प्रभावपूर्ण शोध संभव हो पाता है।

शोध विषय से सम्बन्धित ऐसा साहित्य जिसमें विषय के किसी पक्ष अथवा सम्पूर्ण विषय पर विचार व्यक्त किये गये हों, सम्बद्ध साहित्य कहलाता है। समस्या से सम्बन्धित सम्पूर्ण साहित्य का पुनरावलोकन अनुसंधान का प्राथमिक आधार है तथा अनुसंधान के गुणात्मक स्तर के निर्धारण में एक महत्वपूर्ण कारक है। सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण के बिना अनुसंधान कार्य करना श्रम तथा समय को नष्ट करना है।

अनुसंधान के क्षेत्र में सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण एक महत्वपूर्ण चरण है। इसके अवलोकन से शोध सम्बन्धी जानकारी एवं मार्गदर्शन प्राप्त होता है। सम्बन्धित साहित्य की जानकारी प्राप्त होने से शोधकर्ता की जटिलता स्वतः समाप्त अथवा कम हो जाती है तथा समय, शक्ति व धन की बचत होती है। सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण सम्बन्धित क्षेत्र में किये गये शोध एवं अनुसंधान कार्यों के बारे में गहन जानकारी देता है। सम्बन्धित साहित्य से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सम्बन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, दृष्टिकोणों, पत्र–पत्रिकाओं, शोध–प्रबन्धों तथा अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण, अध्ययन की रुपरेखा तैयार करने तथा वर्तमान कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है। प्रत्येक अनुसंधानकर्ता को यह भली–भाँति ज्ञात होना चाहिये कि उसके अन्वेषण क्षेत्र में कौन–कौन से स्रोत प्राप्त है ? उनमें से किनका उपयोग करना है ? तथा वह उन्हें कहाँ से और कैसे प्राप्त कर सकता है ?

सक्षेंप में हम कह सकते हैं कि सम्बन्धित साहित्य के आधार पर ही उस क्षेत्र में भविष्य में किये जाने वाले कार्य की नींव डाली जा सकती है।

2.2. सम्बन्धित साहित्य का महत्व एवं उपादेयता :-

सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण के महत्व को स्पष्ट करते हुए गुड, **बार तथा स्केट्स**[23] (1941) ने लिखा है –

"एक कुशल चिकित्सक के लिए यह आवश्यक है, कि वह अपने क्षेत्र में हो रही औषधि सम्बन्धित आधुनिकतम खोजों से परचित रहे, उसी प्रकार शिक्षा के जिज्ञासु छात्र, अनुंसधान के क्षेत्र में कार्य करने वाले तथा अनुसंधानकर्ता के लिए भी उस क्षेत्र से सम्बन्धित सूचनाओं एवं खोजों से परचित होना आवश्यक है।"

मानव ही एक ऐसा प्राणी है जो इस संसार में आकर सभी कार्य नये सिरे से प्रारम्भ ही नहीं करता वरन् वह अपने प्रत्येक कार्य सम्पादन में सदियों से संचित ज्ञान भंडार से भी लाभान्वित होता है। जैसा कि **जॉन विलियम वेस्ट**[24] (1965) ने लिखा है –

"व्यावहारिक दृष्टि से सम्पूर्ण मानव ज्ञान पुस्तकों व पुस्तकालयों से प्राप्त किया जा सकता है। अन्य जीव धारियों से भिन्न मानव अपने प्राचीन अनुभवों को संग्रहीत एवं सुरक्षित रखता है तथा मनुष्य अतीत के संचित एवं अधोलिखित ज्ञान के आधार पर नवीन ज्ञान का सृजन करता है।"

इसी प्रकार पुनरावृत्ति से बचने के लिए सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन का महत्व स्पष्ट करते हुए **डब्ल्यू0 आर0 बोर्ज**[25] ने भी लिखा है –

"किसी भी क्षेत्र का साहित्य उस आधार शिक्षा के समान है, जिस पर भार व कार्य आधारित होता है। यदि सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण द्वारा इस नींव को दृढ नहीं कर लेते, तो हमारा कार्य प्रभावहीन एवं महत्वहीन होने की सम्भावना है, अथवा यह पुनरावृत्ति भी हो सकती है।"

इस प्रकार सभी शिक्षा विद् एवं लेखकों ने एकमत से अनुसंधान कार्य की सफलता के लिए सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन अपरिहार्य माना है। सम्बन्धित साहित्य की उपयोगिता को निम्न बिन्दुओं से स्पष्ट किया जा सकता है –

1. सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण अनुसंधानकर्ता को अनावश्यक पुनरावृत्ति से रोकता है।
2. यह अब तक उस क्षेत्र विशेष में हो चुके कार्य की सूचना देता है।
3. यह शोध प्रबन्ध के एक महत्वपूर्ण अंग के रुप में अनुसंधानकर्ता के ज्ञान, उसकी स्पष्टता कुशलता को स्पष्ट करता है।

---

23. कार्टर बी0 गुड, ए0एस0 बार एण्ड डी0ई0 स्केट्स, 'मेथडालॉजी ऑफ एजूकेशनल रिसर्च', न्यूयार्क; आप्लिटन सेंच्यूरी क्राट्स, 1941, पेज–165
24. जॉन डब्ल्यू0 बेस्ट, 'रिसर्च इन एजूकेशन', नई दिल्ली; प्रिन्ट्रिस हाल ऑफ इण्डिया, 1977, पेज–31
25. उद्धृत पारस नाथ राय, 'अनुसंधान परिचय', आगरा; नवरंग ऑफसेट प्रिण्टर्स, 2004 पृष्ठ–95

4. यह समस्या के चुनाव तथा विश्लेषण करने में सहायक होता है।
5. इसके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता के समय और शक्ति की बचत होती है तथा यह समस्या के सीमांकन में भी सहायक होता है।
6. इससे अध्ययन की रुपरेखा तैयार करने में सहायता मिलती है।
7. यह अध्ययन की विधि में सुधार और श्रम की बचत करता है तथा अनुसंधानकर्ता में आत्मविश्वास की भावना उत्पन्न करता है।

ब्रूस0डब्ल्यू0 टक्मैन[26] ने सम्बन्धित साहित्य के पुनर्निरीक्षण के निम्नलिखित उद्देश्य बतलाये हैं–

1. महत्वपूर्ण चरों को खोजना।
2. जो हो चुका है, उससे जो करने की आवश्यकता है, उसे पृथक करना।
3. शोध कार्य का स्वरूप बनाने के लिए प्राप्त अध्ययनों का संकलन कराना।
4. समस्या का अर्थ, इसकी उपयुक्तता, समस्या से इसका सम्बन्ध और प्राप्त अध्ययनों से इसके अन्तर निर्धारित करना।

उपरोक्त उद्देश्यों की पूर्ति सम्बन्धित साहित्य के पुनरावलोकन से होती है, अरी डोनाल्ड[27] तथा अन्य ने सम्बन्धित साहित्य की निम्न पाँच उपयोगिता बतलायी हैं –

1. सम्बन्धित शोधकार्य का ज्ञान, शोध कर्ताओं को अपने क्षेत्र की सीमाओं को परिभाषित करने में समर्थ बनाता है।
2. सम्बन्धित क्षेत्र में सिद्धान्त का ज्ञान शोधकर्ता को अपने प्रश्नों के परिपेक्ष्य में समर्थ बनाता है।
3. सम्बन्धित शोध द्वारा पूर्ण खोज विगत अध्ययनों के अंजान पुनरावृत्ति से वंचित रखता है।
4. सम्बन्धित शोध के अध्ययन द्वारा शोधकर्ता को यह सीखने का अवसर प्राप्त होता है कि कौन सा उपकरण तथा कार्यविधि लाभदायक सिद्ध हुये हैं और कौन से कम आशाजनक।
5. सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन शोधकर्ता को एक अच्छी स्थिति में पहुँचा देता है, जिससे वह स्वयं के परिणामों के महत्व को समझ सके।

सर्वेक्षण और प्रायोगिक शोध में साहित्य का पुनर्निरीक्षण कारकों को एकत्र करके तथा पहले से ही तैयार किये गये कार्यों को विभिन्नता प्रदान करता है। यह अभिलेख शोध अध्ययन को अत्यन्त वैज्ञानिक और नवीनतम् बनाता है।

---

26. ब्रूस0 डब्ल्यू0 टक्मैन, 'कन्डक्टिंग एजूकेशनल रिसर्च', न्यूयार्क; हरकोर्ट ब्रेस जोनवोविच, 1972, पेज–73
27. अरी डोनाल्ड तथा अन्य, 'इन्ट्रोडक्शन टू रिसर्च इन एजूकेशन', न्यूयार्क; होल्ट रिनेहार्ट एण्ड सन्स विन्सटन्, 1978, पेज 58–59

2.3. सम्बन्धित साहित्य के स्रोत :–

शोधकर्ता ने वर्तमान समस्या के बारे में, सम्बन्धित जानकारी प्राप्त करने के लिए विभिन्न प्रकार के साहित्य, मासिक पत्र–पत्रिकाओं, पुराने शोधों एवं अनुसंधान सर्वेक्षणों का अध्ययन किया है। सम्बन्धित साहित्य हेतु शोधकर्ता सामान्यतः निम्न स्रोतो का सहारा लेते है –

1. पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित होने वाला सामाजिक साहित्य
2. पुस्तकें
3. किसी विषय पर लेख
4. शोध–प्रबन्ध
5. विश्वविद्यालय प्रकाशन
6. अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशन
7. विश्वकोष
8. शिक्षा तथा मनोविज्ञान सम्बन्धी लेखसार
9. वार्षिकी
10. बुलेटिन
11. राजकीय प्रकाशन
12. अन्य प्रकाशन
13. ज्ञान कोष एवं उद्धरण के अन्य स्रोत
14. ग्रन्थ सूची तथा निर्देशिकाएँ
15. मासिक पत्र–पत्रिकायें
16. शोधों एवं अनुसंधान सर्वेक्षण का अध्ययन इत्यादि।

2.4. समस्या से सम्बन्धित शोध–अध्ययन :–

चयनित समस्या से सम्बन्धित अनेक शोध देश–विदेश में हुए हैं,। जिसमें प्रस्तुत शोध से सम्बन्धित अनेक अध्ययन कतिपय विभिन्नता के साथ सम्पन्न हुए हैं, जिनका विवरण निम्नलिखित क्रमानुसार व्यवस्थित कर प्रस्तुत किया गया है –

(अ) विदेश में किये गये अध्ययन
(ब) भारत में किये गये अध्ययन
(स) प्रदेश में किये गये अध्ययन

2.4.1. विदेशों में सम्पन्न अध्ययन :–

विदेशों में हुये शोध समस्या से सम्बन्धित अनुसंधानों का अध्ययन करने हेतु भारत में एन0सी0ई0आर0टी0 के पुस्कालय में उपलब्ध जिन शोध–ग्रन्थ, पुस्तक का प्रयोग किया गया है वह निम्नलिखित हैं –

1. डिजरटेशन आब्सट्रेक्ट इन्टरनेशनल।
2. एस0पी0 गुप्ता द्वारा सम्पादित 'जॉब सेटिसफेक्शन एमॉंग टीचर', शारदा पुस्तक भवन यूनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद।

शोधकर्ता ने उपरोक्त शोध–ग्रन्थ, पुस्तक आदि से अपनी शोध समस्या के चर कृत्य–संतोष, समायोजन से सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन किया, जिसमें पाया गया कि वर्तमान समस्या से कतिपय विभिन्नता के साथ अनेक शोध (डी0लिट, पी–एच0डी0, एम0फिल, आर्टकिल, प्रोजेक्ट एवं शोध–पत्र) विदेश में हुये हैं जिनका संक्षिप्त विवरण कालक्रमानुसार व्यवस्थित कर प्रस्तुत किया जा रहा है –

विदेश में कृत्य–संतोष से सम्बन्धित अध्ययन आर0 होपाक (1935), एच0वाई0 मैकल्स्की (1940), आर0जी0 कुहलेन (1963), ए0 लेसी (1969), एच0ई0 युंग (1969), एम0एल0 मोजियर (1970), पी0पी0 मैरिल (1970), टी0एस0 बिशप (1970), जे0सी0 एडमंडसन (1970), जी0पी0 ला मार्टिया (1970), जे0बी0 मन (1971), बी0ओ0 हाफेन (1971), जी0बी0 प्रोबे (1971), आर0ई0 हैमर (1971), एल0डब्ल्यू0 प्राइस (1971), बी0बी0 स्पाक्रमैन (1971), बी0जे0 पजलाकूवा (1971), आर0जे0 टालबोट (1975), टी0डी0 मारगेन (1975), डब्ल्यू0एन0एम0 पाउण्ड (1975), जे0डी0 विगिन्स (1975), एच0एल0 थामस (1975), टी0जी0 सचकमूथ (1975), टी0ए0डी0 हलूम (1975), एफ0 मैकलीन (1975), टी0जी0ओ0 सच (1975), एफ0जे0 क्वाइटगू (1975), पी0एम0 मार्टिन (1975), एस0ए0 वेमैन (1975), एच0आर0 गवेंटिया (1975), एस0 हिमलस्टेन (1975), सी0जे0 रिर्चाड्स (1975), ई0एम0 वाशिंगटन (1975), जे0आर0 रोमेरो (1975), डब्ल्यू0एफ0 वेबर (1975), एन0पी0 रॉस (1975), जे0ई0 रिटर (1975), आर0डी0 मान्थे (1976), बी0एफ0 फिन्डले (1976), जे0एम0 बेसवेल (1976), सी0ई0 सा0 (1976), एस0ए0 बेमबरी (1976), एन0ई0 इन्गस्ट्रन हिन्कले (1976), जे0आर0 जॉनसन (1976), आर0 फ्रांसिस हर्षबेरगर (1976), टी0जे0 सिलवेस्टर (1976), ए0एम0 इस्पे (1976), डब्ल्यू0सी0 कोरटिस (1976), एफ0डब्ल्यू0 हंटिगशन तृतीय (1976), जे0ई0 मिफलिन (1976), पी0डी0 पुसटेरी (1976), एल0एफ0 हैन्डरसन (1976), डी0एल0एच0 मर्फी (1976), ए0डी0 पुट् (1976), जे0जे0 स्मिथ (1977), एम0जी0 एट्ब्रेरी (1977), सी0एम0 होडगे (1977), ई0एच0 बेहरमैन (1977), जे0एल0 पेरी (1977), टी0जी0 रॉसइन्थाल (1977), एच0एम0 हाफोर्ड (1977), डब्ल्यू0एम0 कैफर (1977), आर0आर0 सिम्मान्स (1978), एफ0जे0 हाडवे (1979), जु ज़ी लिन (1991), हेनड्रिक्स मैरीबेथ (1992), एडीशन इर्यल लुईस (1992), झाओ चैंगझियांग (1992), दीबोस हरमन लि़यॉन (1992), विलियम ओला मूरी (1992), मॉक रिबेका जॉय (1992), वाल्बर्ट जैनिट ई (1993), हचिंस डेनी ट्रिमोन (1996), राबिन वर्ली स्मिथ (1996), वाल्कर

महेला लुईस (1996), स्नेप्स रॉबिन ले (1996), फिटजराल्ड रोनॉल्ड इयूजिने (1996), टन पेंग हॉक फिलिप (1996), ली यून यू (2003), इग्वा पुलाइन इफोमा जॉय (2003), हिंकल नार्मन डब्ल्यू (2004), किडवेल जेम्स (2004), राबर्ट लोरेंस (2005), सैंड मेरी हक्र (2005), मिर्जा सलीम (2005), हाकिंस केन ए (2005), वीवर नैन्सी एल (2005), सोफिआँस थिवडोरे (2005), केनियन कार्ल एम डी बी ए (2005), मॉर्गन डिबेरा (2005), ईस्ट थॉमस जे (2005), ली जाँग ह्वा (2005), चेन लिन तंग (2005), एक्सी डी (2005), स्टेविन ड्रयू जैफ्री (2005), सुनेशन चार्लिन (2005), फेनाट बेरहन एकलॉग (2005), मैकलेन जेनिफर (2005), विकीलिन व्हील्सि (2005), रामीरेज गार्शिया (2005) ने किया।

विदेश में समायोजन से सम्बन्धित अध्ययन सी0 बाम्बस ल्योनिदास (1988), शॉ बारबरा ली (1992), सेरमन डिबोरा (1992), स्मिथ लॉरेन्स रिप्ले (1996), जैन एमी तंग हुआ (1996), शबीब शबीब शाद (1996), डोना माइकेल एल्किन्स (2003), हॉबी जैसिका डैनिले (2004), वनबावेन (2004), छू हैक्यूग (2005), केशरानी कार्ला (2005), हिंकले सारा ई0 (2005), तैन लिन (2005), फैनर चार्ल्स आर जुनियर (2005), स्मिथ एस ए (2005) ने किया।

उपरोक्त शोध/अध्ययनों में से कुछ का विवरण कालक्रमानुसार व्यवस्थित कर प्रस्तुत किया जा रहा है–

आर0 होपॉक (1935)[28] ने असंतुष्ट अध्यापकों और संतुष्ट अध्यापकों की तुलना का अध्ययन किया। जिसमें 51 ग्रामीण और शहरी विद्यालयों के 500 अध्यापकों का न्यादर्श लेकर प्रश्नावली एवं साक्षात्कार से प्राप्त अंकों का जब उन्होंने विश्लेषण किया तो यह पाया कि अध्यापक की संतुष्टि का स्तर उनका कृत्य–संतोष और भावात्मक प्रबन्ध, धर्म, सामाजिक स्तर, रुचि, आयु, थकान, समुदाय का आकार और अन्य कारकों से प्रभावित था।

पी0पी0 मैरिल द्वितीय (1970)[29] ने अपने अध्ययन में प्राथमिक अध्यापकों एवं प्रधानाचार्यों के कृत्य–संतोष को प्रभावित करने वाले कारकों का विश्लेषण किया। अध्ययन में उसने यह पाया कि अध्यापिकायें, अध्यापकों की अपेक्षा अधिकांशतः सन्तुष्ट रहती हैं। साथ ही अधिक आयु, अधिक प्रशिक्षण, और उच्च्य सामाजिक आर्थिक पृष्ठिभूमि वाले शिक्षकों की अपेक्षा कम आयु, कम प्रशिक्षण और निम्न सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि वाले शिक्षकों की सन्तुष्टि का स्तर कम होता है। गाँवों और कस्बा क्षेत्र के अध्यापकों एवं प्रधानाचार्यों के मध्य महत्वपूर्ण सम्बन्ध नहीं प्राप्त हुये, साथ ही कृत्य–संतोष के बारे में परिस्थिति महत्वपूर्ण कारक नहीं थी।

---

28. आर0 होपाक, 'कम्प्रेटिव आफ सेटिसफाइड एण्ड डिससेटिसफाइड टीचर' साइकोलॉजिकल बुलटिन, 1935,32, पेज–681
29. पी0 पी0 मैरिल, 'ए स्टडी कान्सेरनिन्ग द जॉब सेटिसफेक्शन आफ इलेमेन्ट्ररी टीचर्स एण्ड प्रिंसिपल्स' डाक्टोरल डिजरटेशन, डिजरटेशन आब्सट्रेक्ट्स इन्टरनेशनल (ए), 1970,31, पेज–1547ए

जी0बी0 प्रोवे (1971)[30] ने कृत्य–संतोष को प्रभावित करने वाले कारकों पर किये गये अध्ययन में पाया कि कृत्य–संतोष में लिंग, आयु, शिक्षा, शिक्षण–स्तर, विद्यालय आकार, शिक्षण अनुभव की अवधि, वर्तमान प्रणाली में रोजगार की अवधि, दूरगामी योजनायें और कुछ अन्य परिवर्तनीय जनतन्त्रात्मक समाज आदि कारकों के मध्य महत्वपूर्ण सम्बन्ध पाये गये।

जे0एम0 बेसवेल (1976)[31] ने टेक्सास के दूरदराज गाँवों में प्राथमिक विद्यालय शिक्षकों की शिक्षण संतुष्टि के अपने अध्ययन में यह प्रदर्शित किया कि वे अध्यापक जिनकी आयु तीस वर्ष से अधिक थी, जिनको तीन वर्ष या अधिक वर्षो का अनुभव था और जो ग्रामीण समुदायों के विशिष्ट भागों से सम्बन्धित थे, जिनके निजी घर थे और जो विवाहित थे, वे अधिक संतुष्ट थे अपेक्षा उनके, जिनकी आयु तीस वर्ष के कम थी, और तीन वर्षों से कम का अनुभव, शहरों के विशिष्ट भागों से सम्बन्धित, एवं किराये के घरों में निवास करने वाले तथा जो अविवाहित थे।

जे0ई0 मिफलिन (1976)[32] द्वारा भारत के राज्यों के प्राथमिक एवं द्वितीयक प्रधानाध्यापकों के बारे में किये गये अध्ययन के निष्कर्ष में यह प्रदर्शित किया गया कि विभिन्न प्रकार के समुदायों में स्थित बड़े विद्यालयों के प्राथमिक प्रधानाध्यापकों की अपेक्षा छोटी स्थित के ग्रामीण विद्यालयों के प्राथमिक प्रधानाध्यापक अधिक संतुष्ट थे। जबकि विभिन्न प्रकार के समुदायों के द्वितीयक प्रधानाचार्यो की अपेक्षा शहर के अन्तःशहरी विद्यालयों के द्वितीयक प्रधानाध्यापक अपने कार्य से अधिक सन्तुष्ट थे।

सी0 बाम्बस ल्योनिदास (1988)[33] ने मांट्रियल में स्थित 'द ग्रीक डे' स्कूलों में सुकरात पद्धति के विकास तथा छात्रों की पहचान पर प्रभाव, समायोजन तथा उपलब्धियों का अध्ययन किया, जिसके उद्‌देश्य निम्नलिखित थे –

इस अध्ययन का उददेश्य 'द ग्रीक डे स्कूल ऑफ मांट्रियल' के विकास और इसके विद्यार्थियों पर प्रत्यक्ष रूप से पड़ने वाले प्रभाव, बदलती जातीय पहचान, सामाजिक एकीकरण और संस्थागत उपलब्धियों के प्रभावों की खोज करना था। स्कूल के ऐतिहासिक विकास को प्रकट करने में अस्तित्वपूर्ण अभिलेखों का प्रस्तुतीकरण, यूनानी समुदाय व विचारधाराओं का विश्लेषण तथा सहभागी निरीक्षणों का प्रयोग किया गया। 549 यूनानी मूल के व्यक्तियों के साक्षात्कार द्वारा अस्थिर आधारों– राष्ट्रीयता, एकीकरण तथा उपलब्धियों की जाँच की गई। जिसमें से 118–व्यस्क, 255–सुकरात के

---

30. जी0बी0 प्रोबे, 'एन इन्वेस्टीगेशन आफ द रिलेशनशिप बिटवीन टीचर जॉब सेटिसफेक्शन एण्ड सेलेक्टेड पर्सनल करेक्ट्रिसटिक्स' डाक्टोरल डिजरटेशन, डिजरटेशन आब्सट्रेक्ट्स इन्टरनेशनल (ए), 1971,31, पेज–5093ए
31. जे0एम0 बेसवेल, 'टीचिंग सेटिसफेक्शन आफ इलेमेन्ट्री स्कूल टीचर्स इन इसोलेटेड रुरल टेक्सेस कौन्टीज', डाक्टोरल डिजरटेशन, डिजरटेशन आब्सट्रेक्ट्स इन्टरनेशनल (ए), –1976,36:12, पेज –7848–7849ए
32. जे0ई0 मिफलन, ए स्टडी आफ द वर्क एडजस्टमेंन्ट एण्ड जॉब सेटिसफेक्शन आफ इलेमेन्ट्री एण्ड सेकेण्डरी प्रिंसिपल्स, डाक्टोरल डिजरटेशन, डिजरटेशन आब्सट्रेक्ट्स इन्टरनेशनल (ए), –1976,36:9, पेज –5702, 5703ए
33. सी0 ब्राम्बस ल्योनिदास, पी–एच0डी0, कनाडा; मैकगिल विश्वविद्यालय, 1988, डिजरटेशन आब्सट्रेक्ट इन्टरनेशनल, वैल्यूम 47, पेज–232

शिष्य थे तथा 158—सुकरात के शिष्य नहीं थे और शेष 18 सुकरात के स्नातक थे। यद्यपि जो परिणाम प्राप्त हुये वे सुकरात के समकालीन अस्थिर परिस्थितियों (खोजी गई) द्वारा पड़ने वाले स्वीकृत सूचक प्रभावों के विषय में निष्कर्षात्मक प्रमाण नहीं उपलब्ध करा सके किन्तु यह स्पष्ट रूप से प्रदर्शित हो रहा था कि जातीय पहचान सामुदायिक विद्यालयों पर प्रभाव डालती है।

हेनड्रिक्स मैरीबेथ (1992)[34] ने विशेष शिक्षा के शहरी शिक्षकों के समर्पण, कृत्य—संतोष तथा जीवनवृत्ति योजनाओं को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन किया। विशेष शिक्षा में व्यक्तिगत कर्मियों के परिपेक्ष्य में उच्च शिक्षक विस्मृति दर के विषय में शिक्षकों की विस्मृति एवं स्मृति पर शोध की आवश्यकता पर तर्क दिया गया है। विशेष शिक्षा के शिक्षकों के व्यक्तिगत गुणों में यह समझना अति आवश्यंक है कि कोई अयोग्य विद्यार्थी अनुचित शिक्षा न पा रहा हो। इस अध्ययन का उद्देश्य विशेष शिक्षा के शहरी शिक्षकों की जीवनवृत्ति योजनाओं के कारकों को प्रभावित करने वाले कारकों या चरों की खोज करना था। शहरी विशेष शिक्षकों के समर्पण, कृत्य—संतोष, जीवनवृत्ति योजनाओं को बेहतर तरीके से समझने के लिए इस अध्ययन के आँकड़ों के संग्रहण तथा विश्लेषण में गुणवत्तापूर्ण शोध की विधियों का प्रयोग किया गया। अध्ययन के लिए मेम्फिस सिटी स्कूल में कार्यरत 60 विशेष शिक्षा के शिक्षकों का न्यादर्श लेकर साक्षात्कार किया गया। इन विशेष शिक्षकों को तीन समूहों में बराबर—बराबर विभाजित किया गया — स्थाई, अस्थाई, अनिश्चित।

इसमें जीवनवृत्ति उपाय तथा दृष्टिकोण अनुसूची में समर्पण एवं कृत्य—संतोष चर भी सम्मिलित थे। एक साक्षात्कार कर्ता के द्वारा प्रत्येक विशेष शिक्षकों का व्यक्तिगत साक्षात्कार किया गया तथा साक्षात्कार के प्रत्येक प्रश्न के उत्तर के विश्लेषण के लिए क्रास इण्टरव्यू का प्रयोग किया गया। आँकड़ों में जिन विधियों एवं तकनीकी को समावेषित किया गया, उन पर पुर्नविचार कर चिन्हित किया गया।

इस अध्ययन के निष्कर्षों में विशेष शिक्षकों के उदाहरण भी सम्मिलित हैं। साक्षात्कार— दाताओं के अनुसार बहुत से कार्य सम्बन्धित तथ्य जैसे — कार्य—सहयोग, अनुबन्ध, विद्यार्थी, कार्य—प्रोत्साहन आदि (MCS) के विशेष शिक्षा के शिक्षकों का समर्पण, कृत्य—संतोष, तथा भविष्य में स्थायीत्व तथा अस्थायीत्व के लिए महत्वपूर्ण थे। (MCS) के विशेष शिक्षा के शिक्षकों की अस्थायीत्व के दो मुख्य कारण—कार्य अनुबन्ध तथा सहयोग थे। इस अध्ययन के निष्कर्ष यह सुझाव देते हैं कि शिक्षकों की विस्मृति को रोकने में कृत्य—सम्बन्धित कारकों पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिये। (MCS) के शिक्षकों के साक्षात्कार से प्रतिभागियों ने कार्यों की परिस्थितियों में सुधार के लिए प्राथमिकतायें दीं जिसमें शिक्षकों की निर्णय प्रक्रिया में सहभागिता, विद्यालय प्रसाशको के प्रभाव से शिक्षकों की जीवनवृत्ति योजनाओं तथा उनके विशेष शिक्षा—शिक्षण दबाव भी सम्मिलित थे।

---

34. हेनड्रिक्स मैरीवेथ, पी—एच0डी0. एजूकेशन, वर्जीनिया पॉलीटेक्निक संस्थान एवं राज्य विश्वविद्यालय, 1992, डिजरटेशन आब्सट्रेक्ट्स इन्टरनेशनल, वैल्यूम 53 (ए), पेज—245

राबिन वर्ली स्मिथ (1996)[35] ने लोरिडा के चयनित माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के निर्णयों में सहभागिता, कृत्य–संतोष तथा अनुपस्थिति का अध्ययन किया।

अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित थे –

1. यह शोध करना कि माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की सहभागिता किस प्रकार के निर्णयों में होती है।
2. चयनित क्षेत्रों के विद्यालयों के कर्तव्य पालन में शिक्षकों की सहभागिता का अध्ययन करना।
3. विद्यालय सम्बन्धी निर्णयों में शिक्षकों की सहभागिता के स्तर तथा कृत्य–संतोष के मध्य यदि कोई सम्बन्ध हो तो उसकी व्याख्या करना।
4. शिक्षको के निर्णयों में सहभागिता के स्तर तथा अनुपस्थिति की दर के मध्य सम्बन्ध की व्याख्या करना।

आँकड़ों का संग्रह लैग्लर, लेक, ओरेन्ज, पुतनाम, सेमीनोल तथा वाल्यूशिया काउन्टीज के 340 माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों पर सन् 1996 में बसन्त ऋतु के 6 माह के अध्ययन के दौरान किया गया। शोधकर्ता के द्वारा एक प्रश्नावली निर्मित की गयी, जिसका शीर्षक 'निर्णयों में सहभागिता' था तथा कृत्य–संतोष मापन के लिए ब्रेफील्ड एवं रॉठ (1951) के द्वारा निर्मित 'कृत्य–संतोष अनुसूची' का इस अध्ययन में प्रयोग किया गया। अध्ययन में निम्नलिखित प्रश्नों का परीक्षण किया गया।

1. किस प्रकार के निर्णयों में माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक भाग लेते हैं ?
2. विद्यालय के कर्तव्य पालन के निर्णयों में माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षक किस प्रकार की सहभागिता करते हैं ? का पता लगाना।
3. क्या माध्यमिक स्कूलों के शिक्षकों के निर्णयों में सहभागिता तथा उनके कृत्य–संतोष के मध्य कोई सम्बन्ध है ?
4. क्या माध्यमिक स्कूलों के शिक्षकों के निर्णयों में सहभागिता एवं अनुपस्थित दर में कोई सम्बन्ध है ?

संग्रहीत आँकड़ों के विश्लेषण के लिए मात्रात्मक एवं गुणात्मक विश्लेषण का प्रयोग किया गया। जिस प्रकार के निर्णयों में माध्यमिक स्कूलों के शिक्षक भाग लेते थे, वह विद्यालय सुधार से सम्बन्धित थे। जैसे– स्कूल की समस्याओं को जानना तथा हल करना, स्कूल की आवश्यकताओं तथा विद्यालय विकास को प्राथमिकता देना। जिन निर्णयों में माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक कम भाग लेते थे, वह थे– विभागीय अध्ययन सम्बन्धी अभिलेख, साक्षात्कार, स्टाफ तथा शिक्षकों के लिए अतिरिक्त पाठ्यक्रम।

---

35. राबिन वर्ली स्मिथ, पी–एच0डी0, एजुकेशन, मिस्सी सिप्पी राज्य विश्वविद्यालय, 1996, डिजरटेशन आब्सट्रेक्ट्स इन्टरनेशनल, वैल्यूम 57 (ए), पेज–89

माध्यमिक स्कूलों के शिक्षकों के निर्णयों में सहभागिता तथा कृत्य–संतोष के स्तर के मध्य पर्याप्त सम्बन्ध था। जिन माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक अधिकाधिक निर्णय प्रक्रियाओं में भाग लेते थे वह अपने कार्य से अधिक सन्तुष्ट थे। माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की निर्णयों में सहभागिता तथा उनकी अनुपस्थिति दर के मध्य भी पर्याप्त सम्बन्ध था। जिन माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक निर्णयों में अत्यधिक भाग लेते थे, उनकी अनुपस्थिति दर बहुत कम थी।

डोना माइकल एल्किन्स (2003)[36] ने शिक्षक किस प्रकार स्नातक शिक्षा की सहायक सूचना–खोज, स्वःसामर्थ्य एवं भूमिका तथा समायोजन की सामाजिकता की ब्यूह रचना करता है, का अध्ययन किया।

प्रतिभाशाली विद्यार्थी प्रायः नये विभागों की उन स्थितियों के समायोजन में कठिनाई महसूस करते है, जिनमें स्तरीय शिक्षण होता है (व्यायस 1992, गोल्ड एवं डोरे 2001, मैगनर 2000, नाइक्विस्ट एवं बुडफोर्ड 2000), क्योंकि बहुत से विद्यार्थी शिक्षण के लिए तैयार नहीं होते हैं। यह समस्या विद्यालय के कई विषय क्षेत्रों में देखने को मिलती है, लेकिन यह सामाजिक विज्ञान, भाषा तथा कला में निश्चित रूप से होती है, जहाँ बहुत बड़ी संख्या में स्नातक छात्र निकलते हैं, जो कि शिक्षण को अन्य की अपेक्षा वरीयता देते हैं।

कुछ वर्षों से सांगठनिक संदेश एवं सांगठनिक व्यवहार के शोधकर्ताओं ने परीक्षण किया है कि सामाजिकता की व्यूह रचना का प्रभाव तथा सूचना–खोज नये आने वालों के समायोजन में पूर्णतया उत्तरदायी है। शब्द 'नये आने वालों का अभिनय समायोजन' (ऐस्फोर्थ एवं साक्स 2000) का प्रयोग अनिश्चितता, द्वन्द्व, स्थित के प्रति लगाव जैसे– आभिनयों की व्याख्या करने के लिए प्रयोग किया गया है। अभिनय समायोजन में यह भी देखा गया है कि व्यक्ति ठहराव की स्थिति में कितना प्रभावी है तथा वह कितना अच्छा अभिनय करते हैं तथा उनका कृत्य–संतोष कितना है।

इस प्रकार यह अध्ययन 'नये आने वालों का अभिनय समायोजन' अवधारणा का परीक्षण इस नये सन्दर्भ में करता है कि स्नातक शिक्षण (GTAS) किस प्रकार शिक्षण अभिनय के समायोजन में सहायक है। (GTAS) में सामाजिक विज्ञान, भाषा अथवा कला, जिनकों 2 वर्ष या कम पढ़ाया गया था, उन पर वेवसाइट आधारित निरीक्षण किया गया है। यह अध्ययन वेबसाइट आधारित निरीक्षण के परिणाम दर को प्रसारित करने के योग्य है, क्योंकि यह लक्ष्य जनता तक पहुँचता है। इस अध्ययन में परिणाम दर 36 प्रतिशत था।

इस अध्ययन के निष्कर्ष यह बताते हैं कि सामाजिकता व्यूह रचना से सम्बन्धित विभाग, (GTAS) के शिक्षण के अभिनय समायोजन में महत्वपूर्ण प्रभाव रखते हैं, किन्तु वे (GTAS) की

---

36. डोना माइकल एल्किन्स, पी–एच0डी0, एजुकेशन, कैन्टकी विश्वविद्यालय 2003, डिजरटेशन आब्सट्रेक्ट्स इन्टरनेशनल, वैल्यूम 64 (ए), पेज–182

सूचना–खोज व्यूह रचना तथा सामर्थ्य स्तर से भी प्रभावित होते हैं। सामान्यतया संस्थानिक सामाजिकता (GTAS) की अवस्था एवं द्वन्द्व के स्तर पर सकारात्मक प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष प्रभाव दिखता है। इस अध्ययन के अन्य निष्कर्ष अभिनय समायोजन के सांगठनिक एवं व्यक्तिगत चरों के साथ अन्तःक्रियायें दिखाते हैं तथा (GTAS) के शिक्षण अभिनय के लिए बेहतर गुणवत्ता पूर्ण व्याख्या प्रस्तुत करते हैं।

ली यून यू (2003)[37] ने परिवर्तित नेतृत्व सिद्धान्तों की, शिक्षकों की नियमावली तथा शिक्षकों का कृत्य–संतोष एवं विद्यालय समर्पण का अध्ययन किया, जिसके उद्देश्य निम्नलिखित थे–

वह राष्ट्र जो विश्व की आर्थिक रूप से प्रमाणित शिक्षा के विकास में आत्मनिर्भर होने की इच्छा रखते हैं, ताईवान ने हाल ही में शिक्षा–व्यवस्था को सुधारने का प्रयास किया तथा अपने विद्यार्थियों की योग्यता के मूल्य में वृद्धि के द्वारा तेजी से बदलते हुये विश्व के आर्थिक स्तर में सहभागिता करने का उद्देश्य बनाया। किसी राष्ट्र की युवा पीढ़ी को निर्देशित करने में मुख्य तथ्य शिक्षक की जिम्मेदारी है। यदि शिक्षक में कृत्य–संतोष एवं समर्पण का अभाव है तो उत्पादक अधिगम तथा शैक्षिक सुधार में ह्रास होने की सम्भावनाएं बढ़ जाती है। इस प्रकार शैक्षिक कार्य तथा सभी अस्थिर क्षेत्र शिक्षक नेताओं के लिए अति आवश्यक चिन्ता का विषय है। इस अध्ययन का उद्देश्य ताईवान के शैक्षणिक सुधार के सन्दर्भ में परिवर्तित नेतृत्व आदर्श के आधार पर शिक्षकों का कृत्य–संतोष तथा विद्यालय समर्पण का अध्ययन करना था।

2003 में ताईवान में 1250 माध्यमिक स्कूलों के शिक्षकों पर एक स्वःसूचना को निर्देशित किया गया था, जिससे कि वे अपने मौजूदा विद्यालय के प्रधानाचार्य की नेतृत्व शैली तथा शिक्षकों का कृत्य–संतोष एवं विद्यालय की सामाजिकता को ध्यान में रखकर उत्तर दे सकें। इस शोध में व्यक्तिगत एवं विद्यालयों के गुणों पर आधारित प्रश्नों की एक सूची के द्वारा शिक्षकों की पृष्ठभूमि की सूचना एकत्रित की गई।

आँकड़ों के विश्लेषण में व्याख्यात्मक सांख्यिकीय, सहसम्बंध–गुणांक, और प्रतीपगमन का प्रयोग किया गया है। इस अध्ययन के निष्कर्ष दर्शाते हैं कि ताईवान के माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के मध्य कृत्य–संतोष तथा विद्यालय समर्पण में परिवर्तित नेतृत्व का पर्याप्त एवं सकारात्मक प्रभाव है।

वे शिक्षक बहुत सन्तुष्ट एवं समर्पित थे जिनके प्रधानाचार्य अपने स्कूल के भविष्य के प्रति स्पष्ट दृष्टिकोंण रखते थे तथा एक उचित आदर्श की पहले से तैयारी रखते थे। साथ ही व्यक्तिगत सहयोग के लिए प्रस्तुत रहते थे तथा उच्च कार्य की आकांक्षायें रखते थे। इस अध्ययन की कठिनाइयों

---

37. लीo यून यू, पी–एचoडीo, एजुकेशन, फारधान विश्वविद्यालय, 2003, डिजरटेशन आब्सट्रेक्ट्स इन्टरनेशनल, वैल्यूम 64 (ए), पेज–151

पर पुर्न विचार कर पब्लिक विद्यालयों एवं प्राईवेट विद्यालयों के प्रधानाचार्यो तथा सरकारी नीति निर्माण के सम्बन्ध में अध्ययन किया गया।

राबर्ट लॉरेंस (2005)[38] ने सार्वजनिक शिक्षकों के अन्तः कृत्य गुणों तथा कृत्य–संतोष के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन किया। यह अध्ययन लोरिडा पब्लिक, कम्यूनिटि कालेजों के निर्देशकों के अन्तः कृत्य गुणों तथा कृत्य–संतोष के मध्य सम्बन्ध की विवेचना करना था। इस शोध का उद्देश्य सात जातीय कृत्य गुणों तथा तीन जातीयों की सामाजिक स्थिति के चरों का अध्ययन करना था।

इस अध्ययन का उद्देश्य उपरोक्त सम्बन्धों की जानकारी के आधार पर एक ऐसे उपकरण को निर्मित करना था, जिससे कम्यूनिटी कालेज़ के प्रशासकों की अधिकाधिक कृत्य–संतोष में वृद्धि की जा सके। इस अध्ययन में 10 शोध प्रश्न थे, जोकि कृत्य–संतोष के मध्य सम्बन्ध को निम्न तरह से प्रदर्शित करते थे। जिसमें सम्भावित उत्प्रेरक प्राप्तांक (W.S) तथा जातीय कृत्य गुण, प्रोन्नति के अवसर, कार्य दशायें, सहायक कर्मी, कृत्य स्तर, निरीक्षक, वर्तमान वेतन, विभाग लिंग तथा आयु थे।

यह कम्यूनिटी कालेज के निर्देशकों तथा दस में सात कृत्य–गुणों के मध्य सम्बन्ध को प्रदर्शित करते थे। ये तीन गुण–अपवाद चर विभाग, आयु तथा स्वयं का कार्य थे। तीन अपवादों की व्याख्या निर्देशों में जो पायी गयी, वे सार्वभौमिक तथ्य के रूप में हो सकती हैं। एक तथ्य जिसका सार्वभौम प्रभाव कृत्य–गुणों से था, वह कम्यूनिटी कालेज के कुछ निर्देशकों के विभाग से था क्योंकि उनका शिक्षण विभिन्न स्तरों पर भविष्य के लिए समर्पण प्रस्तुत करता था। एक अन्य तथ्य जिसका सम्बन्ध प्रभाव पर लक्षित होता था, वह थी– निर्देशक की औसत आयु 53 वर्ष तथा उनके कार्य की जीवनचर्या के मध्य सम्बन्ध।

फेनाट बेरहन एकलॉग (2005)[39] ने शिक्षकों का कृत्य–संतोष एवं असंतोष पर इथोपिया के शहरी शिक्षकों पर एक प्रायोगिक अध्ययन किया, जिसके उद्देश्य निम्नलिखित थे –

1. इथोपिया के शहरी प्राथमिक शिक्षकों के कृत्य–संतोष एवं असंतोष के कारणों की पहचान करना।
2. यह परीक्षण करना कि शिक्षक की भावनाएं किस प्रकार व्यक्तिगत एवं विद्यालयीय गुणों में व्यवसाय की ओर मध्यस्थता करती हैं।

अध्ययन में इथोपिया के 15 प्राथमिक विद्यालयों के 288 शिक्षकों (प्रतिभागी) का न्यादर्श लिया गया जिसमें 278 प्रश्नावली आधारित प्रतिभागी एवं 10 साक्षात्कार आधारित प्रतिभागी थे।

---

38. राबर्ट लॉरेंस, डी0पी0ए0, साउथेस्टर्न विश्वविद्यालय, 2005, डिजरटेशन आब्सट्रेक्ट्स इन्टरनेशनल वैल्यूम 66 (ए), पेज–172
39. फेनाट बेरहन एकलॉग, पी–एच0डी0, एजुकेशन, कोलम्बिया विश्वविद्यालय, टीचर एजुकेशन कालेज, 2005, डिजरटेशन आब्सट्रेक्ट्स इन्टरनेशनल, वैल्यूम 66 (ए), पेज–14

सम्पूर्ण में आधे से अधिक कृत्य–असंतोष की भावना प्रदर्शित करते थे। महिला तथा निम्न प्राथमिक शिक्षक सर्वाधिक कृत्य–संतोष प्रदर्शित करते थे। वे शिक्षक जिन्होंने इस व्यवसाय में प्रवेश स्वभाविक तौर पर या परोपकार की भावना से किया था, वह इस अध्ययन में सर्वाधिक सन्तुष्ट पाये गये। कृत्य–संतोष में स्कूल के प्रकार, स्कूल के आकार, औसत कक्षा–आकार तथा औसत वेतनमान के आधार पर विभिन्नताएं पायीं गयीं।

कृत्य–संतोष के मुख्य स्रोत– शिक्षण कार्य के स्वाभाविक पहलू, जैसे – विद्यार्थियों से अन्तःक्रिया तथा विद्यार्थियों को प्रभावित करने की क्षमता पर आधारित थे। शिक्षक कार्याधिक तथा अपने कार्य के सामाजिक स्तर से असन्तुष्ट थे। एक मुख्य अन्तर, जो कि सन्तुष्ट एवं असन्तुष्ट शिक्षकों के मध्य पाया गया, वह था, उनमें शिक्षण का स्वाभाविक या आन्तरिक पहलू न कि उनके कार्य का अनावश्यक बाहरी पहलू।

इस अध्ययन के निष्कर्ष शिक्षा नीति के लिए महत्वपूर्ण हैं। पहला– यह शिक्षकों के कार्य के बाहरी या अनावश्यक पहलू के साथ असंतोष के उच्च स्तर को प्रदर्शित करता है, दूसरा– यह विभिन्न पहलुओं के स्पष्ट प्रवेश द्वार बताता है, जैसे कि शिक्षकों का बढ़ता हुआ वेतन, उनके असंतोष के स्तर को सुधार सकता है।

इस अध्ययन के निष्कर्ष यह भी सुझाव देते हैं कि इस प्रकार की नीतियाँ शिक्षकों का कृत्य–संतोष पर कम प्रभाव डालेंगी क्योकि उनके द्वारा कृत्य–संतोष के स्रोतों की पहचान नहीं हो पायेगी। यह अध्ययन यह भी बताता है कि शिक्षकों का कृत्य–संतोष, शिक्षकों के विभिन्न पहलुओं से बहुत घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित है। शिक्षकों का कृत्य–संतोष का स्तर बढ़ाने के लिए, विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षकों की क्षमताऐं विकसित की जानी चाहिए।

मैकलेन जेनिफर (2005)[40] ने दूरस्थ शिक्षा के शिक्षकों का कृत्य–संतोष और दबाव का अध्ययन किया, जिसका उद्‌देश्य ऐसे दूरवर्ती उच्च शिक्षा–संस्थानों के शिक्षकों का कृत्य–संतोष एवं दवाब का अध्ययन करना था, जो कि शिक्षा के नये–नये सूत्रपात जारी रखते हुए विद्यार्थियों के लिए विभिन्न विभागों को खोलते हैं। कई विभागों के खुलने से एक स्थान विशेष से दूरस्थ स्थान पर इंटरनेट द्वारा शिक्षण किया जाता है वह भी लिखित साहित्य के साथ, ऐसे में शिक्षक पर क्या दबाव है ? तथा उसे कितनी कृत्य–संतोष है ? यह विवेचनात्मक अध्ययन दूर से प्रसारण पर शिक्षण कार्य करने वाले विभिन्न विभागों के शिक्षकों के मध्य डेल्फी विधि का प्रयोग करके उनके दबाव एवं कृत्य–संतोष के स्तर को चिन्हित किया गया। इस अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि शिक्षकों की संतुष्टि,

---

40. मैकलेन जेनिफर, पी–एच0डी0, एजूकेशन कोलम्बिया विश्वविद्यालय, टीचर एजुकेशन कालेज 2005, डिजरटेशन आब्सट्रेक्ट्स इन्टरनेशनल, वैल्यूम 66 (ए), पेज–305

गुणवत्ता पूर्ण वातावरण एवं उनके विद्यार्थियों की सन्तुष्टि तथा सफलता में निहित होती है। वे दूर स्थान से इण्टरनेट द्वारा शिक्षण करने में कोई दबाव महसूस नहीं करते थे।

विकीलिन व्हील्स (2005)[41] ने शिक्षकों का कृत्य–संतोष एवं असंतोष पर इथोपिया के शहरी शिक्षकों पर एक प्रायोगिक अध्ययन किया, जिसका उद्देश्य लूईसियाना में प्रधानाचार्यों का कृत्य–संतोष तथा विद्यालय कार्य स्कोर (SPS) के मध्य सम्बन्ध का परीक्षण करना था।

न्यादर्श में लूईसियाना राज्य के 1328 प्रारम्भिक, माध्यमिक, उच्च तथा PK-12 पब्लिक स्कूल के प्रधानाचार्यों को लिया गया। प्रतिभागियों को इंटरनेट के द्वारा शार्टफार्म मिनेसोटा सन्तुष्टि प्रश्नावली (MSQ) को पूर्ण करने के लिए कहा गया। एम0सी0क्यू0 में तीन जातीय (प्रधानाचार्यों से सम्बन्धित) प्रश्न तथा तीन विस्तृत प्रश्न पूँछे गये। ऑकड़ों का विश्लेषण 'एकमार्गीय चर विश्लेषण' एनोवा (ANOVA) के द्वारा किया गया। सांख्यिकीय विश्लेषण यह प्रदर्शित करता है कि आन्तरिक, बाह्य तथा सामान्य कृत्य–संतोष निम्न चरों के परिपेक्ष्य में पर्याप्त अन्तर नहीं रखती–

(i) लिंग (ii) स्कूल का आकार (iii) स्कूल का प्रकार (iv) उच्चतम आय (v) विद्यालय कार्य स्कोर (SPS) स्तर के परिपेक्ष्य में पर्याप्त अन्तर नहीं रखते थे। गुणात्मक प्रतीप गमन के निष्कर्ष दिखाते हैं कि सामान्य कृत्य–संतोष स्कोर तथा (i) आन्तरिक कृत्य–संतोष (ii) बाह्य कृत्य–संतोष (iii) SPS स्तर और (iv) स्कूल का प्रकार नामक चरों के मध्य पर्याप्त सम्बन्ध थे।

इस अध्ययन के अन्य निष्कर्ष यह प्रदर्शित करते हैं कि प्रधानाचार्य यह महसूस करते थे कि समय–प्रबन्ध का मिलान एवं कागजी कार्य तथा निर्देशक–नेतृत्व बनाम प्रबन्धक, उनके प्रधानाचार्य के रूप में चुनौतीपूर्ण कार्य थे। 64 प्रतिशत प्रधानाचार्यों ने कहा कि विद्यार्थियों के साथ कार्य करने के अवसर उनकी कार्य में सन्तुष्टि के महत्वपूर्ण अंग थे।

रामीरेज गार्शिया (2005)[42] ने संयुक्त राज्य में लाभ के स्थापित कालेजों में पूर्ण कालिक विभागीय शिक्षकों का कृत्य–संतोष तथा पृष्ठभूमीय गुणों का अध्ययन किया, जिसके उद्देश्य निम्नलिखित थे –

1. संयुक्त राज्य में लाभ के लिए स्थापित कालेजों में पूर्णकालिक विभागीय शिक्षकों का कृत्य–संतोष तथा पृष्ठभूमीय गुणों का अध्ययन करना।
2. संयुक्त राज्य में लाभ के लिए स्थापित कालेजों में पूर्णकालिक विभागीय शिक्षकों एवं बिना लाभ वाले कालेजों के शिक्षकों का कृत्य–संतोष तथा पृष्ठभूमीय गुणों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

---

41. विकीलिन व्हील्स, पी–एच0डी0, एजूकेशन, लुईसियाना टेक विश्वविद्यालय, 2005, डिजरटेशन आब्सट्रेक्ट्स इन्टरनेशनल, वैल्यूम 66 (ए), पेज–129
42. रामीरेज गार्शिया, पी–एच0डी0, एजूकेशन, जर्मन एलार्टो एजुकेशन हावर्ड विश्वविद्यालय, 2005, डिजरटेशन आब्सट्रेक्ट्स इन्टरनेशनल, वैल्यूम 66 (ए), पेज–187

3. यह विवेचन करना कि क्या निजी क्षेत्र में लाभ के लिए स्थापित कालेजों के शिक्षकों तथा सार्वजनिक एवं निजी, बिना लाभ वाले कालेजों के शिक्षकों का कृत्य–संतोष के मध्य कोई अन्तर है ?

इस अध्ययन में संयुक्त राज्य में लाभ के लिए स्थापित कालेजों में पूर्णकालिक विभागीय शिक्षकों का कृत्य–संतोष तथा पृष्ठभूमीय गुणों के निरीक्षण के लिए चार वर्षीय निजी लाभ के लिए स्थापित 28 कालेजों के 149 पूर्णकालिक विभागीय शिक्षकों का न्यादर्श चयनित किया गया तथा न्यादर्श में चयनित शिक्षकों पर एक बेवसाइट आधारित प्रश्नावली का प्रयोग करके आँकड़ों को एकत्रित किया गया। प्राप्त आँकड़ों पर विवेचनात्मक सांख्यिकी का प्रयोग करके चयनित चरों आयु, लिंग, जातीयता, संस्थान में कार्य का अनुभव, उच्चतम् आय, क्रियाकलाप, संस्थानिक स्तर, प्राथमिक लगाव तथा कार्य वरीयता आदि के आधार पर पृष्ठभूमीय गुणों की तुलना की गयी। यह तुलना सार्वजनिक एवं निजी लाभ के लिए स्थापित तथा बिना लाभ के लिए स्थापित कालेजों के विभागीय शिक्षकों के पृष्ठभूमीय गुणों से की गयी थी।

विभागीय सन्तुष्टि की विवेचना के लिए निम्नलिखित चरों के सापेक्ष सांख्यिकी का प्रयोग किया गया– नये विचारों के विकास के अवसर, वेतन तथा अन्य लाभ, शिक्षण भार, छात्रों के गुण, कार्य करने की दशायें, अन्य विभागों से सामाजिक तथा कृत्य–संतोष सम्बन्ध, कालेजों की प्रतिस्पर्धा, कार्य सुरक्षा तथा प्रशासक से सम्बन्ध। कृत्य–संतोष के स्तर की तुलना एवं विश्लेषण, लाभ के लिए स्थापित कालेजों तथा सार्वजनिक, निजी, बिना लाभ वाले कालेजों के शिक्षकों के मध्य किया गया। प्रतीपगमन का प्रयोग कृत्य–संतोष पर संसाधनों के प्रकार के प्रभाव के परीक्षण के लिए किया गया जिसके निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए –

1. आयु के सापेक्ष विभिन्न प्रकार की संस्थाओं के शिक्षकों के कार्य अनुभव, उच्चतम आय, संस्थानिक स्तर, प्राथमिक लगाव, संस्थानिक भविष्य के मध्य पर्याप्त सार्थक अन्तर पाया गया।
2. प्रतीपगमन विश्लेषण से प्रदर्शित हो रहा था कि कृत्य–संतोष में संस्थानों के प्रकार का प्रभाव पड़ता है।
3. कार्य का स्तर, आयु तथा लिंग के सन्दर्भ में चार वर्षीय निजी लाभ वाले कालेजों के शिक्षक चार वर्षीय सार्वजनिक एवं निजी बिना लाभ वाले कालेजों की तुलना में सन्तुष्ट थे।
4. निर्देशकों तथा प्रवक्ताओं की तुलना में प्रोफेसर एवं सहायक प्रोफेसर अधिक सन्तुष्ट थे।
5. पुरुष विभाग की अपेक्षा महिला विभाग अधिक सन्तुष्ट था।
6. गोरे विभाग की अपेक्षा अफ्रीकन, अमरीकन तथा एशियन अमरीकन विभाग कम सन्तुष्ट था।

2.4.2. भारत में सम्पन्न अध्ययन :–

शोध समस्या से सम्बन्धित अनुसंधानों का अध्ययन करने हेतु भारत में प्रकाशित जिन ग्रन्थ, पुस्तक एवं पत्रिकाओं का प्रयोग किया गया है वह निम्नलिखित हैं –

शैक्षिक शोधों के विवरण हेतु –

1. एम0बी0 बुच द्वारा सम्पादित 'ए सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन', बड़ौदा; सेन्टर ऑफ एडवांस्ड स्टडी इन एजुकेशन, मार्च 1974 में प्रकाशित जिसमें 1972 तक के शोध विवरण दिये गये हैं।
2. एम0बी0 बुच द्वारा सम्पादित 'सेकेण्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन', बड़ौदा; सोसायटी फार एजुकेशनल रिसर्च एण्ड डेवलपमेन्ट, नवम्बर 1979 में प्रकाशित जिसमें 1972–1978 तक के शोध विवरण दिये गये हैं।
3. एम0बी0 बुच द्वारा सम्पादित 'थर्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन', नई दिल्ली; राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, मार्च 1987 में प्रकाशित जिसमें 1978–1983 तक के शोध विवरण दिये गये हैं।
4. एम0बी0 बुच द्वारा सम्पादित 'फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन', नई दिल्ली; राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, वैल्यूम–I एवं वैल्यूम–II अगस्त 1991 में प्रकाशित जिसमें 1983–1988 तक के शोध विवरण दिये गये हैं।
5. जे0पी0 शर्मा द्वारा सम्पादित 'फिफ्थ सर्वे ऑफ एजुकेशनल रिसर्च', नई दिल्ली; राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, वैल्यूम–I अगस्त 1997 एवं वैल्यूम–II मई 2000 में प्रकाशित जिसमें 1988–1992 तक के शोध विवरण दिये गये हैं।
6. श्वेता उपाल द्वारा सम्पादित 'सिक्स्थ सर्वे ऑफ एजुकेशनल रिसर्च', नई दिल्ली; राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, वैल्यूम–I मई 2006 में प्रकाशित जिसमें 1993–2000 तक के शोध विवरण दिये गये हैं।
7. जे0सी0 अग्रवाल द्वारा सम्पादित 'एजुकेशन इन इण्डिया सिन्स', देलही; सिग्नीफिकेन्ट डाकूमेन्ट्स रिसेन्ट डेवलपमेन्ट, स्टेटिस्टिक्स एण्ड पी–एच0डी0 (1991), थीसिस दोवा हाऊस नाय सारक, 1997।
8. एस0पी0 गुप्ता द्वारा लिखित 'जॉब सेटिसफेक्शन एमॉंग टीचर', इलाहाबाद; शारदा पुस्तक भवन, 2006।
9. यूनिवर्सिटी न्यूज (थीसिस ऑफ दी मन्थ), न्यू देलही; पब्लिस्ड बाई एसोसिएशन ऑफ इण्डियन यूनिवर्सिटीज, 2001 से 2007 तक।

शोधकर्ता ने उपरोक्त शोध ग्रन्थ, पुस्तक, पत्रिकाओं आदि से अपनी शोध समस्या से सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन किया, जिसमें पाया गया कि वर्तमान समस्या से कतिपय विभिन्नता के साथ

अनेक शोध (डी0लिट, पी–एच0डी0, एम0फिल, आर्टकिल, प्रोजेक्ट एवं शोध–पत्र) भारत में हुये हैं जिनका संक्षिप्त विवरण चरों के आधार पर कालक्रमानुसार व्यवस्थित कर प्रस्तुत किया जा रहा है –

कृत्य–संतोष :–

भारत में कृत्य–संतोष से सम्बन्धित प्राथमिक शिक्षा में एस0जी0 मेंहदी (1971), एस0पी0 आनन्द (1972), के0यू0 लविगियों (1974), डी0एस0 बाबू (1976), एस0पी0 आनन्द (1977), एन0वी0 कोलटे (1978), एम0शर्मा (1980), एन0 के0 पोरवाल (1980), के0 शाह (1982), एस0 अग्रवाल (1988), पी0 बालकृष्ण रेड्डी (1989), आशा शर्मा (1992), मीरा दीक्षित (1993), वी0 राममोहन व अन्य (1995), उमा कुलसुन (1998), ज्योति एवं रेड्डी (1998), एम0बी0 व्यास (2003), रमनदीप कौर (2003), कृष्णा कुमारी त्रिपाठी (2004), वेंकट रामा रेड्डी (2004), राजेन्द्र कौर (2004), विनीता श्रीवास्तव (2004), प्रियदर्शिनी निवेदिता (2005), सुकविंदर कौर (2005), वी0 सादिक असीफा अबहुम्ना (2006), शिवाली नागराज मुरीगप्पा (2006) ने अध्ययन किया।

भारत में कृत्य–संतोष से सम्बन्धित माध्यमिक शिक्षा में अंजली यूलू (1968), बेजवा और फुटेला (1972), एस0पी0 गुप्ता एवं जे0पी0 श्रीवास्तव (1980), आई0ए0 जुबेरी (1984), टी0सी0 मिस्त्री (1985), आरा नसरीन (1986), बलविन्दर कौर (1986), एस0 पद्मनाभैया (1986), त्रिवेणी सिंह (1988), एम0एस0आर0 शर्मा (1991), एस0 रावत (1992), नानग्रम मीडालिन (1992), शिप्रा राय (1992), वी0 सिन्हा एवं आर0के0 प्रभात (1993), नसीमा (1994), सुधीर (1994), सुनीता गोड़ियाल एवं आर0के0 श्रीवास्तव (1995), प्रतिभा ओसेकर (1996), ठाकर (1996), सज्जाबी लोरेंस बाबिगों (2001), सरिताफूम बूनचोब (2002), समद कनीज फातिमा मुहम्मद अब्दुल (2003), वाला रेजा (2004), चंकराजंक चत्रा (2006), पॉल रोजी (2006), नायकर शोभावती बसप्पा (2006), के0टी0 नायक नागराज (2007) ने अध्ययन किया।

भारत में कृत्य–संतोष से सम्बन्धित उच्च शिक्षा में एल0एन0 बर्नाड एवं के0 कुलन्डेवाल (1976), एस0के0 जिंदल (1977), एस0 बालासुब्रामण्यम एवं (एस0 नारायन 1977), डी0 रामकृष्णा (1980), एस0 कुमारी (1981), पी0एल0 सक्सेना (1990), एम0 सुब्रामण्यम् रेड्डी (1990), एल0 बेगम (1994), चन्द्रेश (1994), अमित अब्राहम (1994), के0 चद्रियाह (1994), एल0 दास एवं पंडा (1995), शाहपुर व अन्य (1996), अन्नामलाई (1999), दास शुक्ला (2003), जी0वी0 नरसिमहप्पा (2003), गुरमीत सिंह (2004) ने अध्ययन किया।

भारत में कृत्य–संतोष से सम्बन्धित अन्य शोध एम0 वर्मा (1971), जे0 इन्दरसेन (1973), जयलक्ष्मी (1974), वी0आर0 ठक्कर (1977), एस0 बाला सुब्रामण्यम (1977), एन0वी0 कोलटे (1978), एस0 परमाजी (1978), डी0पी0 भट्टाचार्य (1978), ए0 वैंकट रामारेड्डी एवं कृष्णा रेड्डी (1978), डी0 सत्यदास (1979), जे0 इन्द्रसेन (1979), के0डी0 नायक (1982), वेद कक्कड़ (1983), अमर सिंह

(1985), विज़यलक्ष्मी दास (1988), टीवएन0 गोस्वामी (1988), जी0 शेखर एवं एस0 रंगनाथन (1988), टी0 सिंह (1988), उषा धौलिया (1989), एफ0 गोनसाल्वेस (1989), एस0एम0 क्लेमैन्स (1989), बी0पी0 रेड्डी (1989),, जे0एस0 अतरेया (1989), एस0 सोहानवीर चौधरी (1990), एन0सी0 धोतया (1990), विनोदिनी श्रीवास्तव (1990), जी0सी0 नायक (1990), एन0 सक्सेना (1990), एस0 राय (1990), मीनाक्षी अग्रवाल (1991), सतपाल कौर बासी (1991), आर0 नटराजन (1992), बी0 राममोहन बाबू (1992), उषाश्री (1993), नसीमा अयशबी (1995), सुशील प्रकाश गुप्ता (1995), डी0जे0भट्ट (1997), धरम प्रभा बरूह (1997), रतनप्पा (1998), ए0आर0 अन्नामलाई (1999), सिद्धू कंवलजीत (2001), संधू सुखजीवन कौर (2001), वेंकट शिवकुमार खेल्ला (2002), चौधरी मिन्टी (2003), सरिता परही (2003), ए0के0 अनिल कुमार (2004), वर्मा मधुलिका (2004), मुजाहिद अली (2004), लेंका झरनमहजरी (2005), जी0 पदमा तुलसी (2006), शेशा श्री (2006), ने अध्ययन किया।

समायोजन :–

भारत में समायोजन से सम्बन्धित प्राथमिक शिक्षा में एन0एम0 (1966), ई0आई0 जार्ज (1968), आर0डी0 पाठक (1971), पी0 पाठक (1972), एन0 गोस्वामी (1980), एस0एन0 राव (1981), आर0 रावत (1982), एम0के0 गंगोपाध्याय (1984), सी0 मोहन्ती (1985), बी0 भट्टाचार्य (1985), पी0 प्रसाद (1985), के0 गगनदीप (1986), पी0एस0 काला (1986), जे0एम0 गायकवाड़ (1988), पी0 वेद प्रकाश (1994), आर0पी0 संगुरी (2003) ने अध्ययन किया।

भारत में समायोजन से सम्बन्धित माध्यमिक शिक्षा में एल0आई भटट् (1961), एस0 भट्टाचार्य (1967), आर0एस0 नायर (1972), आई0बी0 रमन रेड्डी (1974), आई0वी0आर0 रेड्डी (1976), सी0बी0 आशा (1978), एल0 मेनेजस (1978), सी0जे0 देवी (1979), जी0के0 ढिल्लों (1979), एन0 श्रीवास्तव (1980), ए0के0 गुप्ता (1981), आर0डी0 पाण्डेय (1981), एफ0 विलीमस (1981), सुधा कुमारी (1982), के0पी0 भाटिया (1984), बी0आर0 रावल (1984), आई0 पंडित (1985), विमला (1985), वी0पी0 सिंह (1987), बी0बी0 पाण्डेय (1989), योगेश कुमार (1989), प्रदीप कुमार कुलश्रेष्ठ् (1992), सी0एम0 बिन्दू (1998), जी0एस0 गोहेल (2003), निर्मला देवी (2003), ए0ई0 रजनी (2003), लिलेश गुप्ता (2005), दयानन्द (2005) ने अध्ययन किया।

भारत में समायोजन से सम्बन्धित उच्च शिक्षा में पी0 पशरीचा (1964), आर0पी0 सिंह (1967), एस0 हुसैन (1969), ए0 स्वादेव (1977), एम0 तुलपुले (1977), जे0सी0 गोयल (1980), के0 जायसवाल (1980), एस0 सुवान्नाचरण (1980), आर0पी0 सिंह (1981), एस0के0 तलवार (1981), यू0एस0 बंगा (1983), सावलुक थोगंगामखोम (1983), ए0के0 वैल्यूज (1984), आर0 शर्मा (1985), एम0ए0 बाबेल (1986), सी0एस0 ग्रेवाल (1986), के0 शशि शर्मा (1986), एन0एस0 डोंगरा (1987), जी0 शेखर और एस0 रंगनाथन (1988), चित्रा श्रीवास्तव (1989), चरन दास (1991) ने अध्ययन किया।

भारत में समायोजन से सम्बन्धित अन्य शोध एम0डी0 बंगाली (1964), एच0आर0 नोमानी (1965), एन0वाई0 रेड्डी (1966), एन0वाई0 रेड्डी (1966), बी0एन0 मुखर्जी (1969), ए0के0 राय (1969), एस0 सेथ (1970), सी0ए0 मजूमदार (1972), पी0पी0 खत्री (1973), जी0एस0 पाण्डेय (1973), के0एम0 पंडित (1973), टी0एस0 राव (1973), बनर्जी (1974), सी0डी0 बंगाली (1975), वी0पी0 गुप्ता (1977), एल0 मेहेजेस (1978), बी0पी0 गुप्ता (1978), एस0 उषाश्री (1978), एस0के0 मंगल (1979), के0 कुमार (1980), जी0एस0 सौन (1980), एन0के0 शर्मा (1981), आर0 सुजाथारानी (1981), एस0एल0 त्रिपाठी (1981), पी0एन0 मेनन (1982), के0डी0 नायक (1982), एम0 पंडा (1983), क्यू0ए0 सुल्ताना (1983), पी0 गुप्ता (1984), जी0एम0 मलिक (1984), एस0 कुमार (1985), एन0 पंडा (1985), टी0 पिन्टू (1985), सुनीता (1986), डी0के0 चड्ढा (1986), एन0एस0 डोंगा (1987), बी0एन0 पंडा (1987), बी0डी0 गुप्ता (1988), एस0 अग्रवाल (1988), सुधाबाला सिंह (1989), जे0सी0 गोयल (1989), एच0सी0 मौर्या (1990), आर0 दुआ (1991), ललिता काबरा (1991), कमलेश कुमारी (1992), एम0आई0 मट्टू (1994), सविता रावत (1995), जे0 अली (1996), जी0सी0 भट्टाचार्य (1998), एस0मिश्रा0 एवं आर0पी0 सिंह (1998), ए0आर0 अन्नामलाई (1999), शर्मा आशुतोष (2001), खन्ना डाली (2001), बल्देव सिंह (2003) ने अध्ययन किया।

शिक्षण में रुचि :–

एस0 के0 शर्मा ने हिन्दी भाषी उच्च माध्यमिक शिक्षकों के शिक्षण व्यवहार और बुद्धि पर शोध कार्य किया जिसमें उप चर शिक्षण में रुचि था जिस पर शोध कार्य 1981 में किया था।

जे0सी0 गोयल ने शिक्षक–प्रशिक्षकों कृत्य–संतोष, समायोजन एवं व्यावसायिक रुचि में (1980), तथा कृत्य्–संतोष एवं समायोजन में शर्मा मदनलाल (2001), वेद प्रकाश पाल (2002), रानों रविन्दर सिंह (2004), धर्मेन्द्र सिंह (2006) ने अध्ययन किया।

उपरोक्त में से कुछ शोध अध्ययनों का विस्तृत विवरण कालक्रमानुसार व्यवस्थित कर प्रस्तुत किया जा रहा है –

अंजली युल (1968)[43] ने माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के अध्यापकों की कृत्य–संतोष तथा अध्यापन अभिरुचि का अध्ययन किया।

अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित थे –

1. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की असंतोष के कारणों का पता लगाना अथवा उन परिस्थितियों का अध्ययन करना, जो कि शिक्षकों में असंतोष उत्पन्न करती हैं।

---

43. अंजली युल, पी–एच0डी0, एजुकेशन, एम0एस0 विश्वविद्यालय, 1968, एम0बी0 बुच, 'ए सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन', बड़ौदा; सेन्टर ऑफ एडवांस्ड स्टडी इन एजुकेशन, (मार्च 1974). पृष्ठ–482।

2. शिक्षा क्षेत्र की वर्तमान परिस्थितियों को सामने रखकर तथा शिक्षकों की समस्याओं को ध्यान में रखते हुए इस प्रकार के सुझाव देना जिससे कि शिक्षकों को उत्तरदायित्व की पूर्ति हेतु उत्साहित किया जा सके।

इन्होंने अपने अध्ययन के दौरान प्रश्नावली और साक्षात्कार विधियों का प्रयोग किया। 4000 अध्यापकों के न्यादर्श में सन्तुष्टि को ज्ञात करने के लिए निर्धारित मापनी का प्रयोग किया गया। सर्वेक्षण के दौरान 617 शिक्षकों ने पहली बार में प्रश्नावली का उत्तर दिया, इसके अलावा 130 शिक्षाशास्त्री, प्रधानाचार्य और सेवा निवृत्त अध्यापकों को शामिल कर उनका साक्षात्कार किया गया। इसके साथ–साथ 227 शिक्षकों ने अपने उत्तरों की दृढता के लिए प्रथम बार प्रशासित प्रश्नावली के अतिरिक्त दूसरी प्रश्नावली में भी अपना योगदान दिया। इनमें से 617 अध्यापकों में से मात्र 37 प्रतिशत अध्यापकों को ही कृत्य–संतोष प्राप्त थी। असंतुष्ट शिक्षकों को तीन श्रेणियों में बाँटा गया।

इन तीन श्रेणियों में तीसरी श्रेणी अर्थात, एक स्थान विशेष से असंतोष प्रदर्शित करने वाले शिक्षकों को स्थान परिवर्तन करके असंतुष्टि से रोका जा सकता है।

के0यू0 लविंगियों (1974)[44] ने स्कूल अध्यापकों का कृत्य–संतोष का अध्ययन किया। इन्होंने गुजरात में राज्य के प्राथमिक तथा माध्यमिक स्कूल के शिक्षकों की कृत्य–संतोष के सम्बन्ध में अध्ययन किया।

जिसके उद्देश्य निम्नलिखित थे –

1. अध्यापकों के मानसिक, सामाजिक आर्थिक स्तर को जानना।
2. अध्यापकों के अध्यापन कार्य के बारे में जानना।
3. प्राथमिक तथा माध्यमिक स्कूल के अध्यापकों के कृत्य–संतोष के सम्बन्ध में जानना।
4. अध्यापकों में तुलनात्मक अध्ययन करना।

गुजरात के प्राथमिक तथा माध्यमिक स्कूलों में कार्यरत 500 शिक्षकों का न्यादर्श लिया गया तथा शिक्षकों पर एक स्वःनिर्मित कृत्य–संतोष मापनी का प्रयोग किया गया।

अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये –

1. शिक्षा के स्तर में प्राथमिक की अपेक्षा माध्यमिक स्तर के अध्यापक अपने कार्य से अधिक सन्तुष्ट थे।
2. प्राथमिक तथा माध्यमिक अध्यापकों के कृत्य–संतोष में सापेक्षिक सहसम्बन्ध पाया गया।
3. दोनों स्तर के अध्यापकों में आर्थिक परेशानी विद्यमान थी।
4. दोनों स्तर के अध्यापकों में सामाजिक, एवं मानसिक स्तर समान पाया गया।

---

44. के0पी0 लविंगियों, पी–एच0डी0, एजुकेशन, गुजरात विश्वविद्यालय, 1974, एम0बी0 बुच, 'सेकेण्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन', बड़ौदा; सोसायटी फार एजूकेशनल रिसर्च एण्ड डेवलपमेन्ट, नवम्बर1979, पृष्ठ–439

एम0 वर्मा (1971)[45] ने अपने अध्ययन में शिक्षण व्यवसाय में शिक्षकों के कृत्य–संतोष का पता लगाया तथा इन्होंने अध्ययन के निष्कर्ष में पाया कि – माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक अपनी नैतिकता और बौद्धिक विकास के लिए शिक्षण के व्यवसाय को चुनते हैं, जबकि प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षक अधिकांशतः शिक्षण व्यवसाय आर्थिक–सामाजिक दबाववश तथा कुछ राष्ट्र निर्माण की भावना से चुनते हैं, लेकिन प्राथमिक एवं माध्यमिक दोनों तरह के विद्यालयों के शिक्षक अपने व्यवसाय में संतुष्टि का अनुभव करते हैं।

एन0वी0 कोलटे (1978)[46] ने प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के कृत्य–संतोष पर द्विखण्ड (सकारात्मक एवं नकारात्मक) सामान्य सिद्धान्त का परीक्षण किया।

जिसके उद्देश्य निम्नलिखित थे –

1. प्राथमिक शिक्षकों की सन्तुष्टि या असंतोष के लिए उत्तरदायी कारकों का अध्ययन करना।
2. कृत्य–संतोष पर हर्जबर्ग की द्विखण्ड सिद्धान्त की वैधता का परीक्षण करना।
3. सन्तुष्टि और असंतोष के लिए जिम्मेदार रुचिकर और अरुचिकर कारकों के प्राकृतिक दृष्टिकोण की पहचान करना।

इस शोध हेतु शोधकर्ता ने निम्न परिकल्पनाओं का निर्माण किया था –

1. असंतुष्टि की 10 स्थितियाँ वेतन से प्रभावित हैं।
2. स्वाभाविक तथा अस्वाभाविक तथ्य प्रकृति में एक समान हैं। स्वाभाविक कारकों के कारण प्राथमिक शिक्षक, सन्तुष्टि का अनुभव कर रहे हैं, न कि असंतोष का।
3. अस्वाभाविक कारकों के कारण प्राथमिक शिक्षक असंतोष का अनुभव कर रहे है न कि सन्तुष्टि का।

शोध के न्यादर्श में महाराष्ट्र के बुल्दाना जिले की 6 पंचायत समितियों को चुना गया। इन समितियों का चयन 'व्यवस्थित चयन विधि' द्वारा किया गया। प्रत्येक चयनित पंचायत समिति से 3 प्राथमिक विद्यालयों को चयनित किया गया तथा इन विद्यालयों के सभी शिक्षकों को अध्ययन में सम्मिलित किया गया। मराठी भाषा की एक प्रश्नावली सभी चुने गये शिक्षकों को भरने हेतु दी गयी, जिसमें उन्हें अपने कार्य में सन्तुष्टि या असंतोष के लिए उत्तरदायी कारकों का वर्णन करने के लिए कहा गया, जो कि व्याख्यात्मक शैली में थी। सभी प्राप्त उत्तरों में से 78 स्थितियाँ ऐसी थी, जिनमें अच्छा अनुभव तथा 70 स्थितियाँ ऐसी थीं, जो बुरे अनुभव के लिए जिम्मेदार थीं। विश्लेषण प्रत्येक

---

45. उद्धृत, वार्षिक शोध पत्रिका, आगरा; दयाल बाग विश्वविद्यालय, 1972
46. एन0वी0 कोलटे, रिसर्च पेपर, राष्ट्रीय ग्रामीण विकास संस्थान हैदराबाद, 1978, एम0बी0 बुच, 'थर्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन', नई दिल्ली; राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, मार्च 1987, पृष्ठ–815

प्रकार की स्थिति के सम्पूर्ण संख्या पर आधारित प्रतिशत की गणना की सहायता से किया गया। जिसमें निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये –

1. सन्तुष्टि की 78 स्थितियों में से लगभग 42 स्थितियाँ सन्तुष्टि के अनुभव के लिए जिम्मेदार थीं।
2. 30 अच्छी स्थितियाँ कृत्य–संतोष के प्रति स्वीकृति प्रदर्शित करती थीं।
3. संतुष्टि की भावनाओं में 18 स्थितियाँ संतुष्टि प्रदान करने में वृद्धि करती थीं।
4. 6 अच्छी कार्य स्थितियों में कार्य करना अपने आप में संतुष्टि के लिए उत्तरदायी था।
5. जिन विद्यालयों में पति और पत्नी एक ही स्थान पर कार्यरत थे, वहाँ नीति और प्रशासन एक संतुष्टि प्रदायक स्थिति थी।
6. 70 असंतुष्टि स्थितियों में से 35 स्थितियों में नीति और प्रशासन जिम्मेदार दृष्टिगोचर होते थे।
7. 25 असंतुष्टि की स्थितियाँ कार्य (नियुक्ति) की शर्तों के कारण विद्यमान थीं।
8. 10 असंतुष्टि की स्थितियाँ वेतन से प्रभावित थीं।
9. 10 असंतुष्टि की स्थितियाँ व्यक्तिगत सम्बन्धों के कारण थीं।
10. 5 असंतुष्टि की स्थितियाँ स्वयं ही असंतुष्टि की वृद्धि करती थीं।
11. अध्ययन में पाया गया कि हर्जबर्ग का द्विखण्ड सिद्धान्त सहयोग नहीं करता।

एस0के0 मंगल (1979)[47] ने अध्यापक समायोजन के सामान्य कारकों के विश्लेषण का विषय पर अध्ययन किया।

जिसके उद्देश्य निम्नलिखित थे –

1. अध्यापकों के समायोजन के मूलभूत आयामों की कारक विश्लेषण विधि द्वारा पहचान करना था।
2. कारक विश्लेषण द्वारा ज्ञात किये गये मूलभूत आयामों के आधार पर एक प्रमापीकृत अध्यापक समायोजन सूची का निर्माण करना।

सूची के प्रारम्भिक प्रारूप में अध्यापक समायोजन के 21 आयामों पर आधारित 387 पदों को सम्मिलित किया गया। प्रत्येक पद के उत्तर के लिए हाँ, न व अनिश्चय नाम के तीन विकल्प दिये गये। सूची के प्रारूप का प्रशासन हिसार के 14 हाईस्कूलों के संयोगिक विधि से चयनित 200 अध्यापकों पर किया गया। तत्पश्चात् द्विपांक्ति सहसम्बन्ध विधि, यथा उच्च–निम्न विधि, एवं अंकित वैधता विधि द्वारा पद–विश्लेषण किया गया। पद विश्लेषण के बाद 253 पद द्वितीय प्रारूप के लिए

47. एस0के0 मंगल, पी–एच0डी0, एजुकेशन, कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, 1979, एम0बी0 बुच, 'थर्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन', 'वही', पृष्ठ–819।

चयनित किये गये जिसकों हरियाणा राज्य के 4 जिलों के 42 हाईस्कूलों के 400 अध्यापकों पर प्रशासित किया गया। जिसका उत्तर कारक विश्लेषण द्वारा चुने गये 21 आयामों के परिप्रेक्ष्य में प्राप्त किया गया तथा 5 कारकों को चयनित किया गया। अन्तिम प्रारूप के लिए 253 पदों का चयन पुनर्गठित 21 आयामों के आधार पर किया गया। तत्पश्चात अन्तिम प्रारूप का हरियाणा के सभी 14 जिलों के 100 हाईस्कूलों में कार्यरत 1217 अध्यापकों के न्यादर्श पर प्रशासित कर प्रमापीकरण किया गया। 5 आयामों के प्रत्येक पद के लिए पुरुष एवं महिला अध्यापकों हेतु अलग–अलग प्रतिशतांक मानों की गणना की गई।

अध्ययन के निष्कर्ष निम्नलिखित थे –

1. अध्यापक समायोजन के 5 आयामों को निश्चित किया गया वे थे– संस्था के शैक्षणिक एवं सामान्य वातावरण के साथ समायोजन, सामाजिक–मनो–भौतिक समायोजन, व्यावसायिक सम्बन्धों सम्बन्धी समायोजन, व्यक्तिगत जीवन समायोजन एवं आर्थिक समायोजन तथा कृत्य–समायोजन।
2. प्रत्येक कारक की परीक्षण और पुनः परीक्षण विधि तथा अर्द्ध विच्छेदन विधि द्वारा विश्वसनीयता क्रमशः 0.97 और 0.99 के मध्य तथा 0.94 और 0.99 के मध्य पायी गयी।
3. प्रधानाचार्यों की अध्यापकों की रेटिंग के आधार पर तथा बेल की समायोजन सूची के सापेक्ष निर्मित परीक्षण की वैधता 0.967 और 0.986 के बीच पायी गयी।

डी0 रामकृण्णा (1980)[48] ने कालेज अध्यापकों की कृत्य–संतोष, शिक्षण–अभिवृत्ति और वृत्तिक लगाव का अध्ययन किया।

अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित थे –

1. दक्षिण वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय क्षेत्र में कार्यरत कॉलेज अध्यापकों की कृत्य–संतोष, शिक्षण–अभिवृत्ति और वृत्तिक लगाव का अध्ययन करना।
2. अध्यापकों का कृत्य–संतोष और निजी एवं सामाजिक विभिन्नताओं के मध्य सम्बन्धों का अध्ययन करना।
3. कालेज अध्यापकों के कृत्य–संतोष के स्तर का अध्ययन करना।
4. कालेज अध्यापकों की शिक्षण–अभिवृत्ति और वृत्तिक लगाव के मध्य सम्बन्धों का अध्ययन करना।
5. कालेज अध्यापकों के कृत्य–संतोष और वृत्तिक लगाव के मध्य सम्बन्धों का अध्ययन करना।

इस अध्ययन में न्यादर्श के लिए 400 अध्यापकों का न्यादर्श लिया गया, जो कि समान रूप से दो व्यवस्थाओं (सरकारी और प्राईवेट), दो लिंग (पुरुष और स्त्री), एवं दो स्तरों (सीनियर और जूनियर)

---

48. डी0 रामकृष्णा, पी–एच0डी0. एजुकेशन, श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, 1980, एम0बी0 बुच, 'थर्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन', 'वही', पृष्ठ–793

में विभाजित किये गये। दक्षिण वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय क्षेत्र में कार्यरत कालेज अध्यापकों में से बहुस्तरीय संयागिक प्रतिचयन विधि द्वारा न्यादर्श का चयन किया गया तथा आँकड़ों के संग्रह हेतु कृत्य–संतोष मापनी, शिक्षण–अभिवृत्ति मापनी एवं वृत्तिक लगाव मापनी का प्रयोग किया गया। प्राप्त आँकड़ों को व्यवस्थित कर विश्लेषण के लिए 2×2×2 शोध अभिकल्प के आकार में विभाजित किया गया। आँकड़ों का विश्लेषण टी–टेस्ट (T-test) एवं काई–स्क्वायर (Chi-Square) आदि की सहायता से किया गया, जिसमें निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये –

1. सामान्यतः कालेज के अध्यापक अपने कार्य से सन्तुष्ट थे।
2. सरकारी कालेजों में कार्यरत अध्यापकों की अपेक्षा प्राइवेट कालेज के अध्यापक अधिक सन्तुष्ट थे।
3. अध्यापकों की अपेक्षा अध्यापिकायें अधिक सन्तुष्ट पाई गयीं।
4. जूनियर कालेज के अध्यापकों और कालेज के अध्यापकों के मध्य कृत्य–संतोष के स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं था।
5. विभिन्न सामाजिक आर्थिक स्तर के अध्यापकों के कृत्य–संतोष में कोई अन्तर नहीं था।
6. वे अध्यापक जिनकी शिक्षण–अभिवृत्ति निम्न थी, वह अपने कार्य से कम सन्तुष्टि प्रदर्शित कर रहे थे, जबकि शिक्षण के प्रति उच्च दृष्टिकोण रखने वाले शिक्षक उच्च कृत्य–संतोष रखते थे।

जे0सी0 गोयल (1980)[49] ने कृत्य–संतोष, समायोजन और भारत में शिक्षक–प्रशिक्षकों की व्यावसायिक–रुचि के मध्य सम्बन्धों का अध्ययन किया।

अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित थे –

1. व्यवहार, कृत्य–संतोष, समायोजन, लिंग, आयु, योग्यता और अनुभव पर आधारित भिन्न वर्गो के शिक्षक–प्रशिक्षकों की व्यावसायिक रुचि का अध्ययन करना।
2. व्यवहार, कृत्य–संतोष, समायोजन, लिंग, आयु, योग्यता और अनुभव पर आधारित भिन्न वर्गो के शिक्षक–प्रशिक्षकों के समूह के मध्य भिन्नता का अध्ययन करना।
3. भिन्न वर्गो के शिक्षक–प्रशिक्षकों के व्यवहार, कृत्य–संतोष, समायोजन और व्यवसायिक–रुचि के मध्य सम्बन्धों का अध्ययन करना।
4. शिक्षक–प्रशिक्षकों का कृत्य–संतोष के द्वारा उनके व्यवहार, समायोजन और व्यावसायिक–रुचि के सम्बन्ध में भविष्यवाणी करना।

इस अध्ययन हेतु 38 संस्थाओं के कार्यरत 314 शिक्षक–प्रशिक्षकों को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया। जिसमें विभिन्न योग्यता, शिक्षण–अनुभव और भिन्न आयु–वर्ग के महिला और

---

49. जे0सी0 गोयल, पी–एच0डी0, एजुकेशन, देलही विश्वविद्यालय, 1990, एम0बी0 बुच, 'थर्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन', 'वही', पृष्ठ–805

पुरुष शिक्षक–प्रशिक्षक सम्मिलित थे। इस अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण थे– 'स्वःनिर्मित व्यवहार मापनी', 'कृत्य–संतोष अनुसूची', बेल द्वारा निर्मित 'समायोजन अनूसूची' और शिक्षक–प्रशिक्षक की व्यवसायिक–रुचि के लिए 'स्वःनिर्मित निरीक्षण अनूसूची'। आँकड़ों का विश्लेषण माध्य, प्रमाणिक विचलन, रेखीय प्रतीपगमन की सहायता से किया गया, जिसमें निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये –

1. शिक्षक–प्रशिक्षकों की बड़ी संख्या अपने व्यवसाय की ओर आकर्षित और अपने कार्य से सन्तुष्ट थी, किन्तु उनका समायोजन व व्यावसायिक रुचि का स्तर निम्न् था।
2. भिन्न वर्गो का व्यवहार और कृत्य–संतोष सार्थक रूप से भिन्न नही था।
3. शिक्षक–प्रशिक्षकों का एक वर्ग अपने व्यवसाय में कम रुचि रखता था।
4. शिक्षक–प्रशिक्षकों की संवेदनात्मक–स्थिरता आयु के साथ बढ़ती रहती थी।
5. शिक्षक–प्रशिक्षकों की व्यावसायिक–रुचि शिक्षण अनुभव के साथ बढ़ रही थी।
6. शिक्षक–प्रशिक्षकों के मध्य व्यवहार, कृत्य–संतोष, और व्यवसायिक–समायोजन एक–दुसरे के साथ जुडें हुये थे। जबकि सामाजिक और संवेदनात्मक समायोजन एवं व्यावसायिक रुचि एक–दुसरे के साथ सम्बन्धित नहीं थे।

व्यवहार और व्यावसायिक समायोजन के आधार पर कृत्य–संतोष के बारे में भविष्यवाणी की जा सकती है, लेकिन दूसरे चरों के बारे में नहीं।

एस0एन0 राय (1981)[50] ने प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण सफलता और कार्य के प्रति समायोजन का मनोवैज्ञानिक अध्ययन किया। अध्ययन का उद्देश्य कृत्य–संतोष एवं कार्य समायोजन पर आधारित कुछ आन्तरिक एवं बाह्य कारकों की खोज करना था।

इस अध्ययन के न्यादर्श में आन्ध्रप्रदेश के नेल्लूर और चित्तूर (Nellore And Chittoor) जिलों के प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों का चयन किया गया। जिन शिक्षकों का चयन किया गया था उन्हें कार्यशैली तथा वातावरण के आधार पर वर्गीकृत कर दो भागों में विभाजित किया गया। प्रथम प्रकार के शिक्षकों के कार्य में गुणवत्ता थीं किन्तु उन्हें सन्तुष्टि की आवश्यकता थीं। दूसरे प्रकार के पर्यावरणीय आधार वाले शिक्षक कार्य को चुनौती के रूप में स्वीकार करते थे तथा प्रबन्धन सम्बन्धी सहयोग और कार्य को प्रजातांत्रिक आधार पर करते थे।

इस उद्देश्य के लिए एक प्रश्नावली का निर्माण किया गया। वह तीन भागों में विभाजित थीं, जिसमें 520 प्रश्नों के न्यादर्श लिए गये तथा इन्हें 2×2×2 के आकार में विभाजित किया गया। यह विभाजन लिंग के आधार पर, सेवा के स्तर और प्रबन्धन के प्रकार से सम्बन्धित था। जिसके प्रत्येक भाग में बराबर–बराबर अंक थे तथा आँकड़ों के विश्लेषण के लिए समान्तर माध्य, मानक विचलन, तथा

---

50. एस0एन0राय, एस0वी0विश्वविद्यालय, 1981, एम0बी0 बुच, 'थर्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन', 'वही', पृष्ठ–835

सहसम्बन्ध गुणांक तथा टी–परीक्षण के द्वारा सात परिकल्पनाओं का परीक्षण करने के लिए आठ समूहों में माध्यों के अन्तर की सार्थकता की जाँच की गई।

अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये –

1. महिला और पुरुष शिक्षकों के मध्य, कृत्य–संतोष, कार्य में लगाव, कार्य परिचय तथा प्रबन्धन में कोई अन्तर नहीं था, लेकिन पुरुष शिक्षक महिला शिक्षकों की अपेक्षा अधिक यथार्थवादी थे।
2. कृत्य–संतोष और यथार्थवाद में एक सांकेतिक सम्बन्ध पाया गया। कृत्य–संतोष में सेवा काल का कोई प्रभाव नहीं था, किन्तु सेवा की दीर्घावधि एवं लधु अवधि के शिक्षकों के समूहों के स्वभाव में अन्तर पाया गया। दीर्घावधि सेवाकाल वाले शिक्षकों में उदारवादी स्वभाव था।
3. शहरी और ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत शिक्षकों के स्वभाव में अन्तर था किन्तु कृत्य–संतोष, कार्य सम्पादन और प्रबन्धन में अन्तर नहीं था।
4. संयम की बाह्य स्थिति, कृत्य–संतोष, कार्य सम्पादन और प्रबन्धन में सांकेतिक अन्तर था। यथार्थता तथा कृत्य–संतोष कार्य सम्पादन से सम्बन्धित थी। कार्य सम्पादन और कृत्य–संतोष में न्यून सम्बन्ध था। जो शिक्षक कार्य सम्पादन, प्रबन्धकीय सम्पादन, कार्य तथा प्रबन्धकीय जिम्मेदारी में कठिनाई का अनुभव नहीं करते थे, उनका कृत्य–संतोष विचारणीय था।

आर०डी० पाण्डेय (1981)[51] ने गढ़वाल क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों का विद्यालय के संगठनात्मक वातावरण और उनकी समायोजन की समस्या के मध्य, सम्बन्धों का अध्ययन किया।

अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित थे –

1. गढ़वाल क्षेत्र के सरकारी और गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों की संगठनात्मक वातावरण का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के समायोजन से सम्बन्धित विभिन्न समस्याओं की पहचान करना।
3. शिक्षकों के समायोजन के स्तर तथा संगठनात्मक वातावरण के मध्य सम्बन्ध का पता लगाना।
4. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों से सम्बन्धित संगठनात्मक वातावरण और समायोजन की समस्या की उपस्थित का विश्लेषण करना।

51. आर०डी० पाण्डेय, पी–एच०डी०, एजुकेशन, गढ़वाल विश्वविद्यालय, 1981, एम०बी० बुच, 'थर्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन', 'वही', पृष्ठ–930

गढ़वाल मण्डल के पाँच जिलों में से प्रत्येक से 30 प्रतिशत माध्यमिक विद्यालयों का न्यादर्श संयोगिक चयन विधि से लिया गया। इस न्यादर्श में 28 सरकारी और गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के 500 पुरुष और महिला शिक्षकों का चयन किया गया। जोकि शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों से सम्बन्धित थे। आँकड़ों को एकत्रित करने के लिए संगठनात्मक वातावरण की विवेचनात्मक प्रश्नावली और समायोजन से सम्बन्धित प्रश्नावली को निर्मित किया गया तथा आँकड़ों का संग्रह कर माध्य, मानक विचलन, सहसम्बन्ध गुणांक और टी–टेस्ट के द्वारा उनका विश्लेषित किया गया। जिसमें निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये –

1. संगठनात्मक वातावरण और सामाजिक समायोजन के मध्य नकारात्मक सम्बन्ध पाये गये।
2. सरकारी माध्यमिक विद्यालयों का संगठनात्मक वातावरण गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण से अच्छा था।
3. बालिका माध्यमिक विद्यालयों का संगठनात्मक वातावरण बालकों के माध्यमिक विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण की तुलना में अच्छा था।
4. शहरी क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों का संगठनात्मक वातावरण ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण की तुलना में अच्छा था।
5. सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की अपेक्षा शैक्षिक, सामाजिक, भावनात्मक और स्वास्थ्य सम्बन्धी क्षेत्र में अधिक समायोजित थे।
6. बालक और बालिका माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक, स्वास्थ्य तथा भावनात्मक समायोजन के क्षेत्र में एक समान थे। पुरुष शिक्षकों का महिला सहकर्मियों की तुलना में पारिवारिक शैक्षिक समायोजन निम्न था, जबकि शिक्षिकाओं में सामाजिक समायोजन से सम्बन्धित विभिन्न प्रकार की समस्यायें विद्यमान थीं।
7. ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों की तुलना में शहरी क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की घरेलू और सामाजिक समायेजन की समस्यायें कम थी, जबकि ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक भावनात्मक, स्वास्थ्य और शैक्षिक समायोजन में शहरी क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की तुलना में अधिक समायोजित थे।

के0डी0 नायक (1982)[52] ने विवाहित और अविवाहित महिला शिक्षकों के समायोजन और कृत्य–संतोष का अध्ययन किया।

अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित थे –

1. विवाहित और अविवाहित महिला शिक्षकों का कृत्य–संतोष के स्तर का अध्ययन करना।

---

52. के0डी0 नायक, पी–एच0डी0, साइकोलॉजी, जबलपुर विश्वविद्यालय, 1982, एम0बी0 बुच, 'थर्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन', 'वही', पृष्ठ–174

2. विभिन्न वर्गो की वैवाहिक और अवैवाहिक महिला शिक्षकों के समायोजन में विभिन्नता का अध्ययन करना।
3. विभिन्न वर्गो (निम्न माध्यमिक, उच्च माध्यमिक तथा उच्चतर माध्यमिक शिक्षिकाओं) की विवाहित और अविवाहित महिला शिक्षकों के कृत्य–संतोष का अध्ययन करना।
4. शहरी विवाहित और अविवाहित महिला शिक्षकों का कृत्य–संतोष और समायोजन में अन्तर का अध्ययन करना।
5. ग्रामीण और शहरी विवाहित और अविवाहित महिला शिक्षकों का कृत्य–संतोष और शिक्षण–अभिक्षमता के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।

अध्ययन के लिए 785 महिला शिक्षकों का न्यादर्श लिया गया, जिसमें जबलपुर जिले में शिक्षणरत विभिन्न निम्न माध्यमिक शिक्षिकाऐं, उच्च माध्यमिक शिक्षिकाऐं और उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की प्रवक्ता थीं। न्यादर्श में चयनित 375 शिक्षिकाऐं विवाहित थीं, जिनमें 300 ग्रामीण क्षेत्रों में एवं 75 शहरी क्षेत्रों में कार्यरत थीं। न्यादर्श में 410 शिक्षिकाऐं अविवाहित थीं, जिनमें 300 शहरी क्षेत्रों में एवं 110 ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यरत थीं। आँकड़ों का एकत्रीकरण करने के लिए डॉ0 प्रमोद कुमार और डी0एन0 मूथा द्वारा निर्मित 'कृत्य–संतोष प्रश्नावली', तथा ए0के0पी0 सिन्हा और डॉ0 आर0.पी0. सिंह द्वारा निर्मित कालेज के विद्यार्थियों के लिए 'समायोजन अनुसूची', एवं डॉ0 जयप्रकाश और आर0.पी0. श्रीवास्तव द्वारा निर्मित 'शिक्षण–अभिक्षमता प्रश्नावली', उपकरणों का प्रयोग किया गया। प्राप्त आँकड़ों का आवृत्ति वितरण तैयार कर टी–टेस्ट तथा सहसम्बन्ध गुणांक आदि सांख्यिकीय विधियों से विश्लेषण किया गया, जिसमें निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये –

1. ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में कार्यरत विवाहित और अविवाहित महिला शिक्षकों का कृत्य–संतोष में पर्याप्त अन्तर नहीं था।
2. ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में विभिन्न श्रेणियों में कार्यरत विवाहित तथा अविवाहित महिला शिक्षकों की शिक्षण–अभिक्षमता में पर्याप्त अन्तर नहीं था।
3. निम्न माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अविवाहित महिला शिक्षकों में समायोजन सम्बन्धी समस्या पायी गयी, जबकि अविवाहित महिला प्रवक्ताओं में समायोजन सम्बन्धी समस्या नहीं थीं।
4. निम्न तथा उच्च माध्यमिक स्तर की विवाहित महिला शिक्षकों, जो कि शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यरत थीं, उनकी समायोजन सम्बन्धी समस्या में पर्याप्त अन्तर नहीं था, जबकि विवाहित महिला प्रवक्ताओं को कुछ वातावरण सम्बन्धी समायोजन की समस्या थी।
5. महिला शिक्षकों के कृत्य–संतोष का शिक्षण–अभिक्षमता के साथ सकारात्मक सम्बन्ध था।
6. महिला शिक्षकों के कृत्य–संतोष में समायोजन का कोई प्रभाव नहीं था।
7. ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में विभिन्न स्तर के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत विवाहित तथा अविवाहित महिला शिक्षकों के कृत्य–संतोष में पर्याप्त भिन्नता नहीं थी।

सावलुक थोगंगामखोम (SAOVALUK THONGNGAMKHOM) (1983)[53] ने थाईलैण्ड के उत्तरी केन्द्रीय क्षेत्र के बी0एड0 कालेजों के छात्रों की सामाजिक परिपक्वता तथा मानसिक–सामाजिक समायोजन का अध्ययन किया।

अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित थे –

1. सामाजिक परिपक्वता के मापन का एक प्रमाणित तथा वैध उपकरण तैयार करना।
2. थाईलैण्ड के उत्तरी केन्द्रीय क्षेत्र के बी0एड0 कालेजों के छात्रों की सामाजिक परिपक्वता का अध्ययन करना।
3. बालक विद्यालयों तथा बालिका विद्यालयों से अलग–अलग आने वाले तथा सहशिक्षा विद्यालयों से आने वाले बी0एड0 कालेजों के छात्रों की सामाजिक परिपक्वता का अध्ययन करना।
4. बी0एड0 कालेजों के छात्रों की लिंग के आधार पर सामाजिक परिपक्वता का अध्ययन करना।
5. विभिन्न आयु वर्ग के बी0एड0 कालेजों के छात्रों की सामाजिक परिपक्वता का अध्ययन करना।
6. अध्ययन के स्तर पर बी0एड0 कालेजों के छात्रों की सामाजिक परिपक्वता का अध्ययन करना।
7. सामाजिक–आर्थिक स्तर पर बी0एड0 कालेजों के छात्रों की सामाजिक परिपक्वता का अध्ययन करना।
8. व्यक्तित्व लक्षण के सन्दर्भ में बी0एड0 कालेज के छात्रों की सामाजिक परिपक्वता का अध्ययन करना।
9. व्यक्तिगत सामाजिक समायोजन के सम्बन्ध में बी0एड0 कालेज के छात्रों की सामाजिक परिपक्वता का अध्ययन करना।
10. पारिवारिक समायोजन के सम्बन्ध में बी0एड0 कालेजों के छात्रों की सामाजिक परिपक्वता का अध्ययन करना।

सामाजिक परिपक्वता मापन के लिए लिकर्ट (Likert) विधि से प्रमाणित स्केल का प्रयोग किया गया। अध्ययन में उत्तरी केन्द्रीय क्षेत्र से सम्बन्धित 922 छात्र–छात्राओं के न्यादर्श का चयन किया गया। इस अध्ययन के लिए विश्वसनीयता, वैधता तथा पैमाने के सिद्धान्त को स्थापित किया गया था। आँकड़ों का संग्रह करने के लिए ए0एस0पटेल द्वारा निर्मित 'सामाजिक–आर्थिक स्तर मापनी' (SES) तथा व्यक्तित्व गुण मापन के लिए का (PCS) मापनी को तथा व्यक्तित्व अनुसूची को अंग्रेजी तथा थाई भाषा में अनुवादित किया गया। निष्कर्ष प्राप्त करने के लिए न्यादर्श को 2×2×2 के आकार में विभाजित

53. सावलुक थोगंगामखोम, पी–एच0डी0, शिक्षाशास्त्र, एस0पी0यू0 विश्वविद्यालय, 1983, एम0बी0 बुच, 'फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन', नई दिल्ली; राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, 1991, पृष्ठ–261

कर विश्लेषण की विभिन्न तकनीक का प्रयोग किया गया। विभिन्न विधियों से स्थापित स्केल की विश्वसनीयता की सीमा 0.84 से 0.92 के मध्य थी। साथ ही सहसम्बन्ध पर आधारित एकीकृत वैधता को स्थापित किया गया, जो शिक्षकों की सामाजिक परिपक्वता पर 0.73 थी। अध्ययन के निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये –

1. बी0एड0 कालेज के वे छात्र जो कि निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर से आये थे, उनकी अपेक्षा उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर की पृष्ठभूमि वाले छात्र सामाजिक रूप से अधिक परिपक्व पाये गये।
2. कमजोर व्यक्तित्व गुणों वाले छात्रों की अपेक्षा प्रभावी व्यक्तित्व गुणों वाले छात्र सामाजिक रूप से अधिक परिपक्व थे।
3. कमजोर नेतृत्व व्यक्तित्व गुणों वाले छात्रों की अपेक्षा उच्च नेतृत्व गुणों वाले छात्र सामाजिक रूप से अधिक परिपक्व थे।
4. रूढ़िवादी व्यक्तित्व गुणों वाले छात्रों की तुलना में मौलिक सिद्धान्तवादी व्यक्तित्व गुणों वाले छात्र सामाजिक रूप से अधिक परिपक्व थे।
5. उच्च बौद्धिक क्षमता वाले छात्रों की अपेक्षा निम्न बौद्धिक क्षमता वाले छात्र सामाजिक रूप से अधिक परिपक्व थे।
6. निम्न भावात्मक स्थिरता वाले छात्रों की अपेक्षा उच्च भावात्मक स्थिरता वाले छात्र सामाजिक रूप से अधिक परिपक्व थे।
7. उच्च निर्णय क्षमता वाले छात्रों की एवं निम्न निर्णय क्षमता वाले बी0एड0 छात्रों की सामाजिक परिपक्वता में कोई अन्तर नहीं था।
8. कमजोर व्यक्तिगत सामाजिक समायोजन वाले छात्रों की अपेक्षा अच्छे व्यक्तिगत सामाजिक समायोजन वाले छात्र सामाजिक रूप से अधिक परिपक्व थे।
9. कमजोर पारिवारिक समायोजन वाले छात्रों की अपेक्षा अच्छे पारिवारिक समायोजन वाले छात्र सामाजिक रूप से अधिक परिपक्व थे।

पी0 प्रसाद (1985)[54] ने प्राथमिक तथा माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की महत्वाकांक्षा, समायोजन तथा भूमिका संघर्ष का अध्ययन किया।

अध्ययन का उद्देश्य प्राथमिक तथा माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की महत्वाकांक्षा, समायोजन, तथा भूमिका संघर्ष का अध्ययन करना तथा शिक्षकों के लिंग के प्रभाव एवं विद्यालयों के स्तर का भी विश्लेषण करना था।

---

54. पी0 प्रसाद, पी–एच0डी0, मनोविज्ञान, भागलपुर विश्वविद्यालय, 1985, एम0बी0 बुच, 'फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन', 'वही', पृष्ठ–974।

इस अध्ययन में मुख्य परिकल्पना यह थी कि माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष शिक्षकों एवं माध्यमिक विद्यालयों की महिला शिक्षकों तथा प्राथमिक विद्यालयों के पुरुष शिक्षकों एवं प्राथमिक विद्यालयों की महिला शिक्षिकाओं के समूहों की महत्वाकांक्षा, समायोजन तथा भूमिका संघर्ष में पर्याप्त अन्तर नहीं है। इस मुख्य परिकल्पना के साथ 18 सहायक परिकल्पनाओं का भी परीक्षण किया गया था।

भागलपुर कस्बे के विभिन्न विद्यालयों में कार्यरत 400 शिक्षकों (100 माध्यमिक पुरुष, 100 माध्यमिक महिला, 100 प्राथमिक पुरुष, 100 प्राथमिक महिला) का न्यादर्श स्तरानुसार संयोगिक प्रतिचयन विधि से चयनित किया गया था। आयु तथा अनुभव में समानता वाले चार समूह बनाये गये थे। शैक्षिक, व्यावसायिक तथा आर्थिक महत्वाकांक्षाओं के मापन के लिए तीन मापनी, एवं भूमिका संघर्ष के लिए अनुसूचियों का निर्माण किया गया। जो कि छः स्वतन्त्र उपकरण जैसेः– भूमिका संघर्ष, ज्ञात अनुसूची, स्वयं भूमिका आकांक्षा अनुसूची, भूमिका अभिनय अनुसूची, अन्य भूमिकाओं की आकांक्षा अनुसूची. I. II तथा III., का निर्माण किया गया और सक्सेना द्वारा निर्मित 'व्यक्तित्व परख प्रश्नावली (समायोजन अनुसूची)' का प्रयोग किया गया। व्यक्तिगत उत्तर सूची का प्रयोग कर ऑकड़ों का एकत्रीकरण किया गया। भूमिका संघर्ष अनुसूची के लिए (ज्ञात भूमिका संघर्ष, स्वयं भूमिका संघर्ष तथा भूमिका आकांक्षा संघर्ष) उपरोक्त अनुसूचियों की सहायता से भूमिका संघर्ष अनुसूची को विकसित किया गया, जिसमें निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये–

1. सभी चारों समूहों के शिक्षकों की शैक्षिक आकांक्षा के स्तर का माध्य उच्च था। प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों (पुरुष तथा महिला शिक्षकों) की तुलना में माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों (पुरुष तथा महिला शिक्षकों) में उच्च शैक्षिक आकांक्षा पायी गयी।
2. शिक्षकों की व्यवसायिक आकांक्षा का स्तर, विद्यालयों के स्तर से घनिष्ठ् रूप से सम्बन्धित था।
3. शिक्षकों की आर्थिक आकांक्षा का स्तर पहले, तीसरे तथा पाँचवे वर्ष के बाद क्रमशः बढ़ता जाता था।
4. शिक्षकों के समायोजन का सम्बंन्ध उनके लिंग के साथ सम्बन्धित था, जबकि उनके विद्यालयों के स्तर से सम्बन्धित नहीं था।
5. अपने सम्पूर्ण समायोजन में प्राथमिक तथा माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक एक समान थे। वे केवल विशेष क्षेत्रों के समायोजन में भिन्न थे तथा चारों समूहों का समायोजन माध्य उच्च था।
6. चारों समूह भूमिका संघर्ष से परेशान थे। तीनों भूमिका संघर्ष अनुसूचियों में प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की अपेक्षा माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के प्राप्तांक पर्याप्त अधिक थे। भूमिका संघर्ष में पुरुष शिक्षकों तथा महिला शिक्षकों को लगभग बराबर–बराबर अंक मिले थे। साथ ही भूमिका संघर्ष की तीन विषय सूचियाँ वैध पायी गयी।

डी0के0 चढ्ढा (1985)[55] ने शिक्षकों के आत्म–संप्रत्यय तथा उनके भावनात्मक समायोजन का अध्ययन किया।

अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित थे –

1. निश्चित समय में शिक्षकों द्वारा प्राप्त भावनात्मक समायोजन के स्तर का निरूपण करना।
2. पुरुष–महिला तथा शहरी–ग्रामीण पृष्ठ्भूमि वाले शिक्षकों के आत्म–संप्रत्यय तथा भावनात्मक समायोजन का अध्ययन करना।
3. आत्म–संप्रत्यय मापनी तथा भावनात्मक समायोजन अनुसूची द्वारा प्राप्त शिक्षकों के आत्म–संप्रत्यय एवं भावनात्मक समायोजन के मध्य सम्बन्ध के स्तर की खोज करना।

उपरोक्त उद्देश्यों के आलोक में निम्नलिखित परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया –

1. पुरुष तथा महिला शिक्षकों के आत्म–संप्रत्यय के प्राप्तांकों में पर्याप्त अन्तर है। साथ ही शहरी और ग्रामीण शिक्षकों के प्राप्तांकों में भी पर्याप्त अन्तर है।
2. शिक्षकों के दो समुच्चयों (पुरुष–महिला तथा शहरी–ग्रामीण) के भावनात्मक समायोजन प्राप्तांकों के मध्य पर्याप्त अन्तर नहीं है।
3. शिक्षकों के दो समुच्चयों (पुरुष–महिला तथा शहरी–ग्रामीण) के आत्म–संप्रत्यय प्राप्तांक तथा भावनात्मक समायोजन प्राप्तांकों के मध्य पर्याप्त सकारात्मक सम्बन्ध नहीं है।

अध्ययन के लिए हरियाणा राज्य के माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक विद्यालयों के 350 शिक्षकों का न्यादर्श लिया गया, जिन्हें पुरुष–महिला तथा ग्रामीण–शहरी के आधार पर श्रेणीबद्ध किया गया। अध्ययन के लिए दत्त एवं चढ्ढा की 'आत्म–संप्रत्यय मापनी' तथा 'भावनात्मक समायोजन अनुसूची' का प्रयोग किया गया। आँकड़ों का विश्लेषण टी–टेस्ट की सहायता से किया गया तथा आत्म–संप्रत्यय एवं भावनात्मक समायोजन के प्राप्तांकों की आवृत्ति सारणी की सहायता से एकाकी विश्लेषण किया गया, जिसमें निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये –

1. पुरुष, महिला, शहरी तथा ग्रामीण के उपसमूह में विभाजित शिक्षकों के सभी समूहों में एकाकी विश्लेषण द्वारा प्राप्त आत्म–संप्रत्यय प्राप्तांकों का वितरण सामान्य नहीं था।
2. पुरुष, महिला, शहरी तथा ग्रामीण के उपसमूह में विभाजित शिक्षकों के सभी समूहों में एकाकी विश्लेषण करने पर यह प्रकट हुआ कि भावनात्मक समायोजन के प्राप्तांकों का विवरण सामान्य नहीं था।
3. पुरुष–महिला शिक्षकों तथा शहरी–ग्रामीण शिक्षकों के उपसमूहों के आत्म–संप्रत्यय में पर्याप्त अन्तर नहीं था।
4. शिक्षकों के आत्म–संप्रत्यय एवं भावनात्मक समायोजन में पर्याप्त अन्तर था तथा यही अन्तर पुरुष–महिला एवं शहरी–ग्रामीण शिक्षकों के मध्य पाया गया।

---

55. डी0 के चढ्ढा, पी–एच0डी0, एजुकेशन, कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, 1985, एम0बी0 बुच, 'फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन', 'वही', पृष्ठ–928।

5. शिक्षकों के विभिन्न समूहों जैसे– ग्रामीण पुरुष–शहरी पुरुष, ग्रामीण महिला–शहरी महिला, ग्रामीण पुरुष–ग्रामीण महिला, शहरी पुरुष–शहरी महिला, पूर्ण शहरी–पूर्ण ग्रामीण तथा पूर्ण पुरुष–पूर्ण महिला शिक्षकों के भावनात्मक समायोजन में पर्याप्त अन्तर नहीं था।
6. शहरी पुरुष शिक्षकों के अलावा विभिन्न समुहों के शिक्षकों के आत्म–संप्रत्यय तथा भावनात्मक समायोजन के लिए कार्यक्षमता की गुणवत्ता के सहसम्बन्ध में उच्च एवं सांख्यिकीय अन्तर पर्याप्त नहीं पाया गया। शहरी पुरुष शिक्षकों के आत्म–संप्रत्यय तथा भावनात्मक समायोजन के मध्य कार्यक्षमता के साथ सहसम्बन्ध, अन्य उपसमूहों की तुलना में उच्च था।
7. पुरुष शिक्षकों के आत्म–संप्रत्यय तथा भावनात्मक समायोजन के मध्य मध्यम श्रेणी का सहसम्बन्ध था।
8. शहरी पुरुष शिक्षकों के आत्म–संप्रत्यय तथा भावनात्मक समायोजन के मध्य भी मध्यम श्रेणी का सहसम्बन्ध था।
9. शहरी शिक्षकों (पुरुष–महिला) के आत्म–संप्रत्यय तथा भावनात्मक समायोजन के मध्य मध्यम श्रेणी का सहसम्बन्ध था।
10. ग्रामीण पुरुष शिक्षकों के आत्म–संप्रत्यय तथा भावनात्मक समायोजन के मध्य निम्न श्रेणी का सहसम्बन्ध था।
11. महिला शिक्षकों (शहरी–ग्रामीण) के आत्म–संप्रत्यय तथा भावनात्मक समायोजन के मध्य कोई सहसम्बन्ध नहीं था।
12. न्यादर्श के सभी 350 शिक्षकों के आत्म–संप्रत्यय तथा भावनात्मक समायोजन के मध्य निम्न मात्रा में सहसम्बन्ध था।
13. ग्रामीण महिला शिक्षकों के आत्म–संप्रत्यय तथा भावनात्मक समायोजन के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक का मूल्य (- 0.06) था।
14. ग्रामीण शिक्षकों के सभी समूहों के आत्म–संप्रत्यय तथा भावनात्मक समायोजन के मध्य कोई सहसम्बन्ध नहीं था।

बलविन्दर कौर (1986)[56] ने गृहविज्ञान शिक्षिकाओं की व्यक्तिगत, व्यवसायिक तथा सांगठनिक गुणों के सम्बन्धों के आधार पर कृत्य–संतोष का अध्ययन किया।

अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित थे –

1. गृह विज्ञान शिक्षिकाओं का कृत्य–संतोष तथा उनके व्यक्तिगत गुणों के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।

---

56. बलविन्दर कौर, पी–एच0डी0, शिक्षाशास्त्र, पंजाब विश्वविद्यालय, 1986, एम0बी0 बुच, 'फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन', 'वही', पृष्ठ–919

2. गृह विज्ञान शिक्षिकाओं का कृत्य–संतोष तथा व्यावसायिक गुणों के मध्य सम्बन्ध की प्रकृति का अध्ययन करना।
3. गृह विज्ञान शिक्षिकाओं का कृत्य–संतोष तथा सांगठनिक गुणों के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।
4. गृह विज्ञान शिक्षिकाओं की व्यक्तिगत, व्यावसायिक, एवं सांगठनिक गुणों तथा कृत्य–संतोष के अन्तर्गत आश्रित चरों की पहचान करना।
5. कृत्य–संतोष की व्यक्तिगत तथा संयुक्त रूप से की हुई अस्थिर भविष्य की भविष्यवाणियों की खोज करना तथा अस्थिर भविष्य की व्याख्या तथा मतभेद वाले अधिकतम सिद्धान्तों में से सबसे अच्छे मिश्रण का निर्धारण करना।

सहसम्बन्धों पर आधारित अध्ययन में संयोगिक प्रतिचयन विधि तकनीक से पंजाब हरियाणा तथा चण्डीगढ़ की यूनीयन टेरीटोरी के स्कूलों, कालेजों तथा विश्वविद्यालय में कार्यरत 245 गृह विज्ञान शिक्षिकाओं का न्यादर्श लिया गया। न्यादर्श में चयनित शिक्षिकाओं पर निम्नलिखित उपकरणों का प्रयोग किया गया –

1. रावेन की प्रमापीकृत प्रोग्रेसिव मैट्रिक्स, –1960।
2. जलोटा की सामाजिक–आर्थिक मापनी।
3. श्रीवास्तव की आवश्यकता सन्तुष्टि मापनी।
4. हाल्पिन तथा क्राट की सांगठनिक वातावरण विवरण प्रश्नावली –1963।
5. हाल्पिन की नेतृत्व व्यवहार प्रश्नावली –1966।
6. गुप्ता तथा श्रीवास्तव का कृत्य–संतोष मापनी –1980।

उपरोक्त उपकरणों को प्रशासित कर आँकड़ों का एकत्रीकरण किया गया तथा प्राप्त कारकों का विश्लेषण तथा पुनः विश्लेषण किया गया, जिसमें निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये –

1. कृत्य–संतोष के साथ व्यक्तिगत चरों जैसे आयु, बुद्धिमत्ता, सामाजिक–आर्थिक स्तर, आवश्यकता सन्तुष्टि, शारीरिक सुरक्षा, सामाजिक अहम् तथा पूर्ण आवश्यकता–सन्तुष्टि में सहसम्बन्ध पाया गया।
2. व्यावसायिक गुणों जैसे – अनुभव, वेतन, शैक्षिक योग्यता आदि का कृत्य–संतोष से सहसम्बन्ध नहीं था। कृत्य–संतोष के साथ सभी कारकों के आकार में परस्पर अर्थपूर्ण सम्बन्ध आवश्यक नहीं थे।
3. 11 सांगठनिक गुणों में से 8 गुण, जैसे अवकाश प्राप्त, अवरोध, उत्साह, प्रखर विचारधारा, दीक्षा संस्कार प्रारम्भ, बनावटी और विचारपूर्ण नेतत्व व्यवहार, कृत्य–संतोष के साथ सहसम्बन्ध प्रदर्शित करते थे।

एन0एस0 डोंगा (1987)[57] ने गुजरात के शिक्षक–प्रशिक्षक कालेजों के छात्राध्यापकों के समायोजन का अध्ययन किया।

अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित थे –

1. गुजरात राज्य के शिक्षक–प्रशिक्षक कालेजों के छात्राध्यापकों के सांस्कृतिक तथा शैक्षिक स्तर के विभिन्न समूहों जैसे – लिंग, वैवाहिक–स्थिति, आयु, शिक्षण–अनुभव, शिक्षण का स्तर, शैक्षिक योग्यता, संकाय, आवासीय सुविधायें, सामाजिक–स्तर, आर्थिक–स्तर तथा पारिवारिक–स्तर के मध्य विभिन्न प्रकार के समायोजन का अध्ययन करना।
2. शिक्षकों की आय, सामाजिक–प्रतिष्ठा तथा आवासीय–सुविधा का उनके समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
3. शिक्षकों के संकाय, शिक्षण–अनुभव तथा लिंग का उनके समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
4. शिक्षकों की आयु, वैवाहिक–स्थिति एवं शैक्षिक योग्यता का उनके समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
5. समहों के विभिन्न स्तर की शिक्षण अभिवृति, आत्म–संप्रत्यय तथा योग्यता वाले शिक्षकों के समायोजन का अध्ययन करना।

विभिन्न प्रकार के समायोजन का अध्ययन करने के लिए 40 परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया। गुजरात राज्य के विभिन्न विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत छात्राध्यापकों की सांस्कृतिक तथा शैक्षिक विभिन्नताओं के अध्ययन के लिए गुच्छा–पद्धति से 1635 छात्राध्यापकों का न्यादर्श लिया गया, जिसमें 976 पुरुष तथा 659 महिला प्रशिक्षणार्थी सम्मिलित थे। गुच्छा पद्धति से ही सौराष्ट्र विश्वविद्यालय के विभिन्न शिक्षक–प्रशिक्षक कालेजों से अनुभव तथा व्यक्तित्व सम्बन्धी अध्ययन के लिए 419 छात्राध्यापकों का न्यादर्श लिया गया।

अनुसंधानकर्ता ने रोटर (Rotter) द्वारा निर्मित 'समायोजन अनुसूची' (FSB) का प्रयोग किया। अनुसूची को 1635 छात्राध्यापकों पर प्रशासित किया गया एवं उपाध्याय द्वारा निर्मित 'शिक्षण अभिवृति परीक्षण' तथा देसाई द्वारा निर्मित 'आत्म–संप्रत्यय अनुसूची' को 419 छात्राध्यापकों पर प्रशासित किया गया।

सभी उपकरणों में उच्च विश्वसनीयता एवं वैधता थी। क्रान्तिक–अनुपात, प्रसरण विश्लेषण, सहसम्बन्ध गुणांक, एकल परीक्षण तथा सामूहिक सहसम्बन्ध तकनीक से सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया, जिसमें निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये –

---

57. एन0एस0 डोंगा, पी–एच0डी0, एजुकेशन, सौराष्ट्र विश्वविद्यालय, 1987, एम0बी0 बुच, 'फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन', 'वही', पृष्ठ–933

1. पुरुष प्रशिक्षणार्थियों की अपेक्षा महिला प्रशिक्षणार्थी अधिक समायोजित थीं।
2. समायोजन में वैवाहिक स्थिति, शैक्षिक स्तर, पारिवारिक स्तर तथा आयु का सार्थक प्रभाव नहीं था।
3. सामाजिक रूप से सामान्य वर्ग के प्रशिक्षणार्थियों की अपेक्षा पिछड़े वर्ग के प्रशिक्षणार्थी अधिक समायोजित थे।
4. विभिन्न कालेजों के प्रशिक्षणार्थियों का समायोजन भिन्न–भिन्न प्रकार का था।
5. मध्यम आय वर्ग के प्रशिक्षणार्थी सबसे निम्नतर समायोजित थे।
6. विज्ञान संकाय से आने वाले प्रशिक्षणाथियों का समायोजन निम्न स्तर का था।
7. अन्य प्रशिक्षणार्थियों की अपेक्षा दो वर्ष का शिक्षण अनुभव रखने वाले प्रशिक्षणार्थियों का समायोजन अधिक निम्न था।
8. प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षण अनुभव रखने वाले प्रशिक्षणार्थियों का समायोजन सबसे अच्छा था।
9. जो प्रशिक्षर्णी छात्रावास में रहकर प्रशिक्षण प्राप्त करते थे, उनका समायोजन उच्च था।
10. समायोजन पर संकाय, शिक्षण अनुभव तथा लिंग का सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।
11. समायोजन पर आयु, वैवाहिक स्थिति तथा शैक्षिक योग्यता के प्रभाव का सहसम्बन्ध सार्थक नहीं था।
12. समायोजन पर आय, आवासीय सुविधा तथा सामाजिक स्थिति के प्रभाव का सहसम्बन्ध सार्थक नहीं था।
13. छात्राध्यापकों के शिक्षण अभिवृति तथा आत्म–संप्रत्यय का समायोजन से सार्थक सम्बन्ध नहीं पाया गया।
14. आत्म–संप्रत्यय के स्तर के अनुसार तीन विभिन्न समूहों के मध्य पर्याप्त अन्तर था।
15. समायोजन तथा आत्म–संप्रत्यय के पाँच विभिन्न कारकों के मध्य सहसम्बन्ध में पर्याप्त अन्तर था।
16. शिक्षक तथा पाठ्यक्रम के समायोजन का सहसम्बन्ध गुणांक 0.3394 था तथा यह 0.01 के स्तर पर सार्थक था।
17. शैक्षिक उपलब्धियों का समायोजन पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया। .

जी0 शेखर और एस0 रंगनाथन (1988)[58] ने कोयम्बटूर में स्नातक अध्यापकों का कृत्य–संतोष का अध्ययन किया।

अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित थे –

58. जी0 शेखर और एस0 रंगनाथन, इण्यिन एजूकेशनल रिब्यू वैल्यूम 23, एम0बी0 बुच, 'फिफ्थ सर्वे ऑफ एजूकेशनल रिसर्च', नई दिल्ली; राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, 1997, पृष्ठ–1480

1. स्नातक अध्यापकों का कृत्य–संतोष की समस्या और इसके स्तर तथा सामाजिक कारकों के साथ इसके सम्बन्धों का अध्ययन करना।
2. स्नातक अध्यापकों की समस्याओं और इसके सामाजिक कारकों के साथ सम्बन्धों का अध्ययन करना।

अध्ययन के लिए कोयम्बटूर (तमिलनाडू) के 12 स्कूलों से 75 शिक्षकों का न्यादर्श लिया गया। इन 75 शिक्षकों में से 22 सहायक स्कूलों, 30 सरकारी स्कूलों और 23 संयुक्त स्कूलों में कार्यरत थे। आँकड़ों के संग्रह के लिए एक स्वःनिर्मित प्रश्नवली का प्रयोग किया गया तथा आँकड़ों के विश्लेषण के लिए माध्य, मानक विचलन एवं काई–स्क्वायर परीक्षण का प्रयोग किया गया। जिसमें निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये –

1. आय, कार्य की प्रकृति, निजी नीतियाँ, व्यवसाय में निजी विशिष्ट उपलब्धियों, अधीन सहकर्मी, कार्य– सहायक, पहचान और प्रशंसा तथा कार्य की दशाऐं आदि कृत्य–संतोष को प्रभावित करने वाले कारक थे।
2. शोध में सम्मिलित 75 अध्यापकों में से 12 अपने कार्य से अत्यधिक सन्तुष्ट, 27 सन्तुष्ट, 29 कम सन्तुष्ट और शेष 7 असंतुष्ट पाये गये।
3. स्कूलों के प्रकार एवं कृत्य–संतोष के मध्य सम्बन्ध को सार्थक पाया गया।
4. कृत्य–संतोष और सामाजिक कारकों जैसे – जाति, आयु, समूह, परिवार और अनुभव के मध्य सार्थक सम्बन्ध नहीं पाये गये।

पी0 बालकृष्णा रेड्डी (1989)[59] ने प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के कृत्य–संतोष का अध्ययन किया।

यह अध्ययन व्यक्तित्व के विभिन्न कारकों अनुभव, वैवाहिक स्थिति, लिंग आदि चरों के सन्दर्भ में प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के कृत्य–संतोष, शिक्षण अभिवृति एवं उनके वृत्तिक लगाव के गहन रूप से जाँच से सम्बन्धित है।

अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित थे –

1. प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के कृत्य–संतोष, शिक्षण–अभिवृत्ति और वृत्तिक लगाव के स्तर का आंकलन करना।
2. व्यवसाय से सम्बन्धित उन विभिन्न कारकों का पता लगाना जो शिक्षकों की संतुष्टि और असंतुष्टि का कारण होते है।

---

59. पी0 बालकृष्णा रेड्डी, एम0फिल0, एजुकेशन, वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, 1989, एम0बी0 बुच, 'फिफ्थ सर्वे ऑफ एजूकेशनल रिसर्च', 'वही', पृष्ठ–1472

3. शिक्षकों की वैवाहिक स्थिति, योग्यता, परिवार का आकार, लिंग, अनुभव एवं व्यक्तित्व के कारकों के सन्दर्भ में कृत्य–संतोष, शिक्षण–अभिवृत्ति तथा वृत्तिक लगाव के बीच सम्बन्ध का पता लगाना।
4. इस बात का पता लगाना कि कितने प्रतिशत शिक्षक अपने व्यवसाय से सन्तुष्ट हैं और वे मनौवैज्ञानिक रुप से अपने कार्य में अच्छी तरह से संलग्न है।
5. कृत्य–संतोष, शिक्षण–अभिवृत्ति तथा वृत्तिक–लगाव की भविष्यवाणी हेतु एक बहु प्रतिगमन समीकरण बनाना।

न्यादर्श हेतु विभिन्न स्थितियों में स्तरानुकूल संयोगिक प्रतिचयन विधि द्वारा प्राथमिक विद्यालयों के 300 शिक्षकों का चयन किया गया। अध्ययन हेतु 'कृत्य–संतोष मापनी' और 'शिक्षण–अभिवृत्ति मापनी' को स्वयं विकसित किया गया। लोघर्ट इजनर द्वारा निर्मित 'वृत्तिक–लगाव मापनी' तथा कैटेल की 16 व्यक्तित्व कारक प्रश्नावली' (फार्म सी) तथा 'व्यक्तिगत सूचना प्रपत्र' का प्रयोग उपकरणों के रूप में किया गया। आँकड़ों का विश्लेषण टी–टेस्ट, एफ–टेस्ट तथा बहु प्रतिगमन का प्रयोग किया गया। अध्येयन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये –

1. सभी शिक्षक कुल मिलाकर अपने व्यवसाय से संतुष्ट थे।
2. व्यवसाय सम्बन्धी विभिन्न कारकों के आधार पर उनका कृत्य–संतोष देखने से स्पष्ट हुआ कि 8 कारकों के सन्दर्भ में शिक्षकों के कृत्य–संतोष का स्तर सन्तोष जनक था तथा 7 कारकों के सन्दर्भ में शिक्षक अपने व्यवसाय से असंतुष्ट थे।
3. पुरुषों की तुलना में महिला शिक्षक अपने व्यवसाय से अधिक संतुष्ट पायी गयीं वहीं केवल एक कारक के सन्दर्भ में पुरुष शिक्षक महिला शिक्षकों से अधिक संतुष्ट थे।
4. सभी तरह से कृत्य–संतोष के सन्दर्भ में जो शिक्षक पुर्ण रूप से योग्यता रखते थे वे अधिक संतुष्ट थे तथा अधिक आयु एवं मध्य आयु के शिक्षकों की अपेक्षा कम आयु के शिक्षक अपने व्यवसाय से अधिक संतुष्ट थे।
5. उच्च मध्य और निम्न शिक्षण–अभिवृत्ति वाले शिक्षकों के कृत्य–संतोष के स्तर में सार्थक अन्तर था।
6. व्यक्तित्व के 7 कारकों के सन्दर्भ में निम्न, मध्य और वृत्तिक–लगाव वाले शिक्षकों के कृत्य–संतोष वाले स्तर में सार्थक अन्तर था।
7. उच्च, मध्य और निम्न वृत्तिक–लगाव वाले शिक्षकों की शिक्षण–अभिवृत्ति के स्तर में सार्थक अन्तर था।
8. व्यक्तित्व सम्बन्धी प्राप्तांकों की उच्च मध्य और निम्न श्रेणी में वर्गीकृत शिक्षकों की शिक्षण–अभिक्षमता के स्तर में सार्थक अन्तर पाया गया।
9. व्यक्तित्व सम्बन्धी 4 कारकों, शिक्षण–अभिवृत्ति और योग्यता के आधार पर वर्गीकृत शिक्षकों के वृत्तिक–लगाव के स्तर में सार्थक अन्तर पाया गया।

10. 84.33 % शिक्षक मनोवैज्ञानिक रूप से अपने व्यवसाय में अपने आपकों अच्छी तरह संलग्न समझते हुए पाये गये।
11. 84.4 % शिक्षकों के कृत्य–संतोष में प्रसरण व्यक्तित्व सम्बन्धी विभिन्न कारकों के सन्दर्भ में देखा गया।
12. स्वतन्त्र चरों के आधार पर कृत्य–संतोष के सन्दर्भ में भविष्यवाणी करने में कुल प्रसरण 27.7 % था।
13. स्वतन्त्र चरों के आधार पर शिक्षण–अभिवृत्ति में कुल प्रसरण 39.1 % था।
14. स्वतन्त्र चरों के आधार पर वृत्तिक–लगाव में कुल प्रसरण 49.1 % देखा गया।

एस0 राय (1990)[60] ने शिक्षकों के कृत्य–संतोष और उनके छात्रों के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया गया।

अध्ययन का उद्देश्य इस बात का पता लगाना था कि शिक्षकों का अपने छात्रों के प्रति अभिवृत्ति उनके कृत्य–संतोष और उनके मानसिक स्वास्थ्य के मध्य किस तरह का सम्बन्ध होता है। इस अध्ययन हेतु प्रयोगात्मक अभिकल्प का चयन किया गया जिसमें संयोगिक प्रतिचयन विधि द्वारा उड़ीसा के कटक शहर के 5 स्कूलों के 100 पुरुष एवं महिला शिक्षकों को न्यादर्श में लिया गया। अध्ययन में 'मानसिक स्वास्थ्य मापनी','कृत्य–संतोष मापनी' तथा छात्रों के प्रति 'शिक्षण–अभिवृत्ति मापनी' का प्रयोग उपकरणों के रूप में किया गया। प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण मध्यमान, मानक विचलन, सहसम्बन्ध गुणांक, काई वर्ग परीक्षण तथा टी–परीक्षण द्वारा किया गया।

अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये –

1. शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य और उनके कृत्य–संतोष एवं उनकी छात्रों के प्रति अभिवृत्ति के मध्य सार्थक धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।
2. शिक्षकों का शिक्षण अनुभव, मानसिक स्वास्थ्य, कृत्य–संतोष तथा उनकी छात्रों के प्रति अभिवृत्ति का उनकी आयु से सार्थक धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।

जी0सी0 नायक (1990)[61] ने उच्च शिक्षा के अल्पकालिक शिक्षकों या शिक्षण सहायकों का कृत्य–संतोष से सम्बन्धित कारकों का अध्ययन किया।

अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित थे –

1. शिक्षण सहायकों का कृत्य–संतोष का अध्ययन करना।

---

60. एस0राय0, एम0फिल0, एजुकेशन, उत्कल विश्वविद्यालय, 1990, एम0बी0 बुच, 'फिफ्थ सर्वे ऑफ एजूकेशनल रिसर्च', 'वही', पृष्ठ–1471
61. जी0सी0 नायक, एम0फिल0, एजुकेशन, महाराजा सायाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा, 1990 एम0बी0 बुच, 'फिफ्थ सर्वे ऑफ एजूकेशनल रिसर्च', 'वही', पृष्ठ–1460

2. कृत्य–संतोष तथा जाति, आयु, शिक्षण अनुभव और वैवाहिक स्तर के मध्य सम्बन्धों का अध्ययन करना।
3. कार्य नियुक्ति के समय शिक्षण सहायकों के दृष्टिकोण का अध्ययन करना।

इस व्याख्यात्मक सर्वेक्षण में एम0एस0 विश्वविद्यालय, बड़ौदा के शिक्षण–सहायकों में से संयोगिक विधि द्वारा न्यादर्श का चयन किया गया। आँकड़ों के संग्रहण हेतु एक स्वःनिर्मित अनुसूची का प्रयोग किया गया तथा शिक्षण–सहायकों का कृत्य–संतोष के आँकड़ों का संग्रह करने के लिए सी0एन0 दफतरवार द्वारा निर्मित 'कृत्य–संतोष मापनी' का प्रयोग किया गया और उनकी भावनाओं को जानने के लिए एक 'निजी साक्षात्कार' का प्रबन्ध किया गया। आँकड़ों का विश्लेषण, प्रतिशत, माध्यिका, मानक विचलन, एफ–टेस्ट, और काई–स्क्वायर की सहायता से किया गया।

अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये –
1. अधिकांशतः शिक्षण–सहायक अपने कार्य उत्तरदायित्व एवं विभाग की सामाजिक स्थिति से संतुष्ट थे।
2. शिक्षण–सहायक जाति, आयु–समूह, अनुभव और वैवाहिक–स्तर के आधार पर कृत्य–संतोष के स्तर में भिन्न नहीं थे।
3. शिक्षण–सहायकों द्वारा शिक्षण व्यवसाय चुनने के पीछे मुख्य विचार अनुकूल व्यवहार, आगे अध्यापन की अनुकूलता, और आर्थिक विचार था।

एम0 सुब्रमण्यम रेड्डी (1990)[62] ने कुछ चरों के सन्दर्भ में विश्वविद्यालय शिक्षकों के कृत्य–संतोष का अध्ययन किया।

अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित थे –
1. कुछ चरों के सम्बन्ध में विश्वविद्यालय शिक्षकों का कृत्य–संतोष का अध्ययन करना जैसे–शिक्षण–अभिवृत्ति, वृत्तिक लगाव, विश्वविद्यालय का प्रकार, विश्वविद्यालय विभाग, आयु, वैवाहिक–स्तर, जाति, परिवार, परिवार का आकार, कार्यस्थल से जन्मस्थल की समीपता, स्वास्थ्य का सामान्य स्तर, जन्म स्थान की सम्पत्ति पर अधिकार, शिक्षण प्रभाविकता, जीवन–संतुष्टि, शोधकर्ता की प्रभाविकता, शिक्षण कार्यभार, प्रशासनिक कार्यभार, पारिवारिक–संतुष्टि, शोध–उत्पाद, प्रकाशित शोधों की संख्या, प्रकाशित पुस्तकों की संख्या आदि चरों के सम्बन्ध में महाविद्यालय के शिक्षकों के कृत्य–संतोष का परीक्षण करना।
2. अध्यापकों की शिक्षण अभिवृति तथा वृत्तिक लगाव का कुछ चरों के सन्दर्भ में अध्ययन करना।

---

62. एम0 सुब्रमण्डम रेड्डी, एम0फिल0, एजुकेशन, वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, 1990, एम0बी0 बुच, 'फिफ्थ सर्वे ऑफ एजूकेशनल रिसर्च', 'वही', पृष्ठ–1475

अध्ययन के लिए 210 विश्वविद्यालय शिक्षकों को स्तरानुसार संयोगिक प्रतिचयन विधि द्वारा चुना गया था। ऑकड़ों के संग्रह के लिए 'कृत्य–संतोष मापनी', 'शिक्षण–अभिवृत्ति मापनी', 'वृत्तिक लगाव मापनी' और एक 'निजी अनुसूची' उपकरणों का प्रयोग किया गया। आँकड़ों के मूल्यांकन व विश्लेषण के लिए माध्य, टी–टेस्ट, प्रतीपगमन का प्रयोग किया गया।

अध्ययन से निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुये–

1. अध्यापकों का औसत कृत्य–संतोष प्राप्तांक 307.26 यह दर्शाता था कि वह अपने कार्य से संतुष्ट थे।
2. 10 में से 8 कारकों के आधार पर शिक्षकों को अपने कार्य से कृत्य–संतोष प्राप्त था।
3. शिक्षण अभिवृति (ATT) के आधार पर वर्गीकृत अध्यापकों के समूह निश्चित रूप से कृत्य–संतोष के स्तर में भिन्न थे।
4. सम्पूर्ण कृत्य–संतोष और पाँच कारकों के प्रसरण विश्लेषण का मान सार्थक पाया गया।
5. अध्यापकों का अपने व्यवसाय के प्रति अनुकूल दृष्टिकोण था।
6. यही बात सम्पूर्ण अभिवृतिओं और अभिवृति के पाँचों कारकों के लिए भी सत्य थी।
7. 36 प्रतिशत अध्यापकों को शिक्षण अत्यधिक पसंद था, जबकि 62 प्रतिशत इसे सामान्य रूप से पसंद करते थे।
8. सी, ई और आई चरों के परिप्रेक्ष्य में एक या अधिक अभिवृति सम्बन्धी कारकों का एफ–मूल्य (F-Value) सार्थक था।
9. अन्य चरों के परिप्रेक्ष्य में एफ–मूल्य (F-Value) अर्थपूर्ण नहीं था।
10. अध्यापक अपने कार्य में उच्च स्तरीय मनोवैज्ञानिक लगाव प्रदर्शित करते थे।

पी0एल0 सक्सेना (1990)[63] ने मध्य प्रदेश के उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रवक्ताओं का कृत्य–संतोष को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन किया।

अध्ययन का उद्देश्य निम्न था –

1. मध्य प्रदेश के उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रवक्ताओं के कृत्य–संतोष को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन करना।

मध्य प्रदेश के 12 जिलों से 118 विद्यालय इस अध्ययन के लिए चुने गये। चुने हुए विद्यालयों में कार्यरत 600 अध्यापक और 300 अध्यापिकाओं को शोध में सम्मिलत किया गया। इस अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण थे – सामान्य सुचनाओं पर आधारित 'कृत्य–संतोष विचार मापनी' एवं एक 'साक्षात्कार–सूची'। जिसके द्वारा आँकड़ों का संग्रह किया गया। आँकड़ों का विश्लेषण करते समय माध्य, मानक विचलन, एफ–टेस्ट का प्रयोग किया गया, जिसमें निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये –

63. पी0एल0 सक्सेना, पी–एच0डी0, एजुकेशन, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, 1990, एम0बी0 बुच, 'फिफ्थ सर्वे ऑफ एजूकेश्नल रिसर्च', 'वही', पृष्ठ–1479

1. पुरुष एवं महिला प्रवक्ताओं के कृत्य–संतोष में सामाजिक, व्यक्तिगत, व्यावसायिक, भौतिक एवं आर्थिक कारकों के आधार पर सार्थक अन्तर नहीं था और न ही विज्ञान एवं कला वर्ग के प्रवक्ताओं के कृत्य–संतोष में अन्तर था।
2. उपर्युक्त कारकों के अधार पर 10 साल से अधिक शिक्षण अनुभव तथा 10 साल से कम शिक्षण अनुभव वाले, गैर सरकारी ग्रामीण और शहरी विद्यालयों के प्रवक्ताओं के कृत्य–संतोष के मध्य सार्थक अन्तर था।

नानग्रम मीडालिन (1992)[64] ने शिलांग के माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों के कृत्य–संतोष तथा विद्यालय प्रमुख/प्रधानाध्यापक की नेतृत्व विशेषताओं का अध्ययन किया।

अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित थे –

1. शिलांग के माध्यमिक स्कूलों के अध्यापकों के कृत्य–संतोष का स्तर ज्ञात करना तथा कृत्य–संतोष को प्रभावित करने वाले चरों जैसे – लिंग, शैक्षिक–स्तर, धार्मिक–दृष्टिकोंण एवं कार्य अनुभव में सम्बन्ध का पता लगाना।
2. प्रधानाध्यापक की नेतृत्व विशेषताओं तथा अध्यापक द्वारा अनुभूत स्कूल की आवश्यकताओं का अध्ययन करना।
3. अध्यापकों के कृत्य–संतोष और स्कूलों के प्रमुख/प्रधानाध्यापकों की नेतृत्व विशेषताओं के उत्तरदायित्व के मध्य यदि कोई सम्बन्ध है तो उसका अध्ययन करना।

स्कूलों की स्थापना, प्रबन्धन व्यवस्थाओं के प्रकार आदि को दृष्टि में रखकर शिलांग में 49 स्कूलों में से 20 स्कूलों को न्यादर्श के रूप में चुना गया। प्रत्येक स्तरीय मापन के लिए अध्यापकों के लिए एक कृत्य–संतोष मापनी निर्मित की गयी। स्कूलों के प्रमुखों की नेतृत्व विशेषताओं को ऑकने के लिए 'रेटिंग स्केल' का प्रयोग उन शिक्षकों पर किया गया, जो उनके नीचे काम कर रहे थे। आँकड़ों के विश्लेषण के लिए क्रांतिक–अनुपात (Critical ratio) और काई–स्क्वायर (Chi-sauare) सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया था।

अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये –

1. प्रबन्धन की छाप अध्यापकों के कृत्य–संतोष के साथ जुड़ी प्रतीत हुई और सरकारी स्कूलों के अध्यापक निश्चित रूप से अधिक सन्तुष्ट पाये गये।
2. अध्यापक और अध्यापिकाओं के मध्य, विभिन्न धार्मिक पृष्ठभूमि वाले अध्यापकों के मध्य तथा अध्यापकों की अनुभव सीमा के मध्य, कृत्य–संतोष में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
3. कृत्य–संतोष तथा शैक्षिक योग्यता के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया।

---

64. नानग्रम मीडालिन, पी–एच0डी0, एजुकेशन, नार्थ ईस्टर्न हिल विश्वविद्यालय, 1992, एम0बी0 बुच, 'फिफ्थ सर्वे ऑफ एजूकेशनल रिसर्च', 'वही', पृष्ठ–1463

4. अध्ययन में यह प्रदर्शित हुआ कि अध्यापक अधिक सन्तुष्ट हो सकते हैं, यदि उन्हें स्कूल के प्रमूख पद के अधिकार का ज्ञान प्रदान किया जाऐ।

शिप्रा राय (1992)[65] ने शिक्षकों के छात्रों के प्रति अभिवृत्ति और उनके कृत्य–संतोष का तुलनात्मक अध्ययन किया।

इस अध्ययन में यह पता लगाने का प्रयास किया गया कि माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के कृत्य–संतोष सम्बन्धी विभिन्न कारक कौन–2 से हैं तथा शिक्षकों का अपने छात्रों के प्रति दृष्टिकोंण कैसा है।

अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित थे –

1. शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य, शिक्षण अनुभव और उनका छात्रों के प्रति अभिवृत्ति का उनके कृत्य–संतोष के साथ सहसम्बन्ध को ज्ञात करना।
2. पुरुष एवं महिला शिक्षकों के कृत्य–संतोष, मानसिक स्वास्थ्य और छात्रों के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन के लिए शोधार्थी द्वारा 'मानसिक स्वास्थ्य मापनी', 'कृत्य–संतोष मापनी', 'छात्रों के प्रति शिक्षक अभिवृत्ति मापनी' का निर्माण किया गया और इन्हीं स्वःनिर्मित उपकरणों से ऑकड़े एकत्रित किये गये। जबकि शोधार्थिनी द्वारा मिनेसोटा टीचर्स एप्टीट्यूट इन्वेंटरी का भी प्रयोग किया गया। आँकड़ों का विश्लेषण माध्य, मानक विचलन, सहसम्बन्ध, काई वर्ग, टी–टेस्ट और प्रतिगमन समीकरण द्वारा किया गया।

अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये –

1. शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य और उनके कृत्य–संतोष एवं छात्रों के प्रति अभिवृत्ति के मध्य एक सार्थक एवं धनात्मक सहसम्बन्ध था।
2. शिक्षकों के शिक्षण अनुभव, मानसिक स्वास्थ्य, कृत्य–संतोष और उनके छात्रों के प्रति अभिवृत्ति का उनकी आयु के साथ सार्थक एवं धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।
3. जो शिक्षक अपने व्यवसाय से संतुष्ट थे उनका अपने विद्यार्थियों के प्रति अभिवृत्ति सकारात्मक थी।
4. सामान्यतः महिला शिक्षिकाऐं जो अपने विद्याथियों से स्नेह तथा उनके प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति रखती थीं उनका मानसिक स्वास्थ्य तथा कृत्य–संतोष पुरुष की तुलना में ज्यादा अच्छा था।

---

65. शिप्रा राय, पी–एच0डी0, एजुकेशन, उत्कल विश्वविद्यालय, 1992, एम0बी0 बुच, 'फिफ्थ सर्वे ऑफ एजूकेशनल रिसर्च', 'वही', पृष्ठ–1471

राममोहन बाबू (1992)[66] ने आवासीय एवं गैर आवासीय विद्यालयों के अध्यापकों के कृत्य–संतोष, वृत्तिक लगाव, शिक्षण निपुणता तथा विद्यालय के संगठनात्मक वातावरण के बोध का अध्ययन किया।

अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित थे –

1. आवासीय और गैर आवासीय स्कूलों के अध्यापकों के कृत्य–संतोष, शिक्षण अभिवृति, वृत्तिक लगाव, शिक्षण निपुणता, संगठनीय वातावरण के बोध का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्कूल अध्यापकों के कृत्य–संतोष, शिक्षण अभिवृति और वृत्तिक लगाव के स्तर का परीक्षण करना।
3. आवासीय और गैर आवासीय स्कूलों के अध्यापकों, जो कि कृत्य–संतोष, शिक्षण अभिवृति, वृत्तिक लगाव, शिक्षण निपुणता तथा स्कुलों के संगठनीय वातावरण के बोध के आधार पर अध्यापकों और अध्यापिकाओं के अन्तर का पता लगाना।
4. अध्यापक के विभिन्न निजी और सामाजिक स्थिति के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना, जैसे– अध्यापक की व्यवस्था, अनुभव, वैवाहिक–स्तर, कार्यभार, स्वास्थ्य की सामान्य अवस्था और जीवन संतुष्टि का उनके कृत्य–संतोषए शिक्षण अभिवृतिए वृत्तिक लगाव और संगठनात्मक वातावरण के बोध।
5. स्कूलों के प्रकार और संगठनीय वातावरण के प्रकार के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।
6. विभिन्न प्रकार के संगठनीय वातावरण वाले स्कूलों में कार्यरत अध्यापकों के मध्य कृत्य–संतोषए शिक्षण अभिवृतिए और शिक्षण निपुणता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
7. विभिन्न स्वतन्त्र विभिन्नताओं की सहायता से कृत्य–संतोषए शिक्षण अभिवृतिए वृत्तिक लगाव और शिक्षण निपुणता के सम्बन्ध में भविष्यवाणी हेतु प्रतीपगमन समीकरण का निर्माण करना।

इस सर्वेक्षण के न्यादर्श के लिए आन्ध्र प्रदेश के रायलसीमा जोन के 40 माध्यमिक स्कूलों के 400 अध्यापकों का चयन किया गया। जो कि समान रूप से दो व्यवस्थाओं (आवासीय और गैरआवासीय), दो लिंग (पुरुष और महिला) और दो स्तरों (सीनियर और जूनियर) में बाँटा गये थे। अध्यापकों की शिक्षण कुशलता को मापने के लिए 40 प्रधानाध्यापक और 316 विद्यार्थियों के विचारों को प्राप्त किया गया। प्रत्येक अध्यापक का 5 से 10 विद्यार्थियों और स्कूल के प्रधानाध्यापक द्वारा आँकलन किया गया। आँकड़ों के संग्रह हेतु एक 'कृत्य–संतोष मापनी', एक 'शिक्षण–अभिवृत्ति मापनी', एक वृत्तिक लगाव मापनी', एक 'सामाजिक अध्यापक कुशलता मापनी', एक 'संगठनीय वातावरण व्याख्या

66. राममोहन बाबू, पी–एच0डी0, एजुकेशन, श्री वैंकटेश्वर विश्वविद्यालय, 1992, एम0बी0 बुच, 'फिफ्थ सर्वे ऑफ एजूकेशनल रिसर्च', 'वही', पृष्ठ–1467

प्रश्नसूची' और एक 'निजी ऑकड़ा–सूची' का प्रयोग किया गया तथा प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण माध्य की सहायता से किया गया।

अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये–

1. कृत्य–संतोष पर विचार करने पर पता लगा कि अध्यापक अपने कार्य से न तो पूर्ण संतुष्ट थे और न ही पूर्ण असंतुष्ट।
2. अभिवृत्ति पर विचार करने पर अध्यापकों का शिक्षण की ओर पूर्ण रूप से अनुकूल दृष्टिकोण था।
3. विभिन्न कारकों द्वारा मापने पर अध्यापक वृत्तिक लगाव का एक निश्चित स्तर प्रदर्शित करते थे।
4. आवासीय स्कूलों के अध्यापकों का कृत्य–संतोष गैरआवासीय स्कूलों के अध्यापकों की तुलना में उच्च स्तर का था।
5. गैर आवासीय स्कूलों में कार्यरत अध्यापकों की तुलना में आवासीय स्कूलों में कार्यरत अध्यापक निश्चित रूप से प्रभावी दृष्टिकोण रखते थे और अधिक प्रसन्न भी थे।
6. अध्यापक और अध्यापिकाओं में योग्यता के स्तर के मध्य कोई निश्चित अन्तर नहीं पाया गया।
7. गैरआवासीय स्कूलों की तुलना में आवासीय स्कूल संगठनीय वातावरण के आधार पर निश्चित रूप से अधिक अंतरंग, प्रतिबन्धक और अलगाव वाले थे।
8. अपने स्कूलों के संगठनीय वातावरण में अध्यापिकायें अधिक ध्यान देती थीं।
9. कम अनुभवी अध्यापकों का कृत्य–संतोषए शिक्षण अभिवृति और शिक्षण निपुणता उच्च स्तर की थी।
10. वह अध्यापक जो मध्यम श्रेणी के थे और जिनका कार्यभार अधिक था उनका कृत्य–संतोषए शिक्षण अभिवृति और शिक्षण निपुणता अधिक अच्छी थीं।
11. अविवाहित अध्यापक अधिक संतुष्ट थे और उनका शिक्षण अभिवृति, सामान्य स्वास्थ्य स्तर, कृत्य–संतोष और शिक्षण निपुणता पर उनके जीवन संतुष्टि का प्रभाव सकारात्मक था।
12. वह अध्यापक जिनका शिक्षण अभिवृति अच्छा था वह उच्च वृत्तिक लगाव, और कृत्य–संतोष, प्रदर्शित करते थे।
13. अधिक योग्य अध्यापकों का शिक्षण अभिवृति, सकारात्मक पाया गया।
14. बंद वातावरण में काम करने वाले अध्यापकों की अपेक्षा, प्रजातंत्रीय और खुले वातावरण में कार्यरत अध्यापकों का दृष्टिकोण अच्छा था और वो अपने कार्य से अधिक संतुष्ट थे।
15. स्कूलों के प्रकार (आवासीय और गैर आवासीय) तथा स्कूलों के वातावरण के मध्य कोई निश्चित सम्बन्ध नहीं था।

16. विभिन्न प्रकार के वातावरण में कार्यरत अध्यापकों के वृत्तिक लगाव और शिक्षण निपुणता के मध्य कोई निश्चित अन्तर नहीं था।

एस0 रावत (1992)[67] ने माध्यमिक स्कूल के अध्यापकों की उनके लिंग के सन्दर्भ में कृत्य–संतोष और मूल्यों का अध्ययन किया।

अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित थे –

1. माध्यमिक स्कूल अध्यापकों की कार्य प्रत्याशाओं और कार्य वास्तविकताओं का उनके कृत्य–संतोष के साथ सम्बन्ध का पता लगाना तथा अध्यापकों के मूल्यों पर उनकी जाति, निवास स्थान और शिक्षण–स्तर के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. अध्यापक की कार्य–प्रत्याशाओं, कार्य–वास्तविकताओं, कृत्य–संतोष और मूल्यों पर जाति, निवास स्थान, प्रबन्धन के प्रकार और शिक्षण स्तर के प्रभाव का अध्ययन करना।
3. कम व अधिक व्यावसायिक प्रत्याशा रखने वाले अध्यापकों की व्यावसायिक वास्तविकताओं, कृत्य–संतोष तथा मूल्यों पर उपर्युक्त चरों के प्रभाव का अध्ययन करना।

इस अध्ययन में न्यादर्श के लिए बरेली, मुरादाबाद और रामपुर जिले के माध्यमिक स्कूलों के 569 अनुभवहीन अध्यापकों का चयन बहु–स्तरीय संयोगिक प्रतिचयन विधि द्वारा किया गया। यह न्यादर्श जाति, स्थान, प्रबन्धन के प्रकार और शिक्षण स्तर में विभिन्नता के आधार पर लिया गया। आँकड़ों की प्राप्ति हेतु 'स्वःनिर्मित ऑकड़ा अनुसूची', शाह और रावत द्वारा निर्मित 'अध्यापन कार्य प्रत्याशा मापनी', यूनियल की 'कृत्य–संतोष मापनी' एवं शाह की 'मूल्य मापनी' का प्रयोग किया गया। चयनित न्यादर्श पर सभी उपकरणों को प्रशासित किया गया। संग्रहीत आँकड़ों का विश्लेषण मध्यमान, मानक विचलन, टी–टेस्ट आदि की सहायता से किया गया। अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये –

1. कार्य प्रत्याशाओं के अधिकांशतः प्राप्तांकों में एल0टी0 ग्रेड महिला अध्यापक, पुरुष और दूसरे ग्रेड की तुलना में अधिक आकांक्षी पायी गयी।
2. अधिकांशतः कार्य वास्तविकताओं के प्राप्तांकों में पुरुष और शहरी अध्यापक, महिला और ग्रामीण अध्यापकों की अपेक्षा अच्छा अनुभव करते थे।
3. विभिन्न ग्रेड के पुरुष अध्यापकों एवं सहायक स्कूलों के अध्यापकों की तुलना में महिला सी0टी0 ग्रेड और सरकारी स्कूलों की अध्यापिकाओं का कृत्य–संतोष उच्च था।
4. जाति, निवास, प्रबन्धन के प्रकार और अध्यापकों का ग्रेड बहुत ही कम मात्रा में उनके कारकों को प्रभावित करता था।

---

67. एस0 रावत, पी–एच0डी0, एजुकेशन, रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, 1992, एम0बी0 बुच, 'फिफ्थ सर्वे ऑफ एजूकेशनल रिसर्च', 'वही', पृष्ठ–1470

5. तुलनां की सभी स्थितियों में अध्यापकों की आकांक्षाऐं उनकी कार्य वास्तविकताओं से निश्चित रूप से उच्च थीं।
6. महिला, शहरी, सहायक स्कूल और सी0टी0 एवं निम्न कार्य प्रत्याशा समूह के लेक्चरर ग्रेड अध्यापकों की कार्य यथार्थता उच्च थी, जबकि उच्च प्रत्याशा समूह के मध्य पुरुष, शहरी और सहायक स्कूल के अध्यापक अपने सहयोगियों की तुलना में अधिक कार्य यथार्थता अनुभव करते थे।
7. मानवीय रचनात्मक ज्ञान, सामाजिक और धार्मिक मूल्यों के साथ कार्य आकांक्षा, कार्य यथार्थता और कृत्य–संतोष प्रदायक सकारात्मक सम्बन्ध प्रदर्शित करते थे, लेकिन राजनीतिक एवं आर्थिक मूल्यों के साथ नकारात्मक सम्बन्ध था।

2.4.3. उत्तर प्रदेश में सम्पन्न अध्ययन :–

शोधकर्ता ने उपरोक्त शोध ग्रन्थ, पुस्तक, पत्रिकाओं आदि से अपनी शोध समस्या से सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन किया, जिसमें पाया गया कि वर्तमान समस्या से कतिपय विभिन्नता के साथ अनेक शोध (डी0लिट, पी–एच0डी0, एम0फिल, आर्टकिल, प्रोजेक्ट एवं शोध–पत्र) भारत में हुये हैं जिनका संक्षिप्त विवरण चरों के आधार पर कालक्रमानुसार व्यवस्थित कर प्रस्तुत किया जा रहा है –

कृत्य–संतोष :–

उ0प्र0 में कृत्य–संतोष से सम्बन्धित प्राथमिक शिक्षा में आर0के0 चोपड़ा (1982), एम0 दीक्षित (1986), आर0पी0 रस्तोगी (1981), एस0श्रीवास्तव (1986), दीपक कुमार (2006), ने अध्ययन किया।

उ0प्र0 में कृत्य–संतोष से सम्बन्धित माध्यमिक शिक्षा में जे0सी0 गोयल (1980), एन0के0 पोरवाल (1980), उर्मिला सिंह (1992) ने अध्ययन किया।

उ0प्र0 में कृत्य–संतोष से सम्बन्धित अन्य में एस0पी0 गुप्ता (1980) (प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च तीनों स्तर पर), सी0पी0 खोखर (1983), एच0एल0 सिंह (1974), वी0 सिंह (1987), एम0पी0 यूनीयल (1976), सुजाता होत (1990) ने अध्ययन किया।

समायोजन :–

उ0प्र0 में समायोजन से सम्बन्धित माध्यमिक शिक्षा में पी0के0 गोस्वामी (1978), एम0क्यू0 हुसैन (1963), ए0 कक्कड़ (1964), के0 कुमारी (1975), एस0 मेहरोत्रा (1986), ए0 पाण्डेय (1970), पी0 सिंह (1987), जी0एस0 जमन (1982), तथा आई0ए0 जुबेरी (1984) ने कृत्य–संतोष एवं समायोजन दोनों चरों में अध्ययन किया।

उ0प्र0 में समायोजन से सम्बन्धित उच्च शिक्षा में एन0 फटीमैन (1975), फरजान फारूक (1974), जी0आर0 शर्मा (1978), पी0 वेरेश्वर (1979), ने अध्ययन किया।

उ0प्र0 में समायोजन से सम्बन्धित अन्य में के0ए0 कुमार (1966), पी0सी0 सक्सेना (1972), के0जी0 शर्मा (1972), के0पी0 शर्मा (1974), वी0के0 गुप्ता (1976), एस0 अधावा (1977),एम0सी0 शर्मा (1979), आर0पी0 सिंह (1979), ए0 कमलेश (1981), ए0एच0 करवासी (1981), एम0सी0 शर्मा (1981), एच0बी0 सिंह (1982), आर0 दत्त (1983), के0 लता (1985), आभा माथुर (1985), आर0एन0 पाण्डेय (1985), आर0बी0 राव (1986), जे0एस0 वर्मा (1985) ने अध्ययन किया।

एस0पी0 गुप्ता (1980)[68] ने शिक्षा के तीनों स्तर पर शिक्षकों के कृत्य–संतोष का अध्ययन किया।

अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित थे –

1. प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा में कार्यरत शिक्षकों का कृत्य–संतोष का अध्ययन करना।
2. प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा में कार्यरत शिक्षकों की मानसिक सन्तुष्टि का अध्ययन करना।
3. विवाहित तथा अविवाहित शिक्षकों का कृत्य–संतोष का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. विभिन्न आयु वर्ग के शिक्षकों का कृत्य–संतोष का अध्ययन करना।
5. प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा में कार्यरत शिक्षकों का कृत्य–संतोष का तुलनात्मक अध्ययन करना।
6. प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा में कार्यरत शिक्षकों के कृत्य–संतोष का तुलनात्मक अध्ययन करना।
7. उद्देश्य I. II. III. का कृत्य–संतोष का तुलनात्मक अध्ययन करना।

इस अध्ययन के लिए 765 पुरुष शिक्षकों का चयन किया गया जो कि मेरठ क्षेत्र के प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा से सम्बन्धित थे। आँकड़ों का संग्रह करने हेतु निम्न उपकरणों का प्रयोग किया गया – टीचर जॉब सेटिसफेक्शन स्केल (TJSS), एट्टीट्यूड टुवर्डस् टीचिंग कैरियर स्केल (ATCS), मीनाक्षी पर्सनाल्टी इनवेंट्री (MPI), पर्सनाल्टी मैच्योरिटी टेस्ट (PMT), एवं पर्सनल डाटा एण्ड इन्फार्मेशन फ्रार्म (PDIF)। प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण एफ–परीक्षण एवं टी–परीक्षण की सहायता से किया गया। अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये –

---

68. एस0पी0 गुप्ता, पी–एच0डी0, एजुकेशन, मेरठ विश्वविद्यालय, 1980, एम0बी0 बुच, 'थर्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन', 'वही', पृष्ठ–809

1. प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के कृत्य–संतोष से आवश्यकता की उपलब्धि, लगाव एवं सहनशीलता सकारात्मक सम्बन्ध रखते थे, जबकि एकात्मकता एवं अक्रामकता, नकारात्मक सम्बन्ध रखते थे। साथ ही पोषण, प्रदर्शन की आवश्यकता एवं अनुपस्थिति का प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के कृत्य–संतोष से विशेष सम्बन्ध नहीं था।
2. प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों का कृत्य–संतोष उनके अध्यापन के प्रति दृष्टिकोण एवं व्यक्तित्व विकास से सकारात्मक रूप से सम्बन्धित था।
3. प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों का कृत्य–संतोष उनके भौतिक स्तर, आयु और शिक्षण अनुभव से सम्बन्धित नहीं था।
4. प्राथमिक विद्यालय शिक्षक, कृत्य–संतोष के दस में से आठ कारकों के प्रति विशेष योगदान देते थे।
5. माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के कृत्य–संतोष से आवश्यकता की उपलब्धि का सकारात्मक सम्बन्ध था, जबकि प्रदर्शित आवश्यकता, एकात्मकता एवं अक्रामकता का नकारात्मक सम्बन्ध था।
6. माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के कृत्य–संतोष से अध्यापन के प्रति दृष्टिकोण, व्यक्तित्व विकास सकारात्मक सम्बन्ध रखते थे।
7. माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के कृत्य–संतोष से भौतिक स्तर, आयु और शिक्षण अनुभव सम्बन्धित नहीं थे।
8. माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक, कृत्य–संतोष के बारह में से आठ कारकों में विशेष योगदान देते थे।
9. महाविद्यालय के शिक्षकों के कृत्य–संतोष से आवश्यकता की उपलब्धि, लगाव एवं सहनशीलता सकारात्मक सम्बन्ध रखते थे, जबकि पोषण एवं अक्रामकता, नकारात्मक सम्बन्ध रखते थे। प्रदर्शन की आवश्यकता, स्वायतता, सम्बन्ध (निर्धारण), सहायक, शासनात्मक एवं सहनशीलता का विशेष महत्व नहीं था।
10. महाविद्यालय के शिक्षकों के कृत्य–संतोष एवं शिक्षण व्यवसाय के प्रति दृष्टिकोण और व्यक्तित्व विकास के मध्य सकारात्मक सम्बन्ध थे।
11. महाविद्यालय के विवाहित शिक्षकों की तुलना में महाविद्यालय के अविवाहित शिक्षक अधिक सन्तुष्ट थे। उनके मध्य आयु और कृत्य–संतोष का कोई सम्बन्ध नहीं था।
12. महाविद्यालय के शिक्षकों का कृत्य–संतोष में बारह में से पाँच चरों का महत्वपूर्ण योगदान था।
13. माध्यमिक विद्यालय एवं महाविद्यालय के शिक्षकों की अपेक्षा प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक कम सन्तुष्ट थे।
14. माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक और महाविद्यालय के शिक्षक सामान्य रूप से अपने व्यवसाय से सन्तुष्टि रखते थे।

एन0के0 पोरवाल (1980)[69] ने उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के व्यक्तित्व एवं उनके कृत्य–संतोष के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन किया।

अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित थे –

1. सन्तुष्ट एवं असन्तुष्ट शिक्षकों के व्यक्तित्व के विभिन्न गुणों की पहचान करना।
2. शिक्षकों के कृत्य–संतोष पर उनकी आयु, लिंग, वैवाहिक स्थिति, सेवाकाल, वेतन, कार्यस्थल, प्रबन्धन का स्वरूप और उन्नति के अवसर के प्रभाव का अध्ययन करना।

इस अध्ययन के लिए पहले उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के न्यादर्श का चयन स्तरानुकूल संयोगिक प्रतिचयन विधि से किया गया, जिसमें 100 सन्तुष्ट एवं 100 असन्तुष्ट शिक्षकों को छाँटा गया। इस अध्ययन में कृत्य–संतोष हेतु जूमर और मूत्रा (Jumar & Multra) द्वारा निर्मित 'कृत्य–संतोष प्रश्नावली' तथा कपूर द्वारा निर्मित 16 व्यक्तित्व कारक प्रश्नावली (हिन्दी) का प्रयोग किया गया। प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण, विभिन्न अनुपातों पर काई–स्क्वायर तथा सहसम्बन्ध की गणना के आधार पर किया गया।

अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये –

1. सन्तुष्ट शिक्षकों की चारित्रिक विशेषतायें निम्नलिखित थी – नियमित, अलगाव, दृढ़ता, सरल, भावात्मक परिपक्वता, स्थिरता, यथार्थवादी, नम्रता, सरलता, मिलनसार, दृढ़निश्चयी, मार्गदर्शक, लज्जाशील, नियंत्रित, आश्वस्त, सद्‌गुणी, सावधान, अवकाश का सद्‌उपयोग, विश्वसनीय, ईर्ष्यामुक्त, सरलता से कार्य का सम्पादन, व्यावहारिक, जागरूक, पारम्परिक, अन्तर्मुखी, निश्चिंत, प्रसन्नचित्, आत्मनिर्भर, साहसी, शान्तिप्रिय, संयमित, सामाजिकता, भावनाओं पर नियंत्रण और सामान्य व्यवहार, संयमित स्वास्थ्य, आशान्वित और शान्त।
2. असन्तुष्ट शिक्षकों की चारित्रिक विशेषतायें निम्नलिखित थी – क्रोधी, अविवेकी, साझेदारी, आलोचना से अप्रभावित, भावानात्मक अस्थिरता, निश्चित बात करने वाले, आत्मनिर्भर, हठी, वीर, सामाजिक निर्लज्ज, किसी को न रोकने वाले, स्वेच्छाचारी, संकुचित दृष्टिकोण, होशियार, काल्पनिक, अन्तर्मुखी, गैर जिम्मेदाराना व्यवहार, वहमी और व्यग्र।
3. सन्तुष्ट और असन्तुष्ट शिक्षकों की निम्नलिखित चारित्रिक विशेषतायें एक समान थीं – व्यवहार में, वास्तविकताओं का सामना करने में, आत्मनिर्भरता और चरित्र में।
4. आयु का प्रभाव कृत्य–संतोष पर परिलक्षित था।
5. कृत्य–संतोष के स्तर में लैंगिक विषमतायें थी।
6. अविवाहित महिला शिक्षिकायें, विवाहित महिला शिक्षकों और पुरुष शिक्षकों की अपेक्षा अधिक सन्तुष्ट थीं।

---

69. एन0के0 पोरवाल, पी–एच0डी0, मनोविज्ञान, आगरा विश्वविद्यालय, 1980, एम0बी0 बुच, 'थर्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन', 'वही', पृष्ठ–831,832

7. सेवाकाल और कृत्य–संतोष के मध्य नकारात्मक सम्बन्ध था।
8. कृत्य–संतोष के स्तर पर ग्रामीण और शहरी परिवेश का अन्तर नहीं था।
9. विभिन्न वेतनमानों का कृत्य–संतोष पर कोई प्रभाव नहीं था।
10. पूर्णतया नियुक्त और नियुक्ति के अधीन शिक्षकों में कृत्य–संतोष के स्तर में कोई अन्तर नहीं था।
11. राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों में प्रबन्धकीय विद्यालयों के शिक्षकों की अपेक्षा अधिक कृत्य–संतोष थी।

एम0सी0 शर्मा (1981)[70] ने विभिन्न स्तरों पर शिक्षकों के आत्म–संप्रत्यय व्यक्तित्व समायोजन तथा शिक्षक के गुणों का व्याख्यात्मक अध्ययन किया। अध्ययन का उद्देश्य कालेज शिक्षकों, माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों, प्राथमिक विद्यालय शिक्षकों, शहरी और ग्रामीण शिक्षकों एवं पुरुष और महिला शिक्षकों के आत्म–संप्रत्यय, व्यक्तित्व समायोजन तथा मूल्यों में अन्तर का विश्लेषण करना था।

अध्ययन की मुख्य परिकल्पनायें निम्न्लिखित थीं –

1. विभिन्न समूहों के शिक्षकों के आत्म–संप्रत्यय के प्राप्तांकों के मध्य कोई अन्तर नहीं है।
2. विभिन्न समूहों के शिक्षकों में व्यक्तित्व समायोजन के प्राप्तांकों के मध्य कोई अन्तर नहीं है।
3. विभिन्न समूहों के शिक्षकों में, मूल्य–परीक्षणों के प्राप्तांकों के मध्य कोई अन्तर नहीं है।

इस अध्ययन के लिए आगरा जिले के सम्पूर्ण शिक्षकों में से विभिन्न समूहों के 702 शिक्षकों का न्यादर्श लिया गया। उपरोक्त न्यादर्श का चयन अर्द्ध प्रसम्भाव्यता विधि की गुच्छा पद्धति द्वारा संयोगिक विधि से किया गया। आँकड़ों के संग्रह हेतु भटनागर द्वारा निर्मित 'आत्म–संप्रत्यय अनुसूची', भटनागर आलपोर्ट–वर्नन द्वारा निर्मित 'मूल्य–परीक्षण' (हिन्दी संस्करण) और एक स्वःनिर्मित अनुसूची 'शिक्षकों की समस्याओं का अध्ययन' का प्रयोग किया गया।

अध्ययन के निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये –

1. कालेज के शिक्षकों की अपेक्षा प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक अपने आप को अच्छा महसूस कर रहे थें, जबकि प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के मध्य असमानताऐं नहीं थीं।
2. शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यरत शिक्षकों के मध्य आत्म–संप्रत्यय में कोई अन्तर नहीं था।
3. पुरुष और महिला शिक्षकों के आत्म–संप्रत्यय में अन्तर था।

---

70. एम0सी0 शर्मा, पी–एच0डी0, एजुकेशन, मेरठ विश्वविद्यालय, 1981, एम0बी0 बुच, 'थर्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन', 'वही', पृष्ठ–840

4. अन्य विभिन्न समूहों की तुलना में कालेज के शिक्षकों में, आत्म–संप्रत्यय के सन्दर्भ में अधिक साकारात्मक आत्मविश्वास था।
5. आत्मविश्वास के सन्दर्भ में ग्रामीण शिक्षकों की तुलना में शहरी शिक्षकों का औसत प्राप्तांक अधिक था।
6. पुरुष और महिला शिक्षकों के मध्य आत्मविश्वास के सन्दर्भ में आत्म–संप्रत्यय में असमानता नहीं थी।
7. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की तुलना में कालेज के शिक्षक अपने आप में अधिक प्रधानता की कुछ प्रवृत्तियों के कारण कष्ट की अनुभूति करते थे।
8. जब शहरी शिक्षकों की तुलना ग्रामीण शिक्षकों से तथा महिला शिक्षकों की तुलना पुरुष शिक्षकों से की गयी तो उन सभी के मध्य सामानताऐं थीं।
9. प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में अयोग्यता की भावना अधिक थी, जबकि कालेज के शिक्षकों में यह भावना न्यूनतम थी।
10. जब शहरी शिक्षकों की तुलना ग्रामीण शिक्षकों से की गयी, तो शहरी शिक्षकों में अयोग्यता की भावना कम पायी गयी।
11. आत्म–संप्रत्यय के सन्दर्भ में लैंगिक विषमता का कोई प्रभाव नहीं था।
12. भावनात्मक स्थिरता के सन्दर्भ में पुरुष शिक्षक, महिला शिक्षकों की अपेक्षा अधिक स्थिर पाये गये।
13. इन सभी समूहों के शिक्षकों के मध्य जीवनवृत्ति, स्वास्थ्य, घरेलू, भावनात्मक और सामाजिक समायोजन में पर्याप्त अन्तर था।
14. ठीक उसी प्रकार से विभिन्न प्रकार के समूह के शिक्षकों के मध्य मूल्यों में भी पर्याप्त अन्तर था।

के0 शाह (1982)[71] ने सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि के आधार पर प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों का कृत्य–संतोष का सामाजिक अध्ययन किया।

अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित थे –

1. प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना।
2. प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के शैक्षिक स्तर का अध्ययन करना।
3. प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों को उत्प्रेरित करने वाले कारकों की पहचान करना।
4. प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों का, कार्य के प्रति दृष्टिकोण ज्ञात करना।
5. प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के व्यवसाय में आने वाली समस्याओं की खोज करना।

---

71. के0 शाह, पी–एच0डी0, समाजशास्त्र, काशी विश्वविद्यालय, 1982, एम0बी0 बुच, 'थर्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन', 'वही', पृष्ठ–195

6. प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के कृत्य–संतोष को ज्ञात करना।

अध्ययन के लिए वाराणसी कारर्पोरेशन क्षेत्र के 9 वार्डों के 155 प्राथमिक विद्यालयों में से स्तरानुकूल संयोगिक प्रतिचयन विधि से 78 प्राथमिक विद्यालयों (प्रबन्धकीय या प्राईवेट अथवा कार्पोरेशन द्वारा संचालित) के 525 शिक्षकों को न्यादर्श के लिए चुना गया। इन 525 शिक्षकों में से 475 शिक्षकों का साक्षात्कार लिया गया। आँकड़ों का विश्लेषण साधारण प्रतिशत की सहायता से किया गया।

अध्ययन के निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये –

1. प्रजातांत्रिक प्रभाव के कारण उच्च जातियों की शैक्षिक क्षेत्र में पारम्परिक पकड़ क्रमशः घट रही है, इसके बावजूद भी शिक्षकों की अधिकांशतः संख्या ब्राह्मण जाति (38.1 %) तथा दुसरे स्थान पर कायस्थ (19.6 %) थे।
2. सामान्यतया शिक्षक निम्न मध्यम वर्ग या निम्न वर्ग से सम्बन्धित थे। इन लोगों के परिवार का शैक्षिक स्तर भी अधिकांशतः सामान्य था।
3. 60: महिला शिक्षक संयुक्त परिवार से सम्बन्धित थीं तथा 66.3 % महिला शिक्षक संयुक्त परिवार को वरीयता देतीं थी।
4. अधिकतम महिला शिक्षक हिन्दू धर्म से सम्बन्धित थीं, इसके बाद क्रमशः मुस्लिम, इसाई, तथा सिक्ख शिक्षिकायें थीं। इन सभी में धार्मिक क्रिया–पद्धति तथा संस्कार नियमित रूप से पाये गये। यह तथ्य आधुनिकता के दबाव के बावजूद भी धार्मिक आस्था की ओर संकेत करते थे।
5. अधिकतम महिला शिक्षक (88.2 %) अपने व्यवसाय से सन्तुष्ट थीं।
6. अधिकतम महिला शिक्षक अपने निम्न वेतनमान से असन्तुष्ट थीं, फिर भी वह इस व्यवसाय को छोड़ना नहीं चाहती थीं।
7. शिक्षकों ने यह दर्शाया कि व्यावसायिक उन्नति के अवसर बहुत कम थे तथा पेंशन, आवास एवं मेडिकल लाभ जैसीं अन्य सुविधायें उन्हें प्राप्त नहीं थीं।
8. लगभग सभी महिला शिक्षक, घरेलू पत्नी तथा शिक्षक के दोहरे चरित्र से सन्तुष्ट थीं।
9. यद्यपि प्राथमिक विद्यालयों की महिला शिक्षिकायें निम्न वेतनमान से असन्तुष्ट थीं, फिर भी वे इस व्यवसाय को पसन्द करती थीं, क्योंकि परम्परागत शिक्षण व्यवसाय उनको समाज में उच्च सम्मान दिलाता था।
10. शिक्षिकाओं की उनके कार्य से सम्बन्धित समस्याओं में से मुख्य समस्या निम्न वेतन, भौतिक सुविधाओं के विभिन्न यत्रों की कमी, कमजोर भवन तथा न्यून शिक्षण सामग्री थीं।

आर0के0 चोपडा (1982)[72] ने विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि तथा शिक्षकों के कृत्य–संतोष के सन्दर्भ में विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण का अध्ययन किया।

अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित थे –

1. विभिन्न प्रकार के संगठनात्मक वातावरण के विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों का कृत्य–संतोष का अध्ययन करना।
2. व्यावसायिक संतुष्टि के उन क्षेत्रों का पता लगाना जिनकी वजह से विद्यालयों के वातावरण में अन्तर होने के कारण उनकी सन्तुष्टि में अन्तर हो जाता है।
3. विभिन्न प्रकार के संगठनात्मक वातावरण के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की बुद्धि और सामाजिक–आर्थिक स्थिति को समायोजित करते हुऐ शैक्षिक उपलब्धि का पता लगाना।
4. विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनकी बुद्धि एवं सामाजिक–आर्थिक स्थिति के प्रभाव को अलग करके तथा पक्षपात रहित होकर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं अध्यापकों के कृत्य–संतोष के मध्य सम्बन्ध का पता लगाना।

इस अध्ययन के लिए द्विस्तरीय न्यादर्श चयन विधि का प्रयोग किया गया था, सबसे पहले दक्षिणी दिल्ली जिले के शहरी क्षेत्रों में स्थित सभी 42 सरकारी बालक माध्यमिक और उच्च माध्यमिक विद्यालयों का सर्वेक्षण किया गया, जिसमें 6 प्रकार के वातावरणीय प्रबन्ध वाले विद्यालय समूहों की पहचान की गयी। द्वितीय स्तर पर आलोचनाओं और नियंत्रित चरों का अध्ययन करने के लिए 6 वातावरणीय समूहों से 3–3 विद्यालयों को चुनने के लिए संयोगिक चयन विधि का प्रयोग किया गया। इस प्रकार अध्ययन के न्यादर्श में 18 संयोगिक चुने हुये विद्यालयों से 277 अध्यापक तथा 620 विद्यार्थी सम्मिलित किये गये। आँकड़ों के सग्रह के लिए शर्मा द्वारा निर्मित 'स्कूल वातावरण प्रबन्ध व्याख्यात्मक प्रश्नावली', बाली द्वारा निर्मित 'अध्यापक कृत्य–संतोष अनुसूची', जलोटा व कपूर द्वारा निर्मित 'सामाजिक–आर्थिक स्तर मापनी', रेवन की प्रमापीकृत 'उपलब्धि सूची' उपकरणों का प्रयोग किया गया। संग्रहीत आँकड़ों के विश्लेषण के लिए माध्य, सहसम्बन्ध गुणांक आदि सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया।

अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये –

1. 6 वातावरण में से खुले वातावरण के स्कूल के अध्यापक, प्रजातन्त्रीय, परिचित, नियंत्रित, बंद और पैतृक वातावरण वाले स्कूलों के अध्यापकों की तुलना में उच्च कृत्य–संतोष प्रदर्शित करते थे।

---

72. आर0के0 चोपड़ा, पी–एच0डी0, एजुकेशन, आगरा विश्वविद्यालय, 1982, एम0बी0 बुच, 'थर्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन', 'वही', पृष्ठ–796

2. खुले वातावरण वाले स्कूलों के अध्यापकों का कृत्य–संतोष 0.05 स्तर पर बंद और पैतृक वातावरण वाले स्कूल के अध्यापकों से निश्चित रूप से भिन्न पायी गयी।
3. 0.05 स्तर पर अध्यापकों का कृत्य–संतोष के सम्बन्ध में दूसरे पाँच प्रकार के स्कूल आपस में निश्चित भिन्नता प्रदर्शित नहीं करते थे।
4. अध्यापकों के कृत्य–संतोष को प्रभावित करने वाले 15 कारकों में से केवल दो क्षेत्रों पर्यवेक्षण और संस्था के साथ पहचान के अतिरिक्त सभी कारकों के आधार पर विभिन्न प्रकार के वातावरण वाले विद्यालयों के शिक्षकों के कृत्य–संतोष में सार्थक अन्तर पाया गया।
5. 0.05 स्तर पर बंद वातावरण के स्कूलों की तुलना में खुले वातावरण वाले स्कूलों के अध्यापक सुपरवाइजर क्षेत्रों में उच्च कृत्य–संतोष रखते थे।
6. 0.05 स्तर पर बंद और पैतृक वातावरण वाले स्कूल अध्यापकों की तुलना में संस्था से परचित व खुले वातावरण प्रबन्ध वाले स्कूलों में कार्यरत अध्यापकों का कृत्य–संतोष सार्थक रूप से उच्च था।
7. बुद्धि और सामाजिक–आर्थिक स्थिति के नियंत्रण के पश्चात् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में विभिन्न प्रकार के विद्यालयीय वातावरण की वजह से 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर देखने को नहीं मिला।
8. अध्यापकों के कृत्य–संतोष और विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सम्बन्ध नहीं पाया गया।

आर0बी0 राव (1986)[73] ने विभिन्न सामाजिक–आर्थिक स्तर पर छात्राध्यापकों के मूल्यों, समायोजन तथा शिक्षण अभिवृत्ति के आन्तरिक सम्बन्धों का अध्ययन किया।

अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित थे –

1. विभिन्न सामाजिक–आर्थिक स्तर पर छात्राध्यापकों के मूल्यों, समायोजन तथा शिक्षण अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
2. विभिन्न सामाजिक–आर्थिक स्तर पर छात्राध्यापकों के मूल्यों, समायोजन तथा शिक्षण अभिवृत्ति के आन्तरिक सम्बन्धों की खोज करना।
3. विभिन्न सामाजिक–आर्थिक स्तर पर छात्राध्यापकों के मूल्यों, समायोजन तथा शिक्षण अभिवृत्ति के मध्य अन्तर की खोज करना।
4. विभिन्न चरों के मापन के आधार पर मूल्यों, समायोजन तथा शिक्षण अभिवृत्ति के परीक्षण द्वारा विभिन्न कारकों का निष्कर्ष निकालना।

---

73. आर0बी0 राव, पी–एच0डी0, एजुकेशन, अवध विश्वविद्यालय, 1986, एम0बी0 बुच, 'फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन', 'वही', पृष्ठ–980

इस शोध में एक सामान्य निरीक्षण किया गया। जिसमें अवध विश्वविद्यालय से सम्बन्धित बी0एड0, कालेजों के 500 छात्राध्यापकों के न्यादर्श का चयन संयोगिक प्रतिचयन विधि द्वारा किया गया, जिसमें 367 पुरुष एवं 133 महिला छात्राध्यापक थे। आँकड़ों के संग्रह हेतु शेरी तथा वर्मा द्वारा निर्मित 'व्यक्तिगत मूल्य प्रश्नावली', सिन्हा तथा सिंह द्वारा निर्मित 'समायोजन अनुसूची' (कालेज के विद्यार्थियों के लिए), अहलूवालिया द्वारा निर्मित 'शिक्षण अभिवृत्ति अनुसूची' तथा कुप्पू स्वामी द्वारा निर्मित 'सामाजिक– आर्थिक स्तर मापनी' उपकरणों का प्रयोग किया गया। संग्रहीत आँकड़ों का सारणीयन तथा विश्लेषण उपयुक्त सांख्यिकीय विधियों द्वारा किया गया। अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये –

1. पुरुष एवं महिला छात्राध्यापकों के समायोजन में पर्याप्त अन्तर नहीं पाया गया परन्तु छात्राध्यापकों (पुरुष एवं महिला) के समायोजन में उनके सामाजिक–आर्थिक स्तर का प्रभाव निश्चित रूप से था।
2. छात्राध्यापकों के मूल्यों, समायोजन तथा शिक्षण अभिवृत्ति, सभी में, सामाजिक–आर्थिक स्तर का प्रभाव था।
3. निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के छात्राध्यापकों की तुलना में उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले छात्राध्यापकों के समायोजन तथा शिक्षण अभिवृत्ति का स्तर भी उच्च था।
4. निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के छात्राध्यापकों की तुलना में उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर के छात्राध्यापकों के मूल्यों का स्तर निम्न था।

एम0 दीक्षित (1986)[74] ने प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों तथा माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के मध्य कृत्य–संतोष का तुलनात्मक अध्ययन किया।

अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित थे –

1. प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के कृत्य–संतोष का मापन करना तथा उनका तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. कृत्य–संतोष के स्तर पर लिंग, शिक्षण अनुभव तथा शिक्षण के माध्यम (हिन्दी/अंग्रेजी) के प्रभाव का निरीक्षण करना।

इस अध्ययन हेतु लखनऊ में कार्यरत 300 प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षक तथा 300 माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों को न्यादर्श में चयनित किया गया। कृत्य–संतोष के आँकड़ों का संग्रह करने हेतु अनुसंधानकर्ता द्वारा स्वःनिर्मित लिकर्ट टाइप की मापनी से किया गया।

अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये –

---

74. एम0 दीक्षित, पी–एच0डी0, एजुकेशन, लखनऊ विश्वविद्यालय, 1988, एम0बी0 बुच, 'फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन', 'वही', पृष्ठ–932

1. हिन्दी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की अपेक्षा प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षक अधिक सन्तुष्ट थे।
2. अंग्रेजी माध्यम के माध्यमिक तथा प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के कृत्य–संतोष का स्तर एक समान था।
3. प्राथमिक तथा माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष शिक्षकों की अपेक्षा महिला शिक्षिकायें अधिक सन्तुष्ट थीं।
4. प्राथमिक स्कूलों के अधिक आयु वाले शिक्षक अधिकतम सन्तुष्ट थे तथा मध्यम आयु–वर्ग वाले शिक्षक न्यूनतम सन्तुष्ट थे।
5. माध्यमिक विद्यालयों के अधिक सेवाकाल वाले शिक्षक, कम सेवाकाल वाले शिक्षकों की अपेक्षा अधिक सन्तुष्ट थे।
6. अंग्रेजी माध्यम के प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की अपेक्षा हिन्दी माध्यम के प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षक अधिक सन्तुष्ट थे।
7. हिन्दी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की अपेक्षा अंग्रेजी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक अधिक सन्तुष्ट थे।

त्रिवेणी सिंह (1988)[75] ने शिक्षकों के कृत्य–संतोष और उनकी सामाजिक–आर्थिक स्थिति के सन्दर्भ में शिक्षण निपुणता का अध्ययन किया।

अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित थे –

1. कृत्य–संतोष और सामाजिक–आर्थिक स्तर के सन्दर्भ में माध्यमिक स्कूल अध्यापकों की शिक्षण निपुणता का अध्ययन करना तथा शिक्षण निपुणता मापनी का निर्माण करना।
2. माध्यमिक अध्यापकों की शिक्षण निपुणता और कृत्य–संतोष के मध्य सम्बन्धों का अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्कूल अध्यापकों की शिक्षण निपुणता और सामाजिक–आर्थिक स्तर के मध्य सम्बन्धों का अध्ययन करना।
4. शहरी क्षेत्रों के माध्यमिक स्कूल अध्यापकों और ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यरत माध्यमिक स्कूल अध्यापकों की शिक्षण निपुणता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. प्रशिक्षित और अप्रशिक्षित माध्यमिक स्कूल अध्यापकों की शिक्षण निपुणता की तुलना करना।
6. 5 साल से ऊपर, 6 से 10 साल, और 10 वर्ष से अधिक शिक्षण अनुभव वाले माध्यमिक स्कूल अध्यापकों की शिक्षण निपुणता की तुलना करना।

---

75. त्रिवेणी सिंह, पी–एच0डी0, एजुकेशन, अवध विश्वविद्यालय, 1988, एम0बी0 बुच, 'फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन', 'वही', पृष्ठ–1489

7. माध्यमिक स्कूल अध्यापक और अध्यापिकाओं की शिक्षण निपुणता की तुलना करना।

इस अध्ययन के न्यादर्श में फैजाबाद मण्डल के 300 माध्यमिक स्कूल अध्यापक (200 पुरुष और 100 महिला), तथा माध्यमिक कक्षाओं के 1500 विद्यार्थी (1000 छात्र और 500 छात्राऐं) सम्मिलित किये गये। प्रत्येक अध्यापक की शिक्षण निपुणता का मापन, उसके 5 विद्यार्थियों के द्वारा किया गया। आँकड़ों का संग्रह करने के लिए कुमार और मुथा की 'कृत्य–संतोष प्रश्नावली', कुलश्रेष्ठ का 'सामाजिक–आर्थिक स्तर मापनी', और एक स्वःनिर्मित 'शिक्षण निपुणता मापनी' का प्रयोग किया गया। आँकड़ों की गणना एवं विश्लेषण के दौरान सहसम्बन्ध गुणांक का प्रयोग किया गया।

अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये –

1. माध्यमिक स्कूल अध्यापकों की शिक्षण निपुणता, कृत्य–संतोष तथा सामाजिक–आर्थिक स्तर के मध्य सकारात्मक सम्बन्ध था।
2. माध्यमिक स्कूल अध्यापकों के कृत्य–संतोष और उनके सामाजिक–आर्थिक स्तर के मध्य एक सकारात्मक सम्बन्ध पाया गया।
3. शहरी और ग्रामीण प्रशिक्षित और अप्रशिक्षित माध्यमिक स्कूल अध्यपकों की शिक्षण निपुणता के मध्य सार्थक अन्तर नहीं था।
4. माध्यमिक स्कूल के अध्यापकों और अध्यापिकाओं की शिक्षण निपुणता में सार्थक अन्तर पाया गया।
5. अध्यापिकाऐं, अध्यापकों से अधिक निपुण पायी गई।
6. 5 वर्ष से अधिक, 6 से 10 वर्ष, और 10 वर्ष से अधिक शिक्षण अनुभव वाले भिन्न स्तरों के माध्यमिक स्कूल अध्यापकों की शिक्षण निपुणता में सार्थक अन्तर देखने को नहीं मिला।

निर्मल सक्सेना (1990)[76] ने शिक्षण व्यवसाय में कृत्य–संतोष को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन किया। अध्ययन का मुख्य लक्ष्य कृत्य–संतोष एवं शिक्षण अभिवृति के मध्य सहसम्बन्ध के अध्ययन के साथ ही साथ सामाजिक–आर्थिक स्थिति एवं कृत्य–संतोष के मध्य सम्बन्धों का पता लगाना था।

अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित थे –

1. शिक्षण व्यवसाय में कार्यरत व्यक्तियों के कृत्य–संतोष और शिक्षण अभिवृति के मध्य सम्बन्धों का पता लगाना।

---

76. निर्मल सक्सेना, पी–एच0डी0, एजुकेशन, आगरा विश्वविद्यालय, 1990, एम0बी0 बुच, 'फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन', 'वही', पृष्ठ–1479

2. व्यावसायिक संतुष्टि को उच्च रखने के लिए शिक्षण व्यवसाय में संलग्न लोगों की अभिवृत्ति को विकसित करने के उपाय बतलाना।
3. अध्यापकों के सामाजिक–आर्थिक स्तर और उनका कृत्य–संतोष के मध्य सम्बन्धों का पता लगाना।
4. कृत्य–असंतोष को कम करने के लिए कुछ उपाय सुझाना।

इस सर्वेक्षण में विभिन्न स्तर के विद्यालयों से 600 अध्यापकों का न्यादर्श का चयन संयोगिक प्रतिचयन विधि द्वारा किया गया। आँकड़ों का संग्रह करने हेतु कुमार और मुथा द्वारा निर्मित 'कृत्य–संतोष परीक्षण', बी0 कुप्पूस्वामी का 'सामाजिक–आर्थिक स्तर मापनी', आर0पी0सिंह और एस0एन0 शर्मा का 'टी0.ए0.टी0 बैटरी', एवं एस0पी0 आनन्द का 'शिक्षक लूसेण्टरी (Luesentory) अभिवृत्ति' उपकरणों का प्रयोग किया गया। ऑकड़ों के विश्लेषण में माध्य, मानक विचलन, सहसम्बन्ध, और टी–टेस्ट का प्रयोग किया गया। अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये –

1. शिक्षण कौशल और कृत्य–संतोष के मध्य सकारात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।
2. अभिवृत्ति और कृत्य–संतोष के मध्य सकारात्मक और सार्थक सहसम्बन्ध नहीं पाया गया।
3. कृत्य–संतोष नकारात्मक रुप से सामाजिक–आर्थिक स्तर से सहसम्बन्धित थीं।

2.5. सामग्री का विवेचन तथा प्रस्तुत शोध से तुलना :–

प्रस्तुत शोध के चरों कृत्य–संतोष, समायोजन, शिक्षण में रुचि से सम्बन्धित तथा इन चरों पर अन्य चरों के प्रभाव से सम्बन्धित तथा विभिन्न स्तर के शिक्षकों के कृत्य–संतोष एवं समायोजन पर प्रस्तुत शोध से कतिपय विभिन्नता के साथ उपर्युक्त जो शोध देश–विदेश में सम्पन्न हुए हैं।

इनमें विदेश में उच्च शिक्षा के स्तर में शिक्षकों के समायोजन, समायोजन एवं सूचना–खोज, स्वःसामर्थ्य तथा भूमिका का समायोजन पर प्रभाव, समायोजन तथा सामाजिक्ता की ब्यूह रचना, कृत्य–संतोष, कृत्य–संतोष एवं असंतोष का तुलनात्मक अध्ययन, दूरस्थ शिक्षा के शिक्षकों के कृत्य–संतोष एवं कार्य दबाव आदि विषय पर शोध कार्य हुए हैं।

इसी प्रकार माध्यमिक स्तर पर शहरी शिक्षकों के समर्पण, कृत्य–संतोष तथा जीवनवृत्ति एवं विस्मृति दर के मध्य सम्बन्ध पर, कृत्य–संतोष में कार्य सहयोग तथा कार्यप्रोत्साहन का प्रभाव, शिक्षकों के कृत्य–संतोष में विद्यालय के निर्णयों में भागीदारी का प्रभाव, शिक्षकों की सरकारी नियमावली तथा कृत्य–संतोष के मध्य सम्बन्ध, पूर्णकालिक शिक्षकों के कृत्य–संतोष में पृष्ठभूमीय गुणों के प्रभाव में शोध कार्य हुए हैं।

प्राथमिक स्तर में कृत्य–संतोष एवं मानक आधारित दबाव, प्रधानाचार्यों के कृत्य–संतोष और विद्यालय कार्य निर्वहन के मध्य सम्बन्ध, प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाचार्यों की नेतृत्व क्षमता का कृत्य–संतोष पर प्रभाव आदि शोध विषयों पर कार्य हुए हैं।

भारत में माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के कृत्य–संतोष तथा अध्यापन अभिरुचि पर, शिक्षकों की संगठित जलवायु और उनकी समायोजन की समस्या के बीच सम्बन्ध पर, विवाहित और अविवाहित शिक्षिकाओं के समायोजन एवं कृत्य–संतोष पर, प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की महत्वाकाँक्षा समायोजन तथा भूमिका संघर्ष पर, गृहविज्ञान शिक्षिकाओं के व्यक्तिगत, व्यावसायिक तथा संगठनिक गुणों के सम्बन्धों के आधार पर कृत्य–संतोष के स्तर की जाँच पर, शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य का उनके कृत्य–संतोष एवं छात्रों के प्रति दृष्टिकोण पर प्रभाव पर, प्रधानाचार्य/विद्यालय प्रमुख के कृत्य–संतोष एवं नेतृत्व क्षमता के मध्य सम्बन्धों पर, आवासीय एवं गैर आवासीय स्कूलों के शिक्षकों के कृत्य–संतोष पर, कृत्य–संतोष शिक्षण कार्य सम्बद्धता एवं शिक्षण निपुणता पर, कृत्य–संतोष में मूल्यों की प्रत्याशा के प्रभाव पर, प्रवक्ताओं के समायोजन को प्रभावित करने वाले तत्वों की खोज पर, प्राथमिक तथा माध्यमिक शिक्षकों के कृत्य–संतोष के मध्य तुलनात्मक अध्ययन, प्राथमिक स्तर में कार्यरत शिक्षकों के कृत्य–संतोष पर व्यक्तित्व का प्रभाव, शिक्षण सफलता और कार्य के प्रति समायोजन पर, प्राथमिक अध्यापकों के कृत्य–संतोष पर, सेवापूर्व शिक्षक–शिक्षा की गुणवत्ता सुधार पर, व्यक्तित्व और शिक्षण के प्रति दृष्टिकोण पर, शिक्षक के कृत्य–संतोष में विद्यालय के वातावरण के प्रभाव पर, एकल एवं द्विअध्यपकीय प्राथमिक स्कूलों के अध्यापकों की समस्या पर, शिक्षा के सभी स्तरों पर शिक्षकों के समायोजन में सामान्य प्रतिनिधि तत्वों के विश्लेषण पर, छात्राध्यापकों की सामाजिक परिपक्वता तथा मानसिक सामाजिक समायोजन पर, स्वःअवधारणा एवं भावनात्मक समायोजन पर, शिक्षक–प्रशिक्षकों के दृष्टिकोंण एवं कृत्य–संतोष पर, समायोजन और व्यावसायिक रुचि के मध्य सम्बन्ध पर, छात्राध्यापकों के समायोजन पर, स्नातक अध्यापकों के कृत्य–संतोष पर, विश्वविद्यालय के शिक्षकों के कृत्य–संतोष पर अस्थिरताओं के प्रभाव पर अध्ययन हुए हैं।

इसी प्रकार उत्तर प्रदेश में शिक्षा के तीनों स्तर के शिक्षकों के कृत्य–संतोष पर, व्यक्तित्व और कृत्य–संतोष के मध्य सम्बन्ध पर, शिक्षकों की स्वःअवधारणा व्यक्तित्व समायोजन तथा शिक्षकों के गुणों की व्याख्या पर, आर्थिक पृष्ठभूमि के आधार पर कृत्य–संतोष की जाँच पर, कृत्य–संतोष एवं विद्यालयों के संरचनात्मक वातावरण में उपलब्धि के सम्बन्ध में सामाजिक–आर्थिक स्तर के आधार पर छात्राध्यापकों के मूल्यों समायोजन तथा शिक्षण अभिवृत्ति पर, प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के कृत्य–संतोष पर, कृत्य–संतोष और शिक्षण निपुणता पर, शिक्षिकाओं के कर्तव्य विरोध (दोहरी भूमिका) एवं कृत्य–संतोष के सम्बन्ध में अध्ययन हुए हैं।

उपरोक्त शोधों में प्राथमिक स्तर के शिक्षकों पर कृत्य–संतोष एवं विभिन्न चरों से सम्बन्धित जो भी शोध हुए हैं वह प्राथमिक विद्यालयों हेतु बी0टी0सी0 (BTC) प्राप्त शिक्षकों पर ही हुए हैं, परन्तु

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा 1999 में शुरू की गई योजना विशिष्ट बी0टी0सी0 (S.BTC) के शिक्षकों के कृत्य–संतोष, समायोजन एवं शिक्षण में रुचि विषय पर शोधों का सर्वथा अभाव रहा है। वर्तमान में प्राथमिक शिक्षा में कार्यरत बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 शिक्षकों के कृत्य–संतोष, समायोजन एवं शिक्षण में रुचि पर तुलनात्मक अध्ययन मेरा मौलिक कार्य है, जो पूर्व में किये गये शोधों से निम्न बिन्दुओं में भिन्न है –

1. विशिष्ट बी0टी0सी0 शिक्षकों के कृत्य–संतोष, समायोजन तथा शिक्षण में रुचि पर कोई शोध कार्य नहीं हुआ है।
2. बी0टी0सी0 शिक्षकों तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 शिक्षकों के मध्य वर्तमान शोध चरों कृत्य–संतोष, समायोजन, शिक्षण में रुचि के तुलनात्मक अध्ययन पर कोई शोध कार्य नहीं हुआ है।
3. जे0सी0 गोयल ने 1980 में शिक्षक–प्रशिक्षकों के कृत्य–संतोष, समायोजन एवं व्यावसायिक रुचि पर अध्ययन किया था जोकि समय की दृष्टि से एवं शिक्षा के स्तर की दृष्टि से पूर्णतया भिन्न है।
4. वर्तमान अध्ययन के चरों पर यदि ध्यान दिया जाए तो शिक्षण में रुचि पर मात्र कुछ ही शोध कार्य हुए हैं और जो हुए भी हैं तो वे प्राथमिक शिक्षा से सम्बन्धित नही है।

****

अध्याय-तृतीय
(बुन्देलखण्ड क्षेत्र की पृष्ठभूमि)

मानचित्र क्रमांक – 3

भारत में उत्तर प्रदेश तथा बुन्देलखण्ड की स्थिति को दर्शाता चित्र
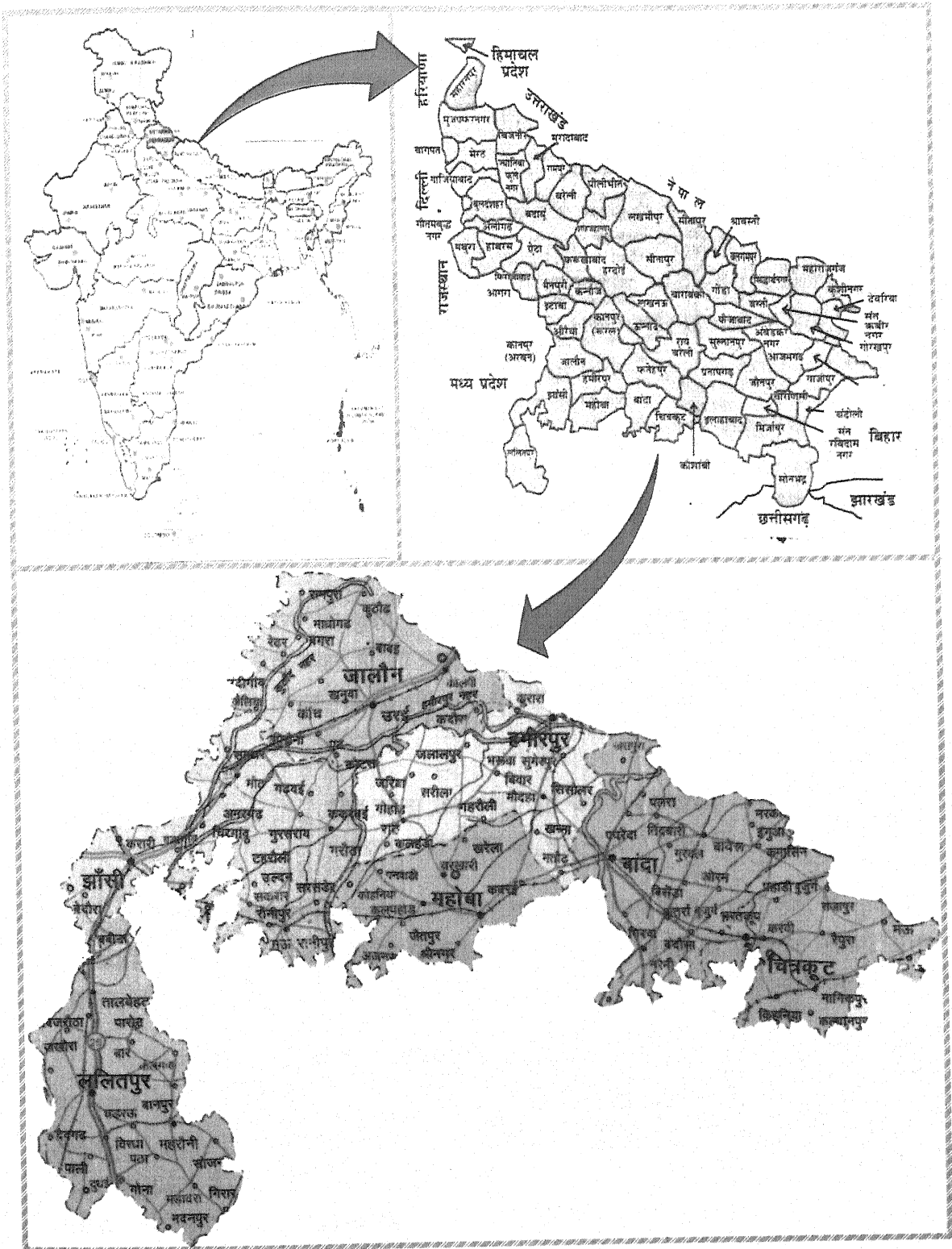
3.1. बुन्देलखण्ड की भौगोलिक संरचना :–

बुन्देलखण्ड क्षेत्र भारत वर्ष के उत्तर–प्रदेश तथा मध्य–प्रदेश के अति पिछड़े क्षेत्र को कहा जाता है। **ब्रिटिश गजेटियर**[77] के अनुसार बुन्देलखण्ड के सर्वाधिक मान्य जिले 11 हैं। जिसके पाँच जिले (झाँसी, बाँदा, हमीरपुर, जालौन, ललितपुर) वर्तमान में जनपद बाँदा के दो भाग (बाँदा एवं चित्रकूट धाम कर्वी) तथा हमीरपुर के दो भाग (हमीरपुर एवं महोबा) उत्तर प्रदेश में सम्मिलित हैं और 6 जिले (सागर, दमोह, पन्ना, छतरपुर, दतिया, टीकमगढ़) मध्य प्रदेश में सम्मिलित हैं। यह बात दूसरी है कि पृथक बुन्देलखण्ड निर्माण में उपरोक्त जिलों के अलावा भिण्ड, ग्वालियर, रायसेन, नरसिंहपुर, रीवाँ, सतना, गुना, शिवपुरी, होशंगाबाद भी माने गये हैं। बुन्देलखण्ड प्रत्येक क्षेत्र में अविकसित और उपेक्षित है और सरकार द्वारा उपेक्षित दृष्टि से देखे जाने के कारण प्रगति के पथ पर अग्रसर नहीं हो पाया है।

किसी भी क्षेत्र का इतिहास उसके भूगोल के ज्ञान के बिना नहीं समझा जा सकता है। बुन्देलखण्ड की ऐतिहासिक एवं राजनैतिक पृष्ठभूमि तथा इतिहास को समझने के लिए बुन्देलखण्ड की भौगोलिक पृष्ठभूमि को जानना आवश्यक है। संक्षेप में, बुन्देलखण्ड की महत्वपूर्ण भौगोलिक विशेषतायें अग्रलिखित हैं –

बुन्देलखण्ड को भारत का हृदय माना जाता है। इसको विन्ध्य पर्वतमाला प्राप्त है और यह पर्वतों का एक समतल नीचा पठार है, जो भारत के मध्य में कर्क रेखा पर स्थित है। बुन्देलखण्ड के प्रसिद्ध कवि एवं यशस्वी लेखक श्री वियोगी हरि ने निम्नलिखित पंक्तियों में बुन्देलखण्ड की सीमा निर्धारित की है –

"इत यमुना उत नर्मदा, इत चम्बल उत टोंस।
छत्रसाल सों लड़न की, रही न काहू होंस।।"

यद्यपि, उक्त दोहा छत्रसाल के राज्य की सीमा से सम्बन्धित है, परन्तु इतिहास में सुविख्यात है। उक्त दोहे के अनुरूप अन्य स्रोतों से भी ज्ञात होता है कि बुन्देलखण्ड की प्राकृतिक सीमायें उत्तर में यमुना, दक्षिण में नर्मदा, पूर्व में टोंस और पश्चिम में चम्बल से निर्धारित होती थीं और होतीं हैं।

उत्तर प्रदेश में स्थित बुन्देलखण्ड का क्षेत्रफल 29.418 वर्ग किमी0 के क्षेत्र में विस्तृत है। इसमें दो मण्डल हैं – झाँसी मण्डल एवं चित्रकूट धाम मण्डल। झाँसी मण्डल में तीन जिले – झाँसी, ललितपुर, जालौन तथा चित्रकूट धाम मण्डल में चार जिले बाँदा, चित्रकूट धाम कर्वी, हमीरपुर व महोबा सम्मिलित हैं। प्रत्येक जिले के क्षेत्रफल उसके अन्तर्गत आने वाली तहसीलों, विकास खण्डों, जनसंख्या, जनसंख्या वृद्धि दर, जनसंख्या घनत्व तथा साक्षरता प्रतिशत का विवरण निम्नलिखित है।

---

77. महेन्द्र वर्मा, बुन्देलखण्ड का इतिहास, मेरठ; सुशील प्रकाशन, संवत् 2056

सारणी क्रमांक – 3.1

बुन्देलखण्ड क्षेत्र की भौगोलिक–आर्थिक स्थिति[78]

	बाँदा	चित्रकूट	हमीरपुर	महोबा	झाँसी	जालौन	ललितपुर	बुन्देलखण्ड
क्षेत्रफल (वर्ग कि0मी0)	4460	3164	4282	2884	5024	4565	5039	29418
जनसंख्या पुरुष	807325	428416	536756	406790	932825	786647	519410	4418169
जनसंख्या महिला	692928	372176	505618	302041	813890	669212	458037	3813902
कुल जनसंख्या	1500253	800592	1042374	708831	1746715	1455859	977447	8232071
ग्रामीण परिवारों की संख्या (गरीबी रेखा)	105663	78047	80834	37109	71962	102962	55215	531792
शहरी परिवारों की संख्या (गरीबी रेखा)	17721	2594	16029	6123	-	11171	10781	64419
जनसंख्या वृद्धि दर % में	18.49	34.33	29.98	21.8	17.85	19.39	23.23	29.47
जनसंख्या घनत्व	340	250	194	249	241	319	348	280
साक्षरता प्रतिशत	54.84	66.06	49.93	54.23	58.10	66.14	66.69	60.22

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि बुन्देलखण्ड का क्षेत्रफल 29418 वर्ग किमी0 है तथा जनसंख्या 8232071 है जिसमें महिला जनसंख्या 3813902 है। गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले परिवारों की संख्या ग्रामीण क्षेत्रों में 531792 बहुत अधिक है जबकि शहरी क्षेत्र में भी 64419

---

78. मण्डल पत्रिका, चित्रकूट एवं झाँसी, 2007, www.upgov.nic.in

परिवार गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करते है। बुन्देलखण्ड की जनसंख्या वृद्धि दर 29.47 भी राष्ट्रीय जनसंख्या वृद्धि दर 21.57 एवं उत्तर प्रदेश की जनसंख्या वृद्धि दर 25.80 से अधिक है जिसमें चित्रकूट एवं हमीरपुर जनपद की वृद्धि बहुत अधिक है। बुन्देलखण्ड के कुछ जनपदों को छोड़कर सभी जिलों की साक्षरता, राष्ट्रीय साक्षरता 65.38 एवं उत्तर प्रदेश की साक्षरता 56.3 से कम है, परन्तु बुन्देलखण्ड की औसत साक्षरता दर 60.22 उत्तर प्रदेश की साक्षरता से कुछ अधिक है।

धरातल एवं भूमि की दृष्टि से बुन्देलखण्ड में विविधता है। यहाँ ऊँचे–ऊँचे पहाड़, छोटी–छोटी पहाड़ियाँ, पठार, नदियाँ, हरे–भरे वन एवं विभिन्न प्रकार की मिट्टियाँ मिलती हैं। बुन्देलखण्ड का अधिकाँश भाग पठारी है। इसका प्राकृतिक सौन्दर्य विन्ध्याचल पर्वत की श्रेणियों से अधिक समुज्जवल प्रतीत होता है। इसका ढाल दक्षिण से उत्तर की ओर है। सतपुड़ा, स्वर्णगिरि और हंस अन्य महत्वपूर्ण पर्वतमालायें हैं। बुन्देलखण्ड की प्रमुख नदियों में बेतवा, धसान, केन, यमुना, चम्बल, नर्मदा, मन्दाकिनी, सिंध और टोंस का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

बुन्देलखण्ड की मृदा को चार वृहद विभागों में विभाजित किया जा सकता है– यथा–मार, कावर, पडुआ और रॉकड। मार मिट्टी काली व कड़ी होती है। यह पानी अधिक चाहती है तथा इसमें चना, ज्वार, अधिक पैदा होता है। पडुआ मिट्टी का रंग सफेदी मिला पीला होता है। यह भी पानी अधिक चाहती है तथा इसमें गेहूँ, ज्वार, बाजरा, गन्ना, सोयाबीन व मसूर पैदा होती है। रॉकड मिट्टी में कंकड़ों की अधिकता होती है तथा कड़ी होती है, यह जोतने पर भी नहीं जुतती, यह नदियों के किनारे पायी जाती है तथा इसमें कुछ पैदा नहीं होता है, इसमें झाडियाँ मिलती हैं।

बुन्देलखण्ड में गर्मी, वर्षा और सर्दी तीनों ही मौसम होते हैं। सामान्यतः यहाँ की जलवायु शुष्क और स्वास्थ्य वर्धक है परन्तु गर्मी का मौसम अधिक निर्दयी है, जो कि सम्भवतः वृक्षों की कमी तथा नंगी चट्टानों एवं अनुपजाऊ मैदानों के विकिरणों के कारण कहा जा सकता है। गर्मी के मौसम में पेयजल का अभाव रहता है। बुन्देलखण्ड की सर्दी के मौसम की रातें अत्यधिक शीतल, सुखद एवं सुहावनी होती हैं। यहाँ पर खाद्यान्न अच्छी मात्रा में होते हैं– जैसे–चावल, गेहूँ, ज्वार, मोटे अनाज, कपास, दालें एवं तिलहन। प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेनसाँग ने सन् 642 ई0 के लगभग बुन्देल भूमि के सम्बन्ध में कहा था। – "The soil was rich, the crops abundant and wheat were products,"

बुन्देलखण्ड में पर्याप्त जैव विविधता दिखाई देती है। भयानक विषधर सर्पों, जंगली भयानक जानवरों और सिंहों से लेकर साधारण जन्तु तक यहाँ पाये जाते हैं। बुन्देलखण्ड में नर्मदा तट पर बसी हुई महिष्मती नगरी से दूर बेतवा के तट पर बसे हुये ओरछा नगर तक सहत्रों वन–उपवन हैं। यहाँ प्रत्येक जनपद और तहसील में जलाऊ और इमारती लकड़ी प्राप्त होती है। इस प्रदेश में लगभग 2500 वृक्षों की जातियाँ विद्यमान हैं। यहाँ के वनों में वृक्षों, खाद्य एवं सुगन्ध युक्त फल–फूल, छाल, रस–पत्तियाँ, जड़ी–बूटियाँ मनुष्य के लिए सदैव उपलब्ध रहती हैं।

बुन्देलखण्ड की भूमि रत्नगर्भा होने के अनेक प्रमाण हैं। पन्ना की हीरे की खानें तो इसके ज्वलंत प्रमाण है। बाँदा की केन नदी में पाये जाने वाले सजर पत्थर की प्राकृतिक सुन्दरता जग विख्यात है। इस भूमि के नीचे अनेकों खनिज दबे पड़े होंगे। यदि शासन इस ओर ध्यान दे और भूगर्भ शास्त्री इस ओर अपना ध्यान आकृष्ट करें तो उन्हें विभिन्न खनिजों सम्बन्धी जानकारी प्राप्त हो सकती है और विपुल खनिज प्राप्त हो सकते हैं। विगत वर्षों में होने वाले सर्वेक्षणों से ज्ञात हुआ है कि इस क्षेत्र में विपुल खनिज भण्डार है। खनिजों के उत्खनन की योजना से बुन्देलखण्ड की जनता की बेरोजगारी दूर हो सकती हैं, वहीं देश आर्थिक–प्रगति कर सकता है।

बुन्देलखण्ड की अधिकांश जनसंख्या कृषि पर निर्भर है तथा उसे कठिन परिश्रम करना पड़ता है। पत्थरों को खानों से निकालना, जंगलों से लकड़ी काटना, बीड़ी पत्ता तोड़ना, वस्त्र बनाना व रंगना, चूना तैयार करना आदि ऐसे कार्य हैं जिन्हें यहाँ का मनुष्य लघु उद्योगों के रूप में कार्यान्वित करता है। उत्तर–प्रदेश में लगभग लघु, मध्यम व बड़े उद्योगों की संख्या 265000 है जिसमें 138000 (52 प्रतिशत) पश्चिमी उत्तर प्रदेश में, 77000 (14.5 प्रतिशत) पूर्वांचल में, 38000 (29 प्रतिशत) मध्य उत्तर प्रदेश में और बुन्देलखण्ड में 265204 (4.6 प्रतिशत) उद्योग अवस्थित हैं। जनसंख्या के अनुपात में यहाँ लघु, उद्योगों की स्थिति ठीक है परन्तु मध्यम व बड़े उद्योगों की दृष्टि से बुन्देलखण्ड बहुत पिछड़ा हुआ है।

सारणी क्रमांक – 3.2

<u>बुन्देलखण्ड में उद्योगों की स्थिति</u>[79]

	लघु उद्योग	मध्यम उद्योग	बृहत उद्योग	जनसंख्या
उत्तर–प्रदेश	262825	1489	890	166052859
बुन्देलखण्ड	12261	49	24	8232071
बुन्देलखण्ड % में	4.66 %	3.29 %	2.7 %	4.6 %

इस क्षेत्र के अधिकाँश भाग में बोली जाने वाली सामान्य भाषा **'बुन्देलखण्डी'** है, जो हिन्दुस्तानी के बहुत समीप है और जिसकी लिपि **'देवनागरी'** है। सदर बोर्ड ऑफ रेवेन्यू, नार्थ वेस्ट प्राविन्सेज के एक वरिष्ठ सदस्य **आर.एम.वर्ड** की यह टिप्पणी उल्लेखनीय है– **"सम्पूर्ण प्रदेश में बिल्कुल विशुद्ध हिन्दुस्तानी बोली जाती है या कम से कम उस भाग में जिसका मैंने भ्रमण किया। वहाँ के निवासियों की बोली व सभी जगह से प्राप्त अभिलेख मुझे दिखाई दिये। स्थानीय लेख देवनागरी में थे।"**

---

79. अमर उजाला, कानपुर संस्करण, 23 जुलाई 2008।

भौगोलिक विशेषताओं के कारण बुन्देलखण्ड की प्रकृति बहुत ही विविधता तथा भारत जीवन के लिए बहुत ही रमणीय एवं अनुकूल है। यह आबादी और क्षेत्रफल में भारत के अनेक प्रान्तों से आगे है। परन्तु अंग्रेजी शासन द्वारा यह प्रदेश उपेक्षित रहा है और भारतीय स्वतंत्रता के बाद भी विभिन्न सरकारों द्वारा उपेक्षित रहा है। आज भी शासन ने बुन्देलखण्ड को नया प्रान्त नहीं बनाया। यह वैभवशाली प्रदेश दो सरकारों द्वारा शासित किया जाता है।

3.2. बुन्देलखण्ड की सामाजिक एवं राजनैतिक पृष्ठभूमि :–

बुंदेलखण्ड की वीर प्रसवनी तथा रत्नगर्भा भूमि अपने अंचल में अतीत की ऐतिहासिक घटनाओं, परम्पराओं, सांस्कृतिक चेतनाओं, रीति–रिवाजों तथा वैभवशाली गाथाओं को समेटे हुये है। बुन्देलखण्ड का प्राचीन नाम 'दशार्ण' था। वैदिक काल में इसे 'असर पुनीत' कहा जाता था।

पौराणिक काल में इसी भूमि का नाम **'जैजाकभुक्ति'** और **'चेदि'** था। **आगंतुक निकाय** से ज्ञात होता है कि महाजनपद काल में 'चेदि' महाजनपद की गणना षोडश महाजनपदों में थी। आधुनिक बुन्देलखण्ड और उसका समीपवर्ती प्रदेश इसके अन्तर्गत था। जातकों में वर्णित सोत्थवती यही नगरी थी। चेदि राज्य का उल्लेख महाभारत में भी आता है। शिशुपाल यहीं का राजा था। उल्लेखनीय है कि चेदि नरेश शिशुपाल ने कृष्ण की सर्वमान्य सत्ता को चुनौती दी थी।

सर्वमान्य सत्ता के समक्ष बुन्देलखण्ड के शासकों द्वारा चुनौती प्रस्तुत करना बुन्देलखण्ड के इतिहास की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। मध्यकालीन भारत में मधुकर शाह ने अकबर की तथा चम्पत राय ने औरंगजेब की सर्वमान्य सत्ता को चुनौती दी थी। आधुनिक भारत में सन् 1857 में अंग्रेजों की सर्वमान्य सत्ता को झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई ने गम्भीर चुनौती प्रस्तुत की थी।

मौर्यकालीन बुन्देलखण्ड में गुर्जरा और विदिशा का उल्लेख समीचीन होगा। गुर्जरा अभिलेख (म0प्र0 के दतिया जिले) से देवानाम् प्रिय एवं प्रियदर्शी सम्राट का मूल नाम अशोक ज्ञात होता है। दीपवंश, महावंश और सामन्त पासादिका के अनुसार अशोक प्रान्तीय शासक के रूप में जब उज्जैन जा रहा था तब वह मार्ग में विदिशा में रूका जहाँ उसने एक श्रेष्ठी की पुत्री 'देवी' के साथ विवाह कर लिया। महाबेधि वंश में उसका नाम 'विदिश–महादेवी' मिलता है तथा उसे शाक्य जाति का बताया गया है। उसी से अशोक के पुत्र महेन्द्र तथा पुत्री संधमित्रा का जन्म हुआ था और वही उसकी पत्नी थी।

प्रारम्भिक स्तूपों में साँची का स्तूप समूह (म0प्र0 के रायसेन जिले में स्थित) प्रसिद्ध है। साँची में एक बड़ा एवं दो छोटे स्तूप हैं। मार्शल के अनुसार महास्तूप का निर्माण अशोक के शासनकाल में हुआ था। यह ईटों का बना था जिसके चारों ओर लकड़ी की बाड़ (Railling) लगाई गई थी। इसमें महात्मा बुद्ध के अवशेष हैं। ईसा पूर्व द्वितीय शताब्दी में महास्तूप का आकार दुगुना कर दिया गया।

लकड़ी की बाढ़ के स्थान पर नौ फीट ऊँची पत्थर की चहार दीवारी बनवायी गयी। ईसा पूर्व प्रथम शताब्दी के अन्त में चारों ओर चार भव्य तोरणों का निर्माण किया गया। वस्तुतः यहाँ के तोरण अत्यन्त सुन्दर, कलापूर्ण एवं आकर्षक है और वे कला के इतिहास में अपना सानी नहीं रखते हैं।

शुंगकाल में बुन्देलखण्ड में शुंग नरेश भागभद्र का शासन था। एन्टियालकीड्स तक्षशिला का शासक था। जिसने शुगंनरेश भागभद्र के विदिशा स्थित दरबार में हेलियोडोरस नामक अपना एक राजदूत भेजा था। बेसनगर (विदिशा) से प्राप्त हेलियोडोरस का गरुण स्तम्भ शुंगकला का एक सुन्दर नमूना है। हिन्दू धर्म से सम्बन्धित यह प्रथम प्रस्तर स्मारक है।

गुप्तकालीन मन्दिरों में देवगढ़ (ललितपुर,उ0प्र0) का दशावतार मन्दिर सर्वाधिक सुन्दर है, जिसमें गुप्त मंदिरों की सभी सामान्य विशेषतायें प्राप्त होती हैं। मन्दिर के गर्भगृह का प्रवेश द्वार आकर्षक तथा कलापूर्ण है। मन्दिरों की दीवारों पर शेषशैया पर शयन करते हुये भगवान विष्णु, नर–नारायण, गजेन्द्र, मोक्ष आदि के सुन्दर दृश्य उत्कीर्ण हैं। सर्वप्रथम, इसी मन्दिर में शिखर बनाया गया था। इस प्रकार देवगढ़ का मन्दिर गुप्तकाल के उत्कृष्ट वास्तुकला का नमूना है। इसके अनेक तत्वों को बाद में मन्दिरों में ग्रहण किया गया है।

राजपूत काल में चन्देल राजाओं ने बुन्देलखण्ड के गौरव को राजनैतिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से शिखर पर पहुँचाया। चन्देल वंश में धंगदेव, विद्याधर, मदनवर्मन और परमदेव जैसे प्रसिद्ध राजा हुये। धंगदेव ने अपनी राजनैतिक सत्ता का विस्तार बुन्देलखण्ड के बाहर कन्नौज, प्रयाग और बनारस के क्षेत्रों को जीतकर किया। उसने अपनी राजधानी कालिंजर से बदल कर खजुराहो में स्थानान्तरित की। इसके बाद चन्देलों की राजधानी खजुराहो में ही रही। धंग केवल महान विजेता ही नहीं था, अपितु कुशल प्रशासक तथा कला एवं संस्कृति का उन्नायक भी था। उसके सुशासन में चन्देल साम्राज्य के गौरव में अद्भुत वृद्धि हुई। धंग एक महान निर्माता था जिसने खजुराहो में अनेक भव्य मन्दिरों का निर्माण करवाया। इनमें जिननाथ, विश्वनाथ, वेद्यनाथ आदि मन्दिर विशेष उल्लेखनीय हैं।

धंगदेव के पश्चात् गण्ड और उसके पश्चात् उसका पुत्र विद्याधर (1017–1029) शासक बना। वह चन्देल शासकों में सर्वाधिक शक्तिशाली था। महमूद गजनवी ने 1018 ई0 में कन्नौज के प्रतिहार राजा राज्यपाल पर आक्रमण कर राज्यपाल को मार डाला। उसने राज्यपाल के स्थान पर उसके पुत्र त्रिलोचनपाल को कन्नौज का राजा बनाया जिसने विद्याधर की अधीनता स्वीकार की। इस कार्य से विद्याधर निश्चित रूप से भारतवर्ष का सबसे शक्तिशाली राजा माना जाने लगा। राजपूत राजाओं में एकमात्र विद्याधर ही था, जिसने महमूद गजनवी के समक्ष न केवल राजपूत शौर्य का परिचय दिया, बल्कि उसके विजय अभियान को भी रोक दिया।

विद्याधर के बाद मदनवर्मा (1129–63 ई0) चन्देल वंश का सर्वाधिक शक्तिशाली राजा हुआ। उसने चेदि नरेश, काशी नरेश, मालवा नरेश तथा अन्य राजाओं को पराजित किया। चन्देल वंश का

अन्तिम महान शासक परमर्विदेव (1165–1203 ई0) हुआ। 1182 ई0 में पृथ्वीराज चौहान ने परमर्दिदेव को युद्ध में पराजित किया। इस युद्ध में चन्देल सेना के दो नायक– **आल्हा और ऊदल** वीरगति को प्राप्त हुये।

1203 ई0 में कुतुबुद्दीन ने परमर्दिदेव को परजित कर कालिंजर के दुर्ग पर अधिकार कर लिया। कालिंजर के दुर्ग में ही परमर्दिदेव की मृत्यु हो गई। परमर्दिदेव के साथ ही चन्देलों की स्वाधीनता का अंत हुआ। तेरहवीं शदी तक चन्देल राज्य का अस्तित्व बना रहा। अन्ततः 1305 ई0 में इसे दिल्ली सल्तनत में मिला लिया गया।

चन्देल काल में कला की बड़ी उन्नति हुई, इस कला का प्रधान केन्द्र खजुराहो था। यहाँ इस काल के लगभग 30 मन्दिर मिले हैं। इन मंदिरों का निर्माण अधिकांशतः धंग और विद्याधर के शासनकालों में हुआ था। इन मंदिरों में शैव, वैष्णव और जैन मन्दिर हैं, परन्तु बौद्ध नहीं। ये मन्दिर अपनी वास्तुकला और स्थापत्य कला के लिए संसार भर में प्रसिद्ध हैं। यद्यपि, यह स्थापत्य उड़ीसा के स्थापत्य की भाँति सुदृढ़ नहीं है फिर भी यह उसकी अपेक्षा कहीं अधिक सजीव एवं आकर्षक है। खजुराहो के मन्दिरों में सर्वाधिक सुन्दर कन्दरिया महादेव मन्दिर है। वैष्णव मन्दिरों में सर्वाधिक उत्कृष्ट चतुर्भुज का मन्दिर एवं जैन मन्दिरों में सबसे सुन्दर पार्श्वनाथ मन्दिर है।

जेजाक भुक्ति में चन्देलों के पतन के पश्चात् **बुन्देला राजपूतों** के नाम पर इस क्षेत्र का नाम **'बुन्देलखण्ड'** पड़ा। बुन्देले स्वयं को काशी के गहड़वार वंश से सम्बधित मानते थे। सरदारों एवं शासकों के रूप में बुन्देले इतिहास में महत्व रखते हैं। राष्ट्रीय भावना एवं विद्रोही प्रवृति ने अन्य शक्तियों के लिए उसको अधिक समय तक अपने आधिपत्य में रखना कठिन कर दिया था। दिल्ली की मुस्लिम सत्ता के विरूद्ध बुन्देलखण्ड के राजाओं ने स्वतंत्रता को बनाये रखने के लिए दीर्घकाल तक संघर्ष किया।

बुन्देलों का उत्थान काल हेमकर्ण पंचम बुन्देला की पीढ़ी के सोहनपाल बुन्देला के एक छोटे से बुन्देला राज्य से प्रारम्भ होता है, जिसे उसने कुंडार के खंगारों द्वारा स्थापित किया था। इस प्रकार संवत 1288 विक्रमी (सन् 1231 ई0) के लगभग बुन्देलखण्ड की स्थापना हुई। इसके पश्चात् सोहनपाल से नवीं पीढ़ी में राजा रूद्रप्रताप संवत 1550 विक्रमी (सन्1493 ई0) में सिंहासनारूढ़ हुये। उन्होंने ओरछा के नगर एवं दुर्ग का निर्माण कर उसे राजधानी बनाया। उन्होंने बुन्देलखण्ड की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों की बाजी लगा दी। उन्होंने लोदी शासकों से टक्कर ली एवं बाबर से युद्ध किया था।

सम्वत् 1611 (सन् 1554 ई0) में रूद्रप्रताप के पुत्र मधुकरशाह गद्दी पर बैठे। बुन्देल राजा मधुकरशाह अपनी राजपूती परम्परा को अक्षुण्ण रखने के लिए इतिहास में प्रसिद्ध है। मधुकरशाह बुन्देला का राज्य अकबर को तीर की भाँति चुभता था। अतः अकबर ने उसको नीचा दिखाने के लिए यह शाही फरमान जारी किया कि कोई भी भारतीय राजा तिलक लगाकर दरबार में सम्मिलित नहीं हो

सकता। आज्ञा का उल्लंघन करने वाले का मस्तक गर्म लोहे से दाग दिया जायेगा। परन्तु सभी राजाओं के विपरीत, राजपूती परम्परा के अनुरूप मधुकरशाह तिलक लगाकर ही अकबर के दरबार में उपस्थित हुये। अकबर ने मधुकर शाह की निर्भीकता की भूरि–भूरि प्रशंसा की।

मधुकरशाह की मृत्यु के पश्चात् उनके पुत्र एवं बड़ौनी के जागीरदार वीर सिंह देव ने अकबर के शासनकाल में ही सलीम के कहने पर अकबर के सेनापति अबुल फजल की हत्या कर दी। अकबर की मृत्यु के पश्चात् सलीम के गद्दी पर बैठने के बाद वीर सिंह देव का सलीम द्वारा भव्य स्वागत किया गया तथा वीर सिंह देव को सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड का राजा घोषित किया गया।

3.3. झाँसी का संक्षिप्त इतिहास –

झाँसी की स्थापना ओरछा के बुन्देला राजा वीर सिंह देव ने की थी। अकबर के प्रिय मंत्री अबुल फज़ल की हत्या के पुरस्कार स्वरूप जहाँगीर ने वीर सिंह देव को सन् 1611–12 ई0 में ओरछा की जागीर प्रदान की।

ओरछा के राज्य के अतिरिक्त राजा वीर सिंह का अधिकार पश्चिम में लगभग 10 किमी0 की दूरी पर स्थित एक कस्बे बलवन्त नगर पर भी था। जिसके समीप ही एक विशाल पहाड़ी थी। उन्होंने इस पहाड़ी पर सन्1613 ई0 में एक दुर्ग का निर्माण करवाया जो 'झाँसी' के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

'झाँसी' की उत्पत्ति विवादास्पद एवं स्थानीय परम्परा पर आधारित है। इसके अनुसार एक दिन जैतपुर के राजा, राजा वीर सिंह देव के पास भ्रमण हेतु आये। जब वे ओरछा के महल में सबसे ऊपर की छत पर बैठे हुये थे तब राजा वीर सिंह देव ने जैतपुर के राजा से पूछा कि क्या वह नये दुर्ग की बाह्य आकृति को पहचान सकते हैं ? राजा के मुख से निकला **'झाँईसी'** (छाया) अतएव, यह दुर्ग 'झाँईसी' कहा जाने लगा जो कालान्तर में अपभ्रंशित होकर **'झाँसी'** हो गया।

उपर्युक्त परम्परा की सत्यता की जाँच करना बहुत कठिन है। परन्तु व्युत्पत्ति की दृष्टि से ऐसी संभावना प्रतीत होती है कि 'झाँसी' शब्द की व्युत्पत्ति 'झाँईसी' शब्द से हुई है। यद्यपि यह अज्ञात है कि प्राचीन नाम बलवन्त नगर झाँसी में कैसे परिवर्तित हो गया।

शाहजहाँ के शासनकाल में बुन्देलों ने वीर सिंह देव के उत्तराधिकारी राजा जुझार सिंह के नेतृत्व में कई बार विद्रोह किये। अन्त में शाहजहाँ ने औरंगजेब को एक बड़ी सेना के साथ आक्रमण के लिए भेजा। मुगलों ने ओरछा पर अधिकार कर लिया और भारत सिंह के लड़के देवी सिंह को गद्दी पर बैठा दिया। जुझार सिंह और उसके पुत्र विक्रमाजीत को वनों में शरण लेनी पड़ी, जहाँ गौंडों ने बड़ी निर्दयता से उनकी हत्या कर दी।

शीघ्र ही उक्त निर्दयता के बाद, झाँसी का दुर्ग जो कि बुन्देलों का एक गढ़ था, मुगलों के हाथों में चला गया। उसके बाद झाँसी का दुर्ग मुस्लिम गवर्नरों की शाही सेना की नियमित रूप से सैनिक छावनी बना रहा, जब तक कि वह मराठों के अधिकार में नहीं चला गया।

बुन्देलों ने देशद्रोही देवी सिंह को अपना राजा मानने से इन्कार कर दिया। अब मुगल सत्ता के विरूद्ध विद्रोह का बीड़ा महोबा के राजा चम्पतराय ने उठाया और उसके पश्चात् उसके लड़के छत्रसाल ने मुगलों का निरन्तर विरोध किया और बुन्देलों के स्वतंत्रता संग्राम को जारी रखा।

छत्रसाल ने दक्कन में बादशाह औरंगजेब की सेवा की थी, जहाँ शिवाजी के दृष्टान्त से प्रोत्साहित होकर उसने साहस तथा स्वतंत्रता का जीवन व्यतीत करने का स्वप्न देखा। उसने मुगलों पर अनेक विजयें प्राप्त कीं तथा वह पूर्वी मालवा में अपने लिए एक स्वतंत्र राज्य स्थापित करने में सफल हुआ, जिसकी राजधानी पन्ना थी।

सन् 1727 ई0 में इलाहाबाद के सूबेदार मुहम्मद खाँ बंगस (सैय्यद बंधुओं के पतन के बाद) ने छत्रसाल की वृद्धावस्था जानकर बुन्देलखण्ड पर आक्रमण कर दिया। परन्तु छत्रसाल ने इस आक्रमण को विफल कर दिया। सन् 1728 ई0 में द्वितीय आक्रमण कर बंगरा ने 80 वर्षीय छत्रसाल को समर्पण के लिए विवश कर दिया। अब छत्रसाल ने पेशवा बाजीराव प्रथम से सहायता माँगी। 1729 ई0 में बाजीराव बुन्देलखण्ड के शासक छत्रसाल की सहायता के लिए आये तथा दोनों की संयुक्त सेनाओं ने बंगस को बुरी तरह पराजित किया। सहायता के बदले में छत्रसाल ने पेशवा को बुन्देलखण्ड का कुछ भू–क्षेत्र तथा झाँसी, कालपी, सागर, आदि नगरों को प्रदान किया। 1731 ई0 में छत्रसाल की मृत्यु हो गई।

पेशवा बाजीराव प्रथम ने छत्रसाल से प्राप्त बुन्देलखण्ड के कुछ क्षेत्र एवं झाँसी, कालपी, सागर आदि नगरों का प्रबन्धक गोविन्द पन्त को नियुक्त किया। उसने सागर को अपना मुख्यालय बनाया। शीघ्र ही मराठे इन प्रदेशों का उपयोग, अपने प्रभाव क्षेत्र की वृद्धि के लिए सैनिक आधार के रूप में करने लगे। उसके बाद, उन्होंने झाँसी जिले के समीप के मुगल प्रदेशों पर आक्रमण करने आरम्भ कर दिये। यद्यपि, बाजीराव प्रथम ने छत्रसाल को सहायता देने की घटना से बुन्देलखण्ड में पैर रखने का आश्रय प्राप्त कर लिया था, परन्तु मराठे अनेक वर्षों तक इस क्षेत्र में कोई प्रधान मार्ग न बना सके। उनकी सम्प्रभुता को अनेक बुन्देला सरदारों ने चुनौती दी। इसका प्रमाण यह हैं कि 1735 ई0 में जब मल्हार राव होल्कर बुन्देलखण्ड की ओर बढ़ा तब ओरछा और दतिया की संयुक्त सेनाओं ने उसे रोका।

सन् 1742 ई0 में पेशवा बाजीराव ने अपने पूर्ववर्ती बाजीराव प्रथम से प्रान्त बुन्देलखण्ड के राज्य को संगठित करने के लिए उस पर ध्यान दिया। उसने नारू शंकर को झाँसी का सूबेदार नियुक्त किया। उसके बाद झाँसी एक मराठा छावनी बन गया।

नारू शंकर झाँसी के प्रथम सूबेदार थे। उन्होंने वीर सिंह देव द्वारा निर्मित झाँसी के दुर्ग का विस्तार करवाया। इसके अतिरिक्त, झाँसी के शहर की भी स्थापना की। वह स्वतंत्र शासक की भाँति अपना दरबार लगाते थे। वह मराठा साम्राज्य के महान सैनिक सरदार की भाँति व्यवहार करते थे। उन्होंने दक़्कन से मराठा परिवारों को आमंत्रित कर झाँसी को बुन्देलखण्ड में मराठा उपनिवेश बना दिया। पेशवा ने 1757 ई0 में उन्हें वापस बुला लिया, परन्तु 1761 ई0 में पुनः झाँसी का गवर्नर बनाकर भेजा। नारूशंकर की अनुपस्थित (1757से 1761) में झाँसी के मराठा गवर्नर माधो गोविन्द एवं बाबूराव कन्हाई रहे।

नारूशंकर को अपने द्वितीय शासनकाल में अवध के सूबेदार एवं साम्राज्य के वजीर शुजा–उद्–दौला से कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। शुजा–उद्–दौला इलाहाबाद का वायसराय भी था, अतएव वह बुन्देलखण्ड पर अपना अधिकार करना चाहता था। वह एक सेना लेकर झाँसी की ओर बढ़ा तथा उसने मोठ के दुर्ग पर घेरा डाल दिया। उसका मोठ के दुर्ग पर अधिकार हो गया। मोंठ के पतन से भयभीत होकर नारूशकंर ने झाँसी के दुर्ग पर अधिकार बनाये रखने के उद्देश्य से शुजा–उद्–दौला को 3 लाख रूपये देने की पेशकश की, परन्तु उसके प्रस्ताव को ठुकरा दिया गया। 31 जनवरी 1762 कों झाँसी के दुर्ग पर शाही सेना का अधिकार हो गया। मोहम्मद बशीर को झाँसी का फौजदार (सैनिक गवर्नर) नियुक्त किया गया। परन्तु मुगल शासन अधिक समय तक न रह सका। नारूशंकर के भतीजे मल्हारराव होल्कर ने चार वर्ष बाद पुनः झाँसी के दुर्ग और नगर पर अधिकार कर लिया।

नारूशंकर के पश्चात् विश्वासराव लक्ष्मन (1766–69) और रघुनाथ हरि नेवालकर (1769–1794) झाँसी के गवर्नर बने। रघुनाथ हरि नेवालकर के परिवार में सूबेदारी वंशानुगत हो गई जिसका अन्त रानी लक्ष्मीबाई के शासन से हुआ।

रघुनाथ हरि नेवालकर ने लगभग 25 वर्ष तक शासन किया तथा व्यावहारिक रूप में वह पूना दरबार से स्वतंत्र रहा। रघुनाथ को अपनी यथा स्थिति बनाये रखना बहुत कठिन हो रहा था क्योंकि उस पर शुजा–उद्–दौला, रूहेलों, जाटों, और बुन्देलों का गहरा दबाव पड़ रहा था। 1773 के अन्त में शुजा–उद्–दौला ने यमुना के दक्षिण की भूमि पर अधिकार करने के लिए मीर नायम को भेजा परन्तु वह झाँसी के कमानडेट और मराठा कप्तानों से पराजित हुआ। 1774 के अन्त में शुजा–उद्–दौला ने अनूपगिरि गोसाँई को झाँसी पर अधिकार के लिए भेजा। इस प्रकार, रघुनाथ ने स्वयं को बहुत ही विषम परिस्थितियों में घिरा पाया। उसकी छोटी सी सेना नई चुनौती का सामना करने के लिए पर्याप्त न थी। अतः उसने पूना दरबार में सहायता की प्रार्थना की परन्तु उस पर कोई ध्यान नहीं दिया गया। उसी समय 1775 ई0 में शुजा–उद्–दौला की मृत्यु हो गई और अवध की चुनौती प्रायः समाप्त हो गई। गोसाँई नेता सितम्बर 1775 में मराठा कप्तान दिनकर राव खेर से निर्णायक रूप से पराजित हो गया। इस प्रकार रघुनाथ ने बहुत योग्यता के साथ इस प्रदेश में शासन चलाया।

सन् 1794 ई0 में रघुनाथ हरि नेवालकर का उत्तराधिकारी उसका भाई शिव राव भाऊ (1794–1815) बना। उसकी सूबेदारी के काल में झाँसी का सम्बन्ध अंग्रेजों से स्थापित हुआ।

3.4. बुन्देलखण्ड में अंग्रेजी राज्य का उत्थान :–

बुन्देलखण्ड में अंग्रेजी राज्य का उत्थान अंग्रेजों की साम्राज्यवादी नीति का परिणाम था। जिसकी शुरूआत लार्ड क्लाइव ने की और जिसे उसके अनेक उत्तराधिकारियों ने उत्साह के साथ जारी रखा। किसी भी क्षेत्र में साम्राज्य विस्तार की अनुकूल परिस्थितियों को देखकर अंग्रेज उस पर अधिकार करने के लिए लालायित हो उठते थे तथा उसे प्राप्त करने के लिए कूटनीति और युद्ध दोनों का सहारा लेते थे। उन्नीसवीं सदी के बुन्देलखण्ड में भी साम्राज्य विस्तार हेतु अंग्रेजों के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ उत्पन्न हो गयी थीं जिनका उन्होंने पूरा लाभ उठाया।

19 वीं शताब्दी के आगमन से ही बुन्देलखण्ड में सत्ता की लोलुपता के आवेग में पारस्परिक वैमनस्य बढ़ चुका था और यह कई टुकडों में बँट चुका था। बुन्देले आपस में संगठित नहीं थे उनकी एकता नष्ट हो चुकी थी। चारों ओर अराजकता एवं ईष्या तथा भय का साम्राज्य था। 40–50 रियासतें एक–दूसरे से बैमनस्य के कारण संगठित न हो सकीं। उनमें उत्तराधिकार के झगड़े, गोद लेने के विवाद तथा राज्य का प्रबन्ध आदि समस्यायें अपना भयंकर रूप धारण किये थीं। पेशवा के द्वारा सागर मुख्यालय में नियुक्त किये गये सूबेदार बल्लाल खेर और बुन्देलों के बीच सम्बन्धों में कटुता आ गयी थी।

भौगोलिक, राजनैतिक तथा सामरिक स्थिति के कारण बुन्देलखण्ड अंग्रेजों के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण था। अतः उपरोक्त परिस्थितियों के परिपेक्ष्य में वे बुन्देलखण्ड पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने का स्वप्न देखने लगे। देवयोग से शीघ्र ही इन्हें पूना के पेशवा पद के विवाद के कारण यह सुअवसर भी प्राप्त हो गया।

बुन्देलखण्ड में अंग्रेजों के आधिपत्य का शुभारम्भ दो तरफ से हुआ। एक तो हिम्मत बहादुर गोसाँई के द्वारा, जिसने सबसे पहले 1803 ई0 में अंग्रेजों से सन्धि की और दूसरे व्यक्ति थे, झाँसी के पेशवा सूबेदार शिवराव भाऊ, जिन्होंने 1804 ई0 में अंग्रेजों से सन्धि की।

1857 ई0 के विद्रोह से सर्वाधिक प्रभावित क्षेत्र अवध और बुन्देलखण्ड था। बुन्देलखण्ड के विद्रोह का नेतृत्व झाँसी की महारानी लक्ष्मीबाई ने किया था। इस विद्रोह के दमन में जनरल रोज को सक्रिय किया गया था तथा अंग्रेजों से संघर्ष करते हुये रानी लक्ष्मीबाई ने वीरगति प्राप्त की तथा 1858 ई0 में बिट्रेन की महारानी विक्टोरिया ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी के हाथों से सत्ता अधिकृत कर भारत में अंग्रेजी राज स्थापित किया।

भारतीयों के निरन्तर संघर्ष के परिणामस्वरूप 15 अगस्त 1947 को देश आजाद हुआ, सरदार वल्लभ भाई पटेल के अथक प्रयासों के द्वारा विभिन्न रिसायतों को मिला कर एक बड़े राष्ट्र की संकल्पना को पूर्ण किया गया। स्वतन्त्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंड़ित जवाहर लाल नेहरू ने राष्ट्र एवं राष्ट्र के पिछड़े क्षेत्रों के विकास के लिए सन् 1951 से पंचवर्षीय योजनाऐं संचालित की तथापि आज भी देश में कई ऐसे क्षेत्र हैं जिनकी स्थिति बहुत पिछड़ी हुई है।

1947 की स्वतन्त्रता के पश्चात् से यह बुन्देलखण्ड क्षेत्र उत्तर प्रदेश सरकार के शासन क्षेत्र में सम्मिलित हैं। परन्तु आजादी के पश्चात् से इस पिछड़े क्षेत्र के विकास के लिए किसी भी सरकार ने विशेष ध्यान नहीं दिया जिससे क्षुब्ध इस क्षेत्र की जनता अलग बुन्देलखण्ड राज्य की माँग करने लगी है। वर्तमान बुन्देलखण्ड की राजनैतिक स्थिति निम्नवत् है –

सारणी क्रमांक – 3.3

वर्तमान बुन्देलखण्ड क्षेत्र की राजनैतिक स्थिति

	बाँदा	चित्रकूट	हमीरपुर	महोबा	झाँसी	जालौन	ललितपुर	बुन्देलखण्ड
लोकसभा	1	-	1	-	1	1	-	4
विधानसभा	4	2	3	2	4	4	2	21
तहसील	4	2	4	3	5	5	3	26
समुदायिक विकास खण्ड	8	5	7	4	8	9	6	47
न्याय पंचायत	71	47	59	39	64	81	48	409
ग्राम सभा	437	330	314	247	437	564	340	2669
कुल ग्राम	694	654	627	521	933	1151	778	5358
नगर एवं नगर समूह	8	3	7	5	18	10	4	55
नगर पालिका	2	1	3	2	6	4	1	19
नगर पंचायत	6	2	4	3	7	6	3	31
उप नगर पंचायत	-	-	-	-	2	-	-	2
छावनी क्षेत्र	-	-	-	-	2	-	-	2

बुन्देलखण्ड के पिछड़े होने के प्रमुख कारणों में यहाँ उपलब्ध जनसुविधाओं की कमी को निम्न सारणी दर्शा रही है, जोकि इस क्षेत्र की जनसंख्या की तुलना में अपर्याप्त ही नहीं न के बराबर है।

सारणी क्रमांक – 3.4

वर्तमान बुन्देलखण्ड क्षेत्र की जनसेवाओं की स्थिति

		बाँदा	चित्रकूट	हमीरपुर	महोबा	झाँसी	जालौन	ललितपुर	बुन्देलखण्ड
डाकघर		211	77	140	92	213	237	153	1123
पुलिस स्टेशन		17	10	14	10	8	18	15	92
बस स्टेशन / स्टाप		146	47	166	84	111	166	193	913
रेलवे स्टेशन / हाल्ट		7	12	6	7	18	7	9	66
रेलवे लाइन किमी0		79	121	65	75	171	82	75	668
बैंक	राष्ट्रीयकृत	28	12	27	17	82	49	27	242
	ग्रामीण	49	29	29	18	22	37	20	204
	सहकारी	12	7	8	12	18	6	10	73
समुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र		3	2	2	3	4	5	3	22
प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र		47	28	40	14	54	56	31	270

3.5. शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़े होने के कारण :–

आजादी के पश्चात् लोकतान्त्रिक व्यवस्था के प्रारम्भ होने से इस क्षेत्र से उत्तर–प्रदेश का कोई भी मुख्यमंत्री न बन पाने के कारण एवं वर्तमान में चल रही जाति एवं क्षेत्रवादी विचार धारा के चलते इस पिछड़े क्षेत्र की ओर अपेक्षित ध्यान नहीं दिया गया। जिससे इस क्षेत्र में उद्योगों का सर्वथा अभाव रहा है। कुछ उद्योग हैं भी, जो अन्य क्षेत्रों की तुलना में औसत से भी कम है। जिससे यहाँ के निवासियों की मुख्य आय स्रोत कृषि ही है। लेकिन इस विविधता भरे क्षेत्र में सिंचाई के जल संरक्षण की उपलब्धता आवश्यकतानुरूप न होने के कारण यहाँ के निवासी अपनी आवश्यक जीवन निर्वाह पूर्ति ही कर पाते हैं। आर्थिक रूप से पिछड़े इस क्षेत्र में शिक्षा का स्तर पिछड़ा रहने के अधोलिखित कारण हैं –

(1) **कमजोर आर्थिक स्थिति** :– जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आर्थिक स्थिति का प्रभाव महत्वपूर्ण होता है। बुन्देलखण्ड के निवासियों की कमजोर आर्थिक स्थिति शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़े होने के कारणों में एक प्रमुख कारण है।

(2) **भौगोलिक संरचना** :– बुन्देलखण्ड क्षेत्र की भौगोलिक संरचना एक जैसी न होने तथा उबड़–खाबड़ पहाड़, नदियाँ, नाले, जंगली क्षेत्र, आदि के चलते दूर–दराज के पुरवों में शिक्षा के विस्तार में कठिनाई होने से भी शिक्षा का अपेक्षित विकास नहीं हो सका।

(3) **सिंचाई सुविधाओं का अभाव** :– बुन्देलखण्ड क्षेत्र उपजाऊ क्षेत्र है परन्तु यहाँ की खेती पूर्णतः मानसून पर आधारित है। जिससे कभी–कभी बाढ़ और प्रायः सूखा की स्थिति बनी रहती है। इस क्षेत्र में सिंचाई सुविधाओं का अभाव है और जो साधन हैं, वह अपर्याप्त मात्रा में है तथा प्रायः खराब बने रहते हैं, क्योंकि उनके रख–रखाव की उचित व्यवस्था नहीं है। सिंचाई की समस्या का एक प्रमुख पक्ष आवश्यकता के समय बिजली की अनिवार्य उपलब्धता का न होना भी है। अतः सिंचाई के साधनों की अपर्याप्तता के कारण किसान को कभी–कभी अपनी खेती के व्यय बीज, खाद, श्रम व अन्य खर्च निकाल पाना भी मुश्किल हो जाता है जिससे यहाँ के लोग गरीबी के चलते अपने पाल्य (बालक–बालिकाओं) की शिक्षा की ओर ध्यान न देकर बाल श्रम के लिऐ प्रेरित करते हैं। जिसके कारण यह क्षेत्र आज भी पिछड़ा हुआ है।

(4) **ग्रामीण जनसंख्या की अधिकता** :– बुन्देलखण्ड ग्रामीण जीवन शैली वाला क्षेत्र है, यहाँ की अधिकांश जनसंख्या गाँवों में निवास करती है। जिनमें शिक्षण शालाओं की कम उपलब्धता एवं शिक्षकों की अपर्याप्त संख्या के कारण शिक्षा एवं विकास का अभाव रहता है तथा यहाँ के लोगों का पिछड़ापन इस क्षेत्र की विशेषता बनी हुई है।

(5) **यातायात एवं दूर संचार साधनों की अपर्याप्ता** :– हाल के कुछ वर्ष पूर्व तक ग्रामीण क्षेत्रों एवं दूर–दराज स्थिति पुरवों के लिए यातायात एवं दूरसंचार के साधन उपलबध न होने के कारण भी इस क्षेत्र की शिक्षा व्यवस्था पिछड़ेपन का शिकार रही है।

(6) **साक्षरता एवं शिक्षा का कम स्तर** :– शिक्षित एवं साक्षर व्यक्ति अपने परिवार के बच्चों को भी शिक्षित करने में विशेष ध्यान देता है। जबकि शिक्षा एवं साक्षरता से वंचित अभिभावक अपने बच्चों को शिक्षा के लिए प्रेरित नही कर पाते, न ही उचित मार्गदर्शन दे पाते हैं अर्थात शिक्षा के प्रति रुचि शिक्षित समाज में अधिक होती है। जबकि इस क्षेत्र के अविभावकों की शिक्षा एवं साक्षरता बहुत कम होने के कारण भी शिक्षा का उचित विकास एवं विस्तार नहीं हो सका।

(7) **पुरानी मान्यतायें एवं रूढ़ियाँ** :– बुन्देलखण्ड क्षेत्र में आज भी पुरानी मान्यताओं एवं रूढ़ियों का बोल बाला है, जिसके चलते अभिभावक बच्चों को शिक्षित करने के पक्षधर कम रहते हैं। बालकों की

शिक्षा व्यवस्था का प्रयास तो करते हैं लेकिन बालिकाओं को प्रायः अशिक्षित रखा जाता है, क्योंकि इनकी मान्यता है कि लड़कियों को बड़े होकर घर ही सम्भालना है। उन्हें यह नहीं पता कि घर के कार्य एवं बच्चों के लालन–पालन में भी शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। साथ ही साथ यह भी भावना रहती है कि पढ़ी–लिखी लड़की के लिए पढ़ा–लिखा वर तलाशने में समस्या आयेगी जिससे शिक्षा के क्षेत्र में बुन्देलखण्ड पिछड़ा हुआ है।

(8) **सरकार का अपेक्षित ध्यान न दे पाना** :– सरकार ने भी इस क्षेत्र की ओर विशेष ध्यान नहीं दिया और जो भी योजनायें बनायीं उनका कुशलता पूर्व कार्यान्वयन नहीं किया गया। योजनायें कागजों एवं कार्यालयों तक सीमित रहीं, जिससे इस क्षेत्र में शिक्षा अभी पिछड़ी हुई है।

(9) **औद्योगिक, तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा का अभाव** :– बुन्देलखण्ड की शिक्षा व्यवस्था में अभी तक औद्योगिक शिक्षा, तकनीकी शिक्षा तथा व्यावसायिक शिक्षा का प्रायः अभाव रहा है, जिससे जनसामान्य में शिक्षा के प्रति विशेष रुचि नहीं बन सकी तथा शिक्षा को बेरोजगारी का प्रमुख कारण माना जाता रहा क्योंकि पढ़लिख कर प्रायः नवयुवक कृषि एवं अन्य परिवारिक व्यवसाय को उपेक्षा की दृष्टि से देखने लगे।

(10) **बाल शिक्षा एवं गरीबी** :– आर्थिक रूप से पिछड़े एवं जीवन निर्वाहन के लिए सक्षम न हो पाने के कारण प्रायः बच्चों को श्रम के कार्यों में लगा देते हैं, जिससे बालकों की शिक्षा में बाधा आती रहती है और शिक्षा का स्तर निम्नतर बना रहता है।

(11) **स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी** :– गरीब और अशिक्षित किसान/मजदूर बच्चों को ईश्वर की देन मानकर उनकी संख्या में वृद्धि तो कर लेते हैं, परन्तु उनके पालन–पोषण की उचित व्यवस्था नहीं कर पाते, जिससे वह प्रायः बीमार बने रहते हैं और वह शिक्षा के स्तर में पिछड़ जाते हैं। वहीं दूसरी ओर इस पिछड़े क्षेत्र में जनसंख्या के अनुपात में स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी है तथा प्रायः झोला छाप डॉक्टरों की अधिकता है, जिससे लोग अस्वस्थ बने रहते हैं, जिसका सीधा असर व्यक्ति की कार्य कुशलता और उसकी आय पर पड़ता है और क्षेत्र विकास में पिछड़ जाता है।

(12) **गुणवत्ताहीन शिक्षा** :– प्रायः यहाँ के प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षक राजनीति एवं अपने व्यक्तिगत कार्यों को अधिक महत्व देते हैं। समय पर व नियमित विद्यालय जाने वाले शिक्षकों की संख्या बहुत कम है, जिससे इन विद्यालयों में अध्ययनरत व अध्ययन प्राप्त छात्रों की शिक्षा का स्तर चिन्तनीय है। शिक्षा में गुणवत्ता न होने के कारण भी अभिभावक अपने बच्चों को शिक्षा दिलाने में ज्यादा रुचि नहीं लेते हैं।

3.6. पिछड़ापन दूर करने के उपाय :–

1. सिंचाई हेतु वर्षा के पानी के संरक्षण के लिऐ बहुउद्‌देशीय बाँध एवं इस संचित पानी को खेतों तक पहँचाने हेतु नहरों का विस्तार किया जाए।
2. नदियों के बीच लिंक नहरों का निर्माण किया जाए जिससे बाढ़ व सूखा की स्थिति में पानी का आवागमन कर प्राकृतिक प्रकोप से बचा जा सके तथा कृषि हेतु पर्याप्त पानी उपलब्ध हो सके।
3. खेतों में नलकूप एवं कुआँ स्थापित करने हेतु आर्थिक व प्रशासनिक सहायता आसानी से उपलब्ध करायी जाए।
4. किसानों को खेती से सम्बन्धित जानकारी एवं प्रशिक्षण प्रदान करने की व्यवस्था की जाए तथा अच्छे बीज, खाद व कृषि उपकरण उपलब्ध कराये जाऐं।
5. स्वःरोजगार स्थापित करने के लिऐ बैंकों से आसान शर्तों तथा कम ब्याज में ऋण उपलब्ध कराया जाए।
6. लघु एवं कुटीर उद्योगों का विस्तार किया जाए तथा लघु एवं कुटीर उद्योग स्थापित करने हेतु तकनीकी व आर्थिक सहायता दी जाए।
7. लघु एवं कुटीर उद्योग द्वारा निर्मित वस्तुओं तथा विशिष्ट खनिज वस्तुओं के निर्यात हेतु जानकारी एवं व्यापार के लिऐ क्षेत्रीय कार्यालय खोले जाऐं।
8. सरकार द्वारा अति पिछड़े स्थानों में बड़े उद्योग स्थापित कर रोजगार के अवसर बढ़ाये जाऐं साथ ही निजी उद्योगों की स्थापना के लिए सब्सिडी व कर आदि में छूट का प्रावधान कर उद्यमियों को इस क्षेत्र की ओर आकर्षित किया जाए।
9. प्रधानमंत्री रोजगार गांरटी योजना का क्रियान्वयन व अनुपालन कड़ाई से पूरा कराया जाए।
10. क्षेत्र के विकास एवं पिछड़ापन दूर करने हेतु अलग से विशेष आर्थिक सहायता प्रदान की ज़ाए तथा बुन्देलखण्ड विकास परिषद् की स्थापना की जाए।
11. जनसंख्या नियंत्रण से सम्बन्धित उपायों का विकास–विस्तार कर छोटे परिवार के प्रति जनचेतना लायी जाए।
12. स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार कर कुपोषण की रोकथाम की जाए तथा अच्छे डॉक्टरों को ग्रामीण व अति पिछड़े क्षेत्रों में नियुक्त कर स्वास्थ्य सेवा में सुधार किया जाए।
13. बाल श्रमिकों की शिक्षा हेतु उनके अभिभावकों को जागरूक करने के लिऐ प्रत्येक जनपद में टीम गठित की जाए जो अभिभावकों द्वारा बच्चों को शिक्षा की जगह श्रम कराने की मजबूरी के कारणों का यथाउचित निदान कर बाल श्रमिकों को शिक्षा की ओर मोड़ सकें।
14. ऐतिहासिक व प्रमुख धार्मिक स्थानों को राष्ट्रीय व अर्न्तराष्ट्रीय पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जाए तथा सरकार द्वारा धन व प्रशासनिक सहयोग प्रदान कर समय–समय पर स्थानीय व क्षेत्रीय महोत्सव एवं मेले आयोजित कराये जाए।
15. क्षेत्र की विपुल खनिज सम्पदा को ज्ञात करने हेतु अन्वेषण किये जाए।

16. दूर–दराज के क्षेत्रों को विद्यालयों से आच्छादित किया जाए।
17. दूर–दराज के क्षेत्रों के विद्यालयों में शिक्षकों की उपस्थिति सुनिश्चित करने हेतु विद्यालय में ही शिक्षक के आवास की व्यवस्था की जाए।
18. दूर–दराज के क्षेत्रों को सम्पर्क मार्ग व सम्पर्क मार्ग को मुख्य मार्गों से जोड़ा जाए।
19. पिछड़े क्षेत्रों में छात्रों के अनुपात में शिक्षकों की नियुक्ति अनिवार्य की जाए।
20. शिक्षकों की समय पर व नियमित उपस्थिति हेतु नियमित निरीक्षण तथा अनुपस्थित शिक्षकों पर कठोर कार्यवाही की जाए।
21. सरकार की प्राथमिक शिक्षा से सम्बन्धित सभी योजनाओं का क्रियान्वयन व पात्रों तक इनके लाभ पहुँचाना सुनिश्चित किया जाए।
22. 4 से 6 किलोमीटर की परिधि में माध्यमिक विद्यालय विहीन क्षेत्र के जूनियर स्कूलों में से एक को माध्यमिक स्तर तक उच्चीकृत किया जाए।
23. बुन्देलखण्ड जैसे पिछड़ें क्षेत्रों में प्राथमिक शिक्षा की योजना 'सर्व शिक्षा अभियान' को उच्चीकृत कर माध्यमिक स्तर तक लागू किया जाये।
24. शिक्षा को गुणवत्ता पूर्ण व रोजगार परक बनाया जाए जिसके लिए तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा के पाठ्यक्रम शुरू किये जाए।
25. यातायात, बैकिंग व संचार के साधनों का विकास–विस्तार कर इन्हें सर्वसुलभ बनाया जाए।
26. देश के प्रमुख स्थानों के लिए रेलवे–सेवा का विस्तार तथा क्षेत्र के चारों ओर बड़े शहरों के लिए तीव्रगामी बस सेवा का विस्तार किया जाए।
27. उच्च शिक्षा के विस्तार हेतु क्षेत्र के मध्य भाग में एक विश्वविद्यालय, एक कृषि विश्वविद्यालय, एक सूचना तकनीकी विश्वविद्यालय एवं एक चिकित्सा महाविद्यालय स्थापित किया जाए।
28. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों (DIET) में शिक्षक–प्रशिक्षकों की तैनाती मानकानुसार की जाए।

3.7. बुन्देलखण्ड क्षेत्र की शिक्षा पर एक दृष्टि :–

3.7.1. बुन्देलखण्ड की प्राथमिक शिक्षा की स्थिति :–

बुन्देलखण्ड क्षेत्र की प्राथमिक शिक्षा पर केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकार की नीतियों का प्रभाव पड़ता हैं। इसलिए केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकार की नीतियों–योजनाओं का संक्षिप्त उल्लेख आवश्यक होगा –

3.7.1.1. सर्वशिक्षा अभियान (बृहत लक्ष्य, कमजोर प्रयास) :–

देश के 6 से 14 वर्ष आयु वर्ग के प्रत्येक बच्चे को वर्ष 2010 तक प्रत्येक दशा में कक्षा 1 से 8 तक की अनिवार्य शिक्षा उपलब्ध कराने के एक महत्वाकांक्षी लक्ष्य को लेकर केन्द्र सरकार द्वारा वर्ष

2000–01 के बजट में **'सर्वशिक्षा अभियान'** के क्रियान्वयन की घोषणा की गई। माह नवम्बर 2000 से इसे लागू भी कर दिया गया। इस अभियान को बल प्रदान करने के रूप में प्राथमिक शिक्षा को बच्चों के **मौलिक अधिकार** में सम्मिलित किए जाने हेतु बहुप्रतीक्षित **86वाँ संविधान संशोधन को भी वर्ष 2002–03** में राष्ट्रपति की अनुमति प्राप्त हो गई। सर्वशिक्षा अभियान की 10वर्षीय महत्वाकांक्षी योजना को अमली जामा पहनाने के लिए केन्द्र सरकार द्वारा **98000 करोड रूपये** की भारी भरकम धनराशि की व्यवस्था की गई और यथा आवश्यक राज्य सरकारों को समुचित धनराशि उपलब्ध भी कराई जाती रही है। केन्द्र सरकार द्वारा समस्त राज्य सरकारों को विश्वास में लेकर बड़े जोर–शोर से इस अभियान को लागू भी किया गया।

इस महत्वपूर्ण अभियान के अन्तर्गत सभी बच्चों को प्राथमिक शिक्षा की अनिवार्यता के साथ–साथ उसके उपयोगी होने तथा उपयुक्त गुणवत्ता युक्त होने पर भी पूरा–पूरा ध्यान देने पर जोर दिए जाने का लक्ष्य है। इस प्रकार अगले 10 वर्षों के अन्दर निर्धारित 6–14 आयु वर्ग के सभी बच्चों को निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा की समुचित व्यवस्था किए जाने हेतु, इस अभियान के अन्तर्गत सभी राज्य सरकारों की समुचित भागीदारी से, देश के 14 वर्ष तक की आयु के सभी बच्चों को निःशुल्क, सन्तोषजनक, गुणवत्तापरक शिक्षा हेतु समयबद्ध तथा समेकित प्रयास करने पर विशेष बल देते हुऐ देश भर में सर्वशिक्षा अभियान को संचालित किया गया है। मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने 2 जनवरी, 2001 के प्रस्ताव के अनुरूप प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में इसे एक राष्ट्रीय स्तर का मिशन भी बनाया है।

इस महात्वाकाँक्षी अभियान को प्रारम्भ करने के पीछे जो दर्शन रहा है उसका हम सभी लोग आसानी से अन्दाजा लगा सकते हैं। इसे हमारा दुर्भाग्य ही माना जाना चाहिए कि विश्व के सबसे बड़े लोकतन्त्र होने का गौरव प्राप्त होते हुए भी हमारे देश में अशिक्षा की विभीषिका हमारे माथे पर एक कलंक की भाँति अंकित है। यद्यपि पिछले 60 वर्षो में इसे मिटाने के लिए अनेक प्रयास भी किए गए। अनेक शिक्षा–आयोगों और समितियों का गठन किया गया। अनेक योजनाएँ और कार्यक्रम संचालित किए गए। नए–नए प्रयोगों और साक्षरता शिक्षा के प्रयास के नाम पर अरबों–खरबों की धनराशियाँ भी खर्च की गई, लेकिन स्थिति में आशातीत परिवर्तन नही हो सका है। तमाम कोशिशों के बाद हालांकि देश में साक्षरता की दर पिछले पाँच दशकों में सन् 2001 की जनगणना के अनुसार 65.37 प्रतिशत तक पहुँच गई है, लेकिन देश में निरक्षरों की संख्या अभी भी बहुत अधिक है।

केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मन्त्रालय की अप्रैल 2002 में जारी रिपोर्ट के अनुसार 6–14 वर्ष आयु वर्ग के स्कूल जाने योग्य 19 करोड बच्चें स्कूलों से बाहर हैं। **8 जुलाई 2003** को जारी **यू.एन.डी.पी. की मानव विकास रिपोर्ट 2003** के मुताबिक हमारे देश में ऐसे बच्चों की संख्या 4 करोड़ है। इस सम्बन्ध में हमारी यह एक अजीब विडम्बना रही है कि देश में साक्षरता दर में निरन्तर वृद्धि होने के बावजूद वर्ष 1991 तक निरक्षरों की संख्या में निरन्तर वृद्धि परिलक्षित हुई है। स्वतन्त्रता प्राप्ति

के बाद पहली बार वर्ष 2001 की जनगणना के आँकडों के अनुसार अभी देश में निरक्षरों की कुल संख्या में कमी आई है, परन्तु अभी भी देश में निरक्षरों की संख्या में आशा के अनुरूप कमी नहीं आ सकी। जिसके पीछे प्रमुख कारण यह रहा कि जिस गति और प्रतिबद्धता से हमे इस दिशा में प्रयास करने चाहिए थे वह नहीं किए जा सके और हमारी साक्षरता योजनाओं की प्रभावशीलता एवं विश्वसनीयता उपयुक्त स्तर की नहीं बन पाई।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के साथ ही हमने इस दिशा में जो विशेष प्रयास किए उनमें शिक्षा के व्यापक प्रसार के लिए भारतीय संविधान में नीति निर्देशक तत्वों के अन्तर्गत यह व्यवस्था की गई थी कि राज्य 10 वर्षों तक के बच्चों के लिए निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा की व्यवस्था करेगा। इसका तात्पर्य था कि देश के 6–14 आयु वर्ग के सभी बच्चे वर्ष 1960 तक विद्यालयों में नामांकित हो जाएगें। यह समय सीमा कालान्तर में 1960 से बढ़ाकर 1972 तत्पश्चात् 1976 तथा पुनः 1990 कर दी गई। वर्ष 1986 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति में 8 वर्षीय अनिवार्य शिक्षा की समयावधि का विभाजन करके 1990 तक पाँचवीं कक्षा तक की शिक्षा तथा 1995 तक आठवीं कक्षा तक की शिक्षा को सर्वसुलभ बनाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया। वर्ष 1992 में इस समय–सीमा को पुनः बढ़ाकर वर्ष 2000 तक निश्चित किया गया।

अब **'सर्व शिक्षा अभियान'** नामक नए कार्यक्रम के अन्तर्गत इसे और भी आगे बढाते हुए वर्ष **2010** तक इस लक्ष्य को प्राप्त करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इससे साफ जाहिर है कि प्रारम्भ से ही प्राथमिक शिक्षा को जितनी प्राथमिकता दिया जाना अपेक्षित था वह सम्भव नहीं हो पाया अथवा उसके प्रति प्रशासनिक और राजनितिक प्रतिबद्धता का अभाव रहा और कमोवेश इसी प्रकार की सम्भावनाऐं अब सर्वशिक्षा अभियान की विभिन्न राज्यों में और विशेष कर उत्तरी भारत के राज्यों में इसके क्रियान्वयन की प्रारम्भिक स्थिति में दिखाई देने लगीं हैं।

3.7.1.2. सर्वशिक्षा अभियान के प्रमुख लक्ष्य –

देश में सभी बालकों को प्राथमिक शिक्षा की समुचित व्यवस्था किए जाने हेतु सरकार द्वारा पूर्व में यों तो अनौपचारिक शिक्षा योजना (1979), ऑपरेशन ब्लैक बोर्ड योजना (1987), बेसिक शिक्षा परियोजना (1993), जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम (1994), मध्याह भोजन योजना (1995), शिक्षा गारन्टी योजना (1999) जैसी कई महत्वपूर्ण योजनाऐं और कार्यक्रम संचालित किए गए हैं और इनका कई क्षेत्रों में कुछ अनुकूल प्रभाव भी दृष्टिगोचर हुआ है। सर्वशिक्षा अभियान से कई प्रकार के उद्‌देश्यों की पूर्ति की सम्भावनाएं व्यक्त की गईं। संक्षेप में सर्वशिक्षा अभियान के निम्नांकित उद्‌देश्य निर्धारित किए गए हैं –

1. देश के 6 से 14 वर्ष की आयु वर्ग के सभी बच्चों को कक्षा 1 से 8 तक की निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा की वर्ष 2010 तक समुचित व्यवस्था करना।

2. वर्ष 2010 तक प्रत्येक दशा में बालक और बालिकाओं में शैक्षिक असमानता और सामाजिक भेद–भाव मिटाने के लिए सभी व्यवस्थायें सुनिश्चत करना।
3. सभी 6 से 11 वर्ष तक की आयु आयु के बच्चों को प्रत्येक दशा में 1 से 5 तक की पाँच वर्ष की प्राथमिक शिक्षा वर्ष 2007 तक प्रदान करना।
4. वर्ष 2010 की समाप्ति तक इन सभी बच्चों को उपयोगी एवं समुचित गुणवत्ता और संस्कार–युक्त शिक्षा प्रदान करना।
5. 6 से 14 वर्ष तक की आयु के सभी बच्चों को 8 वर्ष तक की उच्च प्राथमिक स्तर तक की शिक्षा पूर्ण करना।
6. प्रारम्भिक स्तर पर सभी बच्चों को जीवनोपयोगी और समाजोपयोगी समुचित गुण–स्तर की शिक्षा की व्यवस्था करना।
7. प्राथमिक तथा उच्च प्राथमिक स्तर तक की (कक्षा 8 तक की) शिक्षा पूर्ण करने तक प्रत्येक दशा में सभी ऐसे बच्चों को विद्यालय में अध्ययनरत् रखना।
8. सभी अवशिष्ट बच्चों को वर्ष 2003 तक **'स्कूल शिक्षा गारन्टी'** केन्द्र की उपलब्धता सुनिश्चित करना।
9. वर्ष 2003 तक ऐसे सभी बच्चों को जो स्कूल से ड्राप–आउट हो गए हैं, को वैकल्पिक स्कूल 'बैक टू स्कूल' शिविर की उपलब्धता सुनिश्चित करना।
10. प्राथमिक शिक्षा के मौजूदा ढाँचे का समुचित प्रकार से उपयोग करते हुए इस अभियान के माध्यम से शिक्षा सम्बन्धी सभी प्रयासों को एक सूत्र में बाँधते हुए इसे अधिक क्रियाशील बनाना।

3.7.1.3. क्रियान्वयन की वर्तमान स्थिति –

सर्वशिक्षा अभियान 98000 करोड़ रूपये की 10 वर्षीय महत्वाकाँक्षी योजना है। इसकी लगभग आधी से अधिक अवधि अर्थात 7 वर्ष का समय व्यतीत हो गया है। यदि इस अभियान की इस अवधि की उपलब्धियों पर दृष्टिपात किया जाए तो स्थित काफी निराशा जनक प्रतीत होती है। इस अभियान के विभिन्न राज्यों में स्वयं केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्रालय की समय–समय पर जारी समीक्षा रिपोर्टो और उच्च स्तरों से जारी वक्तव्यों के अध्ययन से ऐसा प्रतीत होता है कि अधिकांश राज्य सरकारों द्वारा इस अभियान के क्रियान्वयन हेतु अपेक्षित पहल नही की जा रही है। उल्लेखनीय है कि सर्वशिक्षा अभियान के समुचित क्रियान्वयन की जिम्मेदारी सम्बन्धित राज्य सरकारों के सुपुर्द की गई है। लेकिन खास तौर से उत्तर प्रदेश, दिल्ली, बिहार, उडीसा, पंजाब, गोवा और झारखण्ड, जैसे राज्यों में राज्य सरकारों का इस योजना के क्रियान्वयन के प्रति रवैया सन्तोष जनक नहीं रहा है।

केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मन्त्रालय द्वारा जारी ताजा रिपोर्ट के अनुसार देश में स्कूल न जाने वाले बच्चों में से बिहार में 46 लाख, उत्तर प्रदेश में 40लाख, पश्चिम बंगाल में 30 लाख, उड़ीसा में 20 लाख, असम में 13 लाख, झारखण्ड में 10 लाख, मध्य प्रदेश में 7 लाख और राजस्थान में 8

लाख बच्वें अभी भी स्कूलों से दूर हैं। इसी प्रकार देश भर में स्कूल जाने से वंचित बच्चों में आधे तो उत्तर प्रदेश, बिहार एवं पश्चिम बंगाल के ही हैं। शिक्षा से सर्वाधिक वंचित बच्चों के राज्य बिहार के सन्दर्भ में मानव संसाधन विकास मन्त्रालय की इस रिपोर्ट में मन्तव्य रहा है कि इस अभियान के क्रियान्वयन के प्रति राज्य सरकार का रूख अधिक गम्भीर नहीं है, बल्कि उससे अधिक वहाँ की स्थानीय संस्थायें अधिक गम्भीर प्रतीत होती हैं। मन्त्रालय की नजर में शिक्षकों के अनेक पद खाली होने के कारण भी बिहार में इस योजना का भली–भाँति क्रियान्वयन सम्भव नहीं हो पाया है।

उत्तर प्रदेश के सम्बन्ध में केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मन्त्रालय का स्पष्ट मत रहा है कि वहाँ अधिकारियों की फटाफट–तबादला नीति, हजारों रिक्त पड़े शिक्षकों के पद और बढ़ते शिक्षक–छात्र अनुपात ने इस अभियान के क्रियान्वयन को बुरी तरह प्रभावित किया है। इस सम्बन्ध में मन्त्रालय द्वारा उत्तर प्रदेश सरकार को प्रेषित एक पत्र के मजमून से यह स्थिति पूर्णतः स्पष्ट हो जाती है, जिसमें उत्तर प्रदेश सरकार से अपेक्षा की गई है कि सरकार शिक्षकों के 90 हजार रिक्त पदों के लिए शीघ्र भर्तियाँ करे, जो वर्षों से खाली पड़े हैं। क्योंकि इसके चलते राज्य में शिक्षक–छात्र अनुपात 1:80 तक पहुँच गया है जबकि आदर्श स्थिति 1:40 की ही निर्धारित है। उल्लेखनीय है कि उत्तर प्रदेश का शिक्षक–छात्र अनुपात देश में सर्वाधिक है और इसको आदर्श स्थिति में लाने के लिए यहाँ लगभग 1.5 लाख नए शिक्षकों की नियुक्ति अपरिहार्य होगी। लेकिन चिन्तनीय स्थिति यह है कि यहाँ न तो शिक्षकों की नियुक्ति की कोई समुचित प्रक्रिया ही चल रही है और न ही वैकल्पिक शिक्षा केन्द्रों को खोलने के लिए कोई उत्सुकता दिखाई जा रही है। इस सम्बन्ध में एक और विशेष तथ्य यह भी है कि इस अभियान को लागू करते समय प्रदेश सरकार द्वारा दलित बच्चों और विशेष रूप से बालिकाओं पर जोर दिये जाने की बात की गई थी लेकिन यह विडम्बना ही है कि प्रदेश में स्कूलों से दूर रहे बच्चों में अधिक तादाद इन्हीं वर्गों की है।

उत्तर प्रदेश और बिहार जैसे पिछड़े राज्यों के अतिरिक्त मन्त्रालय की नजर में दिल्ली, पंजाब और गोवा जैसे राज्यों में भी खास प्रतिबद्धता दिखाई नहीं दे रही है। इसीलिये ऐसे सम्पन्न और विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं के मामले में क्रियाशील रहने वाले राज्यों में भी इस योजना के क्रियान्वयन की स्थिति अच्छी नहीं है। इस अभियान के अन्तर्गत सबसे पहला कार्य जो सम्बन्धित राज्य सरकार को करना था, वह स्कूल से दूर रह गए बच्चों की संख्या का सर्वेक्षण के माध्यम से सही–सही अन्दाजा लगाना था। यद्यपि अधिकांश राज्यों में घर–घर सर्वेक्षण करवाकर यह अन्दाजा लगा लिया है कि स्कूल से दूर रहे बच्चों की संख्या वहाँ लगभग कितनी हैं लेकिन दिल्ली और गोवा में इस प्रकार के प्रारम्भिक सर्वेक्षण भी राज्य सरकारों द्वारा अब तक नहीं करवाए गए हैं। विभिन्न योजनाओं के क्रियान्वयन में अग्रणी रहने वाली पंजाब सरकार द्वारा भी इस योजना के प्रति गम्भीरता नहीं दिखाई गई है। वर्ष 2001–02 में इस योजना के अन्तर्गत केन्द्र सरकार द्वारा उसको जो भी धनराशि उसे जारी की गई वह उसके द्वारा खर्च ही नहीं की गई। इतना ही नहीं केन्द्र सरकार द्वारा प्रदत्त यह धनराशि उसके क्रियान्वयन समिति को हस्तान्तरित करने में ही एक वर्ष का समय लगा दिया। आन्ध्र

प्रदेश, झारखण्ड और पश्चिम बंगाल द्वारा भी जारी धनराशि का ससमय सदुपयोग करने में काफी कोताही बरती गई है।

इससे साफ तौर पर स्पष्ट हो जाता है कि सर्वशिक्षा अभियान नितान्त अपरिहार्य और जनोपयोगी महत्वपूर्ण योजना के समुचित और प्रभावी रूप से क्रियान्वयन में अधिकांश राज्यों और विशेष रूप से उत्तर भारत के राज्यों द्वारा रुचि नहीं दिखाई गई और इसीलिये वहाँ इस योजना का प्रभावी क्रियान्वयन नहीं हो पा रहा है। अब जबकि 86 वें संविधान संशोधन द्वारा 6–14 वर्ष आयु वर्ग के सभी बच्चों को निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा उनका मौलिक अधिकार बना दिया गया है तो सभी राज्य सरकारों को अपने यहाँ सभी बच्चों को शिक्षा प्रदान करने के संवैधानिक दायित्व के निर्वहन हेतु सर्वशिक्षा अभियान के क्रियान्वयन में विशेष रूप से रुचि लेनी चाहिए।

3.7.1.4. उत्तर प्रदेश में प्राथमिक शिक्षा की स्थिति :–

संविधान के अनुच्छेद –45 में राज्य के नीति निर्देशक तत्वों के अन्तर्गत यह व्यवस्था बनाई गई थी कि संविधान को अंगीकृत करने के 10 वर्ष के अन्दर 6–14 वय वर्ग के सभी बालक/बालिकाओं के लिए निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा की व्यवस्था की जायेगी किन्तु 61 वर्ष बीत जाने के बाद भी इस लक्ष्य को प्राप्त नहीं किया जा सका। यह ठीक है कि 1986 में जब राष्ट्रीय शिक्षा नीति बनी थी तब से लेकर अब तक विशेष रूप से प्राथमिक शिक्षा के सत्र में काफी सुधार हुआ हैं। वैसे प्रत्येक पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत प्रारम्भिक शिक्षा के सर्व–सुलभीकरण और सभी के लिए शिक्षा के लक्ष्य की पूर्ति के लिए सर्व शिक्षा अभियान अपनाया गया है। यह अभियान क्रान्तिकारी है। इस अभियान के अन्तर्गत सभी बच्चें स्कूलों तथा वैकल्पिक शिक्षा केन्द्रों में होगें लक्ष्य यह भी है कि 6–14 वय वर्ग के सभी बच्चें पाँच वर्ष की प्रारम्भिक शिक्षा पूरी कर ले साथ ही यह भी सुनिश्चित किया जा रहा है कि 2010 तक ऐसी स्थिति आ जाये कि जो बच्चें स्कूल जाने लगे वे स्कूल जाना बंद न कर दें।

सर्व शिक्षा अभियान को सफल बनाने के लिए संविधान में संशोधन की आवश्यकता थी, जिसके लिए भारतीय संविधान का 86वाँ (संशोधनों की संख्या के आधार पर 93वाँ) संशोधन विधेयक संसद में पारित कर दिया गया है और इसके साथ ही एक ऐसी क्रान्तिकारी व्यवस्था का सूत्रपात हुआ जिसके तहत 6–14 वय वर्ग के बालक/बालिकाओं को निःशुल्क और अनिवार्य रूप से शिक्षा दिये जाने की व्यवस्था करना राज्य सरकारों का कर्तव्य होगा।

राज्य सरकार द्वारा 6–14 वय वर्ग के सभी बच्चों को प्राथमिक शिक्षा उपलब्ध कराने में उच्च प्राथमिकता प्रदान करते हुए कार्यक्रमों का निर्धारण कर अपनी प्रतिबद्धता को प्रदर्शित किया गया है। जहाँ वर्ष 1950–51 में 34833 प्राथमिक/उच्च प्राथमिक विद्यालयों में 287526 बच्चें अध्ययन कर रहे थे वहीं उनकी संख्या 2006–07 में 181487 विद्यालयों में अध्ययनरत बच्चों की संख्या 35890437 तक

पहँच जाने का लक्ष्य है। इसी प्रकार वर्ष 1950–51 में 84804 अध्यापक शिक्षण कार्य कर रहे थे वहीं उनकी संख्या 2006–07 में 415990 हो गयी है।

शिक्षा के सार्वभौमीकरण के लक्ष्य को सामने रखते हुए राज्य सरकार द्वारा वर्ष 1996 में प्रत्येक 300 आबादी और 1.5 कि0मी0 की दूरी पर प्राथमिक विद्यालय की सुविधा उपलब्ध न होने पर एक प्राथमिक विद्यालय उपलब्ध कराने एवं 3 कि0मी0 की दूरी तथा 800 की आबादी पर एक उच्च प्राथमिक विद्यालय की स्थापना का मानक निर्धारित करते हुए एक त्वरित सर्वेक्षण कराया गया। जनपदों में सर्वेक्षण के आधार पर प्राथमिक विद्यालयों की स्वीकृतियाँ राज्य सरकार द्वारा प्रदान की गयी है। वर्तमान **शासनादेश संख्या 20/79–5–2006–198/2006 दिनांक 2–2–2006** द्वारा नवीन प्राथमिक विद्यालयों की स्थापना में 1.5 कि0मी0 की दूरी के स्थान पर 1 कि0मी0 तथा नवीन उच्च प्राथमिक विद्यालय की स्थापना हेतु 3 कि0मी0 के स्थान पर 2 कि0मी0 दूरी निर्धारित की गयी है।

प्रदेश में 6–14 वर्ष की आयु तक के बच्चों को अनिवार्य रूप से निःशुल्क शिक्षा प्रदान करने हेतु प्रारम्भिक शिक्षा के सार्वजनीकरण के कार्यक्रमों को सर्वाधिक वरीयता प्रदान की गई है। इस हेतु शिक्षा के वार्षिक बजट का अधिकांश भाग इस महत्वपूर्ण कार्यक्रम पर व्यय करने का उददेश्य है।

शिक्षा कार्य में चिन्हित कारणों से उत्पन्न ह्रास एवं अवरोध को समाप्त करने के लिऐ वर्तमान में पूर्ववर्ती कार्यक्रमों को और अधिक प्रभावोत्पादक एवं उपयोगी बनाने हेतु विद्यालयों की धारण क्षमता से अभिवृद्धि की जानी है।

अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों तथा पिछड़ें वर्गों के बालक/बालिकाओं को विद्यालयों में प्रवेश दिलाने में विशेष बल दिया जाता है।

कक्षा 1 से 5 तक के सभी वर्ग के शिक्षार्थियों को निःशुल्क पाठ्य पुस्तक एवं कक्षा 6 से 8 तक सभी शिक्षार्थियों को निःशुल्क पाठ्य पुस्तक वितरण की व्यवस्था है। इसके साथ ही साथ मध्यान्ह् पोषाहार एवं छात्रवृत्तियों की अधिकाधिक व्यवस्था की जाती है।

3.7.1.1.1. <u>शिक्षा मित्र योजना</u> :–

प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमिकरण के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए प्राथमिक विद्यालयों में निर्धारित मानकानुसार छात्र अनुपात को बनाये रखने एवं ग्रामीण युवा शक्ति को अपने ही ग्राम में शिक्षा जगत की सेवा का अवसर उपलब्ध कराने हेतु उन्हें उत्प्रेरित करने के लक्ष्य को दृष्टिगत रखते हुए शिक्षा मित्र योजना का कार्यान्वियन वर्ष 2000–01 में प्रारम्भ किया गया। उक्त योजना 2006–07 से नगर क्षेत्रों में भी लागू की गयी है।

बेसिक शिक्षा परियोजना (बी0ई0पी0) एवं बेसिक शिक्षा निदेशालय के अन्तर्गत कुल स्वीकृत 19865 शिक्षा मित्रों के सापेक्ष 17661 शिक्षा मित्र शिक्षण कार्य कर रहे है। शिक्षा मित्रों का चयन ग्राम शिक्षा समिति/नगर वार्ड समिति द्वारा संस्तुति/प्रस्ताव करने के उपरान्त जिला स्तरीय समिति द्वारा अनुमोदन किये जाने के पश्चात किया जाता है।

चयनित शिक्षा मित्रों को जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान द्वारा 30 दिवसीय प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। प्रशिक्षणोपरान्त सम्बन्धित ग्राम शिक्षा समिति शिक्षा मित्र को ग्राम पंचायत के अधीन जिस विद्यालय हेतु चयनित किया गया है में शिक्षण कार्य करने की अनुमति प्रदान करती है। चयनित शिक्षा मित्र का कार्यकाल चालू शिक्षा सत्र के माह मई के अन्तिम कार्य दिवस को स्वतः समाप्त हो जाती है तथा उसके कार्य, व्यवहार एवं आचरण से संतुष्ट होने पर जिला स्तरीय समिति को प्रस्ताव प्रेषित करती है। जिसकी अनुमति के पश्चात सम्बन्धित शिक्षा मित्र की पुनः अगले शिक्षा सत्र में 15 दिवसीय प्रशिक्षण प्रदान करने के उपरान्त शिक्षण कार्य करने की अनुमति प्रदान की जाती है।

चयनित शिक्षा मित्र को प्रथम 30 दिवसीय प्रशिक्षण अवधि में रू0 400/- एवं 15 दिवसीय प्रशिक्षण पुनर्बोधात्मक प्रशिक्षण अवधि में रू0 750/- तथा शिक्षण अवधि में रू0 3000/- प्रतिमाह की दर से मानदेय का भुगतान किया जाता है। शिक्षा मित्रों के प्रशिक्षण एवं मानदेय के भुगतान हेतु रू0 4900.00 लाख के बजट का प्राविधान किया गया है। जिसके सापेक्ष शासन द्वारा रू0 4900.00 लाख की स्वीकृति निर्गत की गई।

3.7.1.1.2. **निःशुल्क पाठ्य पुस्तक की व्यवस्था** :–

कक्षा 1 से 5 तक के परिषदीय विद्यालयों में अध्ययनरत सामान्य वर्ग के बालकों में वर्ष 2001–02 में निःशुल्क पाठ्य–पुस्तकों के वितरण हेतु रू0 550.75 लाख की धनराशि व्यय हुई थी जिसके प्रति 2061656 छात्र लाभान्वित हुए थे। वर्ष 2005–06 में **शासनादेश संख्या 535/75-5-2005-60 (30)/96 दिनांक 14.2.05** द्वारा निर्णय लिया गया कि अब सामान्य वर्ग के बालकों में पाठ्य–पुस्तक वितरित किये जाने की स्थायी व्यवस्था सुनिश्चित की जाए जिसके तहत रू0 2000.00 लाख की धनराशि वर्ष 2005–06 के लिए स्वीकृत की गई जिसमें से रू0 1882.87 लाख व्यय हुआ तथा 6528714 छात्र लाभान्वित हुए। इसी प्रकार वर्ष 2006–07 में कक्षा 1 से 5 तक के सामान्य वर्ग के बालकों में निःशुल्क पाठ्य–पुस्तक वितरण हेतु रू0 22 करोड़ की धनराशि स्वीकृति हुई जिसमें से रू0 2192.79 लाख व्यय हुआ तथा 6724042 छात्र लाभान्वित हुए। कक्षा 6 से 8 तक के लिए रू0 2115 लाख की धनराशि स्वीकृति हुई और सम्पूर्ण धनराशि व्यय हुई जिसके प्रति 1197812 छात्र लाभान्वित हुए। इस प्रकार वर्ष 2006–07 में कक्षा 1 से 8 तक में कुल 2,38,36,532 छात्र लाभान्वित हुए।

3.7.1.1.3. <u>उपयोगी सुझाव</u> :–

सर्वशिक्षा अभियान के क्रियान्वयन की अभी तक की प्रगति पर नजर डालने पर ऐसा प्रतीत होता है कि इस महत्वाकांक्षी अभियान के क्रियान्वित होने पर भी प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण का चिर प्रतीक्षित लक्ष्य इस बार भी निर्धारित समय–सीमा अर्थात् वर्ष 2010 तक पूरा किया जाना सम्भव नही हों पाएगा। पूर्व के भी सभी शिक्षा से सम्बन्धित कार्यक्रम क्रियान्वित हुए हैं या हो रहे हैं, उनके अनुभव हमें इस महत्वपूर्ण अभियान की सफलता सुनिश्चित करने हेतु कुछ अतिरिक्त प्रयास करने और कुछ विशेष व्यवस्थाएं निर्धारित करने के लिए आमन्त्रित करते प्रतीत हो रहे हैं इस हेतु निम्नलिखित सुझावों पर विचार किया जाना समीचीन लगता है –

1. सर्वशिक्षा अभियान की सफलता सुनिश्चित करने हेतु आवश्यक है कि जिस उत्साह और भावना के साथ इस अभियान के प्रारम्भ करने की सरकार द्वारा घोषणाएं की जाती रही हैं, इसे पूरा होने तक उसी रूप में बनाए रखा जाए। इसके लिए इस अभियान के प्रति राजनीतिक प्रतिबद्धता पूरी तरह बनाए रखना बहुत जरूरी है। यदि राजनीतिक प्रतिबद्धता को बनाये रखा जा सका तो इस अभियान की सफलता की आशाएँ की जा सकतीं हैं।

2. अभियान की सफलता सुनिश्चित करने हेतु दूसरे स्तर पर प्रशासनिक प्रतिबद्धता होना भी आवश्यक है। प्रशासनिक प्रतिबद्धता बनाए रखने के लिए प्रशासनिक अधिकारियों का इस अभियान के प्रति भावनात्मक लगाव पैदा करने के लिए प्रयत्न किए जाने चाहिए क्योंकि इसके बिना सफलता मिलना सन्देहास्पद रहेगा।

3. हर हालत में देश के प्रत्येक गाँव में प्राथमिक विद्यालय की उपलब्धता और उसमें पर्याप्त आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराना सुनिश्चित किया जाना चाहिए। हालांकि हर गाँव में विद्यालय खोलने हेतु 'शिक्षा गारण्टी स्कीम' वर्ष 1999 से केन्द्र सरकार द्वारा प्रायोजित योजना के तौर पर संचालित की गई है। लेकिन अतिशीघ्र सभी गाँवों में पर्याप्त संसाधनों से युक्त विद्यालय खोलने हेतु इस तरह के कार्यक्रमों में तेजी लाना जरूरी है अन्यथा सभी बच्चों का दूर–दूर स्थित प्राथमिक विद्यालयों में जाकर शिक्षा प्राप्त करना सम्भव नहीं हो पाएगा और सर्वशिक्षा अभियान का लक्ष्य समय पर पूरा नहीं होगा।

4. सरकार द्वारा प्राथमिक शिक्षा को कानूनी रूप से अनिवार्य घोषित करने हेतु 86वाँ संविधान संशोधन पास अवश्य कर दिया गया है लेकिन इसमें ऐसी व्यवस्था भी निर्धारित की जानी चाहिए जिसमें निर्धारित आयु वर्ग के बच्चों को स्कूल भेजने की जिम्मेदारी अभिभावकों, अध्यापकों, ग्राम प्रधानों, पंचायत सदस्यों, नगर पालिका अध्यक्षों, जिलाधिकारियों, विधायकों एवं सांसदों की रहे तथा अनुपालन न करने पर कठोर कार्यवाही किए जाने का प्रावधान

किया जाए अन्यथा किन्हीं न किन्हीं निहित कारणों से सभी बच्चें स्कूल नहीं जा पायेंगे और सर्वशिक्षा अभियान की सफलता प्रभावित हुए बिना नहीं रहेगी।

5. सभी प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षकों की पर्याप्त मात्रा में आपूर्ति प्राथमिकता के तौर पर सुनिश्चित की जानी चाहिए। हमेशा से इस बात को सरकार स्वीकार करती रही है कि विद्यालयों में शिक्षकों की भंयकर कमी है। उसे शीघ्र दूर करने की घोषणाएँ भी की जाती रही हैं लेकिन यथार्थ यह है कि यह कमी पूरा करना कभी भी सम्भव नहीं हो पाया। जो नियुक्तियाँ होती भी हैं तो इतनी कम मात्रा में, कि उससे आदर्श शिक्षक–छात्र अनुपात की पूर्ति नहीं हो पाती है। अतः इस ओर ध्यान दिया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त शिक्षकों से इस अभियान में भरपूर सहयोग करने के लिए पर्याप्त अभिप्रेरणा के साथ–साथ कठोरता पूर्वक दायित्वों के निर्वहन के लिए विवश किए जाने हेतु आवश्यक व्यवस्थाएँ भी निर्धारित की जानी चाहिए।

6. आमतौर पर योजनाओं के क्रियान्वयन को वित्तीय संसाधनों की पर्याप्तता और ससमय उनका प्रवाह, काफी हद तक प्रभावित करता है। यह अभियान एक 10वर्षीय लम्बी अवधि की योजना है। अतः इस प्रमुख अभियान की सफलता हेतु आवश्यक वित्तीय संसाधनों का नियन्त्रित और ससमय प्रवाह सुनिश्चित किया जाना चाहिए जिससे किसी भी स्तर पर आवश्यक वित्तीय संसाधनों की कमी अनुभव किए जाने के कारण आवश्यक व्यवस्थाओं पर दुष्प्रभाव न पड़े।

7. अभियान की सफलता हेतु आवश्यक है कि प्रत्येक स्तर पर अनुश्रवण की नियमित, व्यावहारिक व्यवस्था कर उसका कठोरता से पालन कराया जाए। इसके अतिरिक्त सभी स्तरों पर सम्बन्धित प्रत्येक कर्मी की जवाबदेही सुनिश्चित की जाए।

8. शिक्षा के स्तर में वृद्धि करने हेतु स्वास्थ्य भी एक प्रमुख कारक है। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निर्माण होता है। अतः सरकार को वर्ष में दो–तीन बार (मौसम–परिवर्तन–काल) विद्यालय परिसर में ही छात्रों को निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण व उपचार उपलब्ध कराना चाहिए।

9. प्राथमिक शिक्षा को व्यावहारिक, रोचक, श्रेयस्कर और उपयोगी बनाने हेतु अतिशीघ्र आवश्यक कदम उठाए जाए। अर्थात रोचक, व्यावहारिक और उपयोगी पाठ्यक्रम का निर्धारण, रुचिपूर्ण पुस्तकें और पाठ्य विधियों का प्रयोग करने के लिए प्रयास किए जाऐं, ताकि इसकी ग्राह्यता में अभिवृद्धि हो सके। उल्लेखनीय है कि विभिन्न राज्य सरकारों द्वारा अभी तक इस अभियान के अन्तर्गत उठाए गए कदमों को केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मन्त्रालय द्वारा समुचित नहीं माना गया है।

10. वित्तीय संसाधनों की कमी को दृष्टिगत रखते हुए यह भी आवश्यक नहीं है कि प्राथमिक शिक्षा को पूरी तरह निःशुल्क रखा जाए। ऐसे लोग जो इसका खर्च वहन करने में सक्षम हैं उनके लिए सशुल्क लेकिन समुचित गुणवत्ता युक्त प्राथमिक शिक्षा उपलब्ध कराई जाए। गरीब और साधन विहीन लोगों के लिए इसे निःशुल्क रखने के साथ–साथ इन्हें स्टेशनरी यूनीफार्म तथा छात्रवृत्ति आदि की भी निश्चित व्यवस्था कर देनी चाहिए ताकि बच्चों के साथ–साथ उनके अभिभावकों का भी शिक्षा के प्रति पर्याप्त लगाव विकसित हो सके।

11. अभियान की सफलता हेतु प्रत्येक स्तर से इसका समुचित प्रचार–प्रसार भी किया जाना अत्यन्त आवश्यक है। इस अभियान के नियोजन और कार्यान्वयन के प्रत्येक स्तर पर और प्रत्येक चरण में चुनी हुई त्रिस्तरीय पंचायतों, स्वयंसेवी संस्थाओं, नागरिक संगठनों आदि की सहभागिता को प्राप्त करने के लिए समुचित व्यवस्था सुनिश्चित की जाए जो केवल कागजों और फाइलों में लिखा–पढ़ी और औपचारिकता मात्र न रहे बल्कि व्यवहार में उसकी परिणति होनी चाहिए। साथ ही साथ योजनाओं का संचालन इस प्रकार हो कि जनप्रतिनिधि कमीशन खोरी न कर सकें एवं शिक्षा के कार्यों में अनावश्यक हस्तक्षेप भी न कर सकें।

उपर्युक्त सुझावों पर अमल किए जाने से निश्चित ही सर्वशिक्षा अभियान की सफलता के लिए मार्ग प्रशस्त हो सकेगा। इस सम्बन्ध में यह भी विचारणीय है कि इन सभी सुझावों पर एक साथ और एक समय में अमल किया जाना व्यावहारिक दृष्टि से सम्भव भले ही न हो लेकिन एक सुनियोजित, सुविचारित और सुनिश्चित योजना के अन्तर्गत अमल में लाए जाने वाले बिन्दुओं और कदमों हेतु एक व्यावहारिक कार्य योजना तैयार कर उसे पूरी निष्ठा, तत्परता और प्रतिबद्धता के साथ लागू करने पर विचार किया जाना चाहिए।

प्राथमिक शिक्षा में अध्ययनरत छात्रों के शैक्षिक उन्नयन के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण उसका शिक्षक है, क्योंकि इस स्तर के छात्र स्वःअध्ययन में रुचि नहीं लेते साथ ही उन्हें बिना शिक्षक के विषयवस्तु को समझने में कठिनाई होती है। आदर्श शिक्षक–छात्र अनुपात 1:40 है परन्तु बुन्देलखण्ड के सात जनपदों में से किसी में भी यह आदर्श अनुपात पूरा नहीं है, सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड में शिक्षक–छात्र अनुपात 1:62 हैं, जबकि कई विद्यालय तो मात्र एक शिक्षक के सहारे चल रहे हैं जिसके कारण इन विद्यालयों से शिक्षा प्राप्त छात्रों का कक्षागत उन्नयन तो हो रहा है परन्तु उनका आशा के अनुरुप शैक्षिक विकास नहीं हो पाया है।

बुन्देलखण्ड क्षेत्र की प्राथमिक शिक्षा में केन्द्र एवं राज्य सरकार की उपरोक्त नीतियों–योजनाओं के आधार पर सत्र 2006–07 के अनुसार बुन्देलखण्ड में प्राथमिक शिक्षा की स्थिति निम्नवत् है –

सारणी क्रमांक – 3.5

बुन्देलखण्ड की जिलेवार परिषदीय प्राथमिक शिक्षा की स्थिति[80]

	बाँदा	चित्रकूट	हमीरपुर	महोबा	झाँसी	जालौन	ललितपुर	बुन्देलखण्ड
विद्यालय	1240	835	761	628	1115	1248	876	6703
छात्र	120535	70077	56718	51108	86162	74946	79416	538962
छात्रा	115953	69692	59161	50800	85214	74995	79041	534856
कुल विद्यार्थी	236488	139769	115879	101908	171376	149941	158457	1073818
शिक्षक	2008	745	1420	1112	2561	2436	1284	11566
शिक्षा मित्र	2138	1323	869	745	1724	985	1476	9260
कुल शिक्षक शिक्षा मित्र सहित	4146	2068	2289	1857	4285	3421	2760	20826
शिक्षक–छात्र अनुपात	1:57	1:57	1:51	1:55	1:40	1:44	1:57	1:52
शिक्षक–छात्र अनुपात (बिना शिक्षा मित्र)	1:118	1:188	1:82	1:92	1:67	1:62	1:123	1:93
क्लासरूम	5825	3664	3905	3127	6248	5870	4350	32989
संकुल	72	49	65	41	71	86	49	433
वंचित छात्र	1067	759	493	504	657	606	696	4782
अनुसूचित विद्यार्थी	67249	45943	43989	29389	79806	83619	42156	392151

उपरोक्त सारणी क्रमांक 3.5 से स्पष्ट है कि बुन्देलखण्ड में प्राथमिक परिषदीय विद्यालयों की संख्या 6703 कुल विद्यार्थियों की संख्या 1073818, नियमित शिक्षक 11566 एवं शिक्षा मित्र 9260 हैं। जिनके अध्ययन–अध्यापन के लिए 32589 शिक्षण–कक्ष तथा प्राथमिक शिक्षा के प्रशासन के लिए 433 संकुल है। जिसमें सबसे अधिक विद्यालयों की संख्या जालौन में 1248 तथा सबसे कम महोबा में 628 हैं। विद्यार्थी सबसे अधिक बाँदा में 236488 तथा सबसे कम महोबा में 101908 हैं। शिक्षक सबसे अधिक झाँसी में 4285 तथा सबसे कम महोबा में 1857 हैं। शिक्षक–छात्र अनुपात सबसे अच्छा जालौन में 1:62 तथा सबसे खराब चित्रकूट में 1:188 हैं, जो इस क्षेत्र की शिक्षा में असमानता को दर्शाता है।

80. सर्वशिक्षा अभियान के अर्न्तगत जिला कार्ड विवरण सूची, www.efa.nic.in

ग्राफ क्रमांक – 3.5.1.

बुन्देलखण्ड की जिलेवार परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों की स्थिति
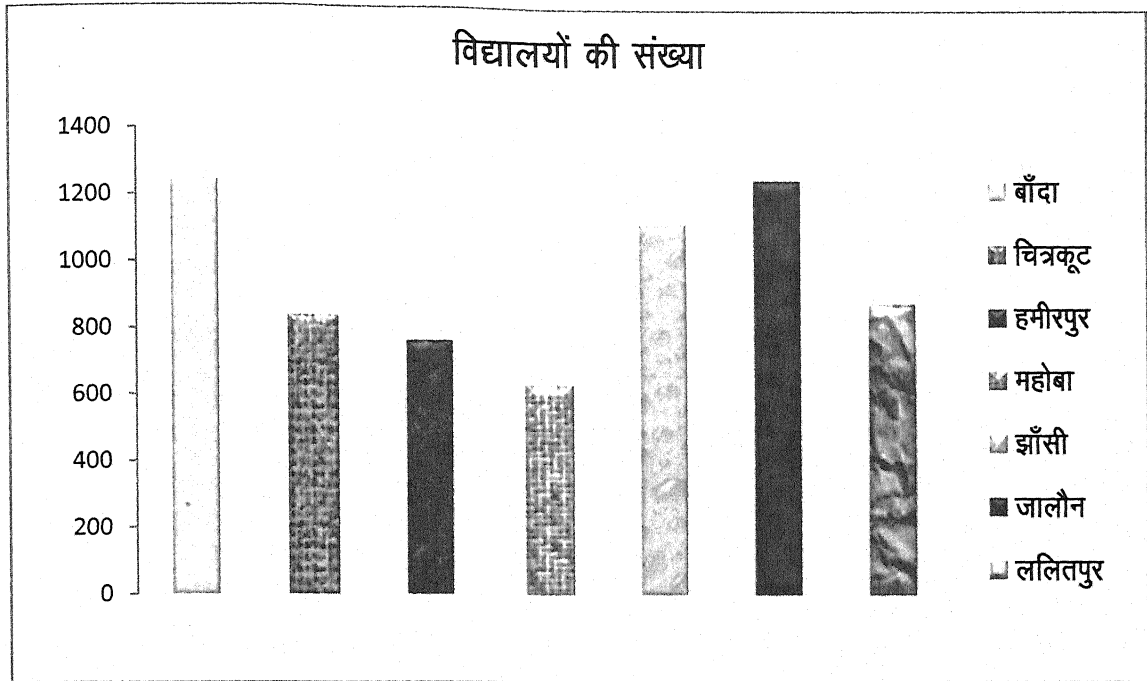
ग्राफ क्रमांक – 3.5.2.

बुन्देलखण्ड की जिलेवार परिषदीय प्राथमिक विद्यार्थियों की स्थिति
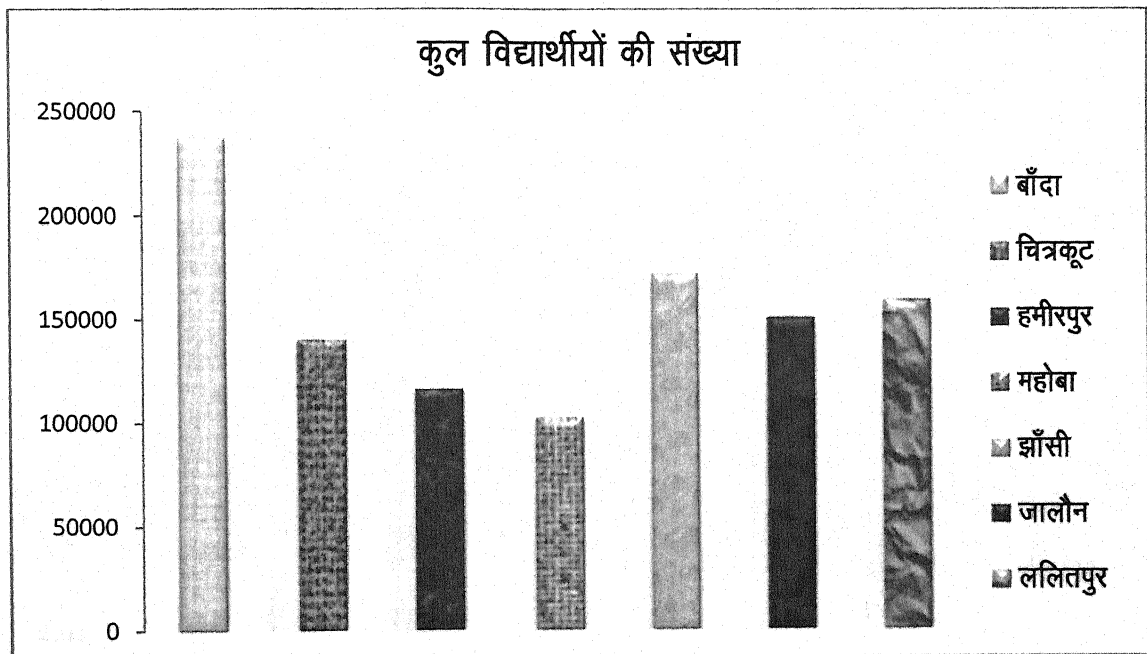
ग्राफ क्रमांक – 3.5.3.

बुन्देलखण्ड की जिलेवार परिषदीय प्राथमिक शिक्षकों की स्थिति
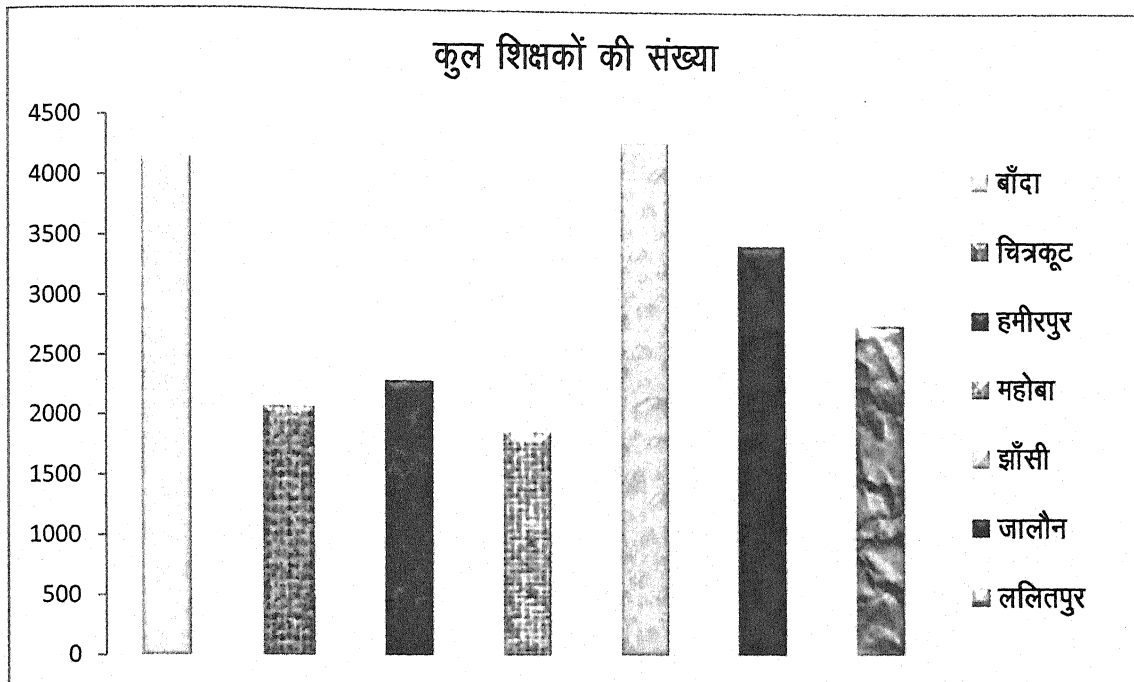
ग्राफ क्रमांक – 3.5.4.

बुन्देलखण्ड की जिलेवार परिषदीय प्राथमिक शिक्षक–छात्र अनुपात की स्थिति
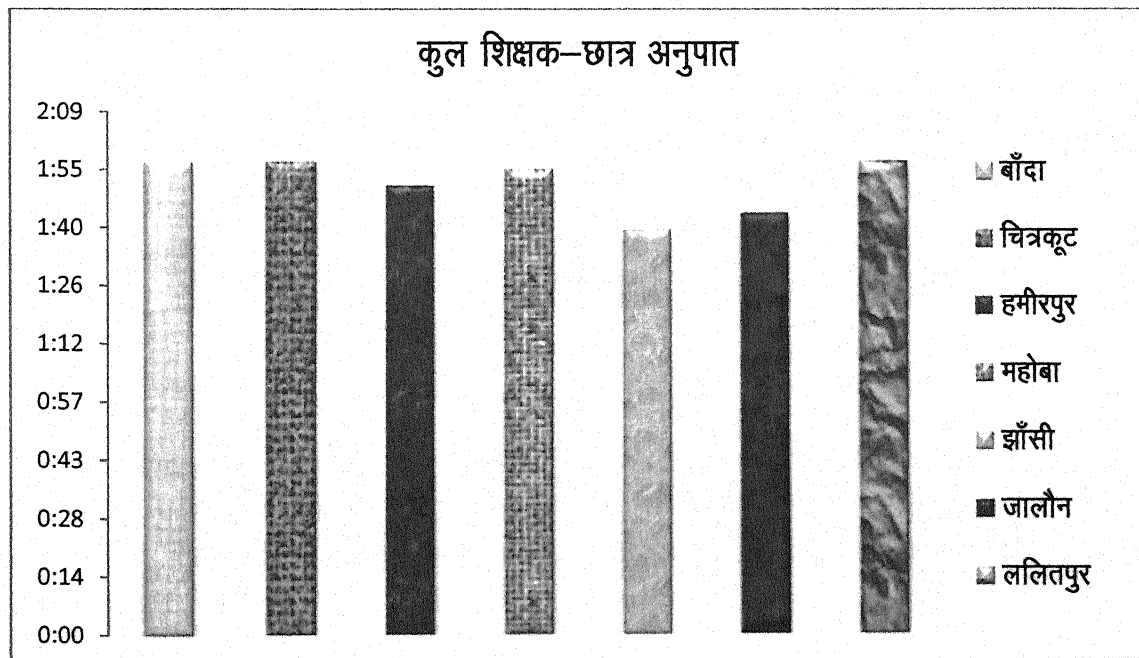
सारणी क्रमांक – 3.6

बुन्देलखण्ड में जिलेवार प्राइवेट प्राथमिक शिक्षा की स्थिति

	बाँदा	चित्रकूट	हमीरपुर	महोबा	झाँसी	जालौन	ललितपुर	बुन्देलखण्ड
विद्यालय	255	90	344	217	392	501	232	2031
छात्र संख्या	26148	8036	31004	19459	34520	51590	22337	193094
छात्रा संख्या	17421	6167	21242	12587	27445	42153	14474	141489
कुल विद्यार्थी	43569	14203	52246	32046	61965	93743	36811	334583

ग्राफ क्रमांक – 3.6

बुन्देलखण्ड में जिलेवार प्राइवेट प्राथमिक शिक्षा की स्थिति
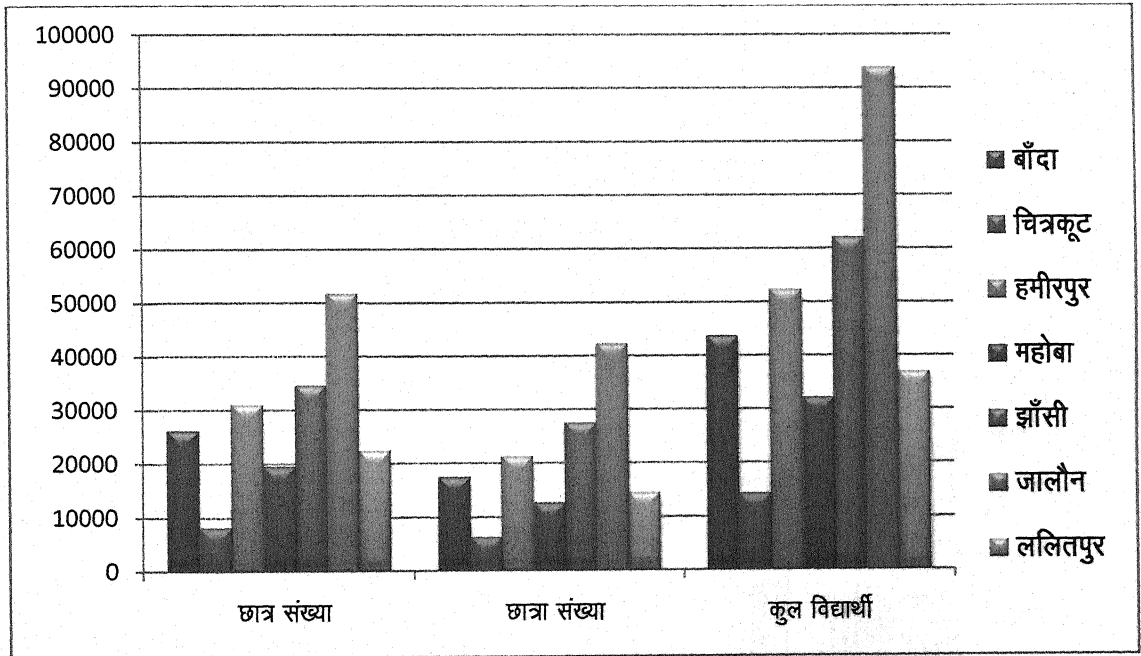
उपरोक्त सारणी क्रमांक 3.6 से स्पष्ट है कि बुन्देलखण्ड में प्राथमिक प्राइवेट विद्यालयों की संख्या 2021 कुल विद्यार्थियों की संख्या 334583 जिसमें छात्र 193094 तथा छात्राऐं 141489 है। जिसमें सबसे अधिक विद्यालयों की संख्या जालौन में 501 तथा सबसे कम चित्रकूट में 90 हैं। विद्यार्थी सबसे अधिक जालौन में 93743 तथा सबसे कम चित्रकूट में 14203 हैं।

सारणी क्रमांक – 3.7

बुन्देलखण्ड में जिलेवार परिषदीय उच्च प्राथमिक शिक्षा की स्थिति

	बाँदा	चित्रकूट	हमीरपुर	महोबा	झाँसी	जालौन	ललितपुर	बुन्देलखण्ड
विद्यालय	477	327	283	247	493	397	359	2583
छात्र संख्या	25854	19430	15987	13542	27052	19292	22113	143270
छात्रा संख्या	23216	15932	14891	10775	22709	17907	20086	125516
कुल विद्यार्थी	49070	35362	30878	24317	49761	37199	42199	268786
शिक्षक	1268	823	841	515	1174	1260	805	6685
शिक्षक–छात्र अनुपात	1:39	1:43	1:37	1:47	1:42	1:30	1:52	1:40
वंचित विद्यार्थी	362	236	157	200	221	215	242	1633
अनुसूचित विद्यार्थी	14352	11761	12989	7043	23713	21785	11614	103257

ग्राफ क्रमांक – 3.7

बुन्देलखण्ड में जिलेवार परिषदीय उच्च प्राथमिक शिक्षा की स्थिति
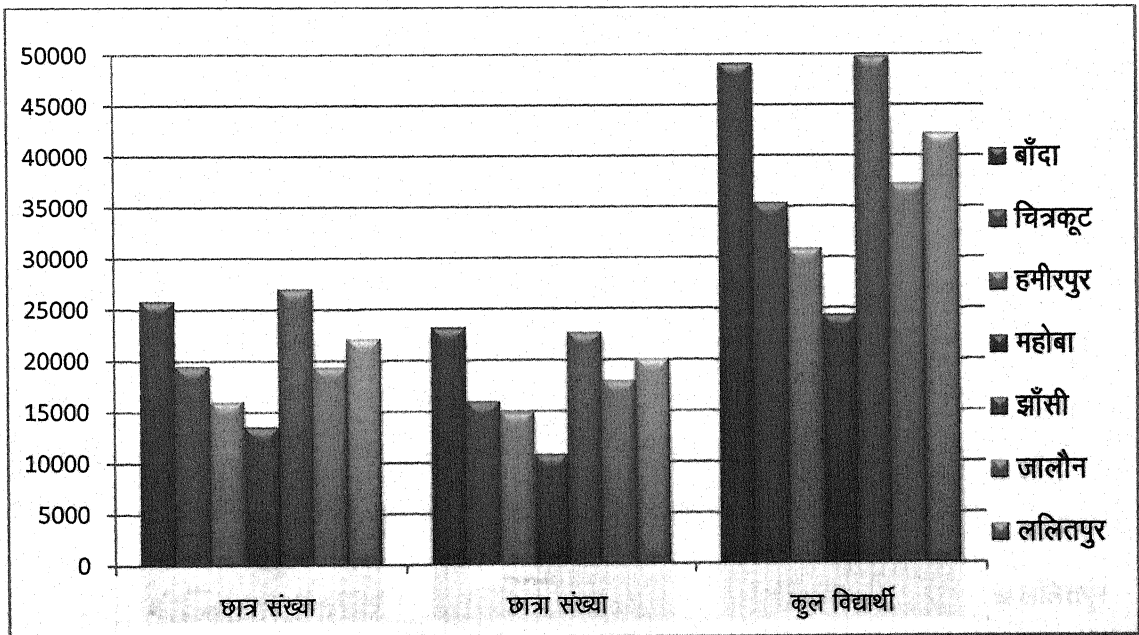
उपरोक्त सारणी क्रमांक 3.7 से स्पष्ट है कि बुन्देलखण्ड में उच्च प्राथमिक परिषदीय विद्यालयों की संख्या 2583 है जिसमें कुल विद्यार्थियों की संख्या 268786 एवं नियमित शिक्षक 6685 हैं तथा शिक्षक–छात्र अनुपात 1:40 है। जिसमें सबसे अधिक विद्यालयों की संख्या झाँसी में 493 तथा सबसे कम महोबा में 247 हैं। विद्यार्थी सबसे अधिक झाँसी एवं बाँदा में क्रमशः 49761 एवं 49070 हैं तथा सबसे कम महोबा में 24317 हैं। शिक्षक सबसे अधिक बाँदा में 1268 तथा सबसे कम महोबा में 515 हैं। शिक्षक–छात्र अनुपात महोबा ललितपुर के अलावा अन्य जनपदों में आदर्श अनुपात के करीब है।

सारणी क्रमांक – 3.8

बुन्देलखण्ड में जिलेवार प्राइवेट उच्च प्राथमिक शिक्षा की स्थिति

	बाँदा	चित्रकूट	हमीरपुर	महोबा	झाँसी	जालौन	ललितपुर	बुन्देलखण्ड
विद्यालय	82	19	147	48	147	181	65	689
छात्र संख्या	14323	4667	14616	10019	17491	24351	9826	95293
छात्रा संख्या	8181	2946	8313	5621	11888	20172	4911	62032
कुल विद्यार्थी	22504	7613	22929	15640	29379	44523	14737	157325

ग्राफ क्रमांक – 3.8

बुन्देलखण्ड में जिलेवार प्राइवेट उच्च प्राथमिक शिक्षा की स्थिति
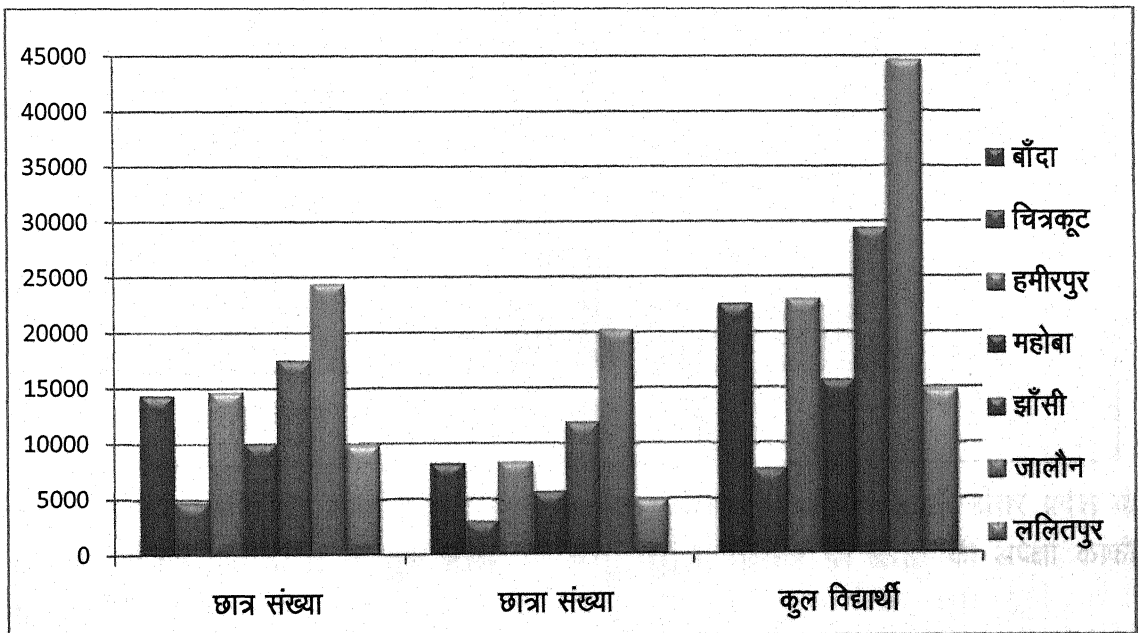
उपरोक्त सारणी क्रमांक 3.8 से स्पष्ट है कि बुन्देलखण्ड में प्राथमिक प्राइवेट विद्यालयों की संख्या 689 कुल विद्यार्थियों की संख्या 157325 जिसमें छात्र 95293 तथा छात्राऐं 62032 है। जिसमें सबसे अधिक विद्यालयों की संख्या जालौन में 181 तथा सबसे कम चित्रकूट में 19 हैं। विद्यार्थी सबसे अधिक जालौन में 44523 तथा सबसे कम चित्रकूट में 7613 हैं।

सारणी क्रमांक – 3.9

बुन्देलखण्ड की साक्षरता की प्रदेश एवं देश से तुलना (2001)

	बुन्देलखण्ड	उत्तर प्रदेश	भारत
साक्षरता प्रतिशत	60.22	57.36	65.37

ग्राफ क्रमांक – 3.9

बुन्देलखण्ड की साक्षरता की प्रदेश एवं देश से तुलना (2001)
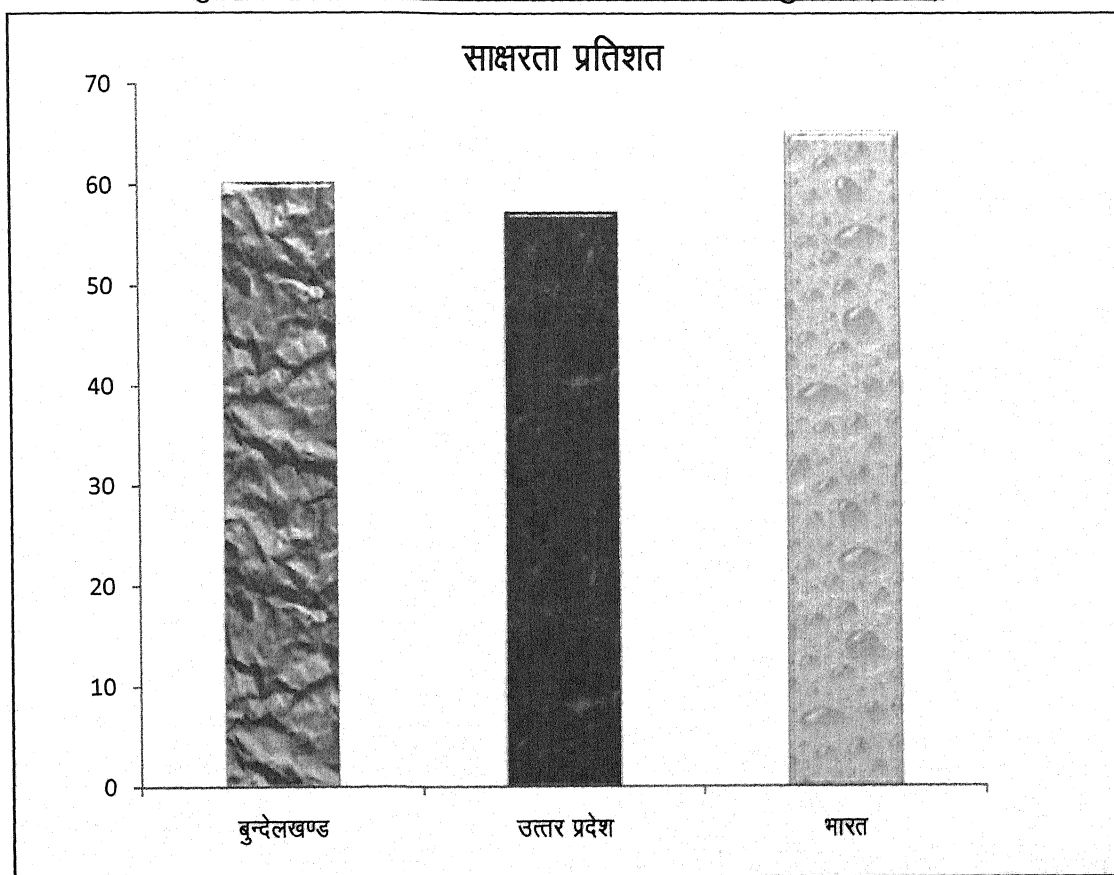
उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि बुन्देलखण्ड की साक्षरता का प्रतिशत 60.22 उत्तर प्रदेश के साक्षरता प्रतिशत प्रति 57.36 से कुछ अधिक है, परन्तु राष्ट्रीय साक्षरता दर 65.37 की अपेक्षा काफी कम है।

सारणी क्रमांक – 3.10

बुन्देलखण्ड की जनसंख्या वृद्धि की प्रदेश एवं देश से तुलना (2001)

	बुन्देलखण्ड	उत्तर प्रदेश	भारत
जनसंख्या वृद्धि दर	29.47	25.80	21.57

ग्राफ क्रमांक – 3.10

बुन्देलखण्ड की जनसंख्या वृद्धि की प्रदेश एवं देश से तुलना (2001)
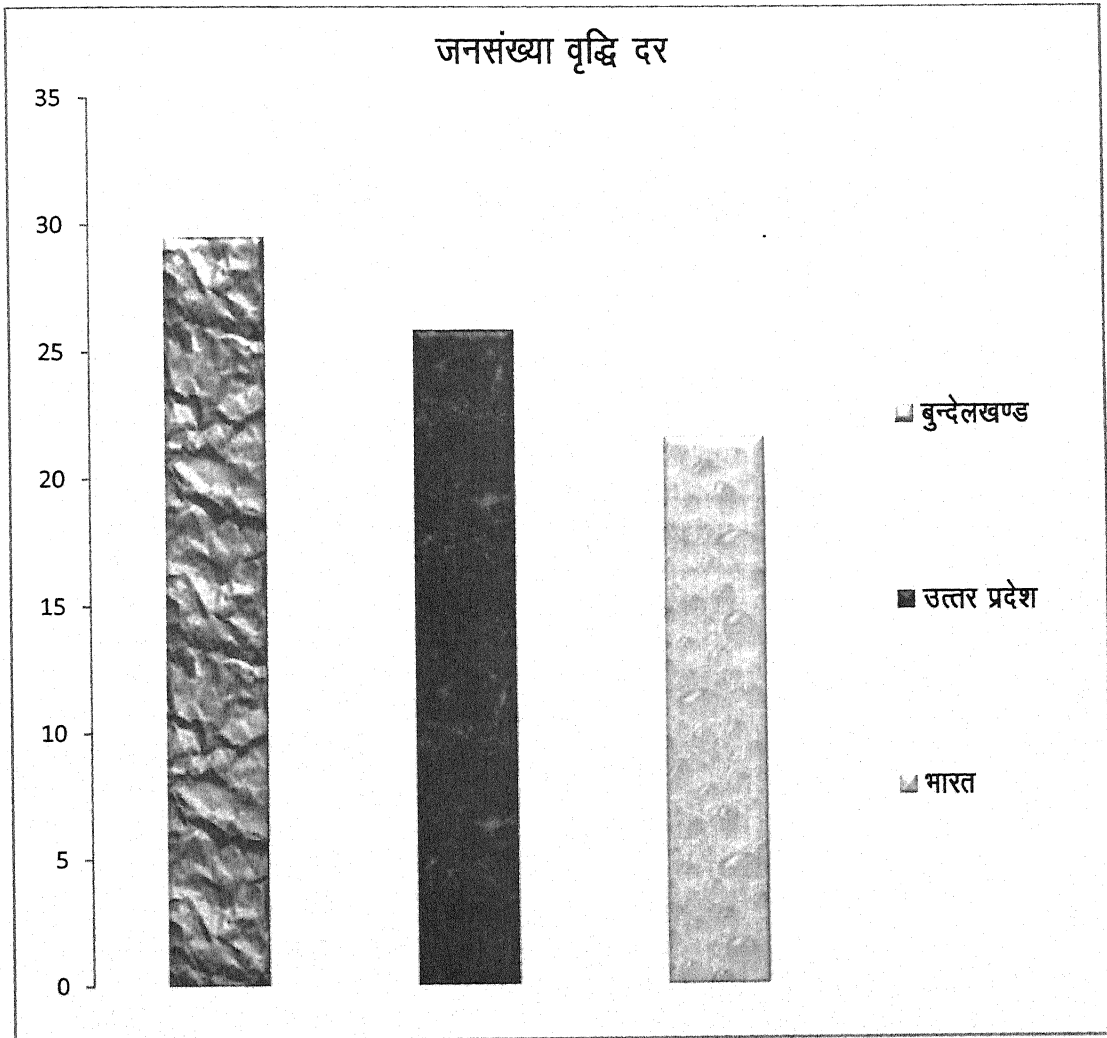
उपरोक्त सारणी एवं ग्राफ से स्पष्ट है कि बुन्देलखण्ड की दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर 29.47 है जो कि उत्तर–प्रदेश की दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर 25.80 एवं राष्ट्रीय दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर 21.57 से बहुत अधिक है, इतनी अधिक जनसंख्या वृद्धि के कारण यहाँ के निवासी शिक्षा और रोजगार से वंचित रह जाते है जिससे यहाँ के निवासियों का जीवन स्तर निम्न बना रहता है।

3.7.2. बुन्देलखण्ड की माध्यमिक शिक्षा की स्थिति :–

बुन्देलखण्ड की माध्यमिक शिक्षा की स्थिति के बारे में इस बात से अनुमान लगाया जा सकता है कि यहाँ के होनहार छात्रों को अच्छी माध्यमिक शिक्षा के लिऐ घर से दूर कानपुर, इलाहाबाद, लखनऊ जाना पड़ता है। कुछ अच्छी संस्थायें है भी तो उनमें शिक्षकों के रिक्त पदों पर समय से नियुक्ति न होने के कारण छात्र–शिक्षक अनुपात मानकानुसार नहीं है जिससे छात्रों की शिक्षा गुणवत्तापूर्ण व सुचारू रूप से नहीं चल पाती वहीं ग्रामीण परिवेश होने के कारण कुछ क्षेत्रों में 12–15 किलोमीटर की दूरी में माध्यमिक विद्यालय स्थित होने के कारण प्रायः छात्र कक्षा 5 या 8 उत्तीर्ण कर शिक्षा से इति श्री कर लेता है।

सारणी क्रमांक – 3.11

बुन्देलखण्ड में माध्यमिक शिक्षा की स्थिति (2007)

	बाँदा	चित्रकूट	हमीरपुर	महोबा	झाँसी	जालौन	ललितपुर	बुन्देलखण्ड
बालक विद्यालय	66	44	46	29	112	123	23	443
बालिका विद्यालय	21	7	15	8	28	29	9	117
कुल विद्यालय	87	51	61	37	140	152	32	560
छात्र	42268	21252	26262	10328	88262	56136	13839	258347
छात्रा	9548	8710	17737	6304	40079	37085	8615	128078
कुल विद्यार्थी	51816	29962	43999	16632	128341	93221	22454	386425
अनुसूचित छात्र	9476	3326	5865	2455	27777	14022	2970	65891
अनुसूचित छात्रा	2986	1322	3298	897	10331	8541	1117	28492
कुल अनुसूचित विद्यार्थी	12462	4648	9163	3352	38108	22563	4087	94383
शिक्षक	949	425	808	288	643	1735	249	5097
शिक्षिका	182	42	147	98	577	699	66	1811
कुल शिक्षक	1131	467	955	386	1220	2434	315	6908
प्रति शिक्षक विद्यार्थियों की संख्या	1:46	1:64	1:46	1:43	1:105	1:38	1:71	1:56

ग्राफ क्रमांक – 3.11.1.

बुन्देलखण्ड में जनपदवार माध्यमिक शिक्षा के विद्यालयों की स्थिति (2007)
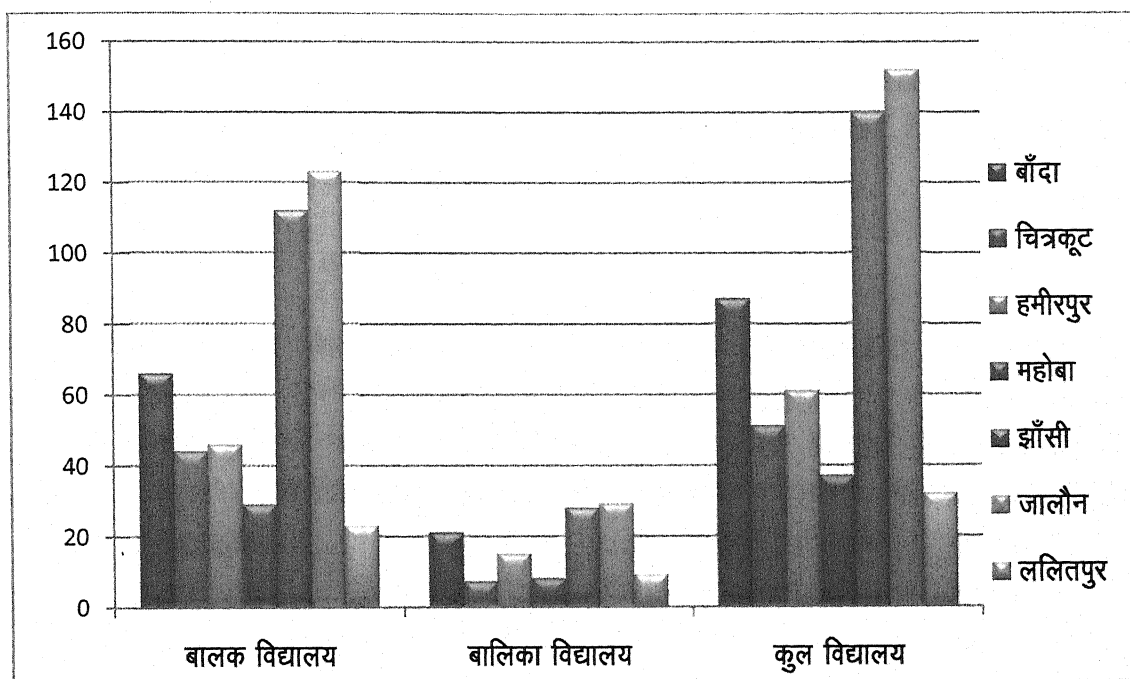
ग्राफ क्रमांक – 3.11.2.

बुन्देलखण्ड में जनपदवार माध्यमिक शिक्षा के विद्यार्थियों की स्थिति (2007)
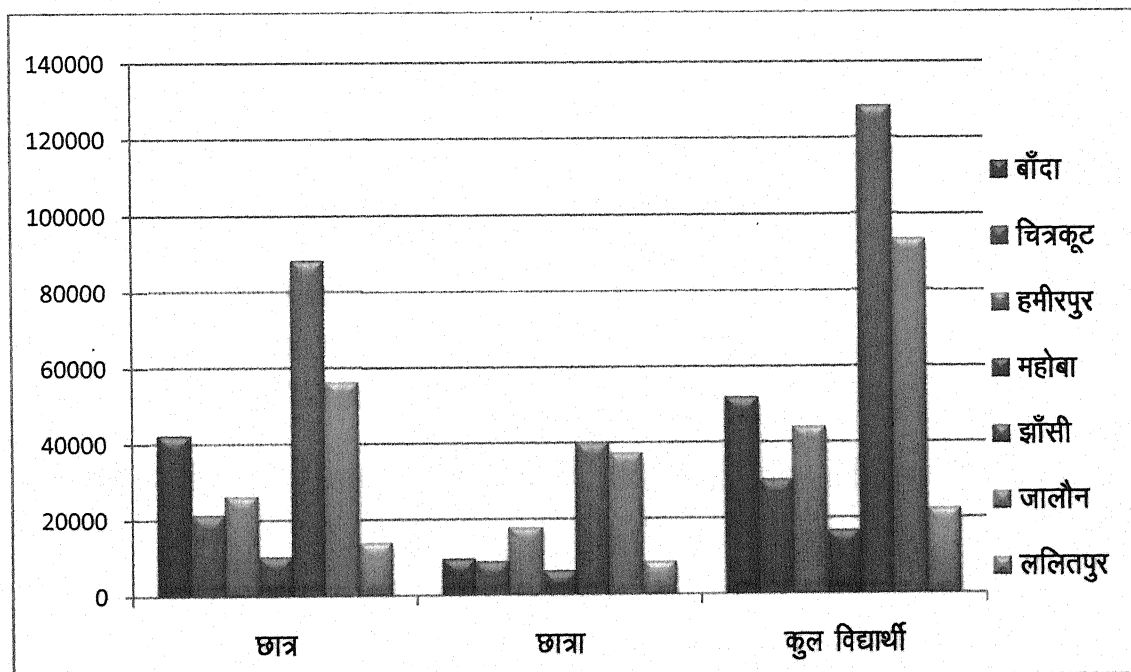
सारणी से देखने पर स्पष्ट हो रहा है कि छात्रों के अनुपात में शिक्षकों की कमी है तथा निकट के वर्षों में प्राथमिक शिक्षा पूर्ण कर माध्यमिक शिक्षा में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों का यदि आँकलन प्राथमिक शिक्षा की स्थिति से किया जाऐ तो निकट के वर्षों में छात्रों के अनुपात में माध्यमिक विद्यालयों एवं शिक्षकों की अपर्याप्ता दृष्टिगत हो रही है, जिसके चलते शिक्षा में रुचि रखने वाले मेधावी छात्र–छात्राओं को उपयुक्त माध्यमिक शिक्षा उपलब्ध नहीं हो पा रही है।

3.7.3. बुन्देलखण्ड की उच्च शिक्षा की स्थिति :–

उत्तर प्रदेश में स्थित बुन्देलखण्ड क्षेत्र के सात जिलों की उच्च शिक्षा प्रारम्भ में भीमराव अम्बेदकर विश्वविद्यालय द्वारा संचालित थी जिसकी स्थापना सन् 1927 में की गयी थी। तत्पश्चात् 1965 में छत्रपति शाहू जी महराज विश्वविद्यालय कानपुर की स्थापना हो जाने पर बुन्देलखण्ड की उच्च शिक्षा कानपुर विश्वविद्यालय से सम्बद्ध रही। वर्तमान में बुन्देलखण्ड की उच्च शिक्षा हेतु 'बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय', झाँसी में स्थापित है जिसकी स्थापना 26 अगस्त 1975 में तत्कालीन मुख्यमंत्री हेमवती नन्दन बहुगुणा के कर–कमलों द्वारा हुई थी। स्थापना के समय विश्वविद्यालय का स्वरूप पूर्णतया सम्बद्धकारी था। प्रारम्भ में विश्वविद्यालय से केवल 17 महाविद्यालय सम्बद्ध थे, इसके पश्चात् 1986 में विश्वविद्यालय के शैक्षणिक परिसर में निम्नाकिंत चार विभागों की स्थापना हुई –

1. गणित एवं कम्प्यूटर अनुप्रयोग विभाग
2. पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग
3. व्यापार प्रशासन विभाग
4. बैंकिग अर्थशास्त्र एवं वित्तविभाग

इन विभागों की स्थापना के पश्चात् विश्वविद्यालय का स्वरूप सम्बद्धकारी तथा संस्थानिक हो गया। कुछ समय पश्चात् निम्न तीन और विभागों की स्थापना की गयी –

1. भूगर्भ विज्ञान विभाग
2. पर्यटन एवं होटल प्रबंधन विभाग
3. फूड टेक्नालॉजी विभाग

वर्तमान में विश्वविद्यालय से सम्बद्ध महाविद्यालयों की संख्या 58 है जिनका वर्गीकरण निम्नवत् है –

सारणी क्रमांक – 3.12

बुन्देलखण्ड में स्थित महाविद्यालय का स्वरूपनुसार विवरण

	महाविद्यालय का स्वरूप	संख्या
	सहायता प्राप्त महाविद्यालय	13
	शासकीय महाविद्यालय	13
	स्वःवित्त पोषित महाविद्यालय	31
	घटक महाविद्यालय (रानी लक्ष्मी बाई मेडिकल कालेज झाँसी)	1
	योग	58

सत्र 2005–06 में विश्वविद्यालय से सम्बद्ध महाविद्यालयों के 81660 नियमित विद्यार्थी एवं 10251 व्यक्तिगत विद्यार्थी के रूप में परीक्षा में सम्मिलित हुए। बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय के कैम्पस में वर्तमान में 33 संस्थानों के अन्तर्गत 205 सर्टिफिकेट, डिप्लोमा, स्नातक तथा परास्नातक कोर्सेज संचालित हो रहे हैं, जो कि निम्नवत् हैं –

सारणी क्रमांक – 3.13

बुन्देलखण्ड क्षेत्र में स्थित विश्वविद्यालय परिसर में उच्च शिक्षा संस्थानों का विवरण उनके अन्तर्गत संचालित पाठ्यक्रम की संख्या के साथ

क्रम	**संस्थान का नाम**	**पाठ्यक्रमों की संख्या**
1.	इंस्टीट्यूट ऑफ बेसिक साइंस	11
2.	इंस्टीट्यूट ऑफ एप्लाइड साइंस	06
3.	इंस्टीट्यूट ऑफ फ्रूड साइंस टेक्नालॉजी	02
4.	जे0सी0 बोस इंस्टीट्यूट ऑफ लाइफ साइंस	15
5.	इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मेसी	06
6.	डॉ0 रंगनाथन इंस्टीट्यूट ऑफ लाइब्रेरी एण्ड इन्फार्मेशन साइंस	02
7.	इंस्टीट्यूट ऑफ कम्प्यूटर एण्ड सिस्टम साइंस	05
8.	इंस्टीट्यूट ऑफ होम साइंस	04
9.	इंस्टीट्यूट ऑफ इकोनॉमिक्स एण्ड फाइनेन्स	09
10.	इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेन्ट स्ट्डीज	08
11.	बाबू जगजीवन राम इंस्टीट्यूट ऑफ लॉ	15
12.	डॉ0 के0आर0 नारायणन् इंस्टीट्यूट ऑफ इन्टरनेशनल स्टड़ीज	01
13.	भास्कर इंस्टीट्यूट ऑफ मॉस कम्यूनीकेशन एण्ड जर्नलिज्म	04

14.	डॉ0 भीमराव अम्बेदकर इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंस	04
15.	इंस्टीट्यूट ऑफ वोकेशनल स्टड्ीज	03
16.	इंस्टीट्यूट ऑफ टूरिज्म एण्ड होटल मैनेजमेन्ट	08
17.	पं0 रामनारायण इंस्टीट्यूट ऑफ आर्युवेद एण्ड अल्ट्रानेट मेडिकल एजुकेशन एण्ड रिसर्च	05
18.	इंस्टीट्यूट ऑफ बायोमेडीकल साइंस	05
19.	इंस्टीट्यूट ऑफ बुद्धिज्म स्ट्डीज	02
20.	इंस्टीट्यूट ऑफ फोरेन्सिक साइंस एण्ड क्रिमिनोलॉजी	06
21.	मेजर ध्यान चन्द्र इंस्टीट्यूट ऑफ फिजिकल एजुकेशन	02
22.	इंस्टीट्यूट ऑफ लैंग्वेज	14
23.	इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एण्ड टेक्नालॉजी	08
24.	इंस्टीट्यूट ऑफ आर्कीट्रक्चर एण्ड टाउन प्लानिंग	07
25.	इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन टेक्नालॉजी	01
26.	इंस्टीट्यूट ऑफ इनफार्मेशन टेक्नालॉजी	03
27.	इंस्टीट्यूट ऑफ एग्रीकल्चर साइंस	12
28.	इंस्टीट्यूट ऑफ म्यूजिक एण्ड फाइन आर्ट	10
29.	इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन	04
30.	इंस्टीट्यूट ऑफ रिहैविलिटेशन साइंस	01
31.	इंस्टीट्यूट ऑफ अर्थ साइंस	03
32.	इंस्टीट्यूट ऑफ एडल्ट कान्टीनिविंग एजुकेशन सक्सपेंशन एण्ड फील्ड आउटरीच	13
33.	वीरांगना झलकारीबाई इंस्टीट्यूट ऑफ वोमेन स्टड्ीज एण्ड डेवलपमेंट	11

विश्वविद्यालय कैम्पस के उपरोक्त संकायों में लगभग 10.000 विद्यार्थी अध्ययनरत हैं। बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय से सम्बद्ध अधिकांशतः महाविद्यालयों में कला संकाय एवं विज्ञान संकाय संचालित हैं तथा कुछ महाविद्यालयों में वाणिज्य संकाय, कृषि संकाय, लॉ संकाय एवं शिक्षा संकाय आदि संचालित हो रहे हैं, जिनमें स्नातक/परास्नातक कक्षाओं में बुन्देलखण्ड क्षेत्र के छात्र–छात्रायें अध्ययन करते हैं। बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय परिसर में संचालित कोर्सों में प्रायः स्वःवित्तपोषित हैं जिसके कारण इनका शुल्क यहाँ के निवासियों की आय के परिपेक्ष्य में अधिक है। अतः इसकी कुछ सीटों में ही इस क्षेत्र के कुछ सम्पन्न लोग ही प्रवेश ले पाते हैं प्रायः बुन्देलखण्ड क्षेत्र के सामान्य छात्र–छात्रायें इनमें प्रवेश नहीं ले पाते हैं जिसके कारण बुन्देलखण्ड क्षेत्र के छात्र–छात्राओं को इनका पूर्ण लाभ नहीं मिल पाता है।

सारणी क्रमांक – 3.14

बुन्देलखण्ड में उच्च शिक्षा की स्थिति (2007)

		बाँदा	चित्रकूट	हमीरपुर	महोबा	झाँसी	जालौन	ललितपुर	बुन्देलखण्ड
स्नातक महाविद्यालय	सहशिक्षा	5	3	2	-	10	10	3	33
	बालिका	-	-	1	-	3	3	-	7
परास्नातक महाविद्यालय	सहशिक्षा	2	-	2	2	4	5	1	16
	बालिका	1	-	-	-	1	-	-	2
कुल महाविद्यालय		8	3	5	2	18	18	4	58
स्नातक विद्यार्थी	छात्र	12016	1308	4971	1771	14635	4939	3578	43218
	छात्रा	5432	626	2430	1213	8434	4092	3435	25662
परास्नातक विद्यार्थी	छात्र	2154	-	472	213	5063	1051	563	9516
	छात्रा	1077	-	198	150	2830	1294	125	5674
कुल विद्यार्थी		20679	1934	8071	3347	30962	11376	7701	84070
स्नातक शिक्षक	पुरुष	59	10	51	19	131	93	38	401
	महिला	9	-	18	4	72	59	5	167
परास्नातक शिक्षक	पुरुष	115	-	30	1	22	74	5	247
	महिला	25	-	6	1	9	13	7	61
कुल शिक्षक		208	10	105	25	234	239	55	876
शिक्षक–छात्र अनुपात		1:99	1:193	1:77	1:134	1:132	1:48	1:140	1:96

ग्राफ क्रमांक – 3.14.1.

<u>बुन्देलखण्ड में स्थित जिलेवार महाविद्यालयों की स्थिति (2006)</u>
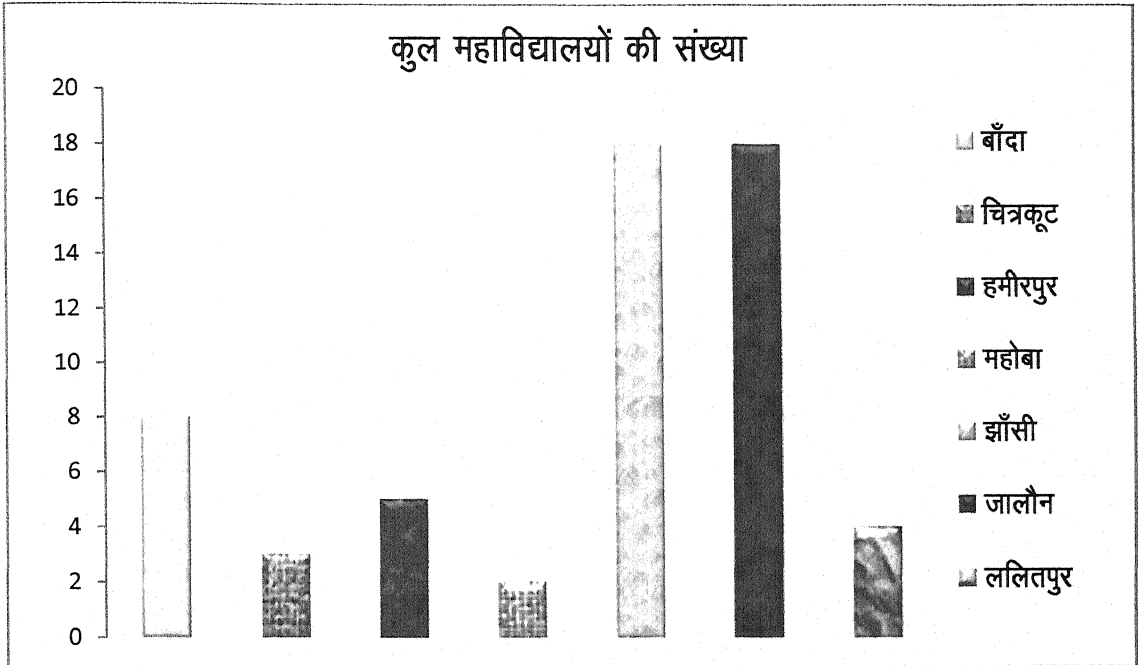
ग्राफ क्रमांक – 3.14.2.

<u>बुन्देलखण्ड में स्थित जिलेवार महाविद्यालयों में विद्यार्थियों की स्थिति (2006)</u>
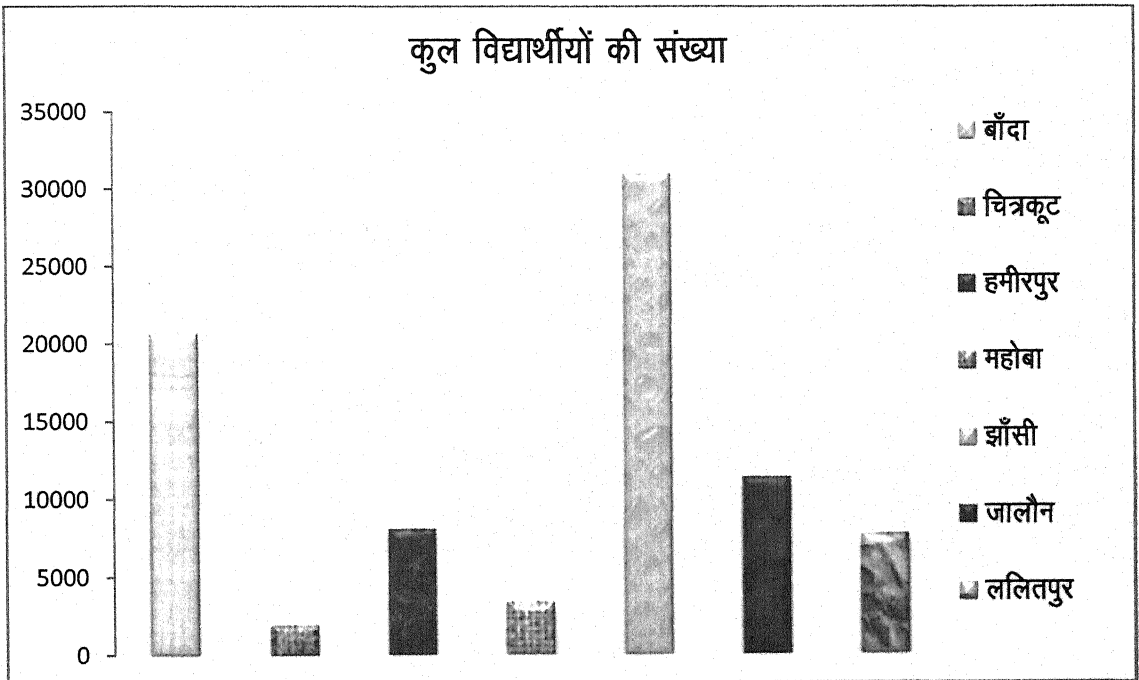
ग्राफ क्रमांक – 3.14.3.

<u>बुन्देलखण्ड में स्थित जिलेवार महाविद्यालयों में शिक्षकों की स्थिति (2006)</u>
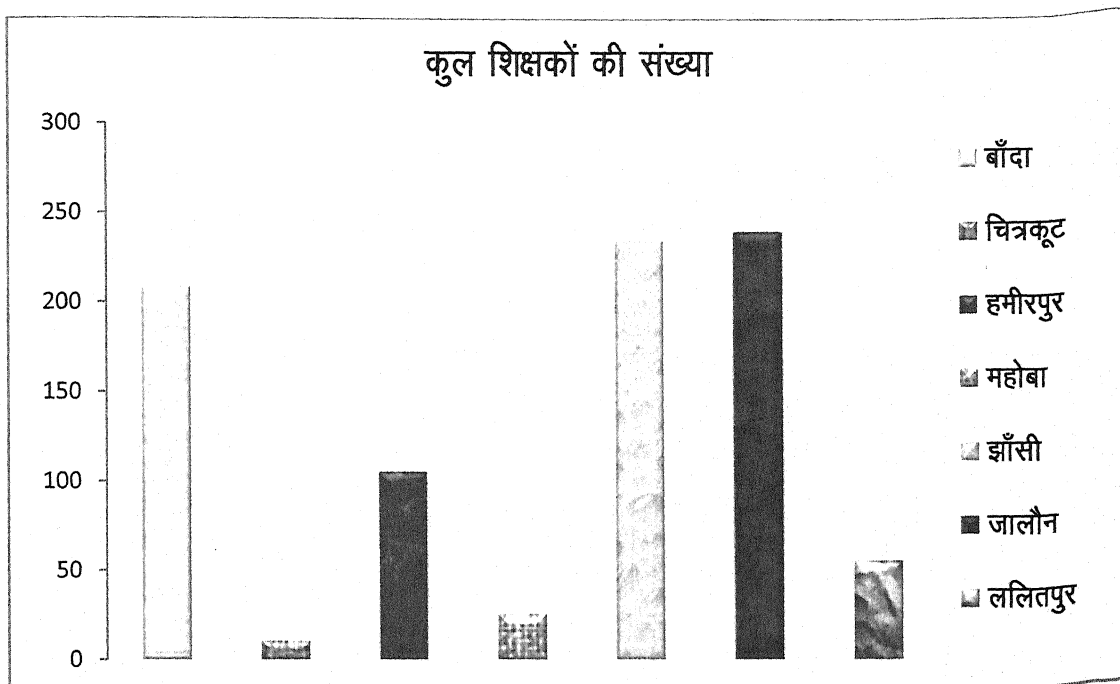
उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि बुन्देलखण्ड के जनपदों में महाविद्यालयों की संख्या, अध्ययनरत छात्र–छात्राओं की संख्या, शिक्षकों की संख्या, शिक्षक–छात्र अनुपात में कितनी असमानता है, इस असमानता के चलते यहाँ के निवासियों की शिक्षा के स्तर में भी अन्तर उत्पन्न हो जाता है, जिससे असमानता बढ़ती जाती है। सबसे अधिक महाविद्यालय झाँसी एवं जालौन जिले में क्रमशः 18, 18 हैं तथा सबसे कम महाविद्यालय महोबा में 2 एवं चित्रकूट में 3 हैं। इसी प्रकार सर्वाधिक विद्यार्थी संख्या झाँसी एवं बाँदा जिले में क्रमशः 30962, 20679 है तथा सबसे कम विद्यार्थी संख्या चित्रकूट में 1934 तथा महोबा में 3347 है। शिक्षक–छात्र अनुपात तुलना में सबसे अच्छा जालौन में 1:48 है वहीं चित्रकूट में सबसे खराब 1:193 है। बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय से मान्यता प्राप्त एक फार्मेसी कालेज बुलंदशहर में अवस्थित है।

****

अध्याय–चतुर्थ

(शोध–विधितन्त्र)

4.1. शोध–विधि

4.2. शोध का न्यादर्श

4.3. शोध उपकरण

4.4. प्रदत्त संकलन

4.1. शोध विधि :–

4.1.1. अर्थ एवं परिभाषा :–

अनुसंधान एक ऐसा व्यवस्थित तथा सुनियोजित अध्ययन है जिसके अन्तर्गत सम्बन्धित चरों व घटनाओं के पारस्परिक सम्बन्धों का अन्वेषण तथा विश्लेषण सांख्यिकीय विधि तथा वैज्ञानिक विधि के द्वारा किया जाता है, तथा प्राप्त परिणामों से वैज्ञानिक निष्कर्षों, नियमों तथा सिद्धान्तों की रचना, खोज व पुष्टि की जाती है।

जिज्ञासा मानव का मूल स्वभाव है। अतः विलक्षण घटनाओं के प्रति उसकी कौतूहल की भावना सदैव अतृप्त व लालायित रही है। आरम्भ से ही बादल, बिजली, चाँद–सूरज, पहाड़, समुद्र, अग्नि, तुफान, अकाल व भूचाल मानव के लिए विस्मय तथा रहस्य के विषय रहे हैं। वह इनके स्वरूप को जानने व समझने के लिए निरंतर प्रत्यनशील रहा है और अपनी जिज्ञासा को तृप्त करने के प्रक्रम के अन्तर्गत ही उसके प्रारम्भिक ज्ञान में शनैः शनैः वृद्धि हुई है। स्पस्टतः आरम्भ में उसके अर्जित ज्ञान का स्वरूप बहुत ही सरल व साधारण था, परन्तु कालान्तर में उसका स्वरूप संगठित होता गया और इस प्रक्रम में वह अब केवल एक निष्क्रिय अवलोकन कर्ता न रह कर प्राकृतिक घटनाओं की व्याख्या का प्रयास करने लगा। निश्चिततः उस समय उसकी व्याख्या उसके सीमित ज्ञान से संकुचित थी परन्तु कालान्तर में उसका ज्ञान भन्डार शनैः शनैः विकसित हो गया।

अध्ययन के द्वारा उन मौलिक प्रश्नों के उत्तर देने का प्रयास किया जाता है जिनके उत्तर अभी तक उपलब्ध नहीं हो सके हैं। अनुसंधान के द्वारा नयी खोज का समुचित समाधान किया जा सकता है। अनेक विद्वानों ने अनुसंधान को अनेक प्रकार से परिभाषित किया है, उनमें से प्रमुख परिभाषाऐं निम्नलिखित हैं –

करलिंगर[81] के अनुसार –

"वैज्ञानिक अनुसंधान एक ऐसा व्यवस्थित, नियन्त्रित, अनुभविक तथा सूक्ष्म अन्वेषण है जिससे प्राकृतिक घटनाओं में व्याप्त अनुमानित सम्बन्धों का अध्ययन परिकल्पनात्मक तक्र वाक्यों द्वारा किया जाता है।"

सी0सी0 क्रॉफोर्ड [82] के अनुसार –

"अनुसंधान किसी समस्या के अच्छे समाधान के लिए क्रमबद्ध तथा विशुद्ध चिंतन एवं विशिष्ट उपकरणों के प्रयोग की एक विधि है।"

---

81. उद्धृत डॉ0 डी0एन0 श्रीवास्तव, 'अनुसंधान विधियाँ', आगरा; साहित्य प्रकाशन, चतुर्थ संस्करण, पृष्ठ–62
82. उद्धृत एच0के0 कपिल, 'अनुसंधान विधियाँ', आगरा; एच0पी0 भार्गव बुक हाउस, 2006, पृष्ठ–19

रेडमैन एवं मोरी[83] के अनुसार –

"नवीन ज्ञान की प्राप्ति के लिए व्यवस्थित प्रयास ही अनुसंधान है"।

शिक्षा के क्षेत्र में किया गया कार्य शैक्षिक अनुसंधान कहलाता है। विभिन्न विद्वानों ने शैक्षिक अनुसंधान को परिभाषित किया है, उनमें से कुछ परिभाषायें निम्न हैं –

एम0 डब्ल्यू0 ट्रेवर्स[84] के अुनसार –

"शैक्षिक अनुसंधान वह क्रिया है जो शैक्षिक परिस्थितियों में व्यवहार के विज्ञान का विकास करने की ओर निर्देशित है। इस प्रकार के विज्ञान का अन्तिम उद्देश्य ऐसा ज्ञान प्राप्त करना है जो शिक्षक के लिए सबसे अधिक प्रभावशाली पद्धतियों द्वारा अपने लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायक हो।"

जार्ज जे0 मुले[85] के अनुसार –

"शैक्षिक समस्याओं के समाधान के लिए व्यवस्थित रुप में बौद्धिक धन से वैज्ञानिक विधि के प्रयोग तथा अर्थापन को अनुसंधान कहते है। इसके विपरीत यदि किसी व्यवस्थित अध्ययन के द्वारा शिक्षा में विकास किया जाय तो उसे शैक्षिक अनुसंधान कहते है।"

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि प्रत्येक अनुसंधान एक विशेष प्रकृति की समस्या का मनोवैज्ञानिक समाधान प्रस्तुत करता है कि अनुसंधान कैसा होगा ? अथवा उसकी विधि कैसी होगी ? शोधविधि का शोध कार्य में महत्वपुर्ण स्थान होता है, विधि का निर्धारण शोध कार्य एवं उसके उद्देश्यों पर आधारित होता है।

शैक्षिक अनुसंधान से तात्पर्य उस अनुसंधान से है जो कि शिक्षा के क्षेत्र में किया जाता है। इसका उद्देश्य शिक्षा के विभिन्न पहलुओं, आयामों, प्रक्रियाओं आदि के विषय में नवीन ज्ञान का सृजन, वर्तमान ज्ञान की सत्यत्ता का परीक्षण एवं उसका विकास तथा भावी योजनाओं का निर्धारण करना है। ज्ञान के क्षेत्र में ऐसे प्रश्न हमेशा सामने आते रहते हैं, जिनका कि उत्तर आसानी से उपलब्ध नहीं हो पाता। ऐसे प्रश्नों के उत्तर खोजने के लिए ही शैक्षिक अनुसंधान की आवश्यकता महसूस होती है। शैक्षिक अनुसंधान के माध्यम से ऐसे प्रश्नों के उत्तर के लिए नये सिद्धान्तों की खोज कर उन्हें प्रतिवेदित किया जाता है।

प्रसिद्ध शिक्षाविद् विटनी कहते भी है कि शैक्षिक अनुसंधान शिक्षा क्षेत्र की समस्याओं का समाधान खोजने का प्रयास करता है तथा उस कार्य की पूर्ति हेतु उसमें वैज्ञानिक, दार्शनिक एवं, समालोचनात्मक, कल्पना प्रधान चिन्तन विधियों का प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार वैज्ञानिक

---

83. उद्धृत आर0ए0 शर्मा, शिक्षा अनुसंधान', मेरठ; सूर्या पब्लिकेशन, 2003, पृष्ठ–19
84. उद्धृत आर0ए0 शर्मा, शिक्षा अनुसंधान', 'वही', पृष्ठ–22
85. उद्धृत आर0ए0 शर्मा, शिक्षा अनुसंधान', 'वही', पृष्ठ–17

अनुसंधान के सिद्धान्तों, पद्धतियों को शिक्षा क्षेत्र की समस्याओं के समाधान के लिए लागू करना शैक्षिक अनुसंधान कहलाता है।

4.1.2. शोध विधि के प्रकार :–

शिक्षा शास्त्रियों ने शैक्षिक शोध का वर्गीकरण कई दृष्टिकोणों से किया है। जैसे – उद्देश्यों के आधार पर, शोध–सामग्री–संग्रह की तकनीकों के दृष्टिकोण से, सामग्री के विश्लेषण के आधार पर, चरों के नियंत्रण की मात्रा के दृष्टिकोण से, सामग्री के स्रोत्र एवं अन्य बहुत से आधारों पर, शिक्षा शास्त्री शोध की विधियों के वर्गीकरण के सम्बन्ध में एक मत नहीं है। हालांकि यह न आवश्यक है और न ही संभव, क्योंकि वर्गीकरण का कोई एक आधार नहीं हो सकता। अधिकांश लेखकों द्वारा शोध विधियों के निम्न वर्गीकरण को अपनाया गया है

1. मूलभूत एवं व्यावहारिक शोध
2. वर्णनात्मक शोध
   (अ) सर्वेक्षण अध्ययन
   (ब) अन्तर्सम्बन्धात्मक अध्ययन
   (स) विकासात्मक अध्ययन
3. ऐतिहासिक शोध
4. प्रयोगात्मक शोध संधान
   (अ) प्रयोगशाला प्रयोग
   (ब) क्षेत्र प्रयोग
   (स) क्षेत्र अध्ययन
   (द) घटनोत्तर अध्ययन
   (य) प्रयोगात्मक सिमुलेशन

4.1.3. वर्तमान अध्ययन की शोध विधि –

शोध विधियों का वर्गीकरण जिसका विवरण ऊपर दिया गया है, उस आधार पर वर्तमान अध्ययन वर्णनात्मक शोध के अन्तर्गत सर्वेक्षण शोध की प्रतिदर्श सर्वेक्षण के मूल्यांकन सर्वेक्षण की श्रेणी में आता है।

4.1.3.1. वर्णनात्मक अनुसंधान :–

बेस्ट[86] के शब्दों में, "वर्णनात्मक अनुसंधान वर्तमान स्थिति की व्याख्या तथा विवेचना प्रस्तुत करता है। इसका सम्बन्ध उन स्थितियों तथा सम्बन्धों से है जिनका अस्तित्व वर्तमान में है, अथवा उन व्यवहारों से है, जो कि प्रचलित हैं, व उन दृष्टिकोणों अथवा अभिवृत्तियों से है, जिनका प्रचलन है, व ऐसे प्रक्रमों से है, जो कि सक्रिय हैं, तथा उन प्रभावों से है, जिन्हें अनुभव किया जा रहा है, अथवा उन उपनतियों से है, जोकि विकासशील है।"

स्पष्टतः ऐसे अनुसंधान का स्वरूप अत्यधिक व्यापक, विस्तृत तथा विषम होता है। इसके अन्तर्गत विभिन्न प्रकार के अध्ययन– जैसे **सर्वक्षण, विकासात्मक अध्ययन, व्यक्तिवृत अध्ययन, अन्तर्वस्तु अध्ययन, जनमत अध्ययन, सहसम्बन्ध अध्ययन व उपनति अध्ययन** आदि सम्मिलित रहते हैं।

4.1.3.1.1. सर्वेक्षण अनुसंधान :–

सर्वेक्षण अनुसंधान के अन्तर्गत प्रायः दो या दो से अधिक चरों से सम्बन्धित घटनाओं के आँकड़ों का संकलन व वर्गीकरण इस उद्देश्य से किया जाता है, ताकि उनके साहचर्यात्मक सम्बन्ध को जान सकें। इस प्रकार के अनुसंधान का स्वरूप अन्वेषणात्मक रहता है तथा इनके द्वारा व्यापक जनसंख्या का अध्ययन सरलता पूर्वक किया जा सकता है और कम खर्च से सापेक्षिकतः अधिक जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

सर्वेक्षण शोध में सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक चरों के बीच घटनाक्रम, वितरण तथा पारस्परिक अन्तःसम्बन्ध की खोज की जाती है। यद्यपि सर्वेक्षण शोध की प्रविधियों का व्यवहार परिभाषित वस्तुओं की किसी भी श्रृंखला पर किया जा सकता है, सर्वेक्षण शोधकर्ता विशेष रूप से लोगों के विश्वासों, मनोवृत्तियों, प्रेरणाओं तथा व्यवहारों पर बल देता है। सामाजिक तथ्य व्यक्तियों के वे गुण है, जो उनके किसी सामाजिक समूह के सदस्य होने के कारण, उनमें आ जाते हैं, जैसे– लिंग, आयु, रहने का समय, स्थान, व्यवसाय, प्रजाति आदि।

4.1.3.1.2. सर्वेक्षण अनुसंधान के उद्देश्य :–

सर्वेक्षण अनुसंधान के प्रमुख उद्देश्य निम्न हैं–

1. वर्तमान परिस्थिति को पहचानना एवं वर्तमान परिस्थितियों को केन्द्रित करना।
2. तथ्यों को प्राप्त करना।
3. गुण तथा विशेषताओं के सम्बन्ध का निरीक्षण करना।

---

86. उद्धृत गोविन्द तिवारी, 'शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक अनुसंधान के मूलाधार, आगरा; विनोद पुस्तक मन्दिर, 1985, पृष्ठ–144

4. मानव व्यवहार के विभिन्न पक्षों की जानकारी प्राप्त करना।
5. विषय या घटना की स्थिति का शीघ्र अध्ययन करना।

4.1.3.1.3. **सर्वेक्षणों के प्रकार** :– सर्वेक्षण के प्रमुख प्रकार निम्नलिखित हैं –

A. संगणना सर्वेक्षण
B. प्रतिदर्श सर्वेक्षण

4.1.3.1.3.1. संगणना सर्वेक्षण :–

इस प्रकार के सर्वेक्षण में पूरी जनसंख्या के आधार पर आवश्यक सूचनायें प्राप्त की जाती है। जैसे किसी शहर में निवास करने वाले अनुसूचित जाति का सर्वेक्षण करके पता लगाया जा सकता है कि उस शहर में अनुसूचित जाति के लोग रहते हैं, उनमें पुरूष कितने हैं, स्त्रियाँ कितनी हैं, सयाने (बृद्ध) कितने हैं, बच्चे कितने हैं तथा व्यस्क कितने हैं। यह भी पता लगाया जा सकता है कि उनमें कितने लोग मदिरा का प्रयोग करते हैं, कितने लोग शिक्षित हैं और कितने अशिक्षित हैं। लेकिन व्यावहारिक दृष्टिकोण से इस प्रकार के सर्वेक्षण का प्रयोग बहुत कम होता है। अधिकांश परिस्थितियों में प्रतिदर्श (Sample) का अध्ययन करके प्राप्त परिणामों को पूरी जनसंख्या (Population) या समृष्टि (Universe) पर लागू कर दिया जाता है। प्रतिदर्श जिस हद तक अपनी जनसंख्या का प्रतिनिधि (Representive) होता है, उसी हद तक अध्ययन विश्वसनीय (Reliable) हो पाता है। जनसंख्या सर्वेक्षण (Census survey) में समय अधिक लगता है, श्रम अधिक करना पड़ता है और धन भी अधिक खर्च होता है। इसी कारण इस प्रकार के सर्वेक्षण का प्रयोग बहुत कम किया जाता है लेकिन राष्ट्रीय जनगणना जैसी महत्वपूर्ण सूचनाओं के लिए इसी विधि का प्रयोग किया जाता है।

4.1.3.1.3.2. प्रतिदर्श सर्वेक्षण :–

जनसंख्या सर्वेक्षण (Population survey) अर्थात संगणना सर्वेक्षण की कठिनाईयों को देखते हुए शोधकर्ताओं ने प्रतिदर्श सर्वेक्षण के प्रयोग पर बल दिया है। इस प्रकार के सर्वेक्षण में सम्पूर्ण जनसंख्या का अध्ययन नहीं किया जाता है, बल्कि जनसंख्या के केवल एक अंश अर्थात प्रतिदर्श (Sample) का अध्ययन किया जाता है और जो परिणाम प्राप्त होता है उसको सम्पूर्ण जनसंख्या पर लागू कर दिया जाता है। प्रतिदर्श को अधिक से अधिक प्रतिनिधिक (Representative) या वैज्ञानिक (Scientific) बनाने का प्रयास किया जाता है।

प्रतिदर्श–सर्वेक्षण निम्न प्रकार के होते हैं –

a. समाज–वैज्ञानिक सर्वेक्षण
b. मनोवैज्ञानिक सर्वेक्षण
c. सरकारी तथा निजी सर्वेक्षण

d. सार्वजनिक तथा गुप्त सर्वेक्षण

e. मूल्यांकन सर्वेक्षण

उपर्युक्त में चूँकि वर्तमान अध्ययन मूल्यांकन सर्वेक्षण की श्रेणी में आता है अतः उसका संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है –

4.1.3.1.3.2.1. मूल्यांकन सर्वेक्षण :–

पाठ्यक्रम, विद्यालय, विद्यार्थी, शिक्षण पद्यति व शिक्षक आदि शिक्षा से सम्बन्धित अनेक महत्वपूर्ण तत्व ऐसे होते हैं, जिनके मूल्यांकन की समय–समय पर निरन्तर आवश्यकता पड़ती रहती है, ताकि शैक्षिक उपलब्धियों व उपनतियों (Trends) का यथार्थ व विशुद्ध ज्ञान सतत् रूप से उपलब्ध होता रहे। ऐसे सर्वेक्षण में अधिकतर मानवीय तत्वों के मापन व मूल्यांकन पर अधिक बल रहता है। ऐसे अध्ययनों के लिए व्यक्तित्व अनुसूचियों, चिन्हांकन सूचियों (Check Lists), पदांकन (Ranking) विधियों, निर्धारण मापनियों (Rating Scales) व अभिवृत्ति मापनियों आदि का व्यापक उपयोग किया जाता है। इस प्रकार के अध्ययनों से शैक्षिक प्रगति के सम्बन्ध में पूर्वकथन किया जा सकता है तथा वर्तमान स्थिति के विषय में आंकन किया जा सकता है।

4.2. शोध का न्यादर्श –

4.2.1. अर्थ एवं परिभाषा –

साधारण भाषा में न्यादर्श समूचे इकाई समूह में से चुनी हुई उन इकाईयों का समूह है, जो समूचे इकाई समूह का पर्याप्त प्रतिनिधित्व करे।

इकाईयों के समूचे समूह को जिसमें से द्वारा न्यादर्श का चयन करना है, अथवा जिस समूह से सम्बन्धित चरों का अध्ययन किया जाना है, उस समूह को जनसंख्या कहते है। जिस प्रकार बर्तन में पकते हुये बहुत सारे चावल जनसंख्या कहलाते हैं, जबकि चावल के कुछ दाने, जो ये देखने के लिए निकाले जाते हैं कि चावल गले हैं या नहीं, वह न्यादर्श कहलाता है।

शैक्षिक व सामाजिक अनुसंधान के क्षेत्र में समस्या के कार्य–कारण विश्लेषण सम्बन्धी आँकडों को ज्ञात करने के लिए विषय क्षेत्र की कुल जनसंख्या से न्यादर्श लिया जाता है। इस विधि द्वारा अध्ययन क्षेत्र के समग्र की सम्पूर्ण इकाईयों का अध्ययन करके समग्र में से कुछ ऐसी इकाइयाँ चुनी जाती हैं, जिनमें समग्र के समस्त गुण विद्यमान हों। इस प्रकार समग्र का अध्ययन न कर, चुने हुए भाग का अध्ययन इस पद्धति के अन्तर्गत आता है।

समाज की समस्त इकाईयों में से अध्ययन हेतु कुछ इकाईयों को एक निश्चित विधि से चुन लिया जाता है। इसी संकलित इकाईयों के समूह को न्यादर्श कहते है। प्रतिदर्श चयन की आवश्यकता

धन व समय के अपव्यय को रोकने के लिए होती है। कभी–कभी विभिन्न कारणों से बृहद समष्टि का अध्ययन करना सम्भव नहीं हो पाता है। ऐसी स्थित में इकाईयों के एक छोटे से समूह का अध्ययन किया जाता है। वैसे भी एक बृहद समष्टि का अध्ययन करना भी फायदे मन्द नहीं रहता है। क्योंकि एक तो इससे धन व समय की बर्बादी होती है और दूसरे एक छोटी सी त्रुटि भी सारे परिणाम को प्रभावित कर सकती है।

इसी कारण से कोई न्यादर्श ज्ञात कर लिया जाता है जो कि अपनी सम्पूर्ण इकाई का प्रतिनिधित्व करता है। न्यादर्श को अनेक विद्वानों ने परिभाषित किया है कुछ प्रमुख परिभाषाऐं निम्न हैं–

पी0.वी0 यंग[87] के शब्दो में –
"न्यादर्श समस्त समूह का एक लघु चित्र होता है।"

जबकि **चैपलिन**[88] ने प्रतिदर्श को पूर्ण का प्रतिनिधित्व बताते हुए कहा है –
"न्यादर्श वह चुना हुआ अंश है जो पूर्ण का प्रतिनिधित्व होता है।"

किसी भी प्रतिदर्श का चयन करते समय यह सावधानी अवश्य ही बरती जाती है, कि उसके गुण अपने वृहद समष्टि के गुणों से मेल खाते हों। सम्पूर्ण के अंश प्रतिदर्श में अवश्य ही मौजूद होने चाहिये। प्रतिदर्श चयन में ऐसी व्यवस्था की जाती है कि अनुसंधान कर्ता को अपने अनुसंधान से सम्बन्धित जानकारियाँ उसी प्रतिदर्श के द्वारा प्राप्त हो जायें।

"प्रतिदर्श किसी जनसंख्या का वह भाग है जिसका चयन कुछ इस तरह से किया जाता है, कि उसे उस जनसंख्या का सामूहिक रुप से प्रतिनिधित्व समझा जा सके।"

अतः संक्षेप में कहा जा सकता है कि प्रतिदर्श के द्वारा समष्टि का अवलोकन एवं अध्ययन किया जा सकता है।

4.2.2. न्यादर्श चयन की विधियाँ –

न्यादर्श से अभिप्राय उस क्रमबद्ध चयन पद्धति से है जिसकी सहायता से एक समष्टि से सम्बन्धित वैज्ञानिक अध्ययन के लिए कम से कम इकाईयों के प्रयोग की आवश्यकता पड़ती है। करलिंगर के अनुसार –

---

87. उद्धृत डॉ0 गोविन्द तिवारी 'शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक अनुसंधान के मूलाधार', आगरा; विनोद पुस्तक मन्दिर, 1985, पृष्ठ–214
88. उद्धृत मुहम्मद सुलेमान, 'शोध प्रणाली विज्ञान', पटना; शुक्ला बुक डिपों, 2003, पृष्ठ–97

"किसी जनसंख्या या समष्टि से उसके प्रतिनिधि स्वरूप के एक अंश को चुन लेने को न्यादर्श कहते है।"

न्यादर्शन प्रायः एक जटिल प्रक्रिया हैं। न्यादर्शन की प्रक्रिया सम्बन्धित समष्टि की जटिलता की मात्रा के साथ–साथ घटती बढ़ती रहती है। न्यादर्शन की मुख्यतः तीन विधियाँ हैं –

1. प्रसम्भाव्यता न्यादर्श
2. अर्द्ध–प्रसम्भाव्यता न्यादर्श
3. अप्रसम्भावयता न्यादर्श

4.2.2.1. **प्रसम्भाव्यता न्यादर्श** –

प्रसम्भाव्यता न्यादर्श के दो आधार हैं – (अ) सांख्यकीय निरंतरता का नियम तथा (ब) प्रसामान्य वितरण के सिद्धान्त।

प्रसम्भाव्यता न्यादर्श संयोग चयन पर आधारित होता है इस कारण से इसे संयोगिक न्यादर्श भी कहते हैं। इस पद्धति की मुख्य विशेषता यह है कि इसके अन्तर्गत चयन की जाने वाली इकाईयों में चयन का आधार केवल संयोग ही रहता है तथा प्रत्येक इकाई अन्य चयन की गई इकाई से स्वतंत्र रहती है अथवा इस इकाई का चयन दूसरी इकाई के चयन को न तो प्रभावित करता है, और न ही उससे प्रभावित होता है इस कारण इस पद्धति में पक्षपात के आने की सम्भावना न्यूनतम रहती है।

प्रसम्भाव्यता न्यादर्श की प्रायः तीन विधियाँ होती हैं –

(i) लॉटरी विधि

(ii) ड्रम चक्र विधि

(iii) टिपेट की संयोगिक संख्याएँ

4.2.2.2. **अर्द्ध–प्रसम्भाव्यता न्यादर्श** –

अर्द्ध–प्रसम्भाव्यता न्यादर्श के अन्तर्गत समष्टि के अपरिमित अथवा अनन्त रूप को प्रथम चरण में एक विशेष आधार पर विभिन्न स्तरों, पुंजों तथा क्षेत्रों में विभाजित कर लिया जाता है। इसके पश्चात प्रत्येक स्तर, पुंज अथवा क्षेत्रों की जनसंख्या में से न्यादर्श का चयन संयोगिक आधार पर किया जाता है। इस प्रकार इस प्रतिचयन विधि के अन्तर्गत प्रतिचयन का स्वरूप संयोगिक अवश्य रहता है परन्तु उसका विस्तार समस्त समष्टि में समान रूप से वितरित नहीं रहता, बल्कि उसका आधार सम्बन्धित समष्टि के विभिन्न स्तरों, पुंजो तथा क्षेत्रों से रहता है, इस कारण इसे अर्द्ध–प्रसम्भाव्यता न्यादर्श कहते है।

इसकी मुख्यतः 6 विधियाँ निम्नलिखित है –

(i) क्रमानुसार न्यादर्श

(ii) स्तरानुसार न्यादर्श

(iii) पुंजानुसार न्यादर्श
(iv) द्विस्तरीय न्यादर्श
(v) बहुस्तरीय न्यादर्श
(vi) अनुक्रमानुसार न्यादर्श

4.2.2.3. <u>प्रसम्भाव्यता न्यादर्श</u> –

इस प्रकार के न्यादर्श के अन्तर्गत अध्ययन हेतु इकाईयों का चयन प्रसम्भाव्यता सिद्धान्त के नियमानुसार नहीं किया जाता है। इसके अन्तर्गत अध्ययनकर्ता को इकाईयों के चयन में प्रायः स्वतंत्रता रहती है तथा संयोगिक चयन के प्रतिबन्ध उसके ऊपर नहीं रहते। ऐसी स्थिति में वह अपनी सुविधा, उपलब्ध समय, साधन, ज्ञान आदि तत्वों से प्रभावित होकर इकाईयों का चयन करता है। इस कारण इस विधि को असंयोगिक न्यादर्श भी कहते हैं।

इस पद्धति में इकाईयों के चयन का आधार प्रायः अध्ययनकर्ता की सुविधा या विशेषज्ञ का अध्ययन क्षेत्र का गहन ज्ञान आदि होता है। इस कारण प्रतिचयन की इस विधि को निम्नलिखित नामों से भी जाना जाता है –

(i) असंयोगिक न्यादर्श
(ii) सुविधानुसार न्यादर्श
(iii) निर्णयानुसार न्यादर्श
(iv) विशेषज्ञानुसार न्यादर्श

न्यादर्श की उपर्युक्त विधियों में से शोधकर्ता अपने शोध शीर्षक को ध्यान में रखते हुए किसी एक पद्धति से न्यादर्श का चयन करता है जिसके आधार पर प्राप्त परिणामों को वह सम्पूर्ण जनसंख्या पर लागू करने की स्थिति में हो या सम्पूर्ण जनसंख्या पर उनका सामान्यीकरण किया जा सके। शिक्षा एवं मनोविज्ञान में प्रायः शोधकर्ता अपने अध्ययन के लिए जनसंख्या या समष्टि के स्थान पर न्यादर्श के आधार पर ही अपना शोधकार्य सम्पन्न करता है। इसलिए उसे न्यादर्श का चयन करते समय एक अच्छे या वैज्ञानिक न्यादर्श में विद्यमान विशेषताओं को ध्यान में रखना अति आवश्यक है, तभी उसका अध्ययन वांक्षित परिणाम दे सकता है।

4.2.2.4. <u>**अच्छे न्यादर्श की विशेषताऐं**</u> – एक अच्छे न्यादर्श में निम्न विशेषताऐं होती है –

4.2.2.4.1. <u>जनसंख्या का प्रतिनिधि</u>

एक अच्छे न्यादर्श या वैज्ञानिक न्यादर्श के लिए आवश्यक है कि वह अपनी जनसंख्या का प्रतिनिधि हो। प्रतिनिधि होने का अर्थ यह है कि न्यादर्श में वे सभी विशेषताऐं या गुण उपस्थित हो जो जनसंख्या उपस्थित है। उसकी चर्चा करते हुए – चैपलिन (1975) ने कहा है कि प्रतिनिधिक न्यादर्श

वह न्यादर्श है जो अपनी सम्पूर्ण जनसंख्या की विशेषताओं का वास्तविक या वैध अभिसूचक होता है। कुछ विशेष सांख्यकीय प्रविधियों की सहायता से न्यादर्श को प्रतिनिधिक न्यादर्श बनाया जाता है। अतः जो अपनी जनसंख्या का प्रतिनिधित्व जिस सीमा तक करने में सफल होता है, उसे उसी सीमा तक अच्छा न्यादर्श या वैज्ञानिक न्यादर्श माना जाता है।

4.2.2.4.2. <u>सम्भाव्यता सिद्धान्त पर आधारित</u>

एक अच्छा न्यादर्श सम्भाव्यता सिद्धान्त पर आधारित होता है। दूसरे शब्दों में एक अच्छे प्रतिदर्श का प्रतिचयन सम्भाव्यता के सिद्धान्त के आलोक में किया जाता है। सम्भाव्यता सिद्धान्त गणित की एक शाखा है जो प्रकृति की समरूपता, परिवर्तन के नियम, घटनाओं के घटित होने के अवसर की समानता तथा पर्याप्त निरीक्षणों के पूरक अशुद्धियों के रद्द करने से सम्बन्धित अवधारणाओं पर आधारित है।

4.2.2.4.3. <u>जनसंख्या की समजातीयता</u> –

एक अच्छा न्यादर्श वह न्यादर्श है जो किसी समजातीय जनसंख्या या समष्टि से लिया गया हो। समजातीय जनसंख्या उसे कहते हैं जिसकी प्रत्येक संरचनात्मक इकाई में किसी गुण या विशेषता का समान वितरण होता है। अतः जनसंख्या में जिस हद तक समजातीयता होती है, उस पर आधारित न्यादर्श उसी हद तक वैज्ञानिक या अच्छा होता है।

4.2.2.4.4. <u>न्यादर्श का पर्याप्त आकार</u> –

एक वैज्ञानिक न्यादर्श या उत्तम न्यादर्श के लिए यह भी यह भी आवश्यक है कि उसका आकार पर्याप्त हो। न्यादर्श में इकाईयों की संख्या पर्याप्त होती है तो वह अपनी जनसंख्या की सभी विशेषताओं या गुणों को समाहित करने में सफल होता है। इसलिए छोटे न्यादर्श की अपेक्षा बड़ा न्यादर्श अपनी जनसंख्या का प्रतिनिधित्व अधिक करता हैं अतः वैज्ञानिक प्रतिदर्श का आकार अपेक्षाकृत बड़ा होता है। लेकिन अधिक बड़ा न्यादर्श के होने पर परिमाणन तथा मापन में असुविधा होती है। इसलिए एक अच्छे न्यादर्श के पर्याप्त आकार का निर्धारण जनसंख्या के स्वरूप तथा शोधकर्ता के उद्देश्य पर भी निर्भर करता है।

4.2.2.4.5. <u>समय, श्रम तथा धन की मितव्ययिता</u> –

एक अच्छे न्यादर्श के लिए समय, श्रम तथा मुद्रा के दृष्टिकोण से कम खर्चीला होना भी आवश्यक है। यह तभी संभव है जब कि न्यादर्श को छोटा रखा जाए। लेकिन जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है, बहुत छोटा न्यादर्श होने पर जनसंख्या की सभी विशेषताओं या गुणों को न्यादर्श में समाहित करना सम्भव नहीं होगा अतः न्यादर्श को कम खर्चीला या मितव्ययी बनाते समय यह भी ध्यान रखना

चाहिए कि वह इतना बड़ा हो कि जनसंख्या की सभी विशेषताओं को अपने अन्दर समाहित कर सकें। पार्टेन महोदय ने कहा है कि जहाँ अनावश्यक खर्च से बचने के लिए न्यादर्श को छोटा होना चाहिए वहीं प्रतिचयन अशुद्धियों से बचने के लिए इसे अपेक्षाकृत बड़ा होना चाहिए।

4.2.2.4.6. यादृच्छिकरण –

एक वैज्ञानिक प्रतिदर्श अथवा उत्तम न्यादर्श में यादृच्छिकरण का गुण पाया जाता है यादृच्छिकरण का अर्थ यह है कि जनसंख्या की प्रत्येक इकाई को न्यादर्श में शामिल होने की समान सम्भावना रहती है। इसलिए यादृच्छिकरण न्यादर्श वास्तव में अपनी जनसंख्या का प्रतिनिधि होता है। बटलर ने भी इसका समर्थन किया है।

4.2.2.4.7. पक्षपातों से मुक्त –

एक उत्तम या वैज्ञानिक न्यादर्श की विशेषता यह है कि वह पक्षपात रहित होता है। स्मरण रखना चाहिए कि जो न्यादर्श वस्तुतः यादृच्छिकरण के सिद्धान्तों पर आधारित होता है वह पक्षपातों से मुक्त होता है।

4.2.2.4.8. प्रतिचयन अशुद्धियों से मुक्त –

वैज्ञानिक न्यादर्श वस्तुतः न्यादर्शन की अशुद्धियों से मुक्त होता है। मनोविज्ञान में प्रायः सभी कार्य न्यादर्श पर आधारित होते हैं, सम्पूर्ण जनसंख्या पर नहीं। इसलिए जनसंख्या पर आधारित मूल्य तथा न्यादर्श पर आधारित मूल्य में अन्तर हो सकता है। जिसको हम प्रतिचयन अशुद्धि कहेंगे। इस अशुद्धि को दूर करने या कम करने के लिए आवश्यक है कि न्यादर्श का आकार बड़ा हो और वह अपनी जनसंख्या का अधिक से अधिक प्रतिनिधित्व कर सके।

4.2.2.4.9. अध्ययन के उद्देश्य के अनुकूल –

एक वैज्ञानिक या उत्तम न्यादर्श के लिए एक आवश्यक शर्त यह है कि वह प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्य या उद्देश्यों के अनुकूल हो। इस प्रकार के न्यादर्श में घटक वैधता के साथ–साथ भविष्यवाणी वैधता भी उपलब्ध होती है।

4.2.2.4.10. उच्च विश्वसनीयता –

एक अच्छे न्यादर्श में उच्च विश्वसनीयता का गुण पाया जाता है। भिन्न–भिन्न समयों में किसी न्यादर्श के व्यवहार करने पर प्राप्त परिणामों में जिस मात्रा में स्थिरता तथा संगति उपलब्ध होती है, उसी मात्रा में न्यादर्श विश्वसनीय होता है।

4.2.3. वर्तमान शोध का न्यादर्श –

वर्तमान शोध उत्तर प्रदेश के बुन्देलखण्ड क्षेत्र के अन्तर्गत आने वाले सात जिलों में स्थित प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत नियमित शिक्षकों पर आधारित है। बुन्देलखण्ड क्षेत्र की स्थितियाँ इस क्षेत्र के पिछड़े होने की वजह से काफी विषम (भिन्न) है। क्षेत्र में प्राथमिक परिषदीय विद्यालयों का प्रसार भी विषम है। इसलिए शोधकर्ता ने समय, श्रम, धन एवं क्षेत्र की जटिलता तथा शोध की जनसंख्या के स्वरूप को ध्यान में रखते हुए अपने शोध न्यादर्श का चयन करने के लिए अर्द्ध–प्रसम्भाव्यता न्यादर्श की पुंजानुसार (Cluster) प्रतिचयन विधि से किया गया।

4.2.3.1. पुंजानुसार न्यादर्श –

इसे क्षेत्र या गुच्छ न्यादर्श भी कहा जाता है। यह एक ऐसी सम्भाव्यता न्यादर्श की विधि है जिसका उद्‌भव कृषि शोधों में हुआ था परन्तु व्यवहार परक विज्ञानों में यह काफी लोकप्रिय हो गया। इसका प्रयोग सर्वे शोध में अधिक किया जाता है, जहाँ जनसंख्या का आकार बड़ा तो होता ही है साथ ही प्रतिदर्श की इकाइयाँ काफी बड़े क्षेत्र में बिखरी हुई भी होती हैं। गुच्छ न्यादर्शन में जनसंख्या की कई इकाईयों में से कुछ इकाईयों का यादृच्छिक ढंग से चयन करके उनसे सम्बन्धित समस्त इकाईयों का चयन कर न्यादर्श तैयार किया जाता है। **करलिंगर**[89] के अनुसार –

"पुंज न्यादर्शन जिसका प्रयोग सर्वे में सर्वाधिक होता है, इकाईयों या सेटों या उपसेटों का क्रमिक यादृच्छिक न्यादर्शन होता है।"

4.2.3.2. पुंजानुसार न्यादर्शन के प्रमुख लाभ –

(i). क्षेत्र न्यादर्शन का प्रयोग बड़ी जनसंख्या के अध्ययन या बड़ा भौगोलिक क्षेत्र के अध्ययन में काफी लाभ दायक एवं सुविधाजनक सिद्ध हुआ है। इसमें शोधकर्ता को सुविधा होने का मुख्य कारण यह है कि यहाँ वह बड़ी जनसंख्या के भौगोलिक क्षेत्रों में से कुछ क्षेत्रों का यादृच्छिक ढंग से चयन कर मात्र उसी क्षेत्र के लोगों के विचारों का अध्ययन करता है।

(ii). क्षेत्र न्यादर्श में समय, श्रम एवं धन की बचत होती है। शोधकर्ता या साक्षात्कारकर्ता का यादृच्छिक ढंग से चुने गये मात्र कुछ व्यक्तियों के ही विचारों का अध्ययन करने से काम चल जाता है।

(iii). क्षेत्र न्यादर्शन में यादृच्छिक ढंग से चुने गये क्षेत्र के किसी प्रत्यार्थी का उसी क्षेत्र के अन्य लोगों के साथ प्रतिस्थापन जरूरत पड़ने पर आसानी से किया जा सकता है। इस ढंग की सुविधा न्यादर्शन की अन्य विधियों में सम्भव नहीं है।

---

89. उद्धृत मुहम्मद सुलैमान, 'शोध प्रणाली विज्ञान', पटना शुक्ला बुक डिपो, 1995, पृष्ठ–119

(iv). क्षेत्र न्यादर्शन में लचीलापन का गुण होता है। शोधकर्ता यदि चाहे तो प्रत्येक चुने गये क्षेत्र से व्यक्तियों को सीधे चयन कर सकता है।

(v). क्षेत्र न्यादर्शन में चयन किये गये व्यक्तियों के पुंज की विशेषताओं को जानना आसान होता है। इन गुणों को जान लेने से एक पुंज से प्राप्त निष्कर्ष को दूसरे पुंज पर विश्वास के साथ लागू किया जा सकता है।

4.2.3.3. <u>पुंजानुसार न्यादर्शन की प्रमुख परिसीमाऐं</u> –

पुंजानुसार न्यादर्शन की प्रमुख परिसीमीऐं निम्नलिखित है–

(i). इस प्रकार के न्यादर्शन में इस बात की कोई गारण्टी नहीं होती है कि इसमें सम्मलित किया गया प्रत्येक पुंज या क्षेत्र का आकार बराबर ही होगा क्योंकि शोधकर्ता को प्रत्येक पुंज के आकार पर कोई नियंत्रण नहीं रहता है।

(ii). गुच्छ न्यादर्शन में न्यादर्शन त्रुटि अधिक होती है। फलस्वरूप इस तरह के न्यादर्शन की निपुणता कम होती है।

(iii). इस तरह के न्यादर्शन में इस बात की भी गारण्टी नहीं होती है कि किसी एक क्षेत्र के पुंज में सम्मलित व्यक्ति अन्य दूसरे पुंज से पूर्णतः स्वतन्त्र होगा।

प्रस्तुत शोध में शिक्षकों के चयन हेतु बुन्देलखण्ड क्षेत्र के अन्तर्गत आने वाले सभी सातों जनपदों में अवस्थित परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों में से लाटरी विधि द्वारा कुछ विद्यालयों को चयनित करके उनके सभी शिक्षक एवं शिक्षिकाओं को न्यादर्श में सम्मलित किया गया है। जिनका विवरण निम्न सारणी में स्पष्ट किया गया है –

सारणी क्रमांक – 4.1

न्यादर्श में सम्मिलित शिक्षक–शिक्षिकाओं का पूर्ण विवरण

क्रम	शिक्षक समूह	बाँदा	चित्रकूट	महोबा	हमीरपुर	जालौन	झाँसी	ललितपुर	योग
1.	बी0टी0सी0 पुरुष ग्रामीण	8	2	2	15	16	6	9	58
2.	बी0टी0सी0 पुरुष शहरी	13	11	_	4	3	11	_	42
3.	बी0टी0सी0 महिला ग्रामीण	12	10	8	3	3	4	10	50
4.	बी0टी0सी0 महिला शहरी	18	14	3	1	10	4	_	50
5.	विशिष्ट बी0टी0सी0 पुरुष ग्रामीण	20	3	10	3	9	1	4	50
6.	विशिष्ट बी0टी0सी0 पुरुष शहरी	10	9	7	7	2	7	8	50
7.	विशिष्ट बी0टी0सी0 महिला ग्रामीण	10	4	8	7	9	8	10	56
8.	विशिष्ट बी0टी0सी0 महिला शहरी	5	2	7	6	4	12	8	44
	योग	96	55	45	46	56	53	49	400 महायोग

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि न्यादर्श में कुल 400 शिक्षक–शिक्षिकाओं को सम्मिलित किया गया है, जिनमें से 200 बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक–शिक्षिकाऐं हैं और 200 विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक–शिक्षिकाऐं हैं। इनमें 186 शिक्षक–शिक्षिकाऐं शहरी क्षेत्र के हैं तथा शेष 214 शिक्षक–शिक्षिकाऐं ग्रामीण क्षेत्र से हैं।

4.3. **शोध उपकरण** –

समय की गति बड़ी विचित्र है पहले हम सिद्धातों में अधिक विश्वास करते थे। प्रत्येक कार्य के पीछे अध्यात्मवाद और फल प्राप्ति की इच्छा निहित थी, लेकिन आज समय बदल गया है। अब काम के प्रति, जीवन के प्रति तथा वस्तु के प्रति हमारा दृष्टिकोण बदल गया है। अब हम भौतिकवाद के साथ–साथ उपयोगितावाद को भी महत्व देने लगे हैं प्रत्येक सिद्धान्त को हम पहले व्यवहार की

कसौटी पर् कस कर देखते हैं, यदि वह उपयोगी सिद्ध होता है तब हम उसको अपनाते हैं अन्यथा वह सिद्धान्त केवल सिद्धान्त मात्र बनकर रह जाता है। इसी कारण प्रत्येक विचार अथवा वस्तु को पहले व्यवहार अथवा उपयोगिता की कसौटी पर परखा जाता है तभी उसको मान्यता प्राप्त होती है।

4.3.1. शोध–उपकरण का आशय –

शिक्षा–अनुसंधान के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार की मापन प्रविधियों को प्रयुक्त किया जाता है। प्रत्येक मापन प्रविधि एक विशेष प्रकार के प्रदत्तों के संकलन का स्रोत होती है। मापन प्रविधियों के द्वारा एक विशेष प्रकार की सूचनाओं को परिमाणात्मक प्रदत्तों में प्राप्त किया जाता है। इन प्रविधियों द्वारा दोनों प्रकार के गुणात्मक तथा परिणात्मक प्रदत्त प्राप्त किये जाते है। इन प्रविधियों के आधार पर गुणों का संख्यात्मक वर्णन किया जाता है।

अधिकांश मापन प्रविधियों की रचना इसलिए की जाती है जिससे परिमाणात्मक प्रदत्त प्राप्त किये जा सकें। मापन–प्रविधियों द्वारा प्रदत्तों का संकलन शोध प्रक्रिया का महत्वपूर्ण सोपान है। इन प्रदत्तों के आधार पर ही किसी शोध कार्य के निष्कर्ष निकाले जाते है। मापन प्रविधियाँ शोध को वैज्ञानिक आधार प्रदान करती हैं। मापन के द्वारा प्रदत्त तीन स्तरों पर प्राप्त किये जाते है– सांकेतिक (आवृत्ति के रूप), अनुस्थितियों के रूप में तथा प्राप्तांक के रूप में। शिक्षा अनुसंधान में शैक्षिक, मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक प्रदत्तों को प्रयुक्त किया जाता है। जिन तकनीकों या उपकरणों का प्रयोग व्यक्तियों के व्यवहार के मापन के लिए किया जाता है उन्हें मापन तथा मूल्यांकन के उपकरणों या तकनीकों के नाम से सम्बोधित किया जाता है। विभिन्न प्रकार के व्यवहारों का मापन करने हेतु विभिन्न प्रकार के उपकरणों या परीक्षणों का प्रयोग किया जाता है।

फ्रीमेन[90] के शब्दों में –

"मनोवैज्ञानिक परीक्षण वह मानकीकृत यंत्र है जो समस्त व्यक्तित्व के एक पक्ष या अधिक पहलुओं का मापन शाब्दिक या अशाब्दिक अनुक्रियाओं या अन्य किसी प्रकार के व्यवहार के माध्यम से करता है।"

4.3.1.1. शोध उपकरणों के प्रकार –

शोधकर्ता अपने शोध विषय की आवश्यकतानुसार अलग–अलग तरह के शोध उपकरणों के माध्यम से आंकड़े एकत्र कर अपना अध्ययन पूर्ण करता है, सामान्यतः शैक्षिक शोधों में निम्न उपकरणों का प्रयोग किया जाता है –

1. अवलोकन

---

90. फ्रीमैन, उद्धृत डॉ0 महेश भार्गव, 'आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन', आगरा; हरप्रसाद भार्गव, 1977, पृष्ठ–72

2. परीक्षण
3. साक्षात्कार
4. अनुसूची
5. प्रश्नावली
6. निर्धारण मापनी
7. प्रक्षेपीय मापनी
8. समाजमिति
9. संचयी अभिलेख
10. ऐनकडोटल अभिलेख
11. परीक्षण बैटरी

4.3.2. अच्छे शोध–उपकरण की कसौटियाँ –

साधारण रूप में यदि कोई वस्तु हमारी उन सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करती है जिस उद्देश्य से हमने उसे खरीदा है तो हम उसे अच्छी मानते है यही बात मनोवैज्ञानिक परीक्षण के सम्बन्ध में भी लागू होती है। इसीलिये किसी भी परीक्षण की श्रेष्ठता का निर्धारण कुछ वांछनीय कसौटियों के आधार पर ही किया जा सकता है। एक अच्छे परीक्षण की निम्न कसौटियाँ होती है–'

4.3.2.1. व्यावहारिक विशेषताएं –

अच्छे मनोवैज्ञानिक उपकरण की व्यावहारिक कसौटियाँ निम्नलिखित है–

4.3.2.1.1. सोद्देश्यपूर्णता –

उत्तम परीक्षण की 'सोद्देश्यपूर्णता' एक प्रमुख विशेषता है। कहने का तात्पर्य यह है कि किसी भी प्रकार की परीक्षा का निर्माण करने से पूर्व उसके विशिष्ट उद्देश्य निर्धारित कर लेने चाहिए। परीक्षा चाहे निदानात्मक हो, उपलब्धि मापन हेतु, व्यक्तित्व मापन हेतु अथवा बुद्धि मापन हेतु निर्मित की गयी हो, प्रत्येक के उद्देश्य भिन्न होंगे। इसी दृष्टि से एक उत्तम परीक्षण का निर्माण उसी स्थिति में संभव है जबकि हमारे पास कोई उद्देश्य, लक्ष्य अथवा समस्या हो, अमूर्त परिस्थितियों में परीक्षण की रचना कदापि संभव नहीं हो सकती क्योंकि परीक्षण तो सदैव ही उद्देश्य पूर्ति का एक साधन मात्र है।

4.3.2.1.2. व्यापकता –

व्यापकता से तात्पर्य यह है कि परीक्षा जिस योग्यता का मापन करने के लिए बनायी गयी है उस योग्यता के समस्त क्षेत्र तथा जिस पाठ्यक्रम पर आधारित हो उसमें समस्त पहलुओं पर प्रश्न पूँछे जाए। जितना अधिक कोई परीक्षण पाठ्यक्रम एवं उसके विभिन्न अंशों एवं क्षेत्रों से सम्बन्धित होगा

उतना ही व्यापक कहलायेगा। दूसरे शब्दों में परीक्षण इतना व्यापक होना चाहिए कि वह अपने लक्ष्य की पूर्ति के साथ–साथ व्यवहार के विस्तृत प्रतिदर्श रूप का भी प्रतिनिधित्व कर सके। परीक्षण की व्यापकता, निर्माता की स्वयं की सूझ–बूझ, बुद्धि एवं क्षमता पर निर्भर करती है।

4.3.2.1.3. मितव्यता –

परीक्षण निर्माण करते समय परीक्षण निर्माणकर्ता को यह अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि परीक्षण धन की दृष्टि से शोधकर्ता को मंहगा सिद्ध न हो, परीक्षण निर्माता की यह कोशिश रहनी चाहिए कि परीक्षण अनावश्यक रूप से विस्तृत न हो जाए। परीक्षण के स्वरूप के अनुरूप जिन अति महत्वपूर्ण पदो के समावेश से परीक्षण उद्‌देश्यों की पूर्ति हो सके, केवल उन्हीं पदों को परीक्षण में स्थान दिया जाना चाहिए। व्यर्थ के पदों को परीक्षण में सम्मिलित करके मात्र परीक्षण लम्बाई की औपचारिकताएं पूरी न की जाए साथ ही उत्तर–पत्रक अत्यन्त कुशलता पूर्वक तैयार किया जाए ताकि पत्रक अधिक विस्तृत न हो जाए।

4.3.2.1.4. उपयोगिता –

वह परीक्षण जो निर्माण करने, छात्रों एवं प्रयोज्य द्वारा उसकों हल करने तथा उसका आंकलन करने तीनों पक्षों की दृष्टि से सरल हो, एक अच्छा परीक्षण कहलाता है एक परीक्षण जिसके निर्माण में कठिनाई न हो, छात्रों एवं उत्तरदाता को भी उत्तर देने में कोई असुविधा न हो, अंकन प्रक्रिया में भी किसी प्रकार की जटिलता न आये, उपयोगी एवं सहजता के गुण से युक्त परीक्षण समझा जाता है। प्रशासन में सुविधा की दृष्टि से निर्माता को ऐसे परीक्षण की रचना करनी चाहिए जिसे विद्यार्थी अपनी सामयिक परिस्थितियों के अनुकूल प्रभावी ढंग से प्रशासित कर सके।

4.3.2.1.5. प्रतिनिधित्व

वस्तुतः हम पूरी जनसंख्या को लेकर कोई अनुसंधान कार्य करते हैं, लेकिन पूरी जनसंख्या के आंकड़े नहीं ले पाते। अतः उनमें से एक विस्तृत न्यादर्श ले सकते हैं, जिस पर हमारा सम्पूर्ण अनुसंधान कार्य आधारित होता है। एक उत्तम परीक्षण की दृष्टि से उसमें यह विशेषता होनी चाहिए कि वह प्रतिनिधि कहा जा सके। कहने का तात्पर्य यह है कि व्यक्ति के व्यवहार के जिस न्यादर्श का मापन करने के लिए परीक्षण की रचना की गयी है, उसका मापन परीक्षण प्रतिनिधिक रूप से कर सके।

4.3.2.1.6. ग्राह्यता

एक अच्छे परीक्षण में ग्राह्यता का गुण होना भी अनिवार्य है। ग्राह्यता से तात्पर्य है – किसी भी परीक्षण का उन व्यक्तियों पर तथा उन परिस्थितियों में सफलता पूर्वक प्रशासित किया जाना, जिनकों आधार बनाकर उस परीक्षण विशेष की मानकीकरण की प्रक्रिया सम्पन्न की गयी है।

4.3.2.2. तकनीकी कसौटियाँ –

एक अच्छे मनोवैज्ञानिक परीक्षण में निम्न तकनीकी कसौटियाँ होती है –

4.3.2.2.1. मानकीकृत

एक उत्तम परीक्षण मानकीकृत होता है। इसका अर्थ यह है कि परीक्षण में दिये जाने वाले प्रश्नों, निर्देशों, परीक्षा लेने की विधियों तथा प्रशासन एवं फलांकन प्रक्रिया को पहले से ही निर्धारित कर लिया गया है, ताकि मूल्यांकन वस्तुनिष्ठ तरीके से किया जा सके।

4.3.2.2.2. वस्तुनिष्ठता –

किसी भी परीक्षण का वस्तुनिष्ठ होना अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि इसका प्रभाव विश्वसनीयता एवं वैधता दोनों पर ही पड़ता है। वास्तव में जो परीक्षा वस्तुनिष्ठ नहीं होती वह वैध तथा विश्वसनीय भी नहीं हो सकती। कोई परीक्षा वस्तुनिष्ठ तब होती है जब उसके प्रश्नों के उत्तरों पर अंक देते समय विभिन्न व्यक्तियों का मतभेद न हो, जिसके प्रश्नों की व्याख्या या जिनके अर्थ भिन्न–भिन्न प्रकार से न किये जा सकते हो, जिनके उत्तर बिल्कुल ठीक या बिल्कुल अशुद्ध हो और उन पर अंक देते समय विभिन्न व्यक्तियों में मतभेद न होता हो

4.3.2.2.3. विभेदकारिता –

एक उत्तम परीक्षण में विभेदकारिता का गुण अनिवार्य रूप से विद्यमान रहता है। वस्तुतः विभेदकारी परीक्षा उस परीक्षा को कहते हैं जो उच्च योग्यता एवं निम्न योग्यता वाले विद्यार्थियों में भेद बता सके अर्थात यह परीक्षण प्रतिभाशाली एवं मन्दबुद्धि बालकों में अन्तर स्पष्ट कर सके।

4.3.2.2.4. विश्वसनीयता –

एक उत्तम मनोविज्ञान परीक्षण की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता उसकी विश्वसनीयता है अर्थात जिस पर विश्वास किया जा सके। विश्वसनीयता से हमारा तात्पर्य ऐसी परीक्षा से है जिसको बार–बार प्रशासित करने पर एक से ही निष्कर्ष प्राप्त हो।

फ्रीमैन के अनुसार – **"विश्वसनीयता का तात्पर्य उस विशेषता से है जिसमें एक परीक्षण आन्तरिक रूप से समान है और वह परीक्षण तथा पुर्नपरीक्षण में समान फल प्राप्त करता है।"**

4.3.2.2.5. वैधता –

यदि कोई परीक्षण वही मापन करता है जिसका मापन करने के लिए उसका निर्माण हुआ है तो वह परीक्षण वैध कहलाता है। हम कह सकते है कि वैधता का अर्थ है वह कार्य कुशलता जिससे कोई परीक्षण उस तथ्य का मापन करता है जिसके लिए वह बनाया गया है।

4.3.2.2.6. मानक –

शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक मापन में प्राप्तांकों का अर्थ समझने एवं उनकी व्याख्या करने के लिए कुछ प्रतिमानों की आवश्यकता पड़ती है। इन्हीं प्रतिमानों को मानक भी कहा जाता है मानक या सामान्यों का निर्धारण प्रमापीकरण प्रक्रिया का एक आवश्यक पक्ष है बिना मानकों के परीक्षण प्राप्तांकों की व्याख्या नहीं की जा सकती। ये मानक न केवल समूह में व्यक्ति विशेष की स्थिति का ज्ञान कराते हैं बल्कि इसके द्वारा एक व्यक्ति की तुलना दूसरे व्यक्ति से भी की जा सकती है।

वस्तुतः मानक का साधारण अर्थ समूह के औसत निष्पादन से है। ये मानक न केवल समूह के औसत निष्पादन को बताते है अपितु औसत से ऊपर या नीचे विभिन्न मात्रा में विचलन को भी व्यक्त करते हैं।

4.3.3. वर्तमान शोध में प्रयुक्त उपकरणों का संक्षिप्त परिचय –

शोधकर्ता द्वारा अपने अध्ययन हेतु प्रमाणीकृत परीक्षणों का प्रयोग किया गया है ताकि शोध की परिशुद्धता बनी रहे। प्रयोग में लाये गये परीक्षणों का संक्षिप्त विवरण निम्नवत् है –

4.3.3.1. कृत्य–सन्तोष परीक्षण –

कृत्य–संतोष के मापन के लिए डॉ0 एस0के0 सक्सेना द्वारा निर्मित एवं प्रमाणीकृत परीक्षण का प्रयोग किया गया है। उनके अनुसार कृत्य–संतोष, शिक्षकों का शिक्षण व्यवसाय के प्रति विकसित विभिन्न दृष्टिकोंणो का परिणाम है। यह दृष्टिकोंण कार्य के विभिन्न पहलुओं (क्षेत्रों) से सम्बन्धित हैं, जैसे – लगाव, उन्नति के अवसर, योग्यता का उपयोग, जिम्मेदारियाँ, सहकर्मी, सृजनात्मक आत्मनिर्भरता के अवसर, सामाजिक स्थिति, सुरक्षा, प्रधानाचार्य एवं प्रबन्धतंत्र से सम्बन्ध, शिक्षण कार्य में विविधता, सेवा की शर्तें, नैतिक मूल्य, सामाजिक पहचान आदि। इसलिए कृत्य–संतोष को एक स्कूल के नियोक्ता के रूप में किसी शिक्षक के विभिन्न दृष्टिकोंणो के परिणाम के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।

सर्वप्रथम परीक्षण के निर्माण हेतु कृत्य–संतोष के निर्माण हेतु 40 पद हाँ और न में उत्तर वाले चुने गये, जोकि पूर्व अध्ययनों तथा उच्च माध्यमिक स्कूलों के शिक्षकों, इण्टरमीडिएट और कालेज के

शिक्षकों तथा शिक्षक–प्रशिक्षकों के साक्षात्कारों पर आधारित थे। इन पदों (आइटम) का वर्गीकरण शिक्षण में कृत्य–संतोष के चार पहलुओं के आधार पर किया गया।

(अ) कार्य से संतुष्टि

(ब) वेतन, सुरक्षा तथा प्रोन्नति नीतियों से संतुष्टि

(स) सांस्थानिक योजनाओं एवं नीतियों से संतुष्टि

(द) विद्यालय प्रबन्धतंत्र से संतुष्टि।

परीक्षण में चयनित 40 पद 12 विशेषज्ञों के विचारों एवं टिप्पणी पर चार विभिन्न पहलुओं पर वर्गीकृत किये गये तथा इन पदों पर आगरा स्कूल के 20 शिक्षकों के साथ परिचर्चा की गयी।

विशेषज्ञों एवं शिक्षकों की टिप्पणियों एवं आलोचनाओं के बाद में 19 पद (अस्वीकृत) समाप्त कर दिये गये, जबकि अन्य पदों को पुनः संरचित किया गया और फिर परीक्षण में उन 31 पदों को रखा गया जिनके बारे में सभी निर्णायक शतप्रतिशत सहमत थे। फिर इस परीक्षण को जोधपुर शहर के उच्च माध्यमिक विद्यालयों से संयोगिक विधि से चयनित 100 शिक्षक एवं शिक्षिकाओं पर प्रशासित किया गया। परिणामस्वरूप परीक्षण के 27 पद सकारात्मक तथा 2 पद नकारात्मक चिन्हित किये गये। सही उत्तर वाले को 1 अंक तथा गलत उत्तर वाले को 0 अंक प्रदान किया गया। इस प्रकार शिक्षकों का कृत्य–संतोष का प्राप्तांक 0 से 31 तक प्राप्त हुआ फिर सभी शिक्षकों के प्राप्तांकों को अरोही क्रम में रखा गया तथा कैली मैथेड से ऊपर के 27% शिक्षकों तथा नीचे के 27% शिक्षकों को आधार बनाकर दो समूह बना लिए गये। तत्पश्चात प्रत्येक पद की विभेदन क्षमता को परखा गया। जिसकी विभेदन क्षमता 25 और उसके ऊपर आयी, ऐसे 29 पदों को परीक्षण के अन्तिम प्रारूप में रखा गया।

परीक्षण की विश्वसनीयता दो विधियों से ज्ञात की गयी। प्रथम 100 इकाईयों के प्रशासन के आधार पर अर्द्ध–विच्छेदन विधि से स्पीयरमैन ब्राऊन फारमूले के प्रयोग से 0.95 प्राप्त हुई तथा द्वितीय 150 इकाईयों के परीक्षण के आधार पर परीक्षण पुर्नपरीक्षण विधि से विश्वसनीयता 0.78 प्राप्त हुई। परीक्षण की कैश वैलीडिटी तथा कन्टेन्ट वैलीडिटी बहुत ही उच्च श्रेणी की प्राप्त हुई।

परीक्षण का प्रशासन बड़ा ही सरल है। इसमें उत्तर देने के लिए निर्देश दिये गये है। परीक्षण में पद संख्या 6 तथा 29 को छोड़कर सभी सकारात्मक पद है जिनके उत्तर हाँ देने पर 1 अंक तथा न देने पर 0 (शून्य) अंक प्राप्त होगा। जबकि पद संख्या 6 तथा 29 में ठीक इसके विपरीत। परीक्षण पूर्ण करने के लिए कोई समय सीमा नहीं है फिर भी लगभग 20 मिनट में परीक्षण पूर्ण किया जा सकता है।

कानपुर शहर की 202 इकाईयों के आधार पर परीक्षण के प्रतिशतांक मानक ज्ञात किये गये हैं। जिस आधार पर कृत्य–संतोष को बहुत अच्छा, अच्छा, सामान्य, कम तथा बहुत कम नामक पाँच श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है।

4.3.3.2. समायोजन प्रश्नावली –

न्यादर्श की इकाईयों के समायोजन को ज्ञात करने के लिए एस0के0मंगल द्वारा निर्मित एवं प्रमाणीकृत 'मंगल टीचर्स एडजस्टमेन्ट इनवेन्टरी' का प्रयोग किया गया है। इसके निर्माण के लिए सर्वप्रथम परीक्षण में शिक्षक समायोजन से सम्बन्धित 21 क्षेत्रों को स्वच्छन्द रूप से चयनित किया गया और इन क्षेत्रों से 410 पदों का निर्माण किया गया। विचारों की एकरूपता और भाषा की दृष्टि से विचारोपरान्त इन 410 पदों में से 23 पदों को हटा दिया गया तथा शेष 387 पदों का चयन पद विश्लेषण के लिए किया गया पद विश्लेषण के बाद 134 पदों को अस्वीकृत कर दिया गया तथा शेष 253 पदों को आधार बनाकर कारक–विश्लेषण के आधार पर शिक्षकों के समायोजन को निम्न पाँच क्षेत्रों में वर्गीकृत किया गया।

1. संस्था के प्रशासनिक एवं सामान्य वातावरण के साथ समायोजन।
2. समाज–मनो–शारीरिक समायोजन।
3. व्यावसायिक सम्बन्धों पर आधारित समायोजन।
4. व्यक्तिगत जीवन के साथ समायोजन।
5. आर्थिक समायोजन और कृत्य–संतोष।

कारक विश्लेषण के परिणामों को दृष्टिगत रखते हुए 21 क्षेत्रों के उपक्षेत्रों के लिए परीक्षण को पुनः निम्नवत् व्यवस्थित किया गया है –

सारणी–क्रमांक 4.2

पाँच आयामों में शिक्षक समायोजन परीक्षण के पदों का वितरण

क्रम	समायोजन के कारक अथवा क्षेत्र	पद की क्रमसंख्या	पदों की संख्या	अधिकतम प्राप्तांक
1.	प्रशासनिक और विद्यालय के सामान्य वातावरण के साथ समायोजन	1 से 44 203 से 223	65	130
2.	समाज–मनो–शारीरिक समायोजन	45 से 95 224 से 253	81	162
3.	व्यावसायिक सम्बन्धों पर आधारित समायोजन	96 से 134 203 से 212	49	98
4.	व्यक्तिगत जीवन के साथ समायोजन	135 से 167 213 से 253	74	148
5.	आर्थिक समायोजन और कृत्य–संतोष	168 से 202	35	70
		योग	304	608

उपरोक्त परीक्षण के अन्तिम प्रारूप के मानकीकरण के लिए हरियाणा राज्य के 11 जनपदों के 100 पुंजानुसार प्रतिचयन पद्धति के आधार पर चयनित हाईस्कूलों के 1217 शिक्षकों के (714 पुरुष एवं 503 महिला) परीक्षण को प्रशासित किया गया। परीक्षण की विश्वसनीयता 200 न्यादर्श की इकाईयों के आधार पर परीक्षण पुर्नपरीक्षण विधि से 0.99 तथा अर्द्ध–विच्छेदन विधि से भी 0.99 प्राप्त हुई।

परीक्षण की निकष संदर्भित वैधता बेल्स एडजस्टमेन्ट इनवेन्टरी तथा प्रधानाध्यापकों द्वारा अपने अध्यापकों को दी गयी रेटिंग के आधार पर प्राप्त की गयी। प्रथम आधार पर वैधता 0.967 तथा द्वितीय आधार पर 0.969 प्राप्त हुई।

परीक्षण का प्रशासन के लिए निर्देश दिये गये हैं। प्रयोज्य को प्रत्येक पद के लिए सहमत, असहमत तथा अनिश्चय नामक तीन विकल्पों में से अपनी सहमति दर्शानी है। परीक्षण में कुल 253 पदों में से 41 सकारात्मक पद है जिनके प्रति सहमति प्रदर्शित करने पर प्रयोज्य के कृत्य–संतोष तथा असहमति प्रदर्शित करने पर कृत्य–असंतोष प्रदर्शित होती है जबकि शेष 212 नकारात्मक पद है जिन पर प्रयोज्य की असहमति कृत्य–संतुष्टि तथा सहमति कृत्य–असंतुष्टि प्रदर्शित करती है।

परीक्षण में क्रम संख्या 44, 53, 57, 61, 75, 76, 83, 87, 88, 90 से 94, 101 से 103, 110, 111, 117 से 119, 123, 124, 126, 137, 140, 145, 148, 154, 157, 165, 167, 176, 181, 182, 189, 192, 196, 207 और 233, सकारात्मक पद हैं शेष नकारात्मक पद हैं।

परीक्षण के प्रतिशतांक मानक पुरुष एवं महिला शिक्षकों के लिए अलग–अलग निर्धारित किये गये। 714 पुरुष शिक्षकों के न्यादर्श के आधार पर पुरुष शिक्षकों के लिए तथा 503 महिला शिक्षकों के न्यादर्श के आधार पर महिला शिक्षकों के लिए प्रतिशतांक मानक निर्धारित किये गये। परीक्षण में प्राप्त मूल प्राप्तांकों के आधार पर समायोजन की पाँच श्रेणियाँ निर्धारित की गई हैं –

		पुरुष	महिला
A –	बहुत अच्छा समायोजन	– 555 या अधिक	– 555 या अधिक
B –	अच्छा समायोजन	– 463 से 554	– 471 से 554
C –	सामान्य समायोजन	– 369 से 462	– 385 से 470
D –	निम्न समायोजन	– 277 से 368	– 301 से 384
E –	बहुत निम्न समायोजन	– 276 या इससे कम	– 300 या इससे कम

4.3.3.3. **शिक्षण में रुचि मापनी** –

शिक्षकों की 'शिक्षण में रुचि' को ज्ञात करने के लिए एस0बी0 कक्कर द्वारा निर्मित एवं प्रमाणीकृत 'कक्कर इन्ट्रेस्ट इन टीचिंग स्केल' का प्रयोग किया गया है।

परीक्षण निर्माणकर्ता, जिसने अपना सम्पूर्ण जीवन राज्य के उन शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों में बिताया है जो प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों के लिए शिक्षक तैयार करते हैं और शिक्षा के क्षेत्र में आधारभूत शोध भी करते हैं तथा बालक की प्रारम्भिक शिक्षा के स्तर को भी ऊँचा उठाने के लिए कटिबद्ध होने का दावा करते है। वह भी इस तथ्य को जानने के लिए सदैव तत्पर रहा है कि क्या शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों से निकलने वाले भावी प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक क्या वास्तव में शिक्षण में रुचि रखते हैं ? और यदि हाँ तो किस सीमा तक ?

परीक्षण निर्माणकर्ता का दृढ़ अभिमत है कि शिक्षक–प्रशिक्षण में प्रवेश लेने से पूर्व प्रवेशार्थी की शिक्षण कार्य में अभिरुचि की परीक्षा अवश्य ली जानी चाहिए। निर्माणकर्ता द्वारा निर्मित किये गये 'KITS' नाम के उपकरण का उद्‌देश्य शिक्षक–प्रशिक्षण में प्रवेश के पूर्व एवं पश्चात् उसकी शिक्षण में रुचि का मूल्यांकन करना है। प्रारम्भ में इस उपकरण को हाईस्कूल या इण्टरमीडिएट उत्तीर्ण उन छात्रों पर प्रशासित किया गया था जो प्राइमरी अध्यापक बनने के इच्छुक थे।

इस उपकरण की दो विशेषतायें हैं पहली यह कि इसका प्रशासन बहुत कम समय अर्थात 20 मिनट में किया जा सकता है और दूसरी यह कि व्यक्ति विशेष के लिए इसकी पर्याप्त विश्वसनीयता है। यही कारण है कि इस चर में यह असाधारण प्रभावी माध्यम है। इस स्केल को एकांश विश्लेषण के माध्यम से विकसित किया गया है। प्रारम्भ से लेकर अंत तक इसमें हाईस्कूल, उच्चतर माध्यमिक और महाविद्यालयों के न्यादर्शों का प्रयोग किया गया है। इन सभी वर्गों के लिए एकांश प्रत्यय बहुत लाभकारी पाया गया हैं। इन वर्गों में से प्रत्येक में विभेदमूलक शक्ति पाई गयी है।

इस उपकरण में विभिन्न प्रकार की रुचि के 27 पद हैं। प्रत्येक पद के लिए 5 विकल्प दिये गये है। जिनमें से उत्तरदाता को उस विकल्प का चयन करना है जो उसकी दृष्टि में सर्वाधिक उपयुक्त है। प्रत्येक वर्ग में विकल्पों को बहुत बड़ी सीमा तक सामाजिक वांछनीयता के लिए बराबर माना गया है। इस प्रकार इस बात की सम्भावना काफी सीमा तक कम हो जाती है कि उत्तर देने वाला, विकल्प की महत्ता की मात्रा की अपेक्षा अपनी व्यक्तिगत अभिरुचि को अधिक महत्व दे।

परीक्षण में जो पद रखे गये है, उनमें से प्रत्येक का उत्तर इस बात को स्पष्ट करता है कि परीक्षण देने वाले व्यक्ति की शिक्षण में वास्तविक रुचि है अथवा नहीं ? पदों का उद्‌देश्य व्यक्ति की पढ़ने में रुचियों, पसन्दों, स्कूल के विषय, मनोरजंन सम्बन्धी रुचियों, विभिन्न प्रकार के लोगों की पसन्द–नापसन्द, प्रेम एवं स्नेह, वर्तमान व्यक्तित्व गुणों, लक्ष्यों, वर्तमान क्षमताओं, सामान्य रुचियों, व्यावसायिक रुचियों आदि के माध्यम से यह खोजना है कि व्यक्ति के उत्तर एवं प्रतिक्रियायें वस्तुतः शिक्षण में उसकी रुचि के द्योतक हैं अथवा नहीं।

इस परीक्षण का विश्वसनीयता गुणांक अर्द्ध–विच्छेदन विधि से 0.72, परीक्षण पुर्नपरीक्षण विधि से 0.69 तथा कुडर रिचर्डसन विधि से 0.62 पाया गया है।

परीक्षण की वैधता कई विधियों से ज्ञात की गई। परीक्षण की विषयवस्तु वैधता उच्च श्रेणी की पायी गई, पद वैधता 0.07 से 0.56 तक पाई गई, समवर्ती वैधता 0.71, भविष्य कथनात्मक वैधता 0.69 तथा इनटर्म ऑफ रिलायविलिटी इनडेक्स वैधता 0.71 पायी गई।

परीक्षण का प्रशासन आसान है। परीक्षण में कुल 27 पद हैं, जिनके पाँच सम्भावित विकल्प दिये गये है। जिनमें से एक विकल्प सही है। सही विकल्प का चयन करने पर 1 अंक प्रदान किया जाता है तथा गलत विकल्प पर कोई अंक नहीं दिया जाता है।

परीक्षण में प्राप्त मूल प्राप्तांकों के आधार पर किसी भी इकाई की 'शिक्षण में रुचि' को निम्न पाँच श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है –

A -	उच्चतम -	18 या इससे अधिक
B -	उच्च -	15 से 17
C -	सामान्य -	09 से 11
D -	निम्न -	03 से 05
E -	बहुत निम्न -	2 या इससे कम

4.4. प्रदत्त संकलन :–

4.4.1. परीक्षणों का प्रशासन :–

व्यावहारिक मनोविज्ञान में शोध कार्य के लिए प्रदत्तों का संकलन शोध के उपकरणों का प्रशासन, न्यादर्श सदस्यों पर करके किया जाता है। शोध में विभिन्न प्रकार के चरों के मापन के लिए विविध प्रकार की मापन प्रविधियों का प्रयोग किया जाा है। शोध के उपकरणों की सहायता से विविध प्रकार के प्रदत्तों का संकलन किया जाता है। इसके लिए आवश्यक होता है कि शोधकर्ता अपने चरों की प्रकृति को भली प्रकार समझने का प्रयास करे और समुचित मापन प्रविधि का चयन करके प्रदत्तों का संकलन करे। प्रदत्तों की प्रकृति, चर की प्रकृति एवं मापन के उपकरण की प्रकृति पर आधारित होती है।

प्रस्तुत शोध में शिक्षक–शिक्षिकाओं के कृत्य–संतोष, समायोजन तथा शिक्षण में रुचि ज्ञात करने के लिए उल्लेखित परीक्षणों का विधिवत प्रशासन कर आँकड़े एकत्र किये गये हैं।

यहाँ यह उल्लेखित है कि 'शिक्षण में रुचि' का परीक्षण अंग्रेजी भाषा में ही उपलब्ध होने के कारण प्रयोज्यों की प्रकृति को ध्यान में रखकर पहले शोधकर्ता द्वारा परीक्षण का हिन्दी रूपान्तरण किया गया तत्पश्चात् उसका प्रशासन न्यादर्श की इकाईयों पर किया गया है।

4.4.2. **अंकीकरण** :–

प्रस्तुत शोध में जो शिक्षक–शिक्षिकाऐं सम्मिलित किये गये हैं, उनके कृत्य–संतोष, समायोजन तथा शिक्षण में रुचि का ऑकलन निम्न तरीके से किया गया है –

4.4.2.1. **कृत्य–संतोष का अंकीकरण** :–

शिक्षक–शिक्षिकाओं के कृत्य–संतोष का मापन एस0के0 सक्सेना द्वारा निर्मित 'जॉब सेटिस्फेक्शन स्केल फार टीचर्स' का प्रयोग कर किया गया है। इस परीक्षण में कुल 29 पद हैं, जिनमें पद क्रमांक 6 तथा 29 नकारात्मक पद तथा शेष 27 सकारात्मक पद हैं। प्रत्येक पद के प्रति न्यादर्श की इकाईयों को अपनी प्रतिक्रिया 'हाँ' या 'न' में देना है। सकारात्मक पदों पर प्रतिक्रिया 'हाँ' में देने पर 1 अंक तथा 'न' में देने पर 0 (शून्य) अंक दिया गया तथा नकारात्मक पदों पर प्रतिक्रिया 'न' में देने पर 1 अंक तथा 'हाँ' देने पर 0 (शून्य) अंक दिया गया। तत्पश्चात् प्रयोज्यों द्वारा पूरे परीक्षण पर प्राप्त प्राप्तांकों को परीक्षण के ऊपर अंकित कर दिया गया। जो उनके कृत्य–संतोष को दर्शाता है।

4.4.2.2. **समायोजन का अंकीकरण** :–

शिक्षक–शिक्षिकाओं के समायोजन का मापन एस0के0 सक्सेना द्वारा निर्मित 'टीचर एडजेस्टमेन्ट इनवेन्टरी' का प्रयोग कर किया गया है। इस परीक्षण में कुल 253 पद हैं, जिसका उत्तर प्रयोज्य द्वारा अपना मत सहमत, अनिश्चय तथा असहतम के रूप में दिया गया है, परीक्षण में कुल 253 पदों में से 41 पद ऐसे हैं जिनके प्रति यदि प्रयोज्य द्वारा अपना अभिमत सहमति के रूप में दिया गया है तो उसे इसके लिए 2 अंक अनिश्चय के लिए 1 अंक तथा असहमत के लिए 0 (शून्य) अंक दिया गया तथा शेष 212 पदों पर यदि प्रयोज्य द्वारा अपना अभिमत असहमत के रूप में दिया गया तो उसे 2 अंक, अनिश्चय के लिए 1 अंक तथा सहमत के लिए 0 (शून्य) अंक दिया गया। अंकीकरण के लिए मूल्यांकन कुंजी का प्रयोग किया गया। तत्पश्चात् प्रयोज्यों द्वारा पूरे परीक्षण पर प्राप्त प्राप्तांकों को परीक्षण के ऊपर अंकित कर दिया गया, जो उनके समायोजन को दर्शाता है।

4.4.2.3. **शिक्षण में रुचि का अंकीकरण** :–

न्यादर्श में सम्मिलित शिक्षक–शिक्षिकाओं की शिक्षण में रुचि का पता लगाने के लिए एस0बी0 कक्कर द्वारा निर्मित 'कक्कर इनट्रेस्ट इन टीचिंग स्केल' का प्रयोग किया गया। इस परीक्षण में कुल 27 पद है, जिनके उत्तर प्रयोज्यों द्वारा पाँच विकल्पों में से एक सही उत्तर का चयन कर दिये गये। प्रयोज्यों को प्रत्येक पद के सही विकल्प के लिए मैनुअल के आधार पर एक 1 अंक तथा गलत विकल्प के लिए शून्य अंक प्रदान किये गये। तत्पश्चात् प्रयोज्यों के पूरे परीक्षण में प्राप्त प्राप्तांकों को परीक्षण के ऊपर अंकित कर दिया गया जो उसकी शिक्षण में रुचि को दर्शाता है।

4.4.3. शोध में प्रयुक्त सांख्यकीय प्रविधियाँ –

एकत्रित आँकड़ों को सारणीबद्ध किया गया, तत्पश्चात् आवश्यकतानुसार वर्गवार विभाजित करके उनका माध्य, मानक विचलन, ज्ञात किया गया तथा परिकल्पनाओं का सत्यापन टी–परीक्षण की सहायता से किया गया है।

माध्य :–

माध्य ज्ञात करने के लिए निम्न सूत्र प्रयोग किया गया –

$$M = A.M. + \frac{\Sigma fd}{n} \times C.I.$$

जहाँ, M = वास्तविक माध्य

A.M. = कल्पित माध्य

f = आवृत्ति

d = कल्पित माध्य वाले वर्गान्तर से विचलन

Σfd = आवृत्ति तथा विचलन के गुणनफल का योग

N = कुल आवृत्तियाँ

C.I. = वर्गान्तर की सीमा अथवा लम्बाई

मानक विचलन –

मानक विचलन की गणना निम्न सूत्र के माध्यम से की गयी है –

$$S.D = i\sqrt{\frac{\Sigma fd^2}{N} - \left(\frac{\Sigma fd}{N}\right)^2}$$

जहाँ, S.D = मानक विचलन

f = आवृत्ति

d = कल्पित माध्य वाले वर्गान्तर से विचलन

Σfd = आवृत्ति तथा विचलन के गुणनफल का योग

Σfd^2 = आवृत्ति तथा विचलन के गुणनफल का पुनः विचलन से गुणनफल का योग

N = कुल आवृत्तियाँ

i = वर्गान्तर की सीमा अथवा लम्बाई

<u>क्रान्तिक अनुपात</u> :–

परिकल्पना के सत्यापन के लिए दो मध्यमानों के बीच की जाँच हेतु क्रान्तिक अनुपात (C.R.) का उपयोग किया गया है, क्योंकि दो बड़े समूहों के मध्यमानों के अन्तर की जाँच क्रान्तिक अनुपात (C.R.) परीक्षण द्वारा ज्ञात करना अच्छा रहता है।

इस परीक्षण के अन्तर्गत दोनों मध्यमानों के अन्तर को दोनों प्रतिदर्शों के अन्तर की मानक त्रुटि से विभाजित करने पर जो मान प्राप्त होता है, वह क्रान्तिक अनुपात कहलाता है। इसे ज्ञात करने के चरण निम्नलिखित हैं।

(i) प्रत्येक समूह के मध्यमान की मानक त्रुटि ज्ञात करना।
(ii) दोनों समूहों के अन्तर की मानक त्रुटि ज्ञात करना।
(iii) दोनों समूहों के मध्यमानों में अन्तर (M.D.) को अन्तर की मानक त्रुटि से विभाजित करना तथा क्रान्तिक अनुपात के मान को ज्ञात करना।
(iv) दोनों समूहों की अलग–अलग संख्याओं के आधार पर स्वतन्त्रता के अंशों को ज्ञात करना।
(v) दी गयी टी–तालिका में सम्बन्धित स्वतन्त्रता के अंशों पर तथा विश्वास के विभिन्न स्तरों पर सार्थकता की जाँच करना।

$$\text{C.R.} = \frac{\text{M1} \sim \text{M2} - 0}{\sigma d}$$

जहाँ, C.R. = क्रान्तिक अनुपात

M_1 = प्रथम समूह का मध्यमान

M_2 = द्वितीय समूह का मध्यमान

fd = अन्तर की मानक त्रुटि

तथा $\text{fd} = \sqrt{\text{SEM}_1^2 + \text{SEM}_2^2}$

$$\text{SEM} = \frac{\text{S.D}}{\sqrt{\text{N}}}$$

जहाँ, S.D. = मानक विचलन

N = समूह में सदस्यों की संख्या

****

अध्याय-पंचम

(ऑकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या)

5.1. आँकड़ों का सारणीयन

5.2. संग्रहीत आँकड़ों का वर्गीकरण एवं विश्लेषण

5.3. परिकल्पनाओं का परीक्षण

5.1. आँकड़ों का सारणीयन :–

चयनित नमूने के शिक्षकों से परीक्षण को भरवाने से पूर्व सूचनाओं इत्यादि की गोपनीयता का भरोसा दिलाकर परीक्षण पूर्ण करने को तैयार किया गया तत्पश्चात परीक्षण को प्रशासित किया गया है। इस नमूने में चयनित कुछ शिक्षक बार–बार संस्था पर जाने पर भी नही मिले एवं कुछ शिक्षकों का स्थान–परिवर्तन हो गया था तथा कुछ शिक्षकों ने इस कार्य में रुचि नहीं दिखलाई। अतः समय, श्रम व धन की उपलब्धता को देखते हुए नमूने में चयनित शिक्षकों की सूची को शिथिलता प्रदान कर संशोधित एवं समकक्ष उपलब्धता के नमूने पर प्रश्नावली को प्रशासित किया गया। नमूने में लिए गये 400 शिक्षकों पर कृत्य–संतोष, समायोजन तथा शिक्षण में रूचि के परीक्षणों का प्रशासन कर आँकड़ें एकत्र किये गये तत्पश्चात उन आँकड़ों को सारणीबद्ध करके उनका सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया, जिसके लिए अपनायी गयी प्रक्रियाओं का विवरण निम्नवत् है –

1. प्राप्ताकों को वर्ग–अन्तराल के आधार पर टैली चिह्न द्वारा वर्गीकृत किया गया।
2. प्राप्ताकों के आधार पर प्रत्येक वर्ग के शिक्षकों का मध्यमान ज्ञात किया गया।
3. प्रत्येक वर्ग के शिक्षकों के प्राप्ताकों का मानक विचलन ज्ञात किया गया।
4. विभिन्न वर्ग के शिक्षकों के प्राप्ताकों के माध्यों के अन्तर की सार्थकता की जाँच क्रान्तिक अनुपात (C.R.) के माध्यम से की गयी।

5.2. संग्रहीत आँकड़ों का वर्गीकरण एवं विश्लेषण :–

सारणी क्रमांक – 5.1

प्रशिक्षण के आधार पर शिक्षकों का
कृत्य–संतोष, समायोजन तथा शिक्षण में रुचि

शिक्षक		कृत्य–संतोष		समायोजन		शिक्षण में रुचि	
प्रशिक्षण का प्रकार	संख्या	समान्तर माध्य	मानक विचलन	समान्तर माध्य	मानक विचलन	समान्तर माध्य	मानक विचलन
1. बी0टी0सी0 शिक्षक (पुरुष एवं महिला)	200	22.31	3.68	356.10	58.46	10.75	4.64
2. विशिष्ट बी0टी0सी0 शिक्षक (पुरुष एवं महिला)	200	21.38	3.98	330.60	63.94	9.20	4.57

उपरोक्त सारणी क्रमांक 5.1 से स्पष्ट है कि बी0टी0सी0 शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) के कृत्य–संतोष का माध्य 22.31 एवं मानक विचलन 3.68 है तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) के कृत्य–संतोष का माध्य 21.38 एवं मानक विचलन 3.98 है।

बी0टी0सी0 शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) के समायोजन का माध्य 356.10 एवं मानक विचलन 58.46 है तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) के समायोजन का माध्य 330.60 एवं मानक विचलन 63.94 है।

बी0टी0सी0 शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की शिक्षण में रुचि का माध्य 10.75 एवं मानक विचलन 4.64 है तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) का माध्य 9.20 एवं मानक विचलन 4.57 है।

ग्राफ क्रमांक – 5.1

प्रशिक्षण के आधार पर शिक्षकों का
कृत्य–संतोष, समायोजन तथा शिक्षण में रूचि
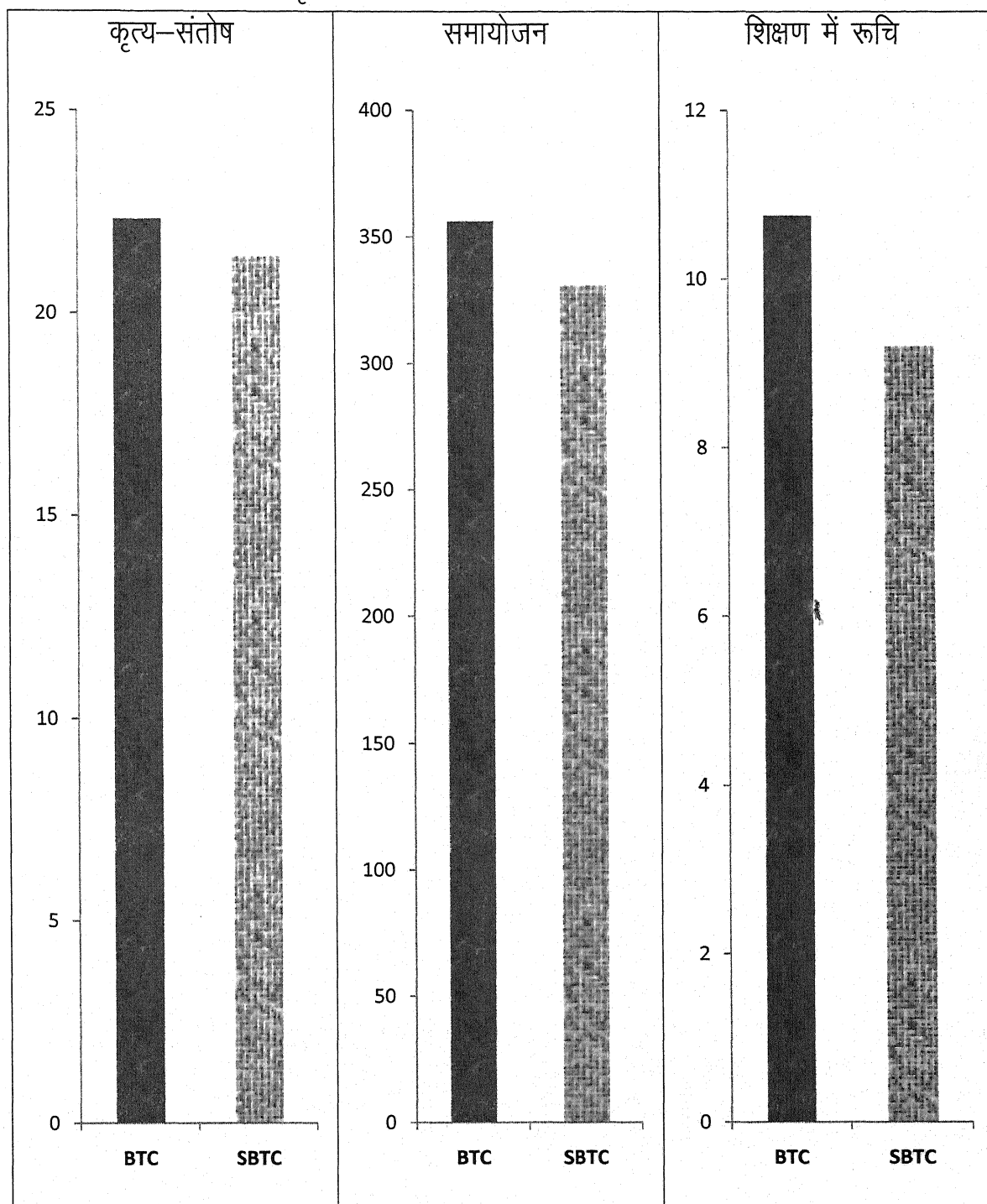
सारणी क्रमांक – 5.2

प्रशिक्षण एवं लिंग के आधार पर शिक्षकों का कृत्य–संतोष, समायोजन तथा शिक्षण में रुचि

शिक्षक		कृत्य–संतोष		समायोजन		शिक्षण में रुचि	
बी0टी0सी0 तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 शिक्षक / शिक्षिकाऐं	संख्या	समान्तर माध्य	मानक विचलन	समान्तर माध्य	मानक विचलन	समान्तर माध्य	मानक विचलन
1. बी0टी0सी0 शिक्षक पुरुष (शहरी एवं ग्रामीण)	100	22.82	3.11	375.89	51.40	11.26	4.16
2. बी0टी0सी0 शिक्षक महिला (शहरी एवं ग्रामीण)	100	21.80	4.11	337.30	59.90	10.24	5.03
3. विशिष्ट बी0टी0सी0 शिक्षक पुरुष (शहरी एवं ग्रामीण)	100	21.47	3.68	331.10	62.38	9.46	4.60
4. विशिष्ट बी0टी0सी0 शिक्षक महिला (शहरी एवं ग्रामीण)	100	21.29	4.25	330.11	64.66	8.95	4.54

उपर्युक्त सारणी का विश्लेषण शोध के चरों के आधार एवं शिक्षकों का वर्ग (प्रशिक्षण तथा लिंग) के आधार पर निम्नवत् ग्राफीय निरूपण द्वारा प्रस्तुत किया जा रहा है –

ग्राफ क्रमांक – 5.2.1

<u>प्रशिक्षण एवं लिंग के आधार पर शिक्षकों का कृत्य–संतोष</u>
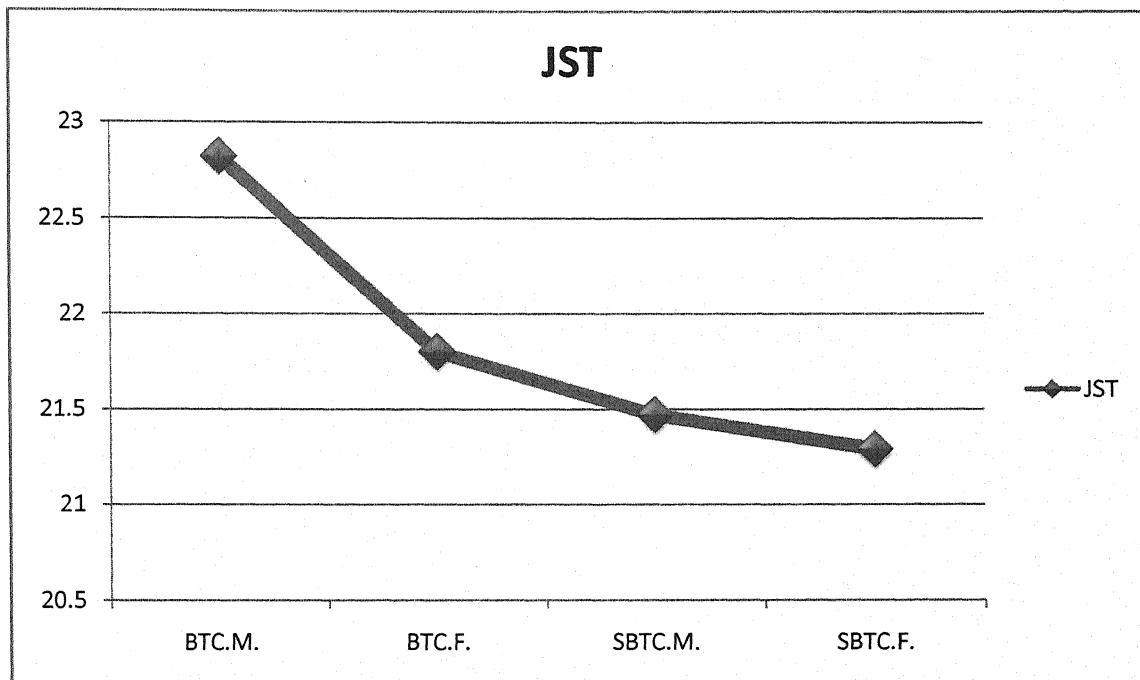
उपरोक्त सारणी क्रमांक 5.2 से स्पष्ट है कि बी0टी0सी0 शिक्षकों (पुरुष) के कृत्य–संतोष का माध्य 22.82 है जो अन्य सभी वर्गों के शिक्षकों के कृत्य–संतोष के माध्यों से अधिक है तथा क्रमशः बी0टी0सी0 शिक्षक (महिला) की कृत्य–संतोष का माध्य 21.80, विशिष्ट बी0टी0सी0 शिक्षक (पुरुष) का माध्य 21.47 तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 शिक्षक (महिला) का माध्य 21.29 है जोकि सबसे कम है। जबकि बी0टी0सी0 शिक्षक (पुरुष) वर्ग के कृत्य–संतोष का मानक विचलन 3.11 सबसे कम है तथा क्रमशः विशिष्ट बी0टी0सी0 शिक्षक (पुरुष) का मानक विचलन 3.68, बी0टी0सी0 शिक्षक (महिला) का मानक विचलन 4.11 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 शिक्षक (महिला) वर्ग का मानक विचलन 4.25 सर्वाधिक है।

ग्राफ क्रमांक – 5.2.2

प्रशिक्षण एवं लिंग के आधार पर शिक्षकों का समायोजन
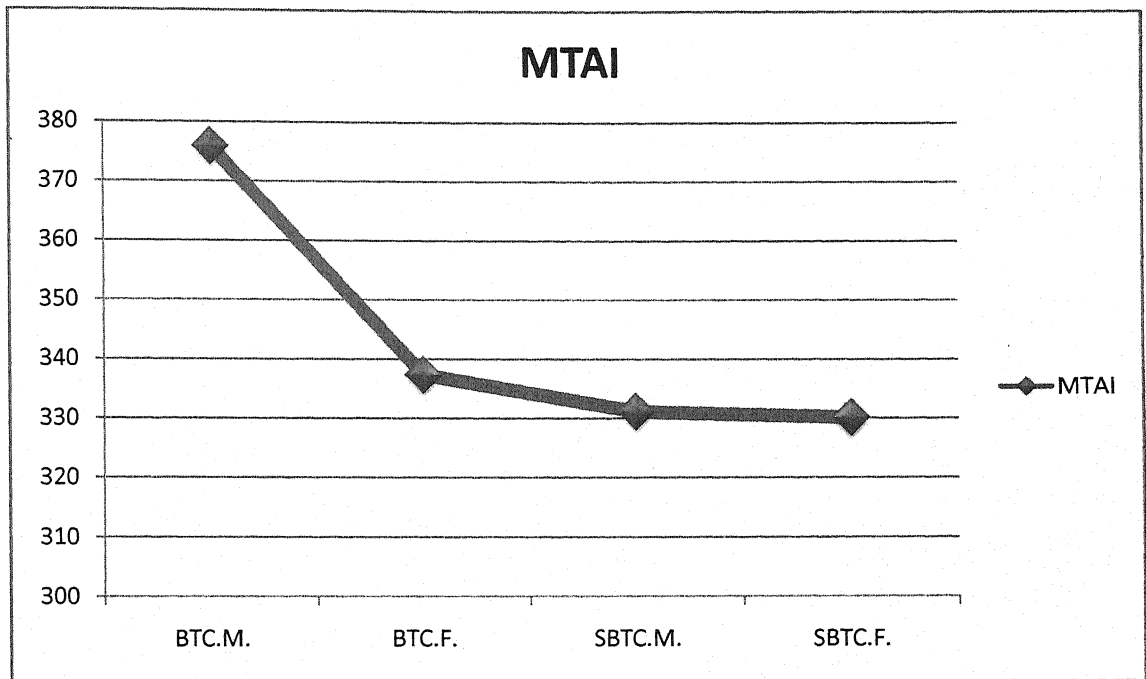
बी0टी0सी0 शिक्षक (पुरुष) के समायोजन का माध्य 375.89 सर्वाधिक है तथा क्रमशः बी0टी0सी0 शिक्षक (महिला) के समायोजन माध्य 337.30, विशिष्ट बी0टी0सी0 शिक्षक (पुरुष) के समायोजन का माध्य 331.10 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 शिक्षक (महिला) का माध्य 330.11 है, जिसमें विशिष्ट बी0टी0सी0 शिक्षक (पुरुष) और विशिष्ट बी0टी0सी0 शिक्षक (महिला) के मध्यमानों के बीच न्यून अन्तर है, परन्तु इनके मानक विचलन क्रमशः 62.38 एवं 64.66 हैं तथा बी0टी0सी0 शिक्षक पुरुष वर्ग के शिक्षकों का मानक विचलन 51.40 तथा बी0टी0सी0 शिक्षक महिला वर्ग का मानक विचलन 59.90 है।

ग्राफ क्रमांक – 5.2.3

<u>प्रशिक्षण एवं लिंग के आधार पर शिक्षकों का शिक्षण में रुचि</u>
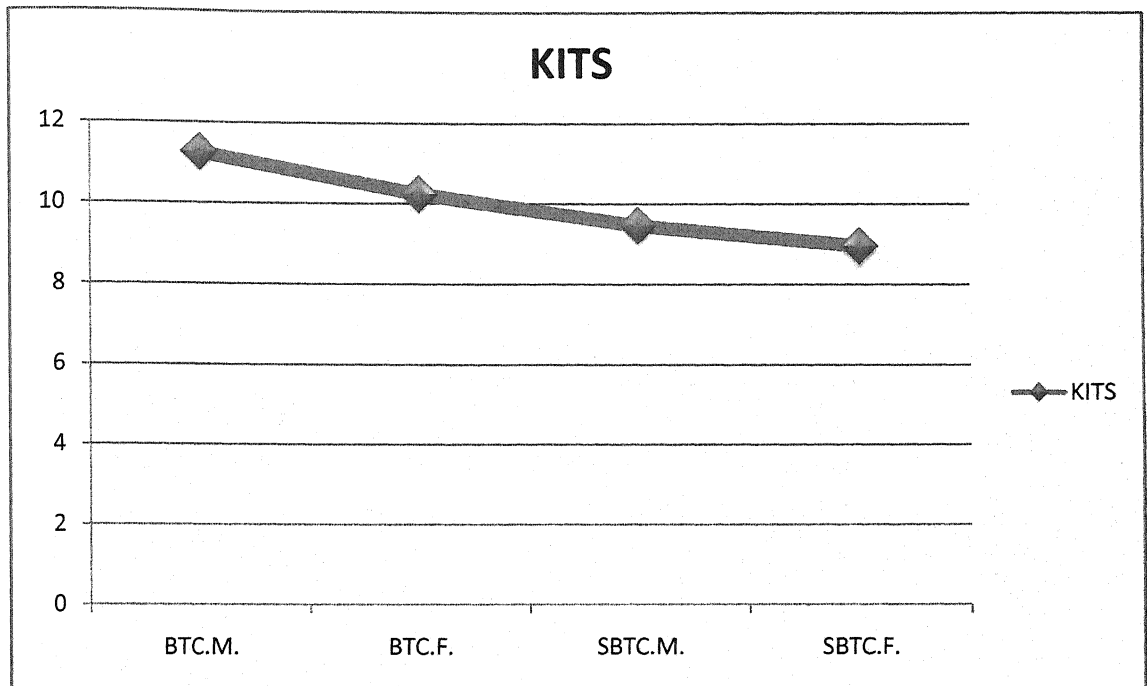
बी0टी0सी0 शिक्षक (पुरुष) वर्ग की शिक्षण में रुचि का माध्य 11.26 सर्वाधिक है, तत्पश्चात क्रमशः बी0टी0सी0 शिक्षक (महिला) वर्ग का माध्य 10.24, विशिष्ट बी0टी0सी0 शिक्षक (पुरुष) वर्ग का माध्य 9.46, तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 शिक्षक (महिला) वर्ग का माध्य 8.95 सबसे कम है। इसी प्रकार बी0टी0सी0 शिक्षक (पुरुष) वर्ग का मानक विचलन 4.16 सबसे कम है, तथा बढ़ते क्रम में विशिष्ट बी0टी0सी0 शिक्षक (महिला) वर्ग का मानक विचलन 4.54, विशिष्ट बी0टी0सी0 शिक्षक (पुरुष) वर्ग का मानक विचलन 4.60 तथा बी0टी0सी0 शिक्षक (महिला) वर्ग का मानक विचलन 5.03 सर्वाधिक है।

सारणी क्रमांक–5.3

प्रशिक्षण, लिंग व क्षेत्र के आधार पर शिक्षकों का कृत्य–संतोष, समायोजन तथा शिक्षण में रुचि

शिक्षक		कृत्य–संतोष		समायोजन		शिक्षण में रुचि	
विभिन्न वर्गों में विभाजित शिक्षक / शिक्षिकाऐं	संख्या	समान्तर माध्य	मानक विचलन	समान्तर माध्य	मानक विचलन	समान्तर माध्य	मानक विचलन
1. बी0टी0सी0 शहरी शिक्षक (पुरुष)	42	22.93	3.61	370.50	53.31	11.00	4.16
2. बी0टी0सी0 ग्रामीण शिक्षक (पुरुष)	58	22.74	2.74	379.80	49.60	11.45	3.75
3. बी0टी0सी0 शहरी शिक्षक (महिला)	50	22.34	4.11	337.30	58.82	11.32	5.20
4. बी0टी0सी0 ग्रामीण शिक्षक (महिला)	50	21.26	3.70	337.30	60.96	9.16	4.61
5. विशिष्ट बी0टी0सी0 शहरी शिक्षक (पुरुष)	50	20.54	3.63	305.30	56.78	9.22	4.70
6. विशिष्ट बी0टी0सी0 ग्रामीण शिक्षक (पुरुष)	50	22.40	3.50	356.90	56.80	9.70	4.38
7. विशिष्ट बी0टी0सी0 शहरी शिक्षक (महिला)	44	20.21	4.87	314.60	66.06	8.16	4.16
8. विशिष्ट बी0टी0सी0 ग्रामीण शिक्षक (महिला)	56	22.14	4.19	342.30	62.36	9.57	7.44

उपर्युक्त सारणी का विश्लेषण शोध के चरों के आधार एवं शिक्षकों का वर्ग (प्रशिक्षण तथा लिंग) के आधार पर निम्नवत् ग्राफीय निरूपण द्वारा प्रस्तुत किया जा रहा है –

सारणी क्रमांक–5.3.1

<u>प्रशिक्षण, लिंग व क्षेत्र के आधार पर शिक्षकों का कृत्य–संतोष</u>
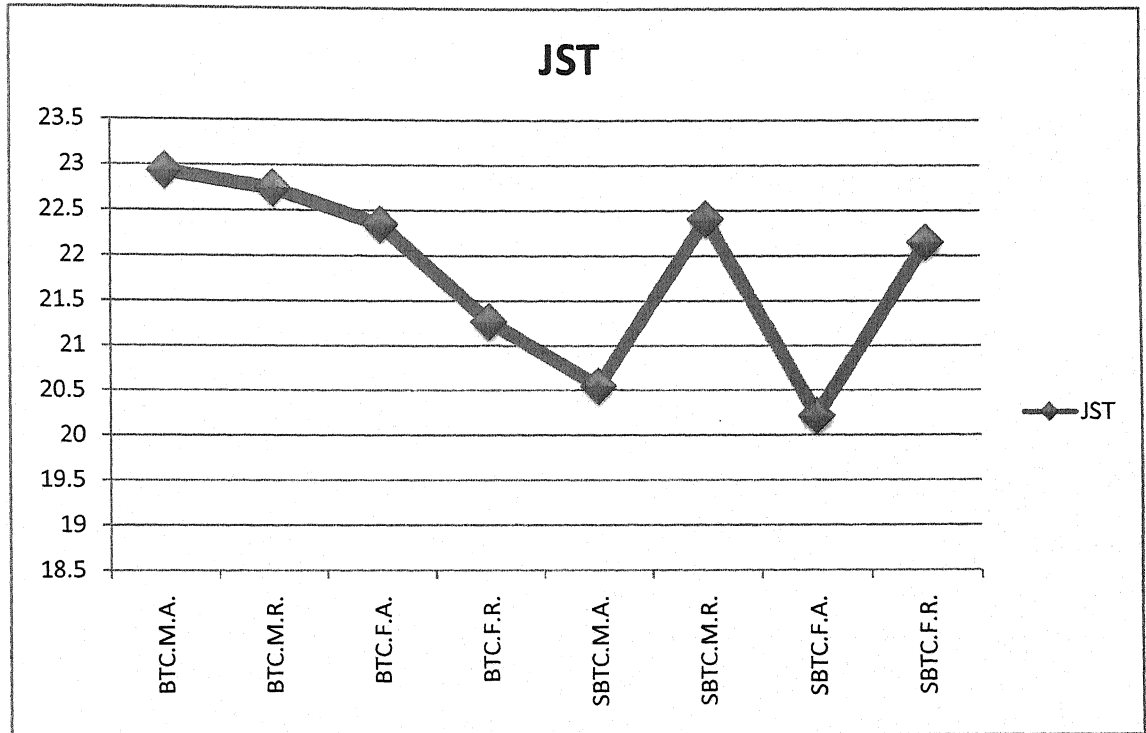
उपरोक्त सारणी क्रमांक 5.1 से स्पष्ट है कि बी0टी0सी0 शहरी शिक्षक (पुरुष) वर्ग के कृत्य–संतोष का माध्य 22.93 है जोकि अन्य सभी वर्गों के कृत्य–संतोष के माध्यों से अधिक है तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 शहरी शिक्षक (महिला) का माध्य 20.21 सबसे कम है। विभिन्न वर्गों के शिक्षकों के कृत्य–संतोष के माध्यों में सबसे कम अन्तर बी0टी0सी0 शहरी शिक्षक (महिला) 22.34 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 ग्रामीण शिक्षक (महिला) 22.14 है, जबकि बी0टी0सी0 ग्रामीण शिक्षक (पुरुष) वर्ग के कृत्य–संतोष का मानक विचलन 2.74 सबसे कम है तथा सर्वाधिक मानक विचलन 4.87 विशिष्ट बी0टी0सी0 ग्रामीण शिक्षक (महिला) वर्ग का है।

सारणी क्रमांक–5.3.2

प्रशिक्षण, लिंग व क्षेत्र के आधार पर शिक्षकों का समायोजन
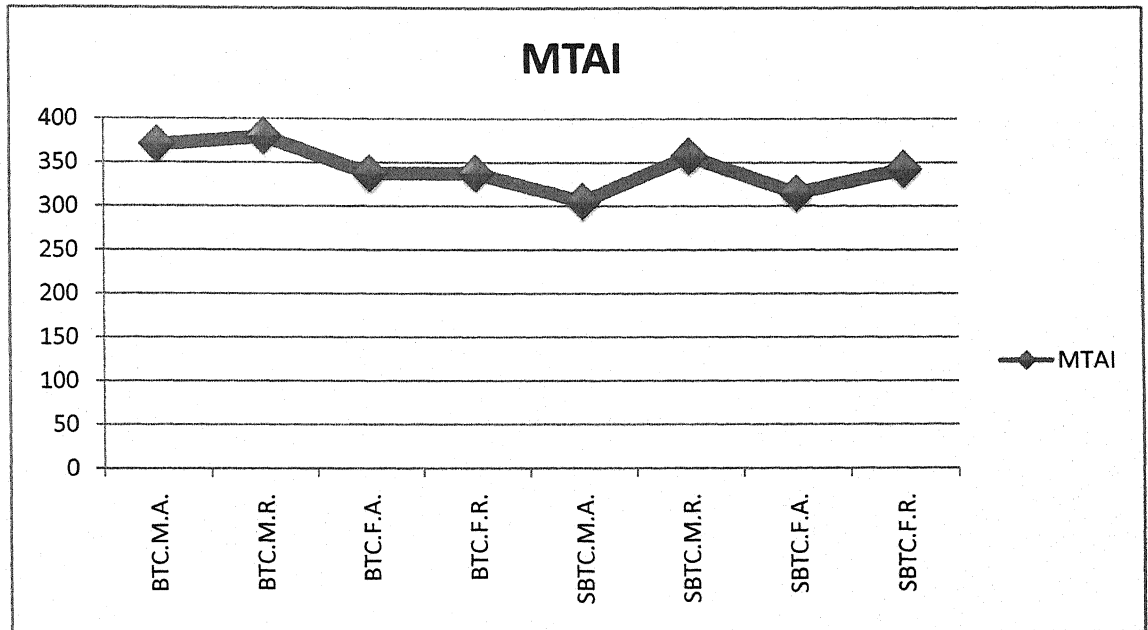
बी0टी0सी0 ग्रामीण शिक्षक (पुरुष) वर्ग के समायोजन का माध्य 379.80 सर्वाधिक है तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 शहरी शिक्षक (पुरुष) वर्ग के समायोजन का माध्य 305.30 सबसे कम है, जिसमें बी0टी0सी0 शहरी शिक्षक (महिला) के समायोजन का माध्य 337.30 एवं बी0टी0सी0 ग्रामीण शिक्षक (महिला) वर्ग के माध्यों 337.30 में कोई अन्तर नहीं है अर्थात पूर्णतया एक समान है परन्तु इनके मानक विचलन क्रमशः 58.82 एवं 60.96 हैं। विशिष्ट बी0टी0सी0 शहरी शिक्षक महिला वर्ग का मानक विचलन 66.06 सर्वाधिक है तथा बी0टी0सी0 ग्रामीण शिक्षक पुरुष वर्ग के शिक्षकों का मानक विचलन 49.60 सबसे कम है।

ग्राफ क्रमांक–5.3.3

प्रशिक्षण, लिंग व क्षेत्र के आधार पर शिक्षकों का शिक्षण में रुचि
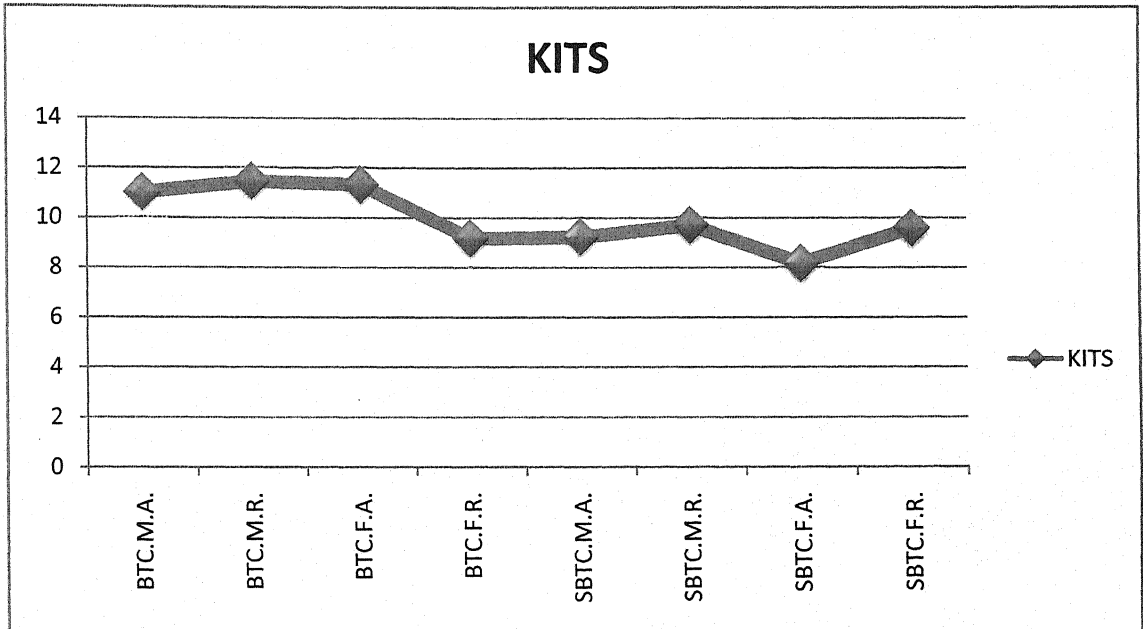
बी0टी0सी0 ग्रामीण शिक्षक (पुरुष) वर्ग की शिक्षण में रुचि का माध्य 11.45 सर्वाधिक है तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 शहरी शिक्षक (महिला) वर्ग का माध्य 8.16 सबसे कम है, जिसमें बी0टी0सी0 ग्रामीण शिक्षक (महिला) का माध्य 9.16 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 शहरी शिक्षक (पुरुष) वर्ग के माध्य 9.22 के बीच न्यूनतम अन्तर है, जिसमें विशिष्ट बी0टी0सी0 ग्रामीण शिक्षक (महिला) वर्ग का मानक विचलन 7.44 सर्वाधिक है तथा बी0टी0सी0 ग्रामीण शिक्षक (पुरुष) वर्ग का मानक विचलन 3.75 सबसे कम है।

5.3. परिकल्पनाओं का परीक्षण

प्रथम परिकल्पना का परीक्षण :– शोध की प्रथम परिकल्पना निम्न थी :–

"बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के कृत्य–संतोष में कोई अन्तर नहीं है।"

सारणी क्रमांक– 5.4

बी0टी0सी0 प्रशिक्षित
शिक्षक–शिक्षिकाओं का कृत्य–संतोष

शिक्षक वर्ग	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकायें
कुल संख्या	100	100
मध्यमान	22.82	21.80
मानक विचलन	3.11	4.11
क्रान्तिक अनुपात	1.96	

d,f (200 – 2) = 198 पर सारणीमान –
अ. 5 % विश्वास के स्तर पर 1.97
ब. 1 % विश्वास के स्तर पर 2.60

ग्राफ क्रमांक– 5.4

बी0टी0सी0 प्रशिक्षित
शिक्षक–शिक्षिकाओं का कृत्य–संतोष
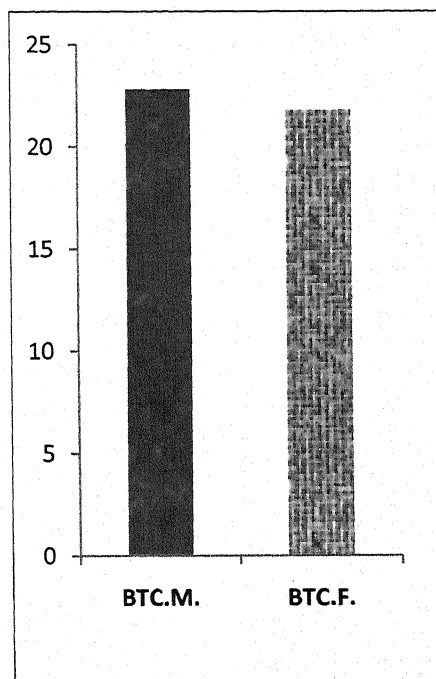
उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R का मान 1.96 है जबकि d.f 198 पर टी–तालिका देखने पर पता चलता है कि 5 % विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 1.97 तथा 1 % विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 2.60 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R का मान टी–तालिका में दिये गये दोनों स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R के मानों से कम है, अतः यहाँ निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) स्वीकृत (Except) की जाती है और कहा जा सकता है कि बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के कृत्य–संतोष में कोई अन्तर नहीं है।

(अ) "शहरी क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के 'कृत्य–संतोष' में कोई अन्तर नहीं है।"

सारणी क्रमांक– 5.5

शहरी क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक–शिक्षिकाओं का कृत्य–संतोष

शिक्षक वर्ग	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक शहरी	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाऐं शहरी
कुल संख्या	42	50
मध्यमान	22.93	22.34
मानक विचलन	3.61	4.11
क्रान्तिक अनुपात	0.73	

d,f (92 – 2) = 90 पर सारणीमान –
अ. 5 % विश्वास के स्तर पर 1.98
ब. 1 % विश्वास के स्तर पर 2.63

ग्राफ क्रमांक– 5.5

शहरी क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक–शिक्षिकाओं का कृत्य–संतोष
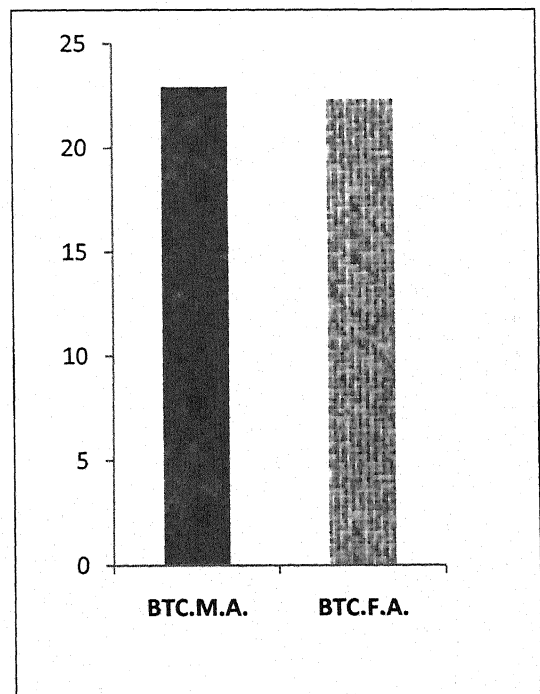
उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R का मान 0.73 है जबकि d.f 90 पर टी–तालिका देखने पर पता चलता है कि 5 % विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 1.98 तथा 1% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 2.63 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R का मान टी–तालिका में दिये गये दोनों स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R के मानों से कम है, अतः यहाँ निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) स्वीकृत (Except) की जाती है और कहा जा सकता है कि शहरी क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के कृत्य–संतोष में कोई अन्तर नहीं है।

(ब) "ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के 'कृत्य–संतोष' में कोई अन्तर नहीं है।"

सारणी क्रमांक– 5.6

ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0
प्रशिक्षित शिक्षक–शिक्षिकाओं का कृत्य–संतोष

शिक्षक वर्ग	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक ग्रामीण	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाऐं ग्रामीण
कुल संख्या	58	50
मध्यमान	22.74	21.26
मानक विचलन	2.74	3.70
क्रान्तिक अनुपात	2.35	

d,f (108 – 2) = 106 पर सारणीमान –
अ. 5 % विश्वास के स्तर पर 1.98
ब. 1 % विश्वास के स्तर पर 2.63

ग्राफ क्रमांक– 5.6

ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0
प्रशिक्षित शिक्षक–शिक्षिकाओं का कृत्य–संतोष
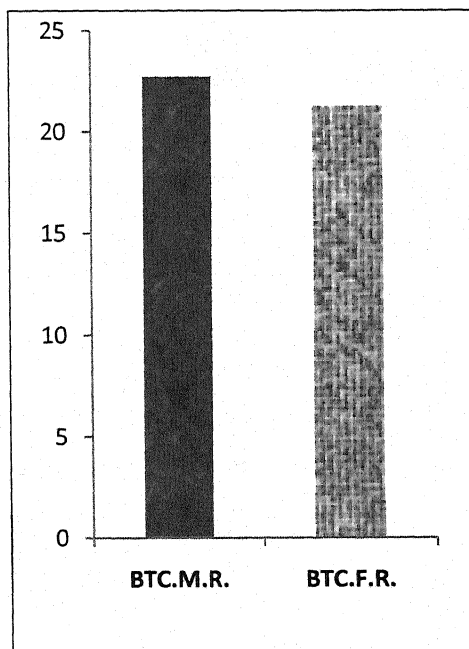
उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R का मान 2.35 है जबकि d.f 106 पर टी–तालिका देखने पर पता चलता है कि 5% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 1.98 तथा 1% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 2.63 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R का मान टी–तालिका में दिये गये 5% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R के मान से अधिक है, लेकिन 1% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R के मान से कम है, अतः यहाँ निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) स्वीकृत (Except) की जाती है और कहा जा सकता है कि ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के कृत्य–संतोष में अन्तर नहीं है।

द्वितीय परिकल्पना का परीक्षण :– शोध की द्वितीय परिकल्पना निम्न थी :–

"बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के समायोजन में कोई अन्तर नहीं है।"

सारणी क्रमांक – 5.7

बी0टी0सी0 प्रशिक्षित
शिक्षक–शिक्षिकाओं का समायोजन

शिक्षक वर्ग	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकायें
कुल संख्या	100	100
मध्यमान	375.89	337.30
मानक विचलन	51.40	59.90
क्रान्तिक अनुपात	5.33	

d,f (200 – 2) = 198 पर सारणीमान –
अ. 5 % विश्वास के स्तर पर 1.97
ब. 1 % विश्वास के स्तर पर 2.60

ग्राफ क्रमांक – 5.7

बी0टी0सी0 प्रशिक्षित
शिक्षक–शिक्षिकाओं का समायोजन
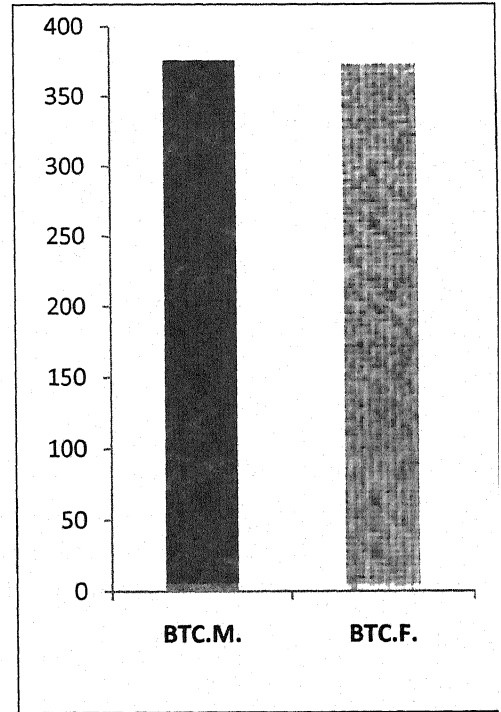
उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R का मान 5.33 है जबकि d.f 198 पर टी–तालिका देखने पर पता चलता है कि 5% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 1.97 तथा 1% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 2.60 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R का मान टी–तालिका में दिये गये दोनों स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R के मानों से अधिक है, अतः यहाँ निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) अस्वीकृत (Reject) की जाती है और कहा जा सकता है कि बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों का समायोजन शिक्षिकाओं के समायोजन से अच्छा है।

(अ) "शहरी क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के समायोजन में कोई अन्तर नहीं है।"

सारणी क्रमांक – 5.8

शहरी क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक–शिक्षिकाओं का समायोजन

शिक्षक वर्ग	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक शहरी	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाऐं शहरी
कुल संख्या	42	50
मध्यमान	370.50	337.30
मानक विचलन	53.31	58.82
क्रान्तिक अनुपात	2.84	

d,f (92 – 2) = 90 पर सारणीमान –
अ. 5 % विश्वास के स्तर पर 1.98
ब. 1 % विश्वास के स्तर पर 2.63

ग्राफ क्रमांक – 5.8

शहरी क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक–शिक्षिकाओं का समायोजन
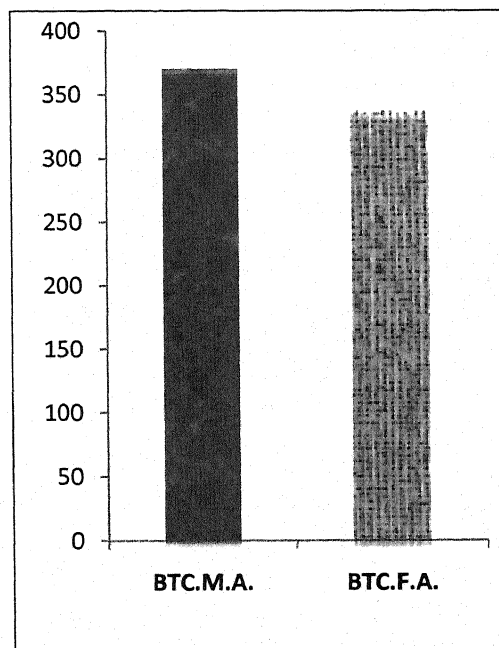
उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R का मान 2.84 है जबकि d.f 90 पर टी–तालिका देखने पर पता चलता है कि 5% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 1.98 तथा 1% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 2.63 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R का मान टी–तालिका में दिये गये दोनों स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R के मानों से अधिक है, अतः यहाँ निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) अस्वीकृत (Reject) की जाती है और कहा जा सकता है कि शहरी क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों का समायोजन इस क्षेत्र में कार्यरत शिक्षिकाओं के समायोजन से अच्छा है।

(ब) "ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के समायोजन में कोई अन्तर नहीं है।"

सारणी क्रमांक – 5.9

ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक–शिक्षिकाओं का समायोजन

शिक्षक वर्ग	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक ग्रामीण	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाऐं ग्रामीण
कुल संख्या	58	50
मध्यमान	379.80	337.30
मानक विचलन	49.60	60.96
क्रान्तिक अनुपात	3.94	

d,f (108 – 2) = 106 पर सारणीमान –
अ. 5 % विश्वास के स्तर पर 1.98
ब. 1 % विश्वास के स्तर पर 2.63

ग्राफ क्रमांक – 5.9

ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक–शिक्षिकाओं का समायोजन
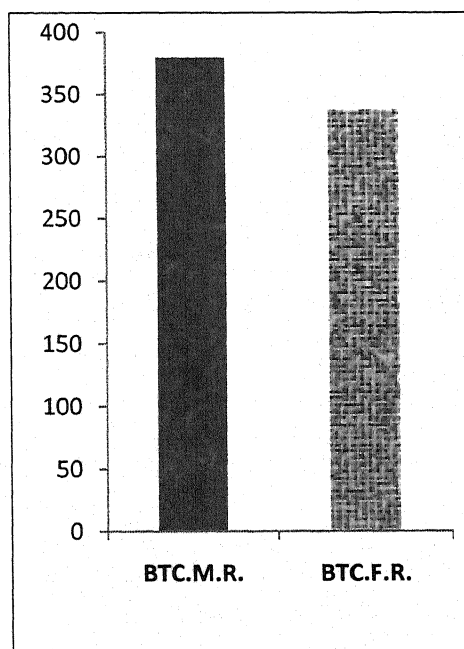
उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R का मान 3.94 है जबकि d.f 106 पर टी–तालिका देखने पर पता चलता है कि 5 % विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 1.98 तथा 1% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 2.63 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R का मान टी–तालिका में दिये गये दोनों स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R के मानों से अधिक है, अतः यहाँ निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) अस्वीकृत (Reject) की जाती है और कहा जा सकता है कि ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों का समायोजन शिक्षिकाओं के समायोजन से अच्छा है।

तृतीय परिकल्पना का परीक्षण :– शोध की तृतीय परिकल्पना निम्न थी:–

"बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की 'शिक्षण में रुचि' में कोई अन्तर नहीं है।"

सारणी क्रमांक – 5.10

बी0टी0सी0 प्रशिक्षित

शिक्षक–शिक्षिकाओं की शिक्षण में रुचि

शिक्षक वर्ग	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकायें
कुल संख्या	100	100
मध्यमान	11.26	10.24
मानक विचलन	4.16	5.03
क्रान्तिक अनुपात	0.31	
d,f (200 – 2) = 198 पर सारणीमान – अ. 5 % विश्वास के स्तर पर 1.97; ब. 1 % विश्वास के स्तर पर 2.60		

ग्राफ क्रमांक – 5.10

बी0टी0सी0 प्रशिक्षित

शिक्षक–शिक्षिकाओं की शिक्षण में रुचि
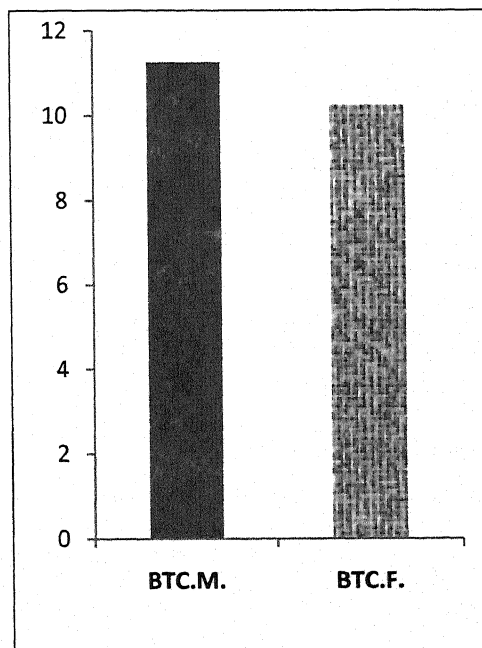
उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R का मान 0.31 है जबकि d.f 198 पर टी–तालिका देखने पर पता चलता है कि 5 % विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 1.97 तथा 1% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 2.60 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R का मान टी–तालिका में दिये गये दोनों स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R के मानों से कम है, अतः यहाँ निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) स्वीकृत (Except) की जाती है और कहा जा सकता है कि बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की 'शिक्षण में रुचि' में कोई अन्तर नहीं है।

(अ) "शहरी क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की शिक्षण की रुचि में कोई अन्तर नही है।"

सारणी क्रमांक – 5.11

शहरी क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक–शिक्षिकाओं की शिक्षण में रुचि

शिक्षक वर्ग	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक शहरी	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाऐं शहरी
कुल संख्या	42	50
मध्यमान	11.00	11.32
मानक विचलन	4.16	5.20
क्रान्तिक अनुपात	0.32	

d,f (92 – 2) = 90 पर सारणीमान –
अ. 5 % विश्वास के स्तर पर 1.98
ब. 1 % विश्वास के स्तर पर 2.63

ग्राफ क्रमांक – 5.11

शहरी क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक–शिक्षिकाओं की शिक्षण में रुचि
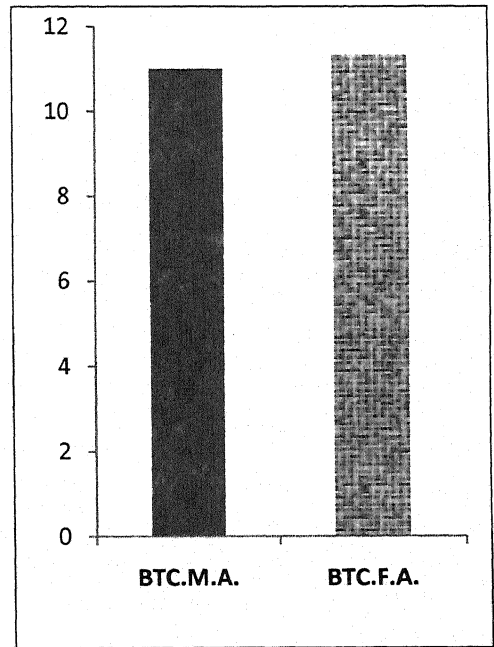
उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R का मान 0.32 है जबकि d.f 90 पर टी–तालिका देखने पर पता चलता है कि 5 % विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 1.98 तथा 1 % विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 2.63 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R का मान टी–तालिका में दिये गये दोनों स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R के मानों से कम है, अतः यहाँ निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) स्वीकृत (Except) की जाती है और कहा जा सकता है कि शहरी क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की 'शिक्षण में रुचि' में कोई अन्तर नहीं है।

(ब) "ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की शिक्षण में रुचि में कोई अन्तर नहीं है।"

सारणी क्रमांक – 5.12

ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक–शिक्षिकाओं की शिक्षण में रुचि

शिक्षक वर्ग	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक ग्रामीण	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाऐं ग्रामीण
कुल संख्या	58	50
मध्यमान	11.45	9.16
मानक विचलन	3.75	4.61
क्रान्तिक अनुपात	2.79	

d,f (108– 2) = 106 पर सारणीमान –
अ. 5 % विश्वास के स्तर पर 1.98
ब. 1 % विश्वास के स्तर पर 2.63

ग्राफ क्रमांक – 5.12

ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक–शिक्षिकाओं की शिक्षण में रुचि
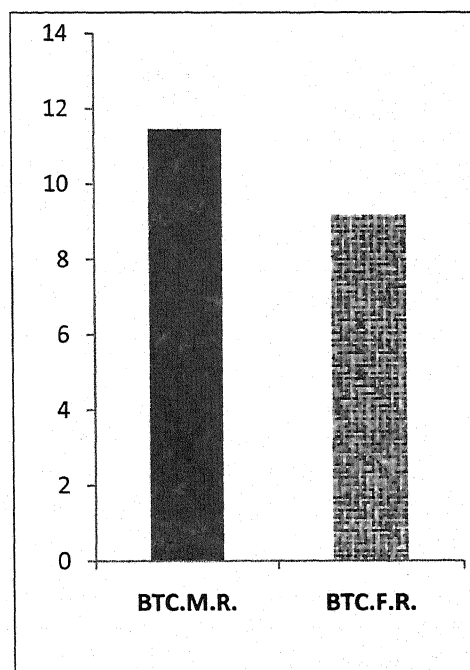
उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R का मान 2.79 है जबकि d.f 106 पर टी–तालिका देखने पर पता चलता है कि 5 % विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 1.98 तथा 1 % विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 2.63 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R का मान टी–तालिका में दिये गये दोनों स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R के मानों से अधिक है, अतः यहाँ निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) अस्वीकृत (Reject) की जाती है और कहा जा सकता है कि ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों की शिक्षिकाओं की अपेक्षा 'शिक्षण में रुचि' अधिक है।

चतुर्थ परिकल्पना का परीक्षण :- शोध की चतुर्थ परिकल्पना निम्न थी :-

"विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के कृत्य-संतोष में कोई अन्तर नहीं है।"

सारणी क्रमांक – 5.13

विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित
शिक्षक-शिक्षिकाओं का कृत्य-संतोष

शिक्षक वर्ग	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकायें
कुल संख्या	100	100
मध्यमान	21.47	21.29
मानक विचलन	3.68	4.25
क्रान्तिक अनुपात	0.32	
d,f (200 – 2) = 198 पर सारणीमान – अ. 5 % विश्वास के स्तर पर 1.97 ब. 1 % विश्वास के स्तर पर 2.60		

ग्राफ क्रमांक – 5.13

विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित
शिक्षक-शिक्षिकाओं का कृत्य-संतोष
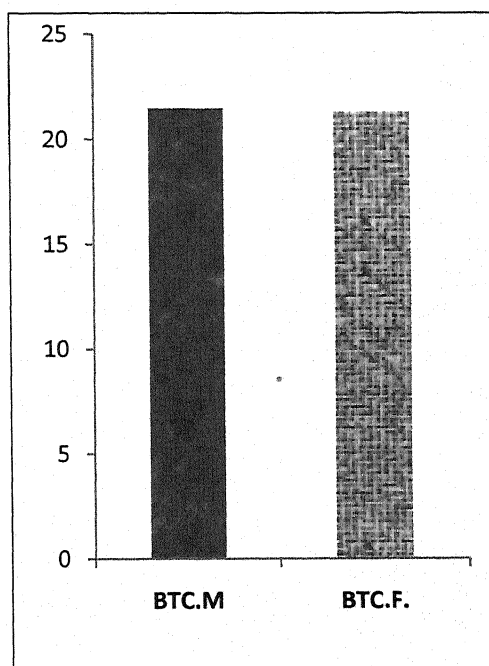
उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R का मान 0.32 है जबकि d.f 198 पर टी-तालिका देखने पर पता चलता है कि 5% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 1.97 तथा 1% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 2.60 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R का मान टी-तालिका में दिये गये दोनों स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R के मानों से कम है, अतः यहाँ निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) स्वीकृत (Except) की जाती है और कहा जा सकता है कि बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के कृत्य-संतोष में कोई अन्तर नहीं है।

(अ) "शहरी क्षेत्र में कार्यरत विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के 'कृत्य–संतोष' में कोई अन्तर नहीं है।"

सारणी क्रमांक – 5.14

शहरी क्षेत्र में कार्यरत विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक–शिक्षिकाओं का कृत्य–संतोष

शिक्षक वर्ग	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक शहरी	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाऐं शहरी
कुल संख्या	50	44
मध्यमान	20.54	20.21
मानक विचलन	3.63	4.87
क्रान्तिक अनुपात	0.37	

d,f (94 – 2) = 92 पर सारणीमान –
अ. 5 % विश्वास के स्तर पर 1.98
ब. 1 % विश्वास के स्तर पर 2.63

ग्राफ क्रमांक – 5.14

शहरी क्षेत्र में कार्यरत विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक–शिक्षिकाओं का कृत्य–संतोष
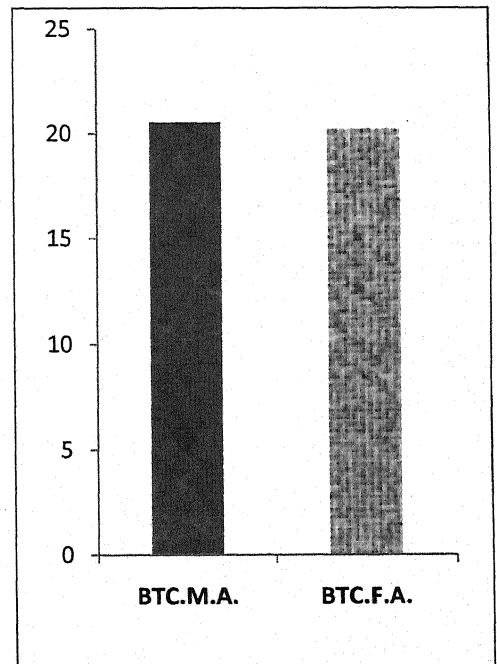
उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R का मान 0.37 है जबकि d.f 92 पर टी–तालिका देखने पर पता चलता है कि 5% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 1.98 तथा 1% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 2.63 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R का मान टी–तालिका में दिये गये दोनों स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R के मानों से कम है, अतः यहाँ निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) स्वीकृत (Except) की जाती है और कहा जा सकता है कि शहरी क्षेत्र में कार्यरत विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के कृत्य–संतोष में कोई अन्तर नहीं है।

(ब) "ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के 'कृत्य–संतोष' में कोई अन्तर नही है।"

सारणी क्रमांक – 5.15

ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक–शिक्षिकाओं का कृत्य–संतोष

शिक्षक वर्ग	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक ग्रामीण	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाऐं ग्रामीण
कुल संख्या	50	56
मध्यमान	22.40	22.14
मानक विचलन	3.50	4.19
क्रान्तिक अनुपात	0.35	

d,f (106 – 2) = 104 पर सारणीमान –
अ. 5 % विश्वास के स्तर पर 1.98
ब. 1 % विश्वास के स्तर पर 2.63

ग्राफ क्रमांक – 5.15

ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक–शिक्षिकाओं का कृत्य–संतोष
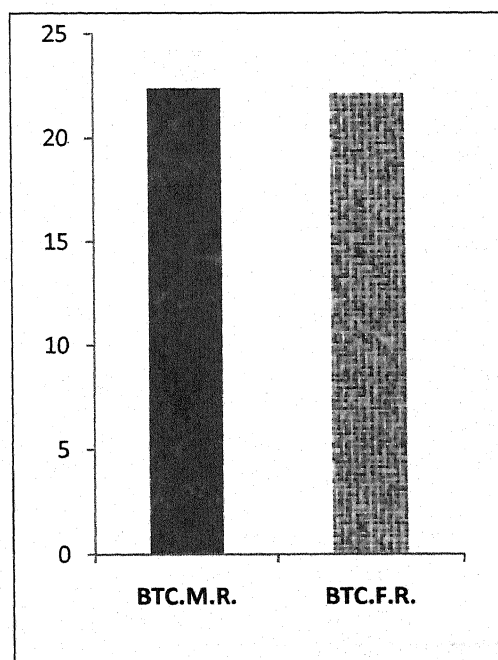
उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R का मान 0.35 है जबकि d.f 104 पर टी–तालिका देखने पर पता चलता है कि 5% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 1.98 तथा 1% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 2.63 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R का मान टी–तालिका में दिये गये दोनों स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R के मानों से कम है, अतः यहाँ निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) स्वीकृत (Except) की जाती है और कहा जा सकता है कि ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के कृत्य–संतोष में कोई अन्तर नहीं है।

पंचम परिकल्पना का परीक्षण :– शोध की पंचम् परिकल्पना निम्न थी :–

"विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के समायोजन में कोई अन्तर नहीं है।"

सारणी क्रमांक – 5.16

विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक–शिक्षिकाओं का समायोजन

शिक्षक वर्ग	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकायें
कुल संख्या	100	100
मध्यमान	331.10	330.10
मानक विचलन	62.38	64.66
क्रान्तिक अनुपात	0.11	
d.f (200 – 2) = 198 पर सारणीमान – अ. 5 % विश्वास के स्तर पर 1.97 ब. 1 % विश्वास के स्तर पर 2.60		

ग्राफ क्रमांक – 5.16

विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक–शिक्षिकाओं का समायोजन
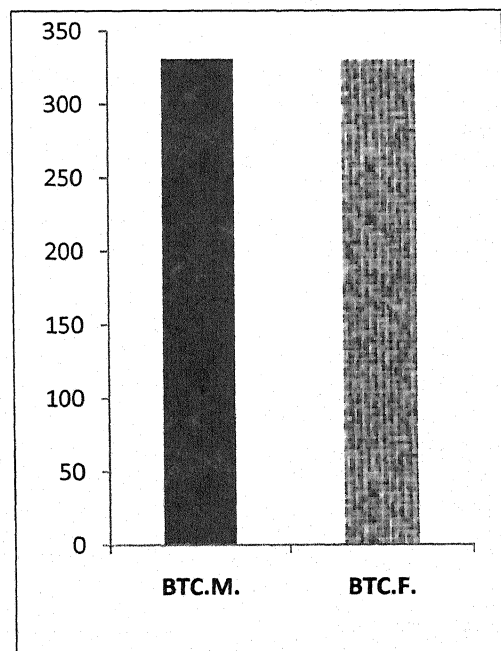
उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R का मान 0.11 है जबकि d.f 198 पर टी–तालिका देखने पर पता चलता है कि 5% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 1.97 तथा 1% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 2.60 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R का मान टी–तालिका में दिये गये दोनों स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R के मानों से कम है, अतः यहाँ निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) स्वीकृत (Except) की जाती है और कहा जा सकता है कि शहरी विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के समायोजन में कोई अन्तर नहीं है।

(अ) "शहरी क्षेत्र में कार्यरत विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के समायोजन में कोई अन्तर नहीं है।"

सारणी क्रमांक – 5.17

शहरी क्षेत्र में कार्यरत विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक–शिक्षिकाओं का समायोजन

शिक्षक वर्ग	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक शहरी	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाऐं शहरी
कुल संख्या	50	44
मध्यमान	305.30	314.60
मानक विचलन	56.78	66.06
क्रान्तिक अनुपात	0.73	

d,f (94 – 2) = 92 पर सारणीमान –
अ. 5 % विश्वास के स्तर पर 1.98
ब. 1 % विश्वास के स्तर पर 2.63

ग्राफ क्रमांक – 5.17

शहरी क्षेत्र में कार्यरत विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक–शिक्षिकाओं का समायोजन
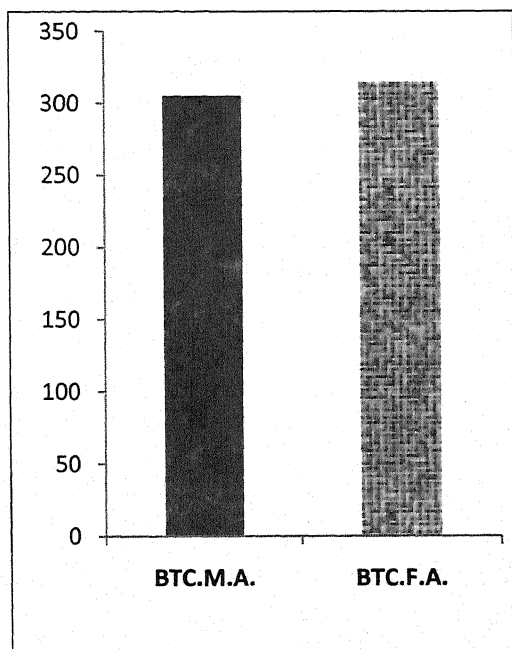
उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R का मान 0.73 है जबकि d.f 92 पर टी–तालिका देखने पर पता चलता है कि 5% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 1.98 तथा 1% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 2.63 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R का मान टी–तालिका में दिये गये दोनों स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R के मानों से कम है, अतः यहाँ निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) स्वीकृत (Except) की जाती है और कहा जा सकता है कि शहरी क्षेत्र में कार्यरत विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के समायोजन में कोई अन्तर नहीं है।

(ब) "ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के समायोजन में कोई अन्तर नहीं है।"

सारणी क्रमांक – 5.18

ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक–शिक्षिकाओं का समायोजन

शिक्षक वर्ग	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक ग्रामीण	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाऐं ग्रामीण
कुल संख्या	50	56
मध्यमान	356.90	342.30
मानक विचलन	56.80	62.36
क्रान्तिक अनुपात	1.26	

d,f (106 – 2) = 104 पर सारणीमान –
अ. 5 % विश्वास के स्तर पर 1.98
ब. 1 % विश्वास के स्तर पर 2.63

ग्राफ क्रमांक – 5.18

ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक–शिक्षिकाओं का समायोजन
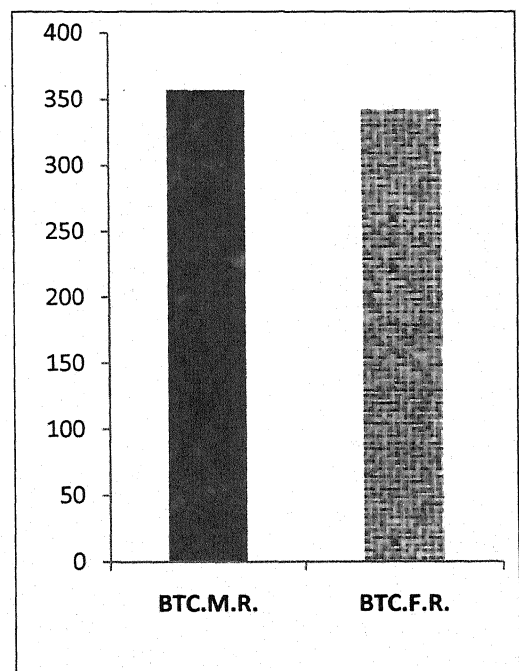
उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R का मान 1.26 है जबकि d.f 104 पर टी–तालिका देखने पर पता चलता है कि 5 % विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 1.98 तथा 1% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 2.63 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R का मान टी–तालिका में दिये गये दोनों स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R के मानों से कम है, अतः यहाँ निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) स्वीकृत (Except) की जाती है और कहा जा सकता है कि ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के समायोजन में कोई अन्तर नहीं है।

षष्ठम् परिकल्पना का परीक्षण :– शोध की षष्ठम् परिकल्पना निम्न थी :–

"विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की 'शिक्षण में रुचि' में कोई अन्तर नहीं है।"

सारणी क्रमांक – 5.19

विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित
शिक्षक–शिक्षिकाओं की शिक्षण में रुचि

शिक्षक वर्ग	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकायें
कुल संख्या	100	100
मध्यमान	9.46	8.95
मानक विचलन	4.60	4.54
क्रान्तिक अनुपात	0.78	
d,f (200 – 2) = 198 पर सारणीमान – अ. 5 % विश्वास के स्तर पर 1.97 ब. 1 % विश्वास के स्तर पर 2.60		

ग्राफ क्रमांक – 5.19

विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित
शिक्षक–शिक्षिकाओं की शिक्षण में रुचि
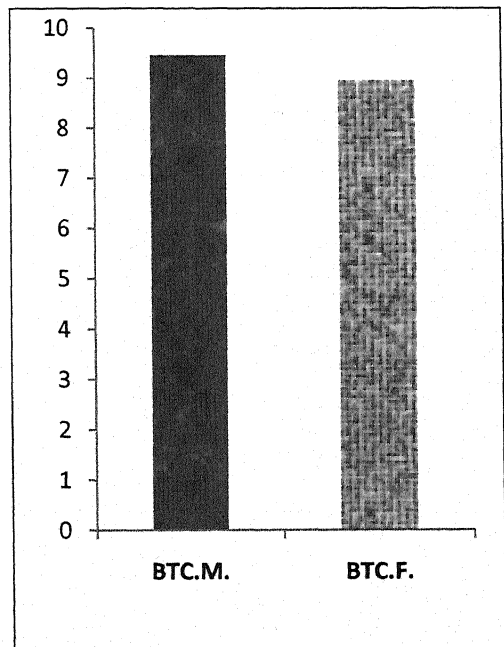
उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R का मान 0.78 है जबकि d.f 198 पर टी–तालिका देखने पर पता चलता है कि 5 % विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 1.97 तथा 1% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 2.60 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R का मान टी–तालिका में दिये गये दोनों स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R के मानों से कम है, अतः यहाँ निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) स्वीकृत (Except) की जाती है और कहा जा सकता है कि बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की 'शिक्षण में रुचि' में कोई अन्तर नहीं है।

(अ) "शहरी क्षेत्र में कार्यरत विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की शिक्षण की रुचि में कोई अन्तर नही है।"

सारणी क्रमांक – 5.20

शहरी क्षेत्र में कार्यरत विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक–शिक्षिकाओं की शिक्षण में रुचि

शिक्षक वर्ग	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक शहरी	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाऐं शहरी
कुल संख्या	50	44
मध्यमान	9.22	8.16
मानक विचलन	4.70	4.16
क्रान्तिक अनुपात	1.16	

d,f (94 – 2) = 92 पर सारणीमान –
अ. 5 % विश्वास के स्तर पर 1.98
ब. 1 % विश्वास के स्तर पर 2.63

ग्राफ क्रमांक – 5.20

शहरी क्षेत्र में कार्यरत विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक–शिक्षिकाओं की शिक्षण में रुचि
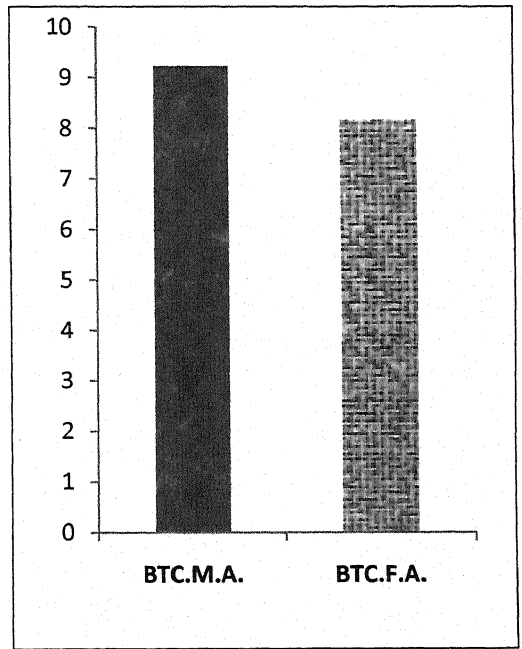
उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R का मान 1.16 है जबकि d.f 92 पर टी–तालिका देखने पर पता चलता है कि 5 % विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 1.98 तथा 1 % विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 2.63 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R का मान टी–तालिका में दिये गये दोनों स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R के मानों से कम है, अतः यहाँ निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) स्वीकृत (Except) की जाती है और कहा जा सकता है कि शहरी क्षेत्र में कार्यरत विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की 'शिक्षण में रुचि' में कोई अन्तर नहीं है।

(ब) "ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत-विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की शिक्षण में रुचि में कोई अन्तर नहीं है।"

सारणी क्रमांक – 5.21

ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक–शिक्षिकाओं की शिक्षण में रुचि

शिक्षक वर्ग	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक ग्रामीण	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाऐं ग्रामीण
कुल संख्या	50	56
मध्यमान	9.70	9.57
मानक विचलन	4.38	7.44
क्रान्तिक अनुपात	0.11	

d,f (106 – 2) = 104 पर सारणीमान –
अ. 5 % विश्वास के स्तर पर 1.98
ब. 1 % विश्वास के स्तर पर 2.63

ग्राफ क्रमांक – 5.21

ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक–शिक्षिकाओं की शिक्षण में रुचि
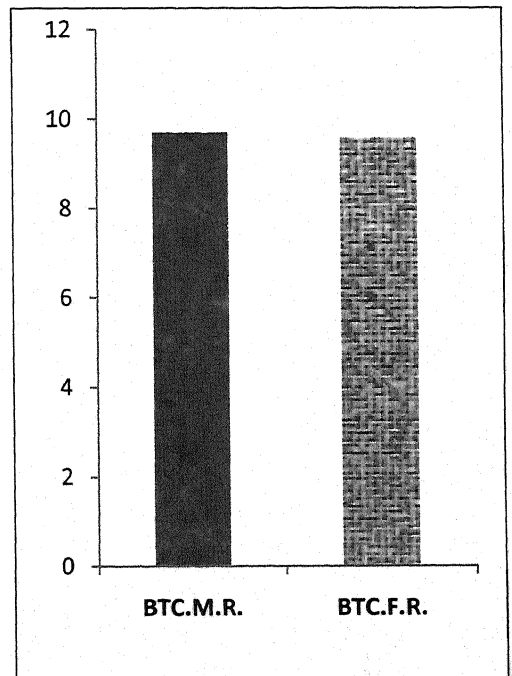
उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R का मान 0.11 है जबकि d.f 104 पर टी–तालिका देखने पर पता चलता है कि 5 % विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 1.98 तथा 1 % विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 2.63 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R का मान टी–तालिका में दिये गये दोनों स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R के मानों से कम है, अतः यहाँ निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) स्वीकृत (Except) की जाती है और कहा जा सकता है कि ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की 'शिक्षण में रुचि' में कोई अन्तर नहीं है।

सप्तम् परिकल्पना का परीक्षण :– शोध की सप्तम् परिकल्पना निम्न थी :–

"बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) के 'कृत्य–संतोष' में कोई अन्तर नहीं है।"

सारणी क्रमांक – 5.22

बी0टी0सी0 तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) का कृत्य–संतोष

शिक्षक वर्ग	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक एवं शिक्षिकाऐं	विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक एवं शिक्षिकाऐं
कुल संख्या	200	200
मध्यमान	22.31	21.38
मानक विचलन	3.68	3.98
क्रान्तिक अनुपात	2.45	

d,f (400 – 2) = 398 पर सारणीमान –

अ. 5 % विश्वास के स्तर पर 1.97

ब. 1 % विश्वास के स्तर पर 2.59

ग्राफ क्रमांक – 5.22

बी0टी0सी0 तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) का कृत्य–संतोष
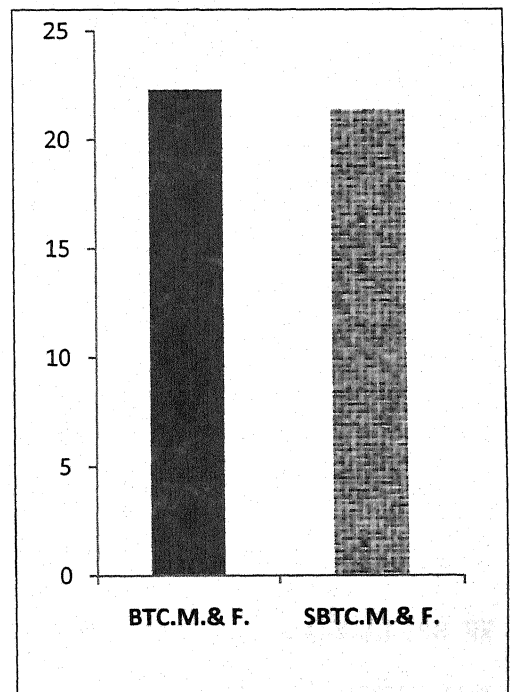
उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R का मान 2.45 है, जबकि d.f 398 पर टी–तालिका देखने पर पता चलता है कि 5% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 1.97 तथा 1% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 2.59 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R का मान टी–तालिका में दिये गये 5 % विश्वास के स्तर पर C.R के मान से अधिक है, लेकिन 1 % विश्वास के स्तर पर C.R के मान से कम है, अतः यहाँ निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) स्वीकृत (Except) की जाती है।

(अ) "बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष) एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष) के 'कृत्य–संतोष' में कोई अन्तर नहीं है।"

सारणी क्रमांक – 5.23

बी0टी0सी0 तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों का कृत्य–संतोष

शिक्षक वर्ग	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक	विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक
कुल संख्या	100	100
मध्यमान	22.82	21.47
मानक विचलन	. 3.11	3.68
क्रान्तिक अनुपात	2.81	

d,f (200 – 2) = 198 पर सारणीमान –
अ. 5 % विश्वास के स्तर पर 1.97
ब. 1 % विश्वास के स्तर पर 2.60

ग्राफ क्रमांक – 5.23

बी0टी0सी0 तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों का कृत्य–संतोष
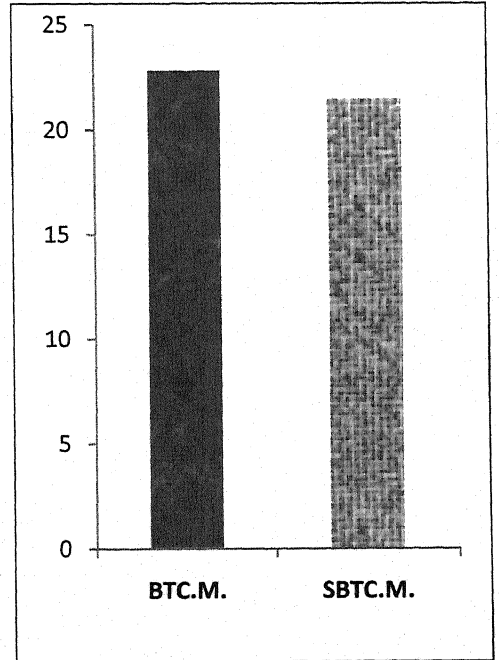
उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R का मान 2.81 है जबकि d.f 198 पर टी–तालिका देखने पर पता चलता है कि 5% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 1.97 तथा 1% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 2.60 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R का मान टी–तालिका में दिये गये दोनों स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R के मानों से अधिक है, अतः यहाँ निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) अस्वीकृत (Reject) की जाती है और कहा जा सकता है कि बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष) का कृत्य–संतोष विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष) से अच्छा है।

(i) "शहरी क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों के 'कृत्य–संतोष' में कोई अन्तर नहीं है।"

सारणी क्रमांक – 5.24

शहरी क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों का कृत्य–संतोष

शिक्षक वर्ग	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक शहरी	विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक शहरी
कुल संख्या	42	50
मध्यमान	22.93	20.54
मानक विचलन	3.61	3.63
क्रान्तिक अनुपात	3.19	

d,f (92 – 2) = 90 पर सारणीमान –
अ. 5 % विश्वास के स्तर पर 1.98
ब. 1 % विश्वास के स्तर पर 2.63

ग्राफ क्रमांक – 5.24

शहरी क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों का कृत्य–संतोष
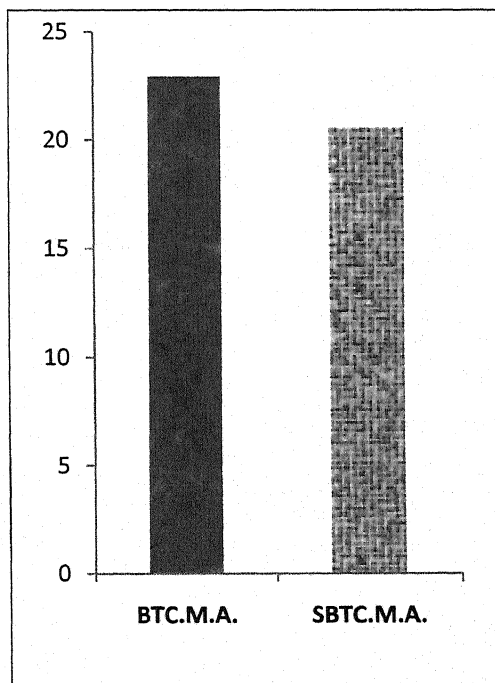
उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R का मान 3.19 है जबकि d.f 90 पर टी–तालिका देखने पर पता चलता है कि 5% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 1.98 तथा 1% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 2.63 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R का मान टी–तालिका में दिये गये दोनों स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R के मानों से अधिक है, अतः यहाँ निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) अस्वीकृत (Reject) की जाती है और कहा जा सकता है कि शहरी क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष) का कृत्य–संतोष शहरी क्षेत्र में कार्यरत विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष) से अच्छा है।

(ii) **"ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों के 'कृत्य–संतोष' में कोई अन्तर नही है।"**

सारणी क्रमांक – 5.25

ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों का कृत्य–संतोष

शिक्षक वर्ग	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक ग्रामीण	विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक ग्रामीण
कुल संख्या	58	50
मध्यमान	22.74	22.40
मानक विचलन	2.74	3.50
क्रान्तिक अनुपात	0.56	
d,f (108 – 2) = 106 पर सारणीमान – अ. 5 % विश्वास के स्तर पर 1.98; ब. 1 % विश्वास के स्तर पर 2.63		

ग्राफ क्रमांक – 5.25

ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों का कृत्य–संतोष
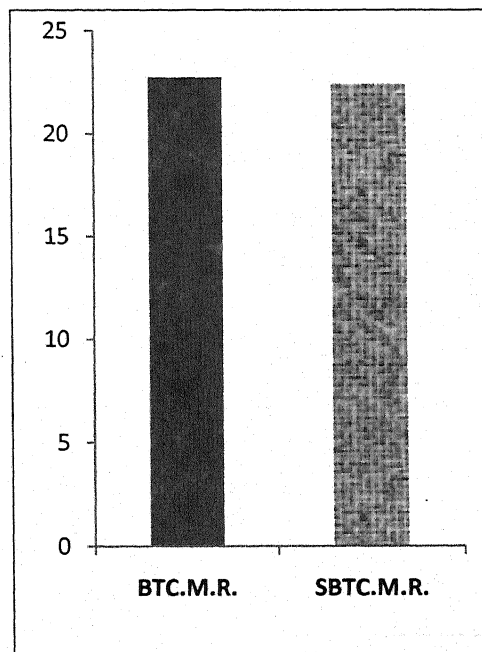
उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R का मान 0.56 है जबकि d.f 106 पर टी–तालिका देखने पर पता चलता है कि 5% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 1.98 तथा 1% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 2.63 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R का मान टी–तालिका में दिये गये दोनों स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R के मानों से कम है, अतः यहाँ निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) स्वीकृत (Except) की जाती है और कहा जा सकता है कि ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष) एवं ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष) के कृत्य–संतोष में कोई अन्तर नहीं है।

(ब) "बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं के 'कृत्य–संतोष' में कोई अन्तर नहीं है।"

सारणी क्रमांक – 5.26

बी0टी0सी0 तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं का कृत्य–संतोष

शिक्षक वर्ग	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाऐं	विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाऐं
कुल संख्या	100	100
मध्यमान	21.80	21.29
मानक विचलन	4.11	4.25
क्रान्तिक अनुपात	0.86	

d,f (200 – 2) = 198 पर सारणीमान –
अ. 5 % विश्वास के स्तर पर 1.97
ब. 1 % विश्वास के स्तर पर 2.60

ग्राफ क्रमांक – 5.26

बी0टी0सी0 तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं का कृत्य–संतोष
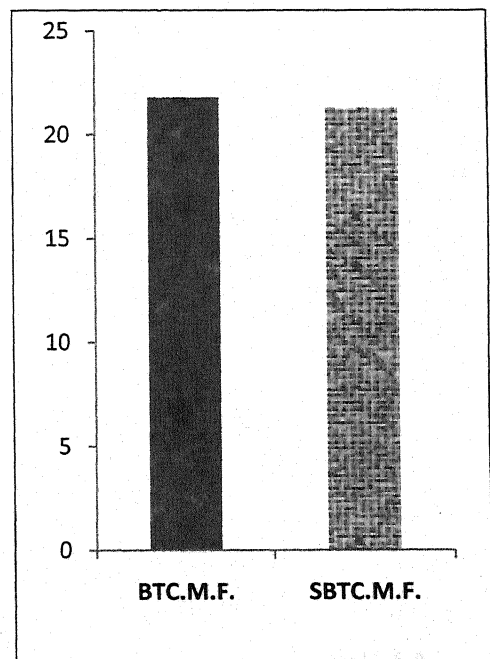
उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R का मान 0.86 है जबकि d.f 198 पर टी–तालिका देखने पर पता चलता है कि 5% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 1.97 तथा 1% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 2.60 होना चाहिये। । यहाँ गणना से प्राप्त C.R का मान टी–तालिका में दिये गये दोनों स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R के मानों से कम है, अतः यहाँ निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) स्वीकृत (Except) की जाती है और कहा जा सकता है कि बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं के कृत्य–संतोष में कोई अन्तर नहीं है।

(i) "शहरी क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं के 'कृत्य–संतोष' में कोई अन्तर नहीं है।"

सारणी क्रमांक – 5.27

शहरी क्षेत्र में कार्यरत

बी0टी0सी0 तथा विशिष्ट बी0टी0सी0

प्रशिक्षित शिक्षिकाओं का कृत्य–संतोष

शिक्षक वर्ग	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाऐं शहरी	विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाऐं शहरी
कुल संख्या	50	44
मध्यमान	22.34	20.21
मानक विचलन	4.11	4.87
क्रान्तिक अनुपात	2.27	

d,f (94 – 2) = 92 पर सारणीमान –

अ. 5 % विश्वास के स्तर पर 1.98

ब. 1 % विश्वास के स्तर पर 2.63

ग्राफ क्रमांक – 5.27

शहरी क्षेत्र में कार्यरत

बी0टी0सी0 तथा विशिष्ट बी0टी0सी0

प्रशिक्षित शिक्षिकाओं का कृत्य–संतोष
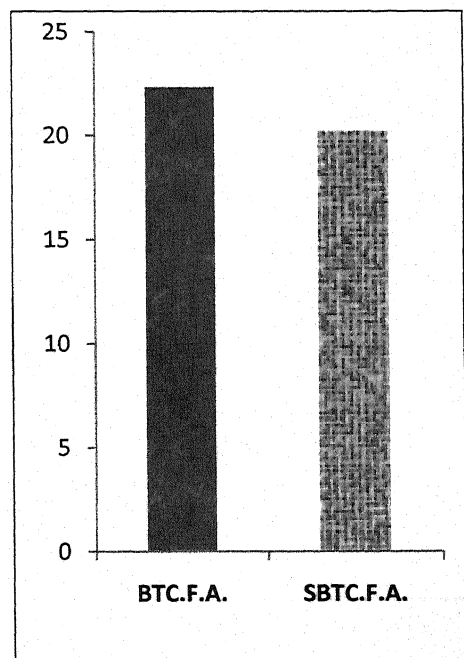
उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R का मान 2.27 है जबकि d.f 92 पर टी–तालिका देखने पर पता चलता है कि 5% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 1.98 तथा 1% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 2.63 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R का मान टी–तालिका में दिये गये 5% विश्वास के स्तर पर C.R के मान से अधिक है लेकिन 1% विश्वास के स्तर पर C.R के मान से कम है अतः यहाँ निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) स्वीकृत (Except) की जाती है।

(ii) "ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं के 'कृत्य–संतोष' में कोई अन्तर नहीं है।"

सारणी क्रमांक – 5.28

ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं का कृत्य–संतोष

शिक्षक वर्ग	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाऐं ग्रामीण	विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाऐं ग्रामीण
कुल संख्या	50	56
मध्यमान	21.26	22.14
मानक विचलन	3.70	4.19
क्रान्तिक अनुपात	1.14	

d,f (106 – 2) = 104 पर सारणीमान –
अ. 5 % विश्वास के स्तर पर 1.98
ब. 1 % विश्वास के स्तर पर 2.63

ग्राफ क्रमांक – 5.28

ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं का कृत्य–संतोष
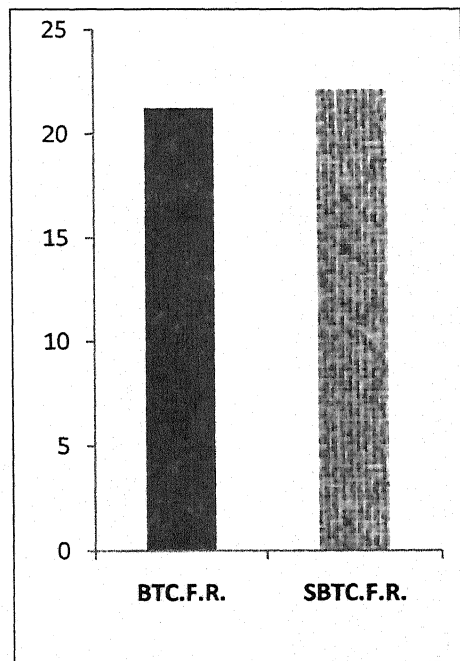
उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R का मान 1.14 है जबकि d.f 104 पर टी–तालिका देखने पर पता चलता है कि 5% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 1.98 तथा 1% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 2.63 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R का मान टी–तालिका में दिये गये दोनों स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R के मानों से कम है, अतः यहाँ निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) स्वीकृत (Except) की जाती है और कहा जा सकता है कि ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं तथा ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं के कृत्य–संतोष में कोई अन्तर नहीं है।

(स) "बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं के 'कृत्य–संतोष' में कोई अन्तर नहीं है।"

सारणी क्रमांक – 5.29

बी0टी0सी0 प्रशिक्षित

शिक्षकों तथा विशिष्ट बी0टी0सी0

प्रशिक्षित शिक्षिकाओं का कृत्य–संतोष

शिक्षक वर्ग	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक	विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाऐं
कुल संख्या	100	100
मध्यमान	22.82	21.29
मानक विचलन	3.11	4.25
क्रान्तिक अनुपात	2.89	

d,f (200 – 2) = 198 पर सारणीमान –
अ. 5 % विश्वास के स्तर पर 1.97
ब. 1 % विश्वास के स्तर पर 2.60

ग्राफ क्रमांक – 5.29

बी0टी0सी0 प्रशिक्षित

शिक्षकों तथा विशिष्ट बी0टी0सी0

प्रशिक्षित शिक्षिकाओं का कृत्य–संतोष

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R का मान 2.89 है जबकि d.f 198 पर टी–तालिका देखने पर पता चलता है कि 5% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 1.97 तथा 1% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 2.60 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R का मान टी–तालिका में दिये गये दोनों स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R के मानों से अधिक है, अतः यहाँ निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) अस्वीकृत (Reject) की जाती है और कहा जा सकता है कि बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों का कृत्य–संतोष विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं से अच्छा है।

(स) "बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं के 'कृत्य–संतोष' में कोई अन्तर नहीं है।"

सारणी क्रमांक – 5.29

बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं का कृत्य–संतोष

शिक्षक वर्ग	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक	विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाऐं
कुल संख्या	100	100
मध्यमान	22.82	21.29
मानक विचलन	3.11	4.25
क्रान्तिक अनुपात	2.89	

d,f (200 – 2) = 198 पर सारणीमान –
अ. 5 % विश्वास के स्तर पर 1.97
ब. 1 % विश्वास के स्तर पर 2.60

ग्राफ क्रमांक – 5.29

बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं का कृत्य–संतोष

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R का मान 2.89 है जबकि d.f 198 पर टी–तालिका देखने पर पता चलता है कि 5% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 1.97 तथा 1% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 2.60 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R का मान टी–तालिका में दिये गये दोनों स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R के मानों से अधिक है, अतः यहाँ निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) अस्वीकृत (Reject) की जाती है और कहा जा सकता है कि बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों का कृत्य–संतोष विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं से अच्छा है।

(i) "शहरी क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं के 'कृत्य–संतोष' में कोई अन्तर नहीं है।"

सारणी क्रमांक – 5.30

शहरी क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं का कृत्य–संतोष

शिक्षक वर्ग	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक शहरी	विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाऐं शहरी
कुल संख्या	42	44
मध्यमान	22.93	20.21
मानक विचलन	3.61	4.87
क्रान्तिक अनुपात	2.96	
d,f (86 – 2) = 84 पर सारणीमान – अ. 5 % विश्वास के स्तर पर 1.98 ब. 1 % विश्वास के स्तर पर 2.63		

ग्राफ क्रमांक – 5.30

शहरी क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं का कृत्य–संतोष
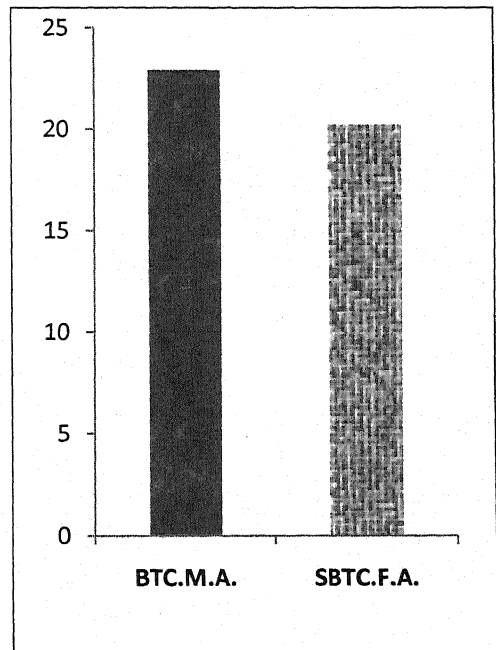
उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R का मान 2.96 है जबकि d.f 84 पर टी–तालिका देखने पर पता चलता है कि 5% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 1.98 तथा 1% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 2.63 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R का मान टी–तालिका में दिये गये दोनों स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R के मानों से अधिक है, अतः यहाँ निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) अस्वीकृत (Reject) की जाती है और कहा जा सकता है कि शहरी क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों का कृत्य–संतोष शहरी क्षेत्र में कार्यरत विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं से अच्छा है।

(ii) **"ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं के 'कृत्य–संतोष' में कोई अन्तर नहीं है।"**

सारणी क्रमांक – 5.31

ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं का कृत्य–संतोष

शिक्षक वर्ग	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक ग्रामीण	विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाऐं ग्रामीण
कुल संख्या	58	56
मध्यमान	22.74	22.14
मानक विचलन	2.74	4.19
क्रान्तिक अनुपात	0.90	

d,f (114 – 2) = 112 पर सारणीमान –
अ. 5 % विश्वास के स्तर पर 1.98
ब. 1 % विश्वास के स्तर पर 2.63

ग्राफ क्रमांक – 5.31

ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं का कृत्य–संतोष
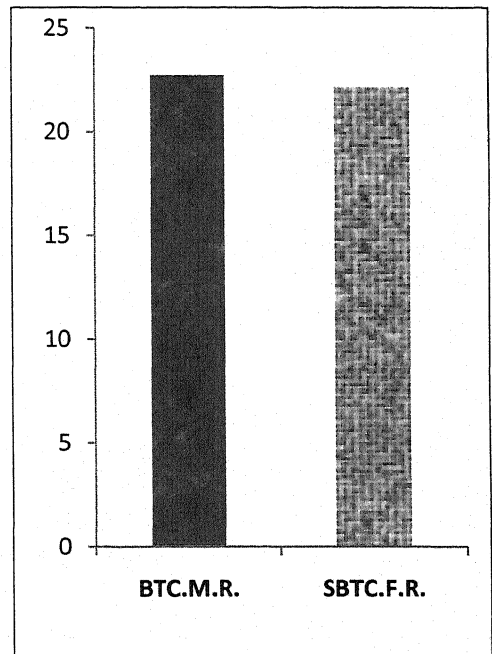
उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R का मान 0.90 है जबकि d.f 112 पर टी–तालिका देखने पर पता चलता है कि 5 % विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 1.98 तथा 1 % विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 2.63 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R का मान टी–तालिका में दिये गये दोनों स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R के मानों से कम है, अतः यहाँ निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) स्वीकृत (Except) की जाती है और कहा जा सकता है कि ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं के कृत्य–संतोष में कोई अन्तर नहीं है।

(द) "बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों के 'कृत्य–संतोष' में कोई अन्तर नहीं है।"

सारणी क्रमांक – 5.32

बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों का कृत्य–संतोष

शिक्षक वर्ग	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिका	विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक
कुल संख्या	100	100
मध्यमान	21.80	21.47
मानक विचलन	4.11	3.68
क्रान्तिक अनुपात	0.60	

d,f (200 – 2) = 198 पर सारणीमान –
अ. 5 % विश्वास के स्तर पर 1.97
ब. 1 % विश्वास के स्तर पर 2.60

ग्राफ क्रमांक – 5.32

बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों का कृत्य–संतोष

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R का मान 0.60 है जबकि d.f 198 पर टी–तालिका देखने पर पता चलता है कि 5% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 1.97 तथा 1% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 2.60 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R का मान टी–तालिका में दिये गये दोनों स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R के मानों से कम है, अतः यहाँ निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) स्वीकृत (Except) की जाती है और कहा जा सकता है कि बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों के कृत्य–संतोष में कोई अन्तर नहीं है।

(i) "शहरी क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों के 'कृत्य–संतोष' में कोई अन्तर नहीं है।"

सारणी क्रमांक – 5.33

शहरी क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओंतथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों का कृत्य–संतोष

शिक्षक वर्ग	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिका शहरी	विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक शहरी
कुल संख्या	50	50
मध्यमान	22.34	20.54
मानक विचलन	4.11	3.63
क्रान्तिक अनुपात	2.31	
d,f (100 – 2) = 98 पर सारणीमान – अ. 5 % विश्वास के स्तर पर 1.98 ब. 1 % विश्वास के स्तर पर 2.63		

ग्राफ क्रमांक – 5.33

शहरी क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओंतथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों का कृत्य–संतोष
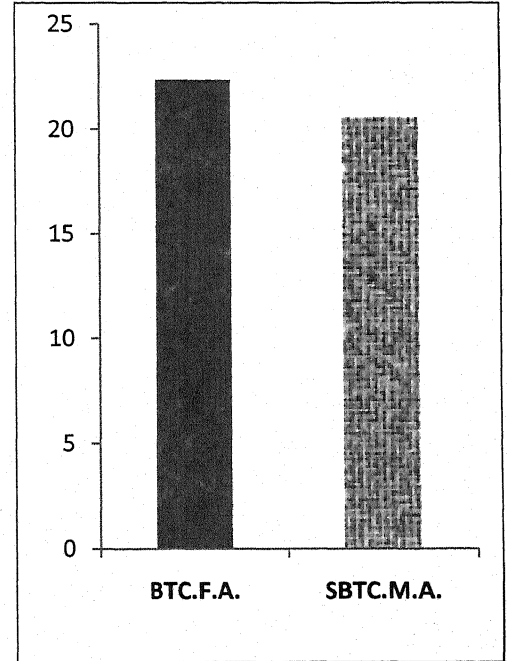
उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R का मान 2.31 है जबकि d.f 98 पर टी–तालिका देखने पर पता चलता है कि 5% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 1.98 तथा 1% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 2.63 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R का मान टी–तालिका में दिये गये 5% विश्वास के स्तर पर C.R के मान से अधिक है लेकिन 1% विश्वास के स्तर पर C.R के मान से कम है अतः यहाँ निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) स्वीकृत (Except) की जाती है।

(ii) "ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों के 'कृत्य–संतोष' में कोई अन्तर नहीं है।"

सारणी क्रमांक – 5.34

ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत
बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों का कृत्य–संतोष

शिक्षक वर्ग	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिका ग्रामीण	विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक ग्रामीण
कुल संख्या	50	50
मध्यमान	21.26	22.40
मानक विचलन	3.70	3.50
क्रान्तिक अनुपात	1.58	

d,f (100 – 2) = 98 पर सारणीमान –
अ. 5 % विश्वास के स्तर पर 1.98
ब. 1 % विश्वास के स्तर पर 2.63

ग्राफ क्रमांक – 5.34

ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत
बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों का कृत्य–संतोष
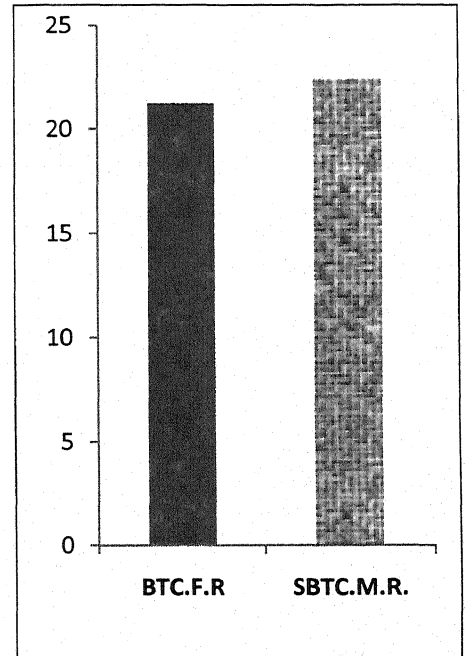
उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R का मान 1.58 है जबकि d.f 98 पर टी–तालिका देखने पर पता चलता है कि 5% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 1.98 तथा 1% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 2.63 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R का मान टी–तालिका में दिये गये दोनों स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R के मानों से कम है, अतः यहाँ निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) स्वीकृत (Except) की जाती है और कहा जा सकता है, कि ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं एवं ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों के कृत्य–संतोष में कोई अन्तर नहीं है।

अष्ठम् परिकल्पना का परीक्षण :– शोध की अष्ठम् परिकल्पना निम्न थी :–

"बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) के 'समायोजन' में कोई अन्तर नहीं है।"

सारणी क्रमांक – 5.35

बी0टी0सी0 तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) का समायोजन

शिक्षक वर्ग	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक एवं शिक्षिकाऐं	विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक एवं शिक्षिकायें
कुल संख्या	200	200
मध्यमान	356.10	330.60
मानक विचलन	58.46	63.94
क्रान्तिक अनुपात	4.16	

d,f (400 – 2) = 398 पर सारणीमान –
अ. 5 % विश्वास के स्तर पर 1.97
ब. 1 % विश्वास के स्तर पर 2.59

ग्राफ क्रमांक – 5.35

बी0टी0सी0 तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) का समायोजन
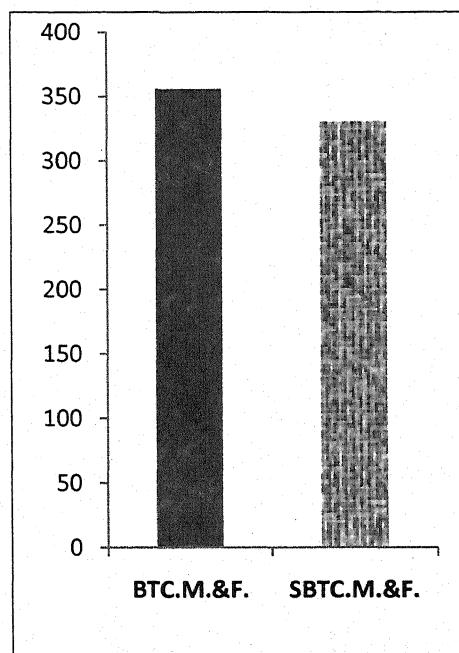
उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R का मान 4.16 है, जबकि d.f 398 पर टी–तालिका देखने पर पता चलता है कि 5% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 1.97 तथा 1% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 2.59 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R का मान टी–तालिका में दिये गये दोनों स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R के मानों से अधिक है, अतः यहाँ निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) अस्वीकृत (Reject) की जाती है और कहा जा सकता है कि बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष–महिला) का समायोजन विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों से अच्छा है।

(अ) "बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष) एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष) के 'समायोजन' में कोई अन्तर नहीं है।"

सारणी क्रमांक – 5.36

बी0टी0सी0 तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों का समायोजन

शिक्षक वर्ग	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक	विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक
कुल संख्या	100	100
मध्यमान	375.89	331.10
मानक विचलन	51.40	62.38
क्रान्तिक अनुपात	5.54	

d,f (200 – 2) = 198 पर सारणीमान –
अ. 5 % विश्वास के स्तर पर 1.97
ब. 1 % विश्वास के स्तर पर 2.60

ग्राफ क्रमांक – 5.36

बी0टी0सी0 तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों का समायोजन

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R का मान 5.54 है जबकि d.f 198 पर टी–तालिका देखने पर पता चलता है कि 5% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 1.97 तथा 1% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 2.60 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R का मान टी–तालिका में दिये गये दोनों स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R के मानों से अधिक है, अतः यहाँ निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) अस्वीकृत (Reject) की जाती है और कहा जा सकता है कि बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष) का समायोजन विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष) से अच्छा है।

(i) "शहरी क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों के 'समायोजन' में कोई अन्तर नहीं है।"

सारणी क्रमांक – 5.37

शहरी क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों का समायोजन

शिक्षक वर्ग	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक शहरी	विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक शहरी
कुल संख्या	42	50
मध्यमान	370.50	305.30
मानक विचलन	53.31	56.78
क्रान्तिक अनुपात	5.67	

d,f (92 – 2) = 90 पर सारणीमान –

अ. 5 % विश्वास के स्तर पर 1.98

ब. 1 % विश्वास के स्तर पर 2.63

ग्राफ क्रमांक – 5.37

शहरी क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों का समायोजन
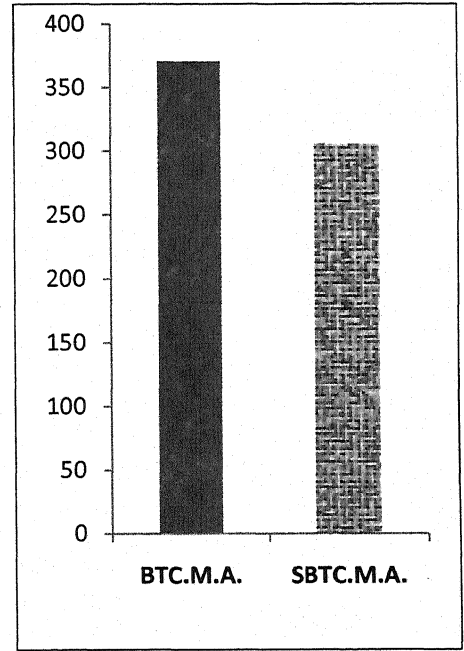
उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R का मान 5.67 है जबकि d.f 90 पर टी–तालिका देखने पर पता चलता है कि 5% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 1.98 तथा 1% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 2.63 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R का मान टी–तालिका में दिये गये दोनों स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R के मानों से अधिक है, अतः यहाँ निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) अस्वीकृत (Reject) की जाती है और कहा जा सकता है कि शहरी क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष) का समायोजन शहरी क्षेत्र में कार्यरत विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष) से अच्छा है।

(II) "ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों के 'समायोजन' में कोई अन्तर नही है।"

सारणी क्रमांक – 5.38

ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों का समायोजन

शिक्षक वर्ग	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक ग्रामीण	विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक ग्रामीण
कुल संख्या	58	50
मध्यमान	379.80	356.90
मानक विचलन	49.60	56.80
क्रान्तिक अनुपात	2.21	

d,f (108 – 2) = 106 पर सारणीमान –
अ. 5 % विश्वास के स्तर पर 1.98
ब. 1 % विश्वास के स्तर पर 2.63

ग्राफ क्रमांक – 5.38

ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों का समायोजन
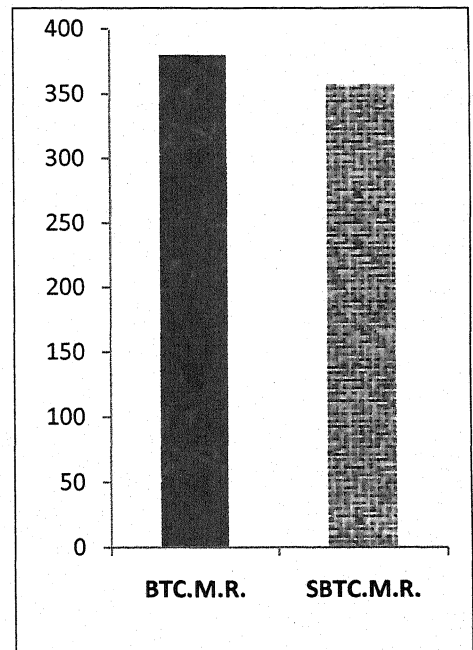
उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R का मान 2.21 है जबकि d.f 106 पर टी–तालिका देखने पर पता चलता है कि 5% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 1.98 तथा 1% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 2.63 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R का मान टी–तालिका में दिये गये 5% विश्वास के स्तर पर C.R के मान से अधिक है लेकिन 1% विश्वास के स्तर पर C.R के मान से कम है अतः यहाँ निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) स्वीकृत (Except) की जाती है और कहा जा सकता है कि ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष) एवं ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष) के 'समायोजन' में कोई अन्तर नहीं है।

(ब) "बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं के 'समायोजन' में कोई अन्तर नहीं है।"

सारणी क्रमांक – 5.39

बी0टी0सी0 तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं का समायोजन

शिक्षक वर्ग	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिका	विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिका
कुल संख्या	100	100
मध्यमान	337.30	330.11
मानक विचलन	59.90	64.66
क्रान्तिक अनुपात	0.82	

d,f (200 – 2) = 198 पर सारणीमान –
अ. 5 % विश्वास के स्तर पर 1.97
ब. 1 % विश्वास के स्तर पर 2.60

ग्राफ क्रमांक – 5.39

बी0टी0सी0 तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं का समायोजन
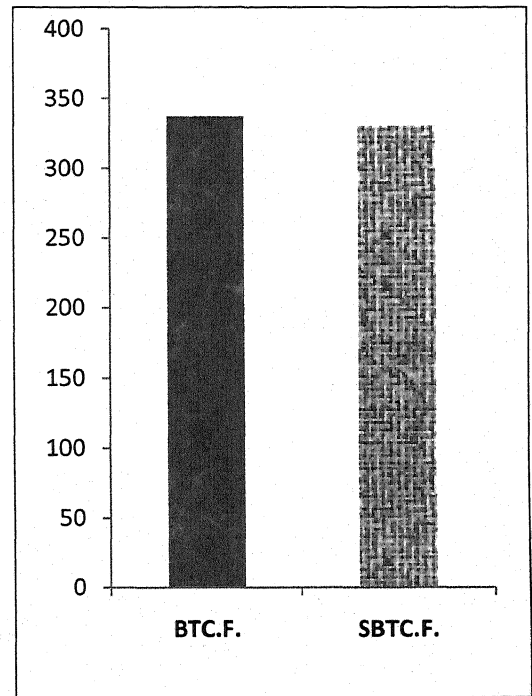
उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R का मान 0.82 है जबकि d.f 198 पर टी–तालिका देखने पर पता चलता है कि 5% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 1.97 तथा 1% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 2.60 होना चाहिये । यहाँ गणना से प्राप्त C.R का मान टी–तालिका में दिये गये दोनों स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R के मानों से कम है, अतः यहाँ निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) स्वीकृत (Except) की जाती है और कहा जा सकता है कि बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं के 'समायोजन' में कोई अन्तर नहीं है।

(i) "शहरी क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं के 'समायोजन' में कोई अन्तर नहीं है।"

सारणी क्रमांक – 5.40

शहरी क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं का समायोजन

शिक्षक वर्ग	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिका शहरी	विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिका शहरी
कुल संख्या	50	44
मध्यमान	337.30	314.60
मानक विचलन	58.22	66.06
क्रान्तिक अनुपात	1.74	
d,f (94 – 2) = 92 पर सारणीमान – अ. 5 % विश्वास के स्तर पर 1.98 ब. 1 % विश्वास के स्तर पर 2.63		

ग्राफ क्रमांक – 5.40

शहरी क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं का समायोजन
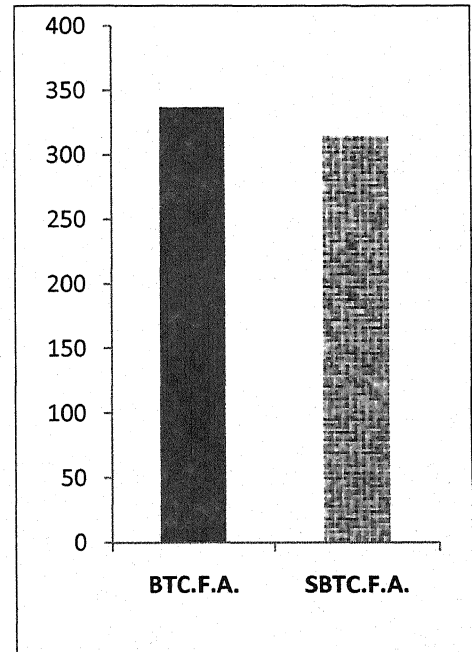
उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R का मान 1.74 है जबकि d.f 92 पर टी–तालिका देखने पर पता चलता है कि 5% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 1.98 तथा 1% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 2.63 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R का मान टी–तालिका में दिये गये दोनों स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R के मानों से कम है, अतः यहाँ निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) स्वीकृत (Except) की जाती है और कहा जा सकता है कि शहरी क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं तथा शहरी क्षेत्र में कार्यरत विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं के 'समायोजन' में कोई अन्तर नहीं है।

(ii) "ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं के 'समायोजन' में कोई अन्तर नहीं है।"

सारणी क्रमांक – 5.41

ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं का समायोजन

शिक्षक वर्ग	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिका ग्रामीण	विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिका ग्रामीण
कुल संख्या	50	56
मध्यमान	337.30	342.30
मानक विचलन	60.96	62.36
क्रान्तिक अनुपात	0.42	
d,f (106 – 2) = 104 पर सारणीमान – अ. 5 % विश्वास के स्तर पर 1.98; ब. 1 % विश्वास के स्तर पर 2.63		

ग्राफ क्रमांक – 5.41

ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं का समायोजन
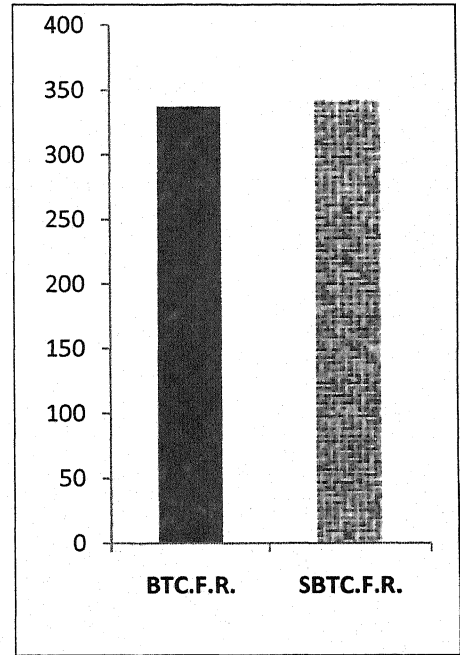
उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R का मान 0.42 है जबकि d.f 104 पर टी–तालिका देखने पर पता चलता है कि 5% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 1.98 तथा 1% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 2.63 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R का मान टी–तालिका में दिये गये दोनों स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R के मानों से कम है, अतः यहाँ निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) स्वीकृत (Except) की जाती है और कहा जा सकता है कि ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं तथा ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं के 'समायोजन' में कोई अन्तर नहीं है।

(स) "बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं के 'समायोजन' में कोई अन्तर नहीं है।"

सारणी क्रमांक – 5.42

बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं का समायोजन

शिक्षक वर्ग	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक	विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिका
कुल संख्या	100	100
मध्यमान	375.89	330.11
मानक विचलन	51.40	64.66
क्रान्तिक अनुपात	5.54	

d,f (200 – 2) = 198 पर सारणीमान –

अ. 5 % विश्वास के स्तर पर 1.97

ब. 1 % विश्वास के स्तर पर 2.60

ग्राफ क्रमांक – 5.42

बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं का समायोजन

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R का मान 5.54 है जबकि d.f 198 पर टी–तालिका देखने पर पता चलता है कि 5% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 1.97 तथा 1% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 2.60 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R का मान टी–तालिका में दिये गये दोनों स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R के मानों से अधिक है, अतः यहाँ निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) अस्वीकृत (Reject) की जाती है और कहा जा सकता है कि बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष) का समायोजन विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं से अच्छा है।

(i) "शहरी क्षेत्र में बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं के 'समायोजन' में कोई अन्तर नहीं है।"

सारणी क्रमांक – 5.43

शहरी क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं का समायोजन

शिक्षक वर्ग	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक शहरी	विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिका शहरी
कुल संख्या	42	44
मध्यमान	370.50	314.60
मानक विचलन	53.31	66.06
क्रान्तिक अनुपात	4.32	

d,f (86 – 2) = 84 पर सारणीमान –
अ. 5 % विश्वास के स्तर पर 1.98
ब. 1 % विश्वास के स्तर पर 2.63

ग्राफ क्रमांक – 5.43

शहरी क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं का समायोजन
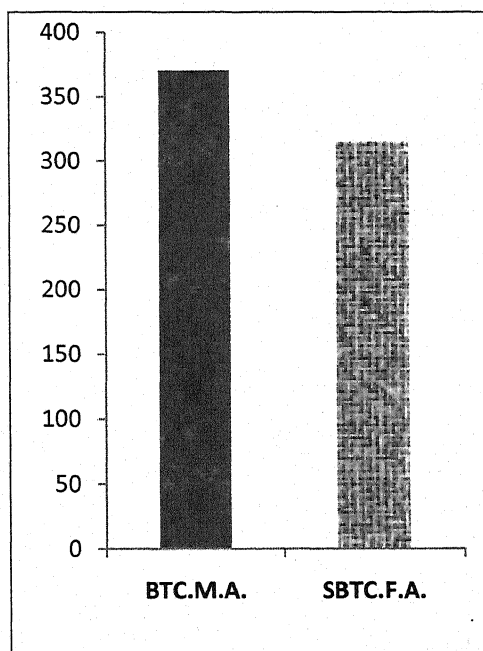
उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R का मान 4.32 है जबकि d.f 84 पर टी–तालिका देखने पर पता चलता है कि 5% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 1.98 तथा 1% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 2.63 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R का मान टी–तालिका में दिये गये दोनों स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R के मानों से अधिक है, अतः यहाँ निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) अस्वीकृत (Reject) की जाती है और कहा जा सकता है कि शहरी क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष) का समायोजन शहरी क्षेत्र में कार्यरत विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं से अच्छा है।

(ii) "ग्रामीण क्षेत्र में बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं के 'समायोजन' में कोई अन्तर नहीं है।"

सारणी क्रमांक – 5.44

ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं का समायोजन

शिक्षक वर्ग	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक ग्रामीण	विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिका ग्रामीण
कुल संख्या	58	56
मध्यमान	379.80	342.30
मानक विचलन	49.60	62.36
क्रान्तिक अनुपात	3.54	
d,f (114 – 2) = 112 पर सारणीमान – अ. 5 % विश्वास के स्तर पर 1.98 ब. 1 % विश्वास के स्तर पर 2.63		

ग्राफ क्रमांक – 5.44

ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं का समायोजन
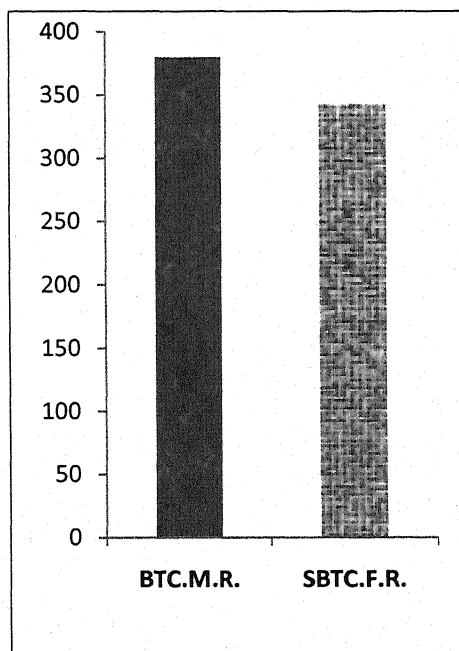
उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R का मान 3.54 है जबकि d.f 112 पर टी–तालिका देखने पर पता चलता है कि 5% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 1.98 तथा 1% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 2.63 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R का मान टी–तालिका में दिये गये दोनों स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R के मानों से अधिक है, अतः यहाँ निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) अस्वीकृत (Reject) की जाती है और कहा जा सकता है कि ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों का समायोजन ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं से अच्छा है।

(द) "बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों के 'समायोजन' में कोई अन्तर नहीं है।"

सारणी क्रमांक – 5.45

बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों का समायोजन

शिक्षक वर्ग	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिका	विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक
कुल संख्या	100	100
मध्यमान	337.30	331.10
मानक विचलन	59.90	62.38
क्रान्तिक अनुपात	0.72	
d,f (200 – 2) = 198 पर सारणीमान – अ. 5 % विश्वास के स्तर पर 1.97 ब. 1 % विश्वास के स्तर पर 2.60		

ग्राफ क्रमांक – 5.45

बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों का समायोजन
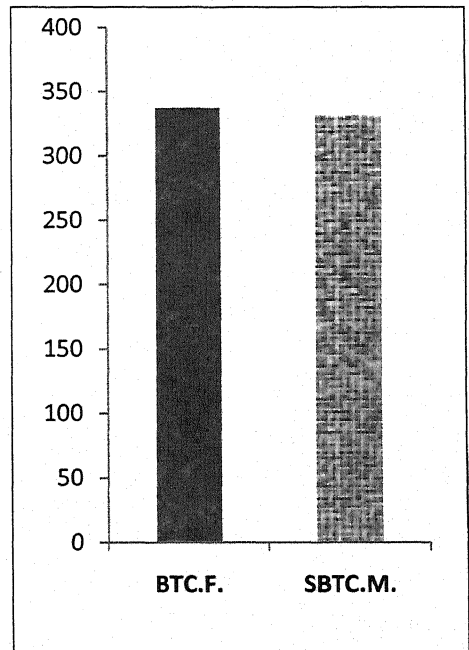
उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R का मान 0.72 है जबकि d.f 198 पर टी–तालिका देखने पर पता चलता है कि 5% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 1.97 तथा 1% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 2.60 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R का मान टी–तालिका में दिये गये दोनों स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R के मानों से कम है, अतः यहाँ निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) स्वीकृत (Except) की जाती है और कहा जा सकता है कि बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों के 'समायोजन' में कोई अन्तर नहीं है।

(i) "शहरी क्षेत्र में बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों के 'समायोजन' में कोई अन्तर नहीं है।"

सारणी क्रमांक – 5.46

शहरी क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों का समायोजन

शिक्षक वर्ग	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिका शहरी	विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक शहरी
कुल संख्या	50	50
मध्यमान	337.30	305.30
मानक विचलन	58.82	56.78
क्रान्तिक अनुपात	2.77	
d,f (100 – 2) = 98 पर सारणीमान – अ. 5 % विश्वास के स्तर पर 1.98 ब. 1 % विश्वास के स्तर पर 2.63		

ग्राफ क्रमांक – 5.46

शहरी क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों का समायोजन
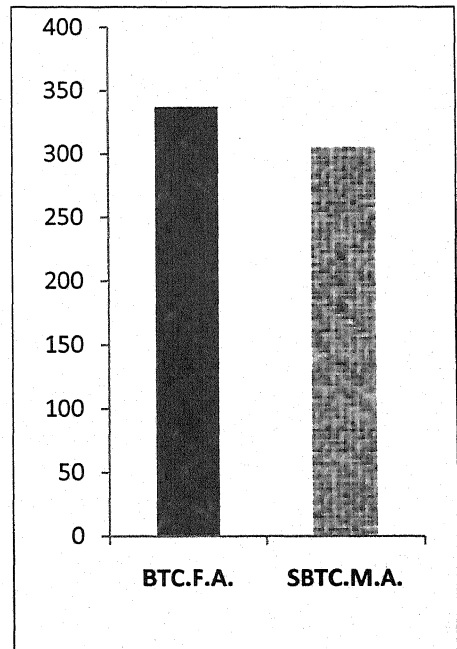
उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R का मान 2.77 है जबकि d.f 98 पर टी–तालिका देखने पर पता चलता है कि 5% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 1.98 तथा 1% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 2.63 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R का मान टी–तालिका में दिये गये दोनों स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R के मानों से अधिक है, अतः यहाँ निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) अस्वीकृत (Reject) की जाती है और कहा जा सकता है कि शहरी क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं का समायोजन शहरी क्षेत्र में कार्यरत विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों से अच्छा है।

(ii) "ग्रामीण क्षेत्र में बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों के 'समायोजन' में कोई अन्तर नहीं है।"

सारणी क्रमांक – 5.47

ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों का समायोजन

शिक्षक वर्ग	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिका ग्रामीण	विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक ग्रामीण
कुल संख्या	50	50
मध्यमान	337.30	356.90
मानक विचलन	60.96	58.80
क्रान्तिक अनुपात	1.66	

d,f (100 – 2) = 98 पर सारणीमान –

अ. 5 % विश्वास के स्तर पर 1.98

ब. 1 % विश्वास के स्तर पर 2.63

ग्राफ क्रमांक – 5.47

ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों का समायोजन
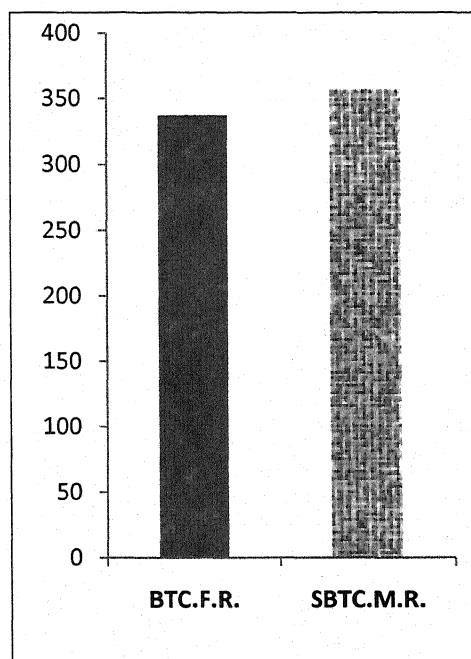
उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R का मान 1.66 है जबकि d.f 98 पर टी–तालिका देखने पर पता चलता है कि 5% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 1.98 तथा 1% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 2.63 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R का मान टी–तालिका में दिये गये दोनों स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R के मानों से कम है, अतः यहाँ निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) स्वीकृत (Except) की जाती है और कहा जा सकता है, कि ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं एवं ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों के 'समायोजन' में कोई अन्तर नहीं है।

नवम् परिकल्पना का परीक्षण :– शोध की नवम् परिकल्पना निम्न थी :–

"बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) के 'शिक्षण में रुचि' में कोई अन्तर नहीं है।"

सारणी क्रमांक – 5.48

बी0टी0सी0 तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की शिक्षण में रुचि

शिक्षक वर्ग	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक एवं शिक्षिकाऐं	विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक एवं शिक्षिकाऐं
कुल संख्या	200	200
मध्यमान	10.75	9.20
मानक विचलन	4.64	4.57
क्रान्तिक अनुपात	3.36	

d,f (400 – 2) = 398 पर सारणीमान –
अ. 5 % विश्वास के स्तर पर 1.97
ब. 1 % विश्वास के स्तर पर 2.59

ग्राफ क्रमांक – 5.48

बी0टी0सी0 तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की शिक्षण में रुचि
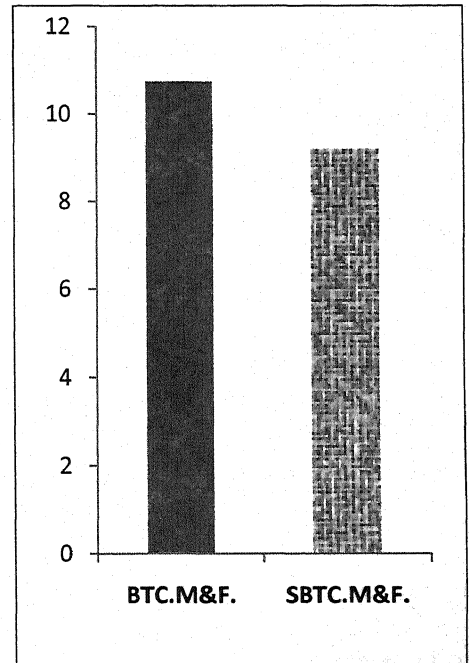
उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R का मान 3.36 है, जबकि d.f 398 पर टी–तालिका देखने पर पता चलता है कि 5% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 1.97 तथा 1% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 2.59 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R का मान टी–तालिका में दिये गये दोनों स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R के मानों से अधिक है, अतः यहाँ निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) अस्वीकृत (Reject) की जाती है और कहा जा सकता है कि बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) के 'शिक्षण में रुचि' में अन्तर है।

(अ) "बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष) एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष) के 'शिक्षण में रुचि' में कोई अन्तर नहीं है।"

सारणी क्रमांक – 5.49

बी0टी0सी0 तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों की शिक्षण में रुचि

शिक्षक वर्ग	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक	विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक
कुल संख्या	100	100
मध्यमान	11.26	9.46
मानक विचलन	4.16	4.60
क्रान्तिक अनुपात	2.90	
d,f (200 – 2) = 198 पर सारणीमान – अ. 5 % विश्वास के स्तर पर 1.97 ब. 1 % विश्वास के स्तर पर 2.60		

ग्राफ क्रमांक – 5.49

बी0टी0सी0 तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों की शिक्षण में रुचि
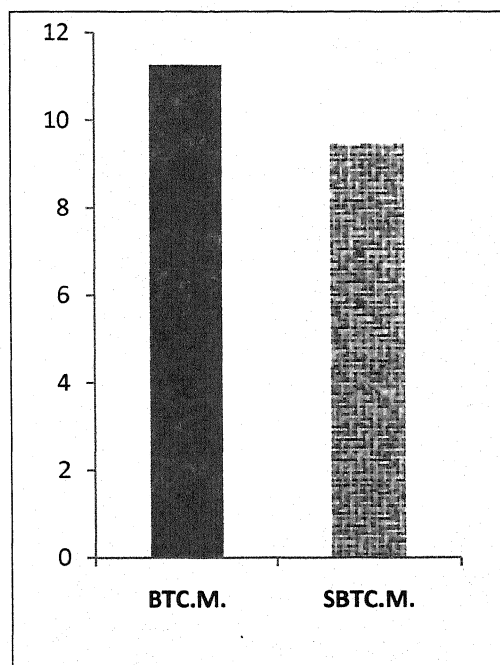
उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R का मान 2.90 है जबकि d.f 198 पर टी–तालिका देखने पर पता चलता है कि 5% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 1.97 तथा 1% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 2.60 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R का मान टी–तालिका में दिये गये दोनों स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R के मानों से अधिक है, अतः यहाँ निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) अस्वीकृत (Reject) की जाती है और कहा जा सकता है कि बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों के 'शिक्षण में रुचि' में अन्तर है।

(i) **"शहरी क्षेत्र के बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों के 'शिक्षण में रुचि' में कोई अन्तर नहीं है।"**

सारणी क्रमांक – 5.50

शहरी क्षेत्र में कार्यरत
बी0टी0सी0 तथा विशिष्ट बी0टी0सी0
प्रशिक्षित शिक्षकों की शिक्षण में रुचि

शिक्षक वर्ग	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक शहरी	विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक शहरी
कुल संख्या	42	50
मध्यमान	11.00	9.22
मानक विचलन	4.16	4.70
क्रान्तिक अनुपात	1.93	

d,f (92 – 2) = 90 पर सारणीमान –
अ. 5 % विश्वास के स्तर पर 1.98
ब. 1 % विश्वास के स्तर पर 2.63

ग्राफ क्रमांक – 5.50

शहरी क्षेत्र में कार्यरत
बी0टी0सी0 तथा विशिष्ट बी0टी0सी0
प्रशिक्षित शिक्षकों की शिक्षण में रुचि
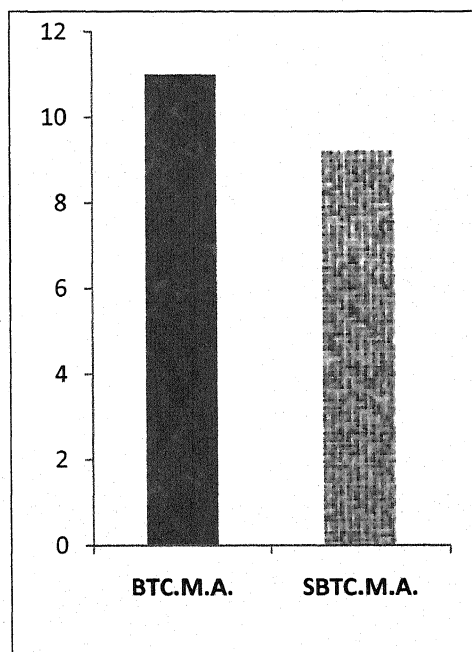
उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R का मान 1.93 है जबकि d.f 90 पर टी–तालिका देखने पर पता चलता है कि 5% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 1.98 तथा 1% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 2.63 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R का मान टी–तालिका में दिये गये दोनों स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R के मानों से कम है, अतः यहाँ निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) स्वीकृत (Except) की जाती है और कहा जा सकता है कि शहरी क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों तथा शहरी क्षेत्र में कार्यरत विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों के 'शिक्षण में रुचि' में कोई अन्तर नहीं है।

(ii) "ग्रामीण क्षेत्र के बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों के 'शिक्षण में रुचि' में कोई अन्तर नही है।"

सारणी क्रमांक – 5.51

ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत

बी0टी0सी0 तथा विशिष्ट बी0टी0सी0

प्रशिक्षित शिक्षकों की शिक्षण में रुचि

शिक्षक वर्ग	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक ग्रामीण	विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक ग्रामीण
कुल संख्या	58	50
मध्यमान	11.45	9.70
मानक विचलन	3.75	4.38
क्रान्तिक अनुपात	2.22	

d,f (108 – 2) = 106 पर सारणीमान –

अ. 5 % विश्वास के स्तर पर 1.98

ब. 1 % विश्वास के स्तर पर 2.63

ग्राफ क्रमांक – 5.51

ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत

बी0टी0सी0 तथा विशिष्ट बी0टी0सी0

प्रशिक्षित शिक्षकों की शिक्षण में रुचि
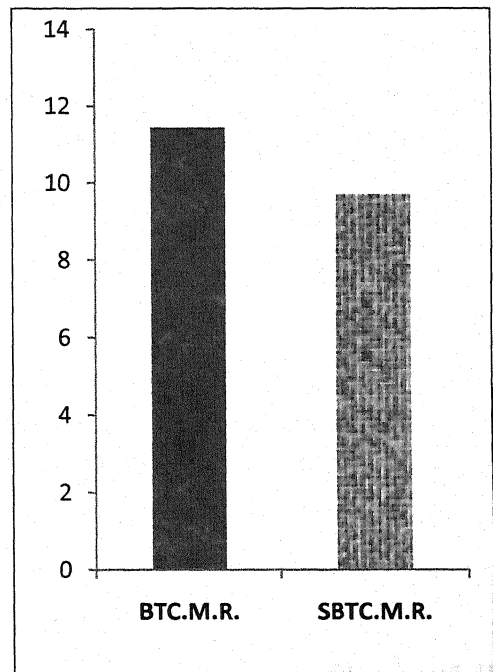
उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R का मान 2.22 है जबकि d.f 106 पर टी–तालिका देखने पर पता चलता है कि 5% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 1.98 तथा 1% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 2.63 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R का मान टी–तालिका में दिये गये 5% विश्वास के स्तर पर C.R के मान से अधिक है लेकिन 1% विश्वास के स्तर पर C.R के मान से कम है, अतः यहाँ निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) स्वीकृत (Except) की जाती है और कहा जा सकता है कि ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों के 'शिक्षण में रुचि' में कोई अन्तर नहीं है।

(ब) "बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं के 'शिक्षण में रुचि' में कोई अन्तर नहीं है।"

सारणी क्रमांक – 5.52

बी0टी0सी0 तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं की शिक्षण में रुचि

शिक्षक वर्ग	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिका	विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिका
कुल संख्या	100	100
मध्यमान	10.24	8.95
मानक विचलन	5.03	4.54
क्रान्तिक अनुपात	1.90	

d,f (200 – 2) = 198 पर सारणीमान –
अ. 5 % विश्वास के स्तर पर 1.97
ब. 1 % विश्वास के स्तर पर 2.60

ग्राफ क्रमांक – 5.52

बी0टी0सी0 तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं की शिक्षण में रुचि
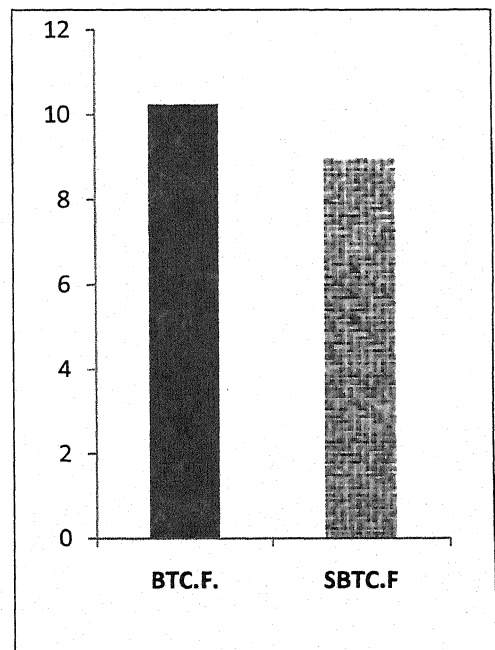
उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R का मान 1.90 है जबकि d.f 198 पर टी–तालिका देखने पर पता चलता है कि 5% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 1.97 तथा 1% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 2.60 होना चाहिये। । यहाँ गणना से प्राप्त C.R का मान टी–तालिका में दिये गये दोनों स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R के मानों से कम है, अतः यहाँ निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) स्वीकृत (Except) की जाती है और कहा जा सकता है कि बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं के 'शिक्षण में रुचि' में कोई अन्तर नहीं है।

(i) "शहरी क्षेत्र में बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं के 'शिक्षण में रुचि' में कोई अन्तर नहीं है।"

सारणी क्रमांक – 5.53

शहरी क्षेत्र में कार्यरत
बी0टी0सी0 तथा विशिष्ट बी0टी0सी0
प्रशिक्षित शिक्षिकाओं की शिक्षण में रुचि

शिक्षक वर्ग	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिका शहरी	विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिका शहरी
कुल संख्या	50	44
मध्यमान	11.32	8.16
मानक विचलन	5.20	4.16
क्रान्तिक अनुपात	3.26	

d,f (94 – 2) = 92 पर सारणीमान –
अ. 5 % विश्वास के स्तर पर 1.98
ब. 1 % विश्वास के स्तर पर 2.63

ग्राफ क्रमांक – 5.53

शहरी क्षेत्र में कार्यरत
बी0टी0सी0 तथा विशिष्ट बी0टी0सी0
प्रशिक्षित शिक्षिकाओं की शिक्षण में रुचि
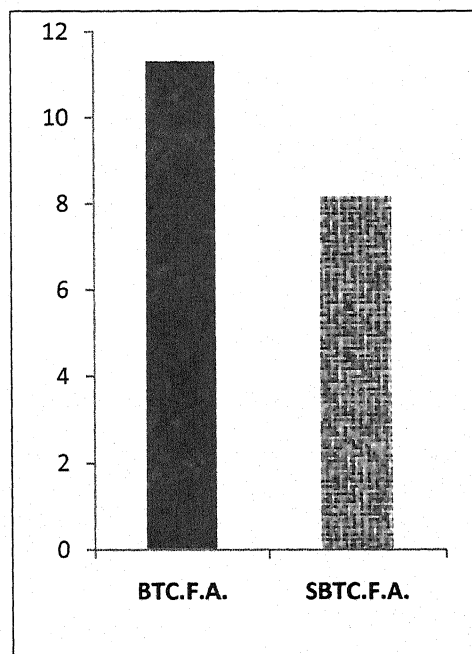
उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R का मान 3.26 है जबकि d.f 92 पर टी–तालिका देखने पर पता चलता है कि 5% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 1.98 तथा 1% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 2.63 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R का मान टी–तालिका में दिये गये दोनों स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R के मानों से अधिक है, अतः यहाँ निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) अस्वीकृत (Reject) की जाती है और कहा जा सकता है कि शहरी क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं तथा शहरी क्षेत्र में कार्यरत विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं के 'शिक्षण में रुचि' में अन्तर है।

(ii) "ग्रामीण क्षेत्र में बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं के 'शिक्षण में रुचि' में कोई अन्तर नहीं है।"

सारणी क्रमांक – 5.54

ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत

बी0टी0सी0 तथाविशिष्ट बी0टी0सी0

प्रशिक्षित शिक्षकों की शिक्षण में रुचि

शिक्षक वर्ग	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिका ग्रामीण	विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिका ग्रामीण
कुल संख्या	50	56
मध्यमान	9.16	9.57
मानक विचलन	4.61	7.44
क्रान्तिक अनुपात	0.35	

d,f (106 – 2) = 104 पर सारणीमान –

अ. 5 % विश्वास के स्तर पर 1.98

ब. 1 % विश्वास के स्तर पर 2.63

ग्राफ क्रमांक – 5.54

ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत

बी0टी0सी0 तथाविशिष्ट बी0टी0सी0

प्रशिक्षित शिक्षकों की शिक्षण में रुचि

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R का मान 0.35 है जबकि d.f 104 पर टी–तालिका देखने पर पता चलता है कि 5% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 1.98 तथा 1% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 2.63 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R का मान टी–तालिका में दिये गये दोनों स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R के मानों से कम है, अतः यहाँ निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) स्वीकृत (Except) की जाती है और कहा जा सकता है कि ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं तथा ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं के 'शिक्षण में रुचि' में कोई अन्तर नहीं है।

(स) "बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं के 'शिक्षण में रुचि' में कोई अन्तर नहीं है।"

सारणी क्रमांक – 5.55

बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं की शिक्षण में रुचि

शिक्षक वर्ग	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक	विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिका
कुल संख्या	100	100
मध्यमान	11.26	8.95
मानक विचलन	4.16	4.54
क्रान्तिक अनुपात	3.73	

d,f (200 – 2) = 198 पर सारणीमान –

अ. 5 % विश्वास के स्तर पर 1.97

ब. 1 % विश्वास के स्तर पर 2.60

ग्राफ क्रमांक – 5.55

बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं की शिक्षण में रुचि

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R का मान 3.73 है जबकि d.f 198 पर टी–तालिका देखने पर पता चलता है कि 5% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 1.97 तथा 1% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 2.60 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R का मान टी–तालिका में दिये गये दोनों स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R के मानों से अधिक है, अतः यहाँ निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) अस्वीकृत (Reject) की जाती है और कहा जा सकता है कि बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं के 'शिक्षण में रुचि' में अन्तर है।

(i) "शहरी क्षेत्र में बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं के 'शिक्षण में रुचि' में कोई अन्तर नहीं है।"

सारणी क्रमांक – 5.56

शहरी क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं की शिक्षण में रुचि

शिक्षक वर्ग	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक शहरी	विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिका शहरी
कुल संख्या	42	44
मध्यमान	11.00	8.16
मानक विचलन	4.16	4.16
क्रान्तिक अनुपात	3.16	

d,f (86 – 2) = 84 पर सारणीमान –
अ. 5 % विश्वास के स्तर पर 1.98
ब. 1 % विश्वास के स्तर पर 2.63

ग्राफ क्रमांक – 5.56

शहरी क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं की शिक्षण में रुचि
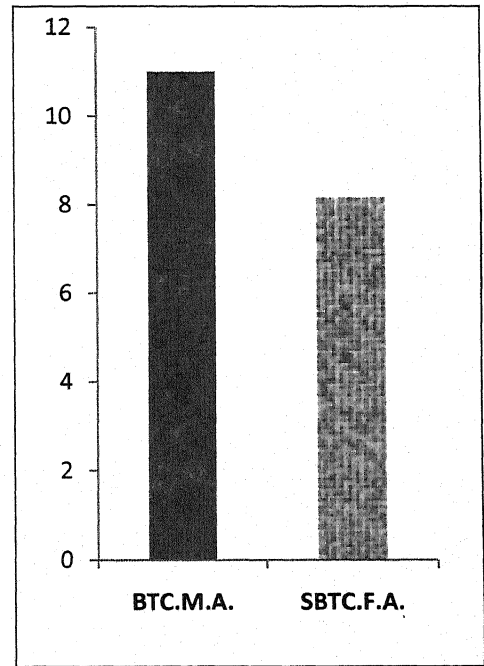
उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R का मान 3.16 है जबकि d.f 84 पर टी–तालिका देखने पर पता चलता है कि 5% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 1.98 तथा 1% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 2.63 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R का मान टी–तालिका में दिये गये दोनों स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R के मानों से अधिक है, अतः यहाँ निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) अस्वीकृत (Reject) की जाती है और कहा जा सकता है कि शहरी क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों तथा शहरी क्षेत्र में कार्यरत विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं के 'शिक्षण में रुचि' में अन्तर है।

(ii) "ग्रामीण क्षेत्र में बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं के 'शिक्षण में रुचि' में कोई अन्तर नहीं है।"

सारणी क्रमांक – 5.57

ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं की शिक्षण में रुचि

शिक्षक वर्ग	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक ग्रामीण	विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिका ग्रामीण
कुल संख्या	58	56
मध्यमान	11.45	9.57
मानक विचलन	3.75	7.44
क्रान्तिक अनुपात	1.69	

d,f (114 – 2) = 112 पर सारणीमान –
अ. 5 % विश्वास के स्तर पर 1.98
ब. 1 % विश्वास के स्तर पर 2.63

ग्राफ क्रमांक – 5.57

ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं की शिक्षण में रुचि
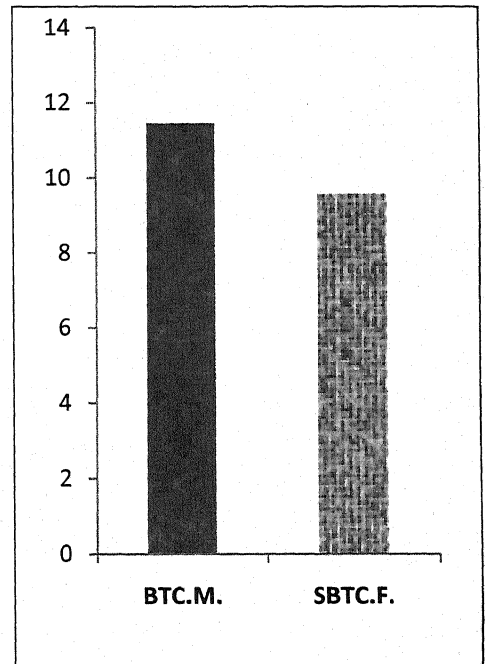
उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R का मान 1.69 है जबकि d.f 112 पर टी–तालिका देखने पर पता चलता है कि 5% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 1.98 तथा 1% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 2.63 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R का मान टी–तालिका में दिये गये दोनों स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R के मानों से कम है, अतः यहाँ निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) स्वीकृत (Except) की जाती है और कहा जा सकता है कि ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं के 'शिक्षण में रुचि' में कोई अन्तर नहीं है।

(द) "बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों के 'शिक्षण में रुचि' में कोई अन्तर नहीं है।"

सारणी क्रमांक – 5.58

बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों की शिक्षण में रुचि

शिक्षक वर्ग	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिका	विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक
कुल संख्या	100	100
मध्यमान	10.24	9.46
मानक विचलन	5.03	4.60
क्रान्तिक अनुपात	1.15	

d,f (200 – 2) = 198 पर सारणीमान –
अ. 5 % विश्वास के स्तर पर 1.97
ब. 1 % विश्वास के स्तर पर 2.60

ग्राफ क्रमांक – 5.58

बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों की शिक्षण में रुचि
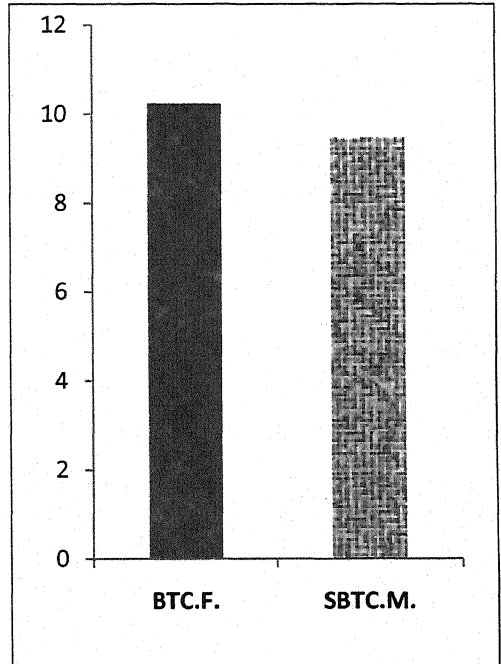
उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R का मान 1.15 है जबकि d.f 198 पर टी–तालिका देखने पर पता चलता है कि 5% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 1.97 तथा 1% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 2.60 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R का मान टी–तालिका में दिये गये दोनों स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R के मानों से कम है, अतः यहाँ निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) स्वीकृत (Except) की जाती है और कहा जा सकता है कि बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों के 'शिक्षण में रुचि' में कोई अन्तर नहीं है।

(i) "शहरी क्षेत्र में बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों के 'शिक्षण में रुचि' में कोई अन्तर नहीं है।"

सारणी क्रमांक – 5.59

शहरी क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों की शिक्षण में रुचि

शिक्षक वर्ग	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिका शहरी	विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक शहरी
कुल संख्या	50	50
मध्यमान	11.32	9.22
मानक विचलन	5.20	4.70
क्रान्तिक अनुपात	2.12	
d,f (100 – 2) = 98 पर सारणीमान – अ. 5 % विश्वास के स्तर पर 1.98 ब. 1 % विश्वास के स्तर पर 2.63		

ग्राफ क्रमांक – 5.59

शहरी क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों की शिक्षण में रुचि
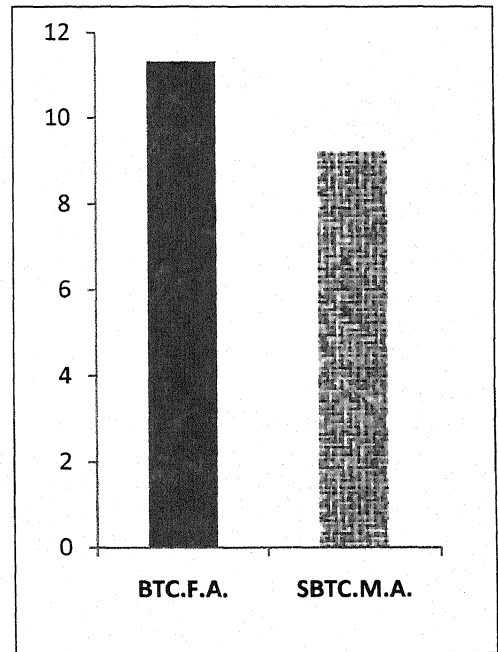
उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R का मान 2.12 है जबकि d.f 98 पर टी–तालिका देखने पर पता चलता है कि 5% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 1.98 तथा 1% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 2.63 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R का मान टी–तालिका में दिये गये 5% स्तर पर C.R के मान से अधिक है लेकिन 1% स्तर पर C.R के मान से कम है, अतः यहाँ निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) स्वीकृत (Except) की जाती है और कहा जा सकता है कि शहरी क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं तथा शहरी क्षेत्र में कार्यरत विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों के 'शिक्षण में रुचि' में कोई अन्तर नहीं है।

(ii) "ग्रामीण क्षेत्र में बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों के 'शिक्षण में रुचि' में कोई अन्तर नहीं है। "

सारणी क्रमांक – 5.60

ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों की शिक्षण में रुचि

शिक्षक वर्ग	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिका ग्रामीण	विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक ग्रामीण
कुल संख्या	50	50
मध्यमान	9.16	9.22
मानक विचलन	4.61	4.70
क्रान्तिक अनुपात	0.60	
d,f (100 – 2) = 98 पर सारणीमान – अ. 5 % विश्वास के स्तर पर 1.98 ब. 1 % विश्वास के स्तर पर 2.63		

ग्राफ क्रमांक – 5.60

ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों की शिक्षण में रुचि
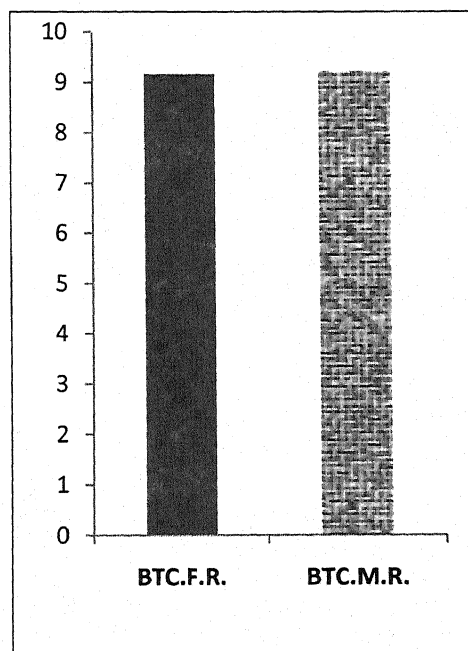
उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R का मान 0.60 है जबकि d.f 98 पर टी–तालिका देखने पर पता चलता है कि 5% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 1.98 तथा 1% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 2.63 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R का मान टी–तालिका में दिये गये दोनों स्तरों पर C.R के मानों से कम है, अतः यहाँ निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) स्वीकृत (Except) की जाती है और कहा जा सकता है कि ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं एवं ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों के 'शिक्षण में रुचि' में कोई अन्तर नहीं है।

****

अध्याय-षाष्टम्

(निष्कर्ष एवं सुझाव)

6.1. शोध से प्राप्त निष्कर्ष :–

पंचम अध्याय में परीक्षणों के प्रशासन से प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण किया गया है। इस विश्लेषण के आधार पर शोध के उद्देश्यों एवं परिकल्पनाओं से सम्बन्धित जो परिणाम प्राप्त हुऐ हैं उनका विवेचन इस अध्याय में किया जा रहा है। प्रस्तुत शोध में कुल 15 उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं। जिनकी पूर्ति के लिए परिकल्पनाओं का निर्माण कर उनका परीक्षण किया गया है। इस शोध में अध्ययन हेतु कुल 57 शून्य परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है। जिसमें 9 मुख्य तथा 48 सहायक परिकल्पनाएँ हैं, इनमें से 37 परिकल्पनाएँ स्वीकृत एवं 20 परिकल्पनाएँ अस्वीकृत हुई हैं। अध्ययन से जो निष्कर्ष प्राप्त हुऐ हैं उनका विवरण निम्नवत् है –

1. बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष–महिला) के कृत्य–संतोष का माध्य 22.31 है (सारिणी 5.1), टेस्ट मैनुअल के आधार पर हम कह सकते हैं कि बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष–महिला) का कृत्य–संतोष बहुत अच्छा है।

2. बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष–महिला) के समायोजन का माध्य 356.10 है (सारिणी 5.1), टेस्ट मैनुअल के आधार पर हम कह सकते हैं कि बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष–महिला) का समायोजन निम्न स्तर का है।

3. बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष–महिला) की शिक्षण में रुचि का माध्य 10.75 है (सारिणी 5.1), टेस्ट मैनुअल के आधार पर हम कह सकते हैं कि बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष–महिला) की शिक्षण में रुचि सामान्य स्तर की है।

4. बी0टी0सी0 प्रशिक्षित पुरूष शिक्षकों का कृत्य–संतोष का माध्य 22.82 है जबकि बी0टी0सी0 प्रशिक्षित महिला शिक्षिकाओं का कृत्य–संतोष का माध्य 21.80 (सारिणी 5.2) है। टेस्ट मैनुअल के आधार पर हम कह सकते हैं कि पुरूष शिक्षकों का कृत्य–संतोष बहुत अच्छा है जबकि महिला शिक्षकों का कृत्य–संतोष अच्छा है। कहने का तात्पर्य यह है कि बी0टी0सी0 प्रशिक्षण प्राप्त पुरुष शिक्षक अपने कार्य से महिला शिक्षकों की तुलना में अधिक संतुष्ट हैं लेकिन संतुष्टि के स्तर पर यह सार्थक अन्तर नहीं है। (सारिणी 5.4)

   यहाँ यह भी स्पष्ट करना उचित है कि बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शहरी एवं ग्रामीण पुरुष शिक्षकों का कृत्य–संतोष लगभग एक समान क्रमशः 22.93 तथा 22.74 (सारिणी 5.3) है जो टेस्ट मैनुअल के अनुसार बहुत अच्छी श्रेणी के हैं। जबकि बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शहरी महिला शिक्षकों तथा ग्रामीण महिला शिक्षकों का कृत्य–संतोष अलग–अलग श्रेणी का है। जहाँ शहरी शिक्षिकाओं के कृत्य–संतोष का माध्य 22.34 (सारिणी 5.3) है जो बहुत अच्छी श्रेणी के अन्तर्गत आता है जबकि ग्रामीण शिक्षिकाओं के कृत्य–संतोष का माध्य 21.26 (सारिणी 5.3) है जोकि अच्छी श्रेणी के

निकट है। अतः कह सकते है कि कार्यस्थल की प्रकृति का प्रभाव शिक्षकों के कृत्य–संतोष पर तो नहीं पड़ता लेकिन शिक्षिकाओं के कृत्य–संतोष पर स्पष्ट परिलक्षित हो रहा है। इसका कारण महिलाओं की शारीरिक क्षमता, उनकी समाज में स्थिति तथा भारतीय समाज में महिलाओं की सुरक्षा, यातायात व्यवस्था की कमी इत्यादि हो सकतीं है।

इसी प्रकार बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शहरी शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के कृत्य–संतोष लगभग एक समान क्रमशः 22.93 तथा 22.34 (सारिणी 5.3) है जो टेस्ट मैनुअल के अनुसार बहुत अच्छी श्रेणी के हैं तथा परिकल्पना क्रमांक 1(अ) के परीक्षण से स्पष्ट है कि इनके मध्य सार्थक अन्तर नहीं है (सारिणी 5.5)। ग्रामीण बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं का कृत्य–संतोष अलग–अलग श्रेणी का है। जहाँ ग्रामीण शिक्षकों के कृत्य–संतोष का माध्य 22.74 है जो बहुत अच्छी श्रेणी के अन्तर्गत आता है वहीं ग्रामीण शिक्षिकाओं के कृत्य–संतोष का माध्य 21.26 है जोकि अच्छी श्रेणी के निकट है लेकिन परिकल्पना क्रमांक 1(ब) के परीक्षण से स्पष्ट है कि इनके मध्य यह अन्तर सार्थक नहीं है (सारिणी 5.6)। अतः कह सकते है कि शिक्षकों के कृत्य–संतोष पर शहर की सुविधओं (परिवेश) के कारण लिंग का प्रभाव तो नहीं पड़ता लेकिन थोड़ा–बहुत ग्रामीण असुविधाओं (परिवेश) के कारण लिंग का प्रभाव परिलक्षित हो रहा है।

5. बी0टी0सी0 प्रशिक्षित पुरूष शिक्षकों का समायोजन का माध्य 375.89 है जबकि बी0टी0सी0 प्रशिक्षित महिला शिक्षिकाओं का समायोजन का माध्य 337.30 है (सारिणी 5.2)। टेस्ट मैनुअल के आधार पर हम कह सकते हैं कि पुरूष शिक्षकों का समायोजन सामान्य स्तर का है जबकि महिला शिक्षकों का समायोजन निम्न स्तर का है। कहने का तात्पर्य यह है कि बी0टी0सी0 प्रशिक्षण प्राप्त पुरुष शिक्षक अपने कार्य से महिला शिक्षकों की तुलना में अधिक समायोजित हैं और इनके मध्य समायोजन में अन्तर सार्थक भी है। (परिकल्पना क्रमांक – 2, सारिणी 5.7)

यहाँ यह भी स्पष्ट करना उचित है कि बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शहरी एवं ग्रामीण पुरूष शिक्षकों का समायोजन लगभग एक समान क्रमशः 370.50 तथा 379.80 है (सारिणी 5.3)। जो टेस्ट मैनुअल के अनुसार सामान्य श्रेणी के हैं। जबकि बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शहरी महिला शिक्षकों तथा ग्रामीण महिला शिक्षकों का समायोजन पूर्णतया एक समान क्रमशः 337.30 तथा 337.30 है (सारिणी 5.3)। अतः कह सकते है कि कार्यस्थल की प्रकृति का प्रभाव बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक–शिक्षिकाओं के समायोजन पर नहीं पड़ता है।

इसी प्रकार बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शहरी शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के समायोजन में अन्तर है, जोकि सारणी क्रमांक – 5.3 में उल्लेखित क्रमशः 370.50 तथा 337.30 है। जहाँ टेस्ट मैनुअल के अनुसार शहरी शिक्षकों का समायोजन सामान्य स्तर का है, वहीं शहरी शिक्षिकाओं का समायोजन निम्न स्तर का है। परिकल्पना क्रमांक 2(अ) के परीक्षण से स्पष्ट है कि इनके मध्य सार्थक अन्तर है (सारिणी 5.8)। अतः कहा जा सकता है कि शहरी क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों

का समायोजन शिक्षिकाओं से अच्छा है। बी0टी0सी0 प्रशिक्षित ग्रामीण शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के समायोजन में भी अन्तर है जोकि सारणी क्रमांक – 5.3 में उल्लेखित क्रमशः 379.80 तथा 337.30 है। जहाँ टेस्ट मैनुअल के अनुसार ग्रामीण शिक्षकों का समायोजन सामान्य स्तर का है वहीं शहरी शिक्षिकाओं का समायोजन निम्न स्तर का है। परिकल्पना क्रमांक 2(ब) के परीक्षण से स्पष्ट है कि इनके मध्य भी सार्थक अन्तर है (सारिणी 5.9)। अतः कहा जा सकता है कि ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों का समायोजन शिक्षिकाओं से अच्छा है। जिससे यह प्रतीत हो रहा है कि शिक्षकों के समायोजन पर कार्यस्थल की प्रकृति का प्रभाव तो नहीं पड़ता लेकिन लिंग का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित हो रहा है।

6. बी0टी0सी0 प्रशिक्षित पुरूष शिक्षकों की शिक्षण में रुचि का माध्य 11.26 है जबकि बी0टी0सी0 प्रशिक्षित महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण में रुचि का माध्य 10.24 है (सारिणी 5.2)। टेस्ट मैनुअल के आधार पर हम कह सकते हैं कि पुरूष शिक्षकों की शिक्षण में रुचि सामान्य से अच्छी है जबकि महिला शिक्षकों की शिक्षण में रुचि का स्तर सामान्य है। कहने का तात्पर्य यह है कि बी0टी0सी0 प्रशिक्षण प्राप्त पुरुष शिक्षक अपने शिक्षण कार्य में महिला शिक्षकों की तुलना में अधिक रुचि रखते हैं परन्तु परिकल्पना क्रमांक – 3 के परीक्षण के आधार पर इनकी शिक्षण में रुचि में सार्थक अन्तर नहीं है (सारिणी 5.10)।

यहाँ यह भी स्पष्ट करना उचित है कि बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शहरी एवं ग्रामीण पुरूष शिक्षकों की शिक्षण में रुचि लगभग एक समान क्रमशः 11.00 तथा 11.45 है (सारिणी 5.3), जो टेस्ट मैनुअल के अनुसार क्रमशः सामान्य और सामान्य से अच्छी श्रेणी के हैं। जबकि बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शहरी महिला शिक्षकों तथा ग्रामीण महिला शिक्षकों की शिक्षण में रुचि अलग–अलग श्रेणी की है। जहाँ शहरी शिक्षिकाओं की शिक्षण में रुचि का माध्य 11.32 है जो सामान्य से अच्छी श्रेणी के अन्तर्गत आता है जबकि ग्रामीण शिक्षिकाओं की शिक्षण में रुचि का माध्य 9.16 है जोकि सामान्य श्रेणी का है। उपरोक्त विवेचन में जहाँ शहरी शिक्षकों की शिक्षण में रुचि की अपेक्षा ग्रामीण शिक्षकों की शिक्षण में रुचि अधिक है वहीं इसके विपरीत शहरी शिक्षिकाओं की शिक्षण में रुचि की अपेक्षा ग्रामीण शिक्षिकाओं की शिक्षण में रुचि कम है। इसका कारण शहरी जीवन की चकाचौंध से पुरुष शिक्षक प्रभावित होकर शिक्षण की ओर कम रुचि रखते हो सकते हैं वहीं ग्रामीण शिक्षक अपने कार्य में अधिक रुचि लेते हो सकते हैं। इसी प्रकार वें महिला शिक्षिकाऐं जो ग्रामीण क्षेत्रों में पढ़ा रहीं हों, उनको शहरों से आने–जाने में समय अधिक लगता हो या आने–जाने की परेशानी हो, यातायात के साधनों की कमी हो या ग्रामीण इलाकों में उन्हें अच्छा न लगता हो, इसलिऐ शिक्षण में कम रुचि रखती हों।

इसी प्रकार बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शहरी शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की शिक्षण में रुचि लगभग एक समान क्रमशः 11.00 तथा 11.32 है (सारिणी 5.3), जो टेस्ट मैनुअल के अनुसार

क्रमशः सामान्य और सामान्य से अच्छी श्रेणी के हैं तथा परिकल्पना क्रमांक 3(अ) के परीक्षण से स्पष्ट है कि इनके मध्य सार्थक अन्तर नहीं है। जबकि ग्रामीण बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की शिक्षण में रुचि अलग–अलग श्रेणी की है। जहाँ ग्रामीण शिक्षकों की शिक्षण में रुचि का माध्य 11.45 है जो सामान्य से अच्छी श्रेणी के अन्तर्गत आता है, वहीं ग्रामीण शिक्षिकाओं की शिक्षण में रुचि का माध्य 9.16 है जोकि सामान्य श्रेणी का है और परिकल्पना क्रमांक 3(ब) के परीक्षण से स्पष्ट है कि इनके मध्य का अन्तर सार्थक है। अतः कह सकते है कि शिक्षकों की शिक्षण में रुचि पर कार्यस्थल (परिवेश) का प्रभाव नहीं पड़ता लेकिन शिक्षिकाओं की शिक्षण में रुचि पर कार्यस्थल का प्रभाव पड़ता है।

7. विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष–महिला) के कृत्य–संतोष का माध्य 21.38 है (सारिणी 5.1)। टेस्ट मैनुअल के आधार पर हम कह सकते हैं कि विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष–महिला) का कृत्य–संतोष अच्छा है।

8. विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष–महिला) के समायोजन का माध्य 330.60 है (सारिणी 5.1)। टेस्ट मैनुअल के आधार पर हम कह सकते हैं कि विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष–महिला) का समायोजन निम्न स्तर का है।

9. विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष–महिला) की शिक्षण में रुचि का माध्य 9.20 है (सारिणी 5.1)। टेस्ट मैनुअल के आधार पर हम कह सकते हैं कि विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष–महिला) की शिक्षण में रुचि सामान्य स्तर की है।

10. विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित पुरूष शिक्षकों का कृत्य–संतोष का माध्य 21.47 है जबकि विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित महिला शिक्षिकाओं का कृत्य–संतोष का माध्य 21.29 है (सारिणी 5.2)। टेस्ट मैनुअल के आधार पर हम कह सकते हैं कि पुरूष एवं महिला शिक्षकों का कृत्य–संतोष अच्छा है। कहने का तात्पर्य यह है कि विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षण प्राप्त पुरुष एवं महिला शिक्षक अपने कार्य से संतुष्ट हैं और इनके मध्य कृत्य–संतोष में सार्थक अन्तर नहीं है (परिकल्पना क्रमांक – 4, सारिणी 5.13)।

परन्तु यहाँ यह भी स्पष्ट करना उचित है कि विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शहरी एवं ग्रामीण पुरूष शिक्षकों का कृत्य–संतोष एक समान नहीं है। इनका मान क्रमशः 20.54 तथा 22.40 है (सारिणी 5.3)। टेस्ट मैनुअल के अनुसार शहरी पुरूष शिक्षकों का कृत्य–संतोष अच्छी श्रेणी का है जबकि ग्रामीण पुरूष शिक्षिकों का कृत्य–संतोष बहुत अच्छी श्रेणी का है। इसी प्रकार विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शहरी महिला शिक्षकों तथा ग्रामीण महिला शिक्षकों का कृत्य–संतोष भी अलग–अलग श्रेणी का है। जहाँ शहरी शिक्षिकाओं के कृत्य–संतोष का माध्य 20.21 है जो अच्छी श्रेणी के अन्तर्गत आता है जबकि ग्रामीण शिक्षिकाओं के कृत्य–संतोष का माध्य 22.14 है जोकि

बहुत अच्छी श्रेणी के अन्तर्गत है। अतः कह सकते है कि कार्यस्थल की प्रकृति का प्रभाव विशिष्ट बी0टी0सी0 शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के कृत्य–संतोष पर स्पष्ट परिलक्षित हो रहा है। ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत शिक्षक–शिक्षिकाओं की तुलना में शहरी क्षेत्र में कार्यरत शिक्षक–शिक्षिकाओं के कृत्य–संतोष का स्तर कम होने के प्रमुख कारणों में शहरी जीवन शैली अति भौतिकवादी होने के कारण शिक्षक–शिक्षिकाओं की महत्वाकाँक्षा में निरन्तर वृद्धि, शहरी व औद्योगिक प्रदूषण, महँगाई, खर्चों की अधिकता, गाँवों में शिक्षकों का अधिक सम्मान आदि हो सकते हैं।

विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शहरी शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के कृत्य–संतोष लगभग एक समान क्रमशः 20.54 तथा 20.21 है (सारिणी 5.3), जो टेस्ट मैनुअल के अनुसार अच्छी श्रेणी के हैं तथा परिकल्पना क्रमांक 4(अ) के परीक्षण से स्पष्ट है कि इनके मध्य सार्थक अन्तर नहीं है (सारिणी 5.14)। इसी प्रकार विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित ग्रामीण शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के कृत्य–संतोष का भी स्तर लगभग एक समान क्रमशः 22.40 तथा 22.14 है (सारिणी 5.3), जो टेस्ट मैनुअल के अनुसार बहुत अच्छी श्रेणी के हैं तथा परिकल्पना क्रमांक से 4(ब) के परीक्षण से स्पष्ट है कि इनके मध्य सार्थक अन्तर नहीं है (सारिणी 5.15)। अतः कह सकते हैं कि विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के कृत्य–संतोष पर लिंग का प्रभाव तो नहीं पड़ता लेकिन कार्यस्थल की प्रकृति का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित हो रहा है। क्योंकि ग्रामीण महिला एवं पुरुष शिक्षकों का कृत्य–संतोष शहरी की तुलना में अधिक है।

11. विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित पुरूष शिक्षकों का समायोजन का माध्य 331.10 है तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित महिला शिक्षिकाओं का समायोजन का माध्य 330.11 है (सारिणी 5.2)। टेस्ट मैनुअल के आधार पर हम कह सकते हैं कि पुरूष एवं महिला दोनों वर्ग के शिक्षकों का समायोजन निम्न स्तर का है। कहने का तात्पर्य यह है कि विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षण प्राप्त पुरुष एवं महिला शिक्षकों का समायोजन एक जैसा हैं तथा परिकल्पना क्रमांक – 5 के परीक्षण के आधार पर इनके मध्य सार्थक अन्तर नहीं है (सारिणी 5.16)।

यहाँ यह भी स्पष्ट करना उचित है कि विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शहरी एवं ग्रामीण पुरूष शिक्षकों का समायोजन लगभग एक समान क्रमशः 305.30 तथा 356.90 है (सारिणी 5.3), जो टेस्ट मैनुअल के अनुसार निम्न श्रेणी के हैं। विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शहरी महिला शिक्षकों तथा ग्रामीण महिला शिक्षकों का समायोजन भी लगभग एक समान क्रमशः 314.60 तथा 342.30 है (सारिणी 5.3)। अतः कह सकते है कि कार्यस्थल की प्रकृति का प्रभाव विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक–शिक्षिकाओं के समायोजन पर नहीं पड़ता है।

इसी प्रकार विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शहरी शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं का समायोजन लगभग एक समान क्रमशः 305.30 तथा 314.60 है (सारिणी 5.3)। टेस्ट मैनुअल के अनुसार शहरी शिक्षकों एवं शहरी शिक्षिकाओं दोनों का समायोजन निम्न स्तर का है तथा परिकल्पना क्रमांक

5(अ) के परीक्षण से स्पष्ट है कि इनके मध्य अन्तर सार्थक नहीं है (सारिणी 5.17)। अतः कहा जा सकता है कि शहरी क्षेत्र में कार्यरत विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं का समायोजन एक जैसा है। विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित ग्रामीण शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं का समायोजन भी लगभग एक समान क्रमशः 356.90 तथा 342.30 है (सारिणी 5.3)। टेस्ट मैनुअल के अनुसार ग्रामीण शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं का समायोजन भी निम्न स्तर का है। परिकल्पना क्रमांक 5(ब) के परीक्षण से स्पष्ट है कि इनके मध्य अन्तर सार्थक नहीं है (सारिणी 5.18)। अतः कहा जा सकता है कि ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं का समायोजन एक जैसा है। परन्तु शहरी क्षेत्र में कार्यरत शिक्षक–शिक्षिकाओं का समायोजन ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत शिक्षक–शिक्षिकाओं के समायोजन से कम है। जिसके आधार पर कहा जा सकता है कि विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं में क्षेत्र की प्रकृति का प्रभाव पड़ता है।

12. विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित पुरूष शिक्षकों की शिक्षण में रुचि का माध्य 9.46 है जबकि विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण में रुचि का माध्य 8.95 है (सारिणी 5.2)। टेस्ट मैनुअल के आधार पर हम कह सकते हैं कि पुरूष शिक्षकों की शिक्षण में रुचि का स्तर सामान्य है जबकि महिला शिक्षकों की शिक्षण में रुचि का स्तर सामान्य से कुछ कम है। कहने का तात्पर्य यह है कि विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षण प्राप्त पुरुष शिक्षक अपने शिक्षण कार्य में महिला शिक्षकों की तुलना में अधिक रुचि रखते हैं परन्तु परिकल्पना क्रमांक – 6 के अनुसार इनकी शिक्षण में रुचि में सार्थक अन्तर नहीं है (सारिणी 5.19)।

यहाँ यह भी स्पष्ट करना उचित है कि विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शहरी एवं ग्रामीण पुरूष शिक्षकों की शिक्षण में रुचि लगभग एक समान क्रमशः 9.22 तथा 9.70 है (सारिणी 5.3), जो टेस्ट मैनुअल के अनुसार सामान्य श्रेणी के हैं। जबकि विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शहरी महिला शिक्षकों तथा ग्रामीण महिला शिक्षकों की शिक्षण में रुचि अलग–अलग श्रेणी की है जहाँ शहरी शिक्षिकाओं की शिक्षण में रुचि का माध्य 8.16 है जो निम्न श्रेणी के अन्तर्गत आता है जबकि ग्रामीण शिक्षिकाओं की शिक्षण में रुचि का माध्य 9.57 है जोकि सामान्य श्रेणी का है। उपरोक्त विवेचन में स्पष्ट है कि शहरी क्षेत्र में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण में रुचि की अपेक्षा ग्रामीण शिक्षकों की शिक्षण में रुचि अधिक है, इसी प्रकार शहरी शिक्षिकाओं की शिक्षण में रुचि की अपेक्षा ग्रामीण शिक्षिकाओं की शिक्षण में रुचि अधिक है। अतः कह सकते है कि कार्यस्थल की प्रकृति का प्रभाव विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक–शिक्षिकाओं की शिक्षण में रुचि पर पड़ता है।

इसी प्रकार विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शहरी शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की शिक्षण में रुचि का स्तर अलग–अलग क्रमशः 9.22 तथा 8.16 है (सारिणी 5.3), जो टेस्ट मैनुअल के अनुसार क्रमशः सामान्य और सामान्य से कम श्रेणी के हैं लेकिन परिकल्पना क्रमांक 6(अ) के परीक्षण से स्पष्ट है कि इनके मध्य यह अन्तर सार्थक नहीं है (सारिणी 5.20)। विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित

ग्रामीण शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की शिक्षण में रुचि लगभग एक समान क्रमशः 9.70 तथा 9.57 है (सारिणी 5.3)। टेस्ट मैनुअल के अनुसार ग्रामीण शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की शिक्षण में रुचि का स्तर सामान्य श्रेणी का हैं परिकल्पना क्रमांक 6(ब) के परीक्षण से स्पष्ट है कि इनके मध्य अन्तर सार्थक नहीं है (सारिणी 5.21)। अतः कह सकते है कि शिक्षकों की शिक्षण में रुचि पर कार्यस्थल (परिवेश) का प्रभाव पड़ता है जिसका कारण शहरी क्षेत्रों में पब्लिक स्कूल होने के कारण परिषदीय स्कूलों के प्रति समाज की हेय दृष्टि, औसत व औसत से कम बुद्धि लब्धि के छात्र–छात्रा, तुलना में संसाधनों की कमी, साज–सज्जा का अभाव आदि हो सकते है।

13. बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष–महिला) के कृत्य–संतोष का माध्य 22.31 है, जबकि विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष–महिला) के कृत्य–संतोष का माध्य 21.38 है (सारिणी 5.1)। टेस्ट मैनुअल के आधार पर हम कह सकते हैं कि बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष–महिला) का कृत्य–संतोष बहुत अच्छा है जबकि विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष–महिला) का कृत्य–संतोष अच्छा है। कहने का तात्पर्य यह है कि बी0टी0सी0 प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षक (पुरुष–महिला) अपने कार्य से विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष–महिला) की तुलना में अधिक संतुष्ट हैं लेकिन परिकल्पना क्रमांक – 7 के परीक्षण के आधार पर कहा जा सकता है कि इनके मध्य कृत्य–संतोष में यह अन्तर सार्थक नहीं है।

यहाँ यह भी स्पष्ट करना उचित है कि बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित पुरूष शिक्षकों का कृत्य–संतोष अलग–अलग क्रमशः 22.82 तथा 21.47 है (सारिणी 5.2), जो टेस्ट मैनुअल के अनुसार क्रमशः बहुत अच्छी और अच्छी श्रेणी के हैं। परिकल्पना क्रमांक – 7(अ) के परीक्षण के आधार पर कहा जा सकता है कि इनके मध्य कृत्य–संतोष में यह अन्तर सार्थक है। इसी प्रकार शहरी क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित पुरूष शिक्षकों के कृत्य–संतोष में परिकल्पना क्रमांक – 7(अ.i) के परीक्षण के आधार पर सार्थक अन्तर है परन्तु ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित पुरूष शिक्षकों के कृत्य–संतोष में परिकल्पना क्रमांक – 7(अ.ii) के परीक्षण के आधार पर सार्थक अन्तर नहीं है।

बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित महिला शिक्षकों का कृत्य–संतोष अलग–अलग क्रमशः 21.80 तथा 21.29 है (सारिणी 5.2), जो टेस्ट मैनुअल के अनुसार क्रमशः बहुत अच्छी और अच्छी श्रेणी के हैं परन्तु परिकल्पना क्रमांक – 7(ब) के परीक्षण के आधार पर इनके मध्य कृत्य–संतोष में सार्थक अन्तर नहीं है। इसी प्रकार शहरी क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित महिला शिक्षकों के कृत्य–संतोष में परिकल्पना क्रमांक – 7(ब.i) के परीक्षण के आधार पर सार्थक अन्तर है लेकिन ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित पुरूष शिक्षकों के कृत्य–संतोष में परिकल्पना क्रमांक – 7(ब.ii) के परीक्षण के आधार पर सार्थक अन्तर नहीं है।

बी0टी0सी0 प्रशिक्षित पुरूष शिक्षकों एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित महिला शिक्षकों का कृत्य–संतोष अलग–अलग क्रमशः 22.82 तथा 21.29 है (सारिणी 5.2), जो टेस्ट मैनुअल के अनुसार क्रमशः बहुत अच्छी और अच्छी श्रेणी के हैं परिकल्पना क्रमांक – 7(स) के परीक्षण के आधार पर इनके मध्य कृत्य–संतोष में सार्थक अन्तर है। इसी प्रकार शहरी क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित पुरूष शिक्षकों एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित महिला शिक्षकों के कृत्य–संतोष में परिकल्पना क्रमांक – 7(स.i) के परीक्षण के आधार पर सार्थक अन्तर है परन्तु ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित पुरूष शिक्षकों एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित महिला शिक्षकों के कृत्य–संतोष में परिकल्पना क्रमांक – 7(स.ii) के परीक्षण के आधार पर सार्थक अन्तर नहीं है।

बी0टी0सी0 प्रशिक्षित महिला शिक्षकों एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित पुरूष शिक्षकों का कृत्य–संतोष अलग–अलग क्रमशः 21.80 तथा 21.47 है (सारिणी 5.2), जो टेस्ट मैनुअल के अनुसार क्रमशः बहुत अच्छी और अच्छी श्रेणी के हैं, परन्तु परिकल्पना क्रमांक – 7(द) के परीक्षण के आधार पर इनके मध्य कृत्य–संतोष में सार्थक अन्तर नहीं है। इसी प्रकार शहरी क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित महिला शिक्षकों एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित पुरुष शिक्षकों के कृत्य–संतोष में परिकल्पना क्रमांक – 7(द.i) के परीक्षण के आधार पर सार्थक अन्तर नहीं है, और ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित महिला शिक्षकों एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित पुरुष शिक्षकों के कृत्य–संतोष में भी परिकल्पना क्रमांक – 7(द.ii) के परीक्षण के आधार पर सार्थक अन्तर नहीं है।

14. बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष–महिला) के समायोजन का माध्य 356.10 है, जबकि विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष–महिला) के समायोजन का माध्य 330.60 है (सारिणी 5.1)। टेस्ट मैनुअल के आधार पर हम कह सकते हैं कि बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष–महिला) एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष–महिला) दोनों का समायोजन निम्न स्तर का है। हालांकि बी0टी0सी0 प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षक (पुरुष–महिला) अपने कार्य में विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष–महिला) की तुलना में अधिक समायोजित हैं तथा परिकल्पना क्रमांक – 8 के परीक्षण के आधार पर कहा जा सकता है कि इनके मध्य समायोजन में सार्थक अन्तर है।

यहाँ यह भी स्पष्ट करना उचित है कि बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित पुरूष शिक्षकों का समायोजन अलग–अलग क्रमशः 375.89 तथा 331.10 है (सारिणी 5.2), जो टेस्ट मैनुअल के अनुसार क्रमशः सामान्य और निम्न श्रेणी के हैं। परिकल्पना क्रमांक – 8(अ) के परीक्षण के आधार पर कहा जा सकता है कि इनके मध्य समायोजन में यह अन्तर सार्थक है। इसी प्रकार शहरी क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित पुरूष शिक्षकों के समायोजन में भी परिकल्पना क्रमांक – 8(अ.i) के परीक्षण के आधार पर सार्थक अन्तर है परन्तु ग्रामीण क्षेत्र

में कार्यरत बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित पुरूष शिक्षकों के समायोजन में परिकल्पना क्रमांक – 8(अ.ii) के परीक्षण के आधार पर सार्थक अन्तर नहीं है।

बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित महिला शिक्षकों का समायोजन लगभग एक समान क्रमशः 337.30 तथा 330.11 है (सारिणी 5.2), जो टेस्ट मैनुअल के अनुसार दोनों ही निम्न श्रेणी के हैं, साथ ही परिकल्पना क्रमांक – 8(ब) के परीक्षण के आधार पर इनके मध्य समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं है। इसी प्रकार शहरी क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित महिला शिक्षकों के समायोजन में भी परिकल्पना क्रमांक – 8(ब.i) के परीक्षण के आधार पर सार्थक अन्तर नहीं है तथा ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित महिला शिक्षकों के समायोजन में भी परिकल्पना क्रमांक – 8(ब.ii) के परीक्षण के आधार पर सार्थक अन्तर नहीं है।

बी0टी0सी0 प्रशिक्षित पुरूष शिक्षकों एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित महिला शिक्षकों का समायोजन अलग–अलग क्रमशः 375.89 तथा 330.11 है (सारिणी 5.2), जो टेस्ट मैनुअल के अनुसार क्रमशः सामान्य और निम्न श्रेणी के हैं। परिकल्पना क्रमांक – 8(स) के परीक्षण के आधार पर कहा जा सकता है कि इनके मध्य समायोजन में सार्थक अन्तर है। इसी प्रकार शहरी क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित पुरूष शिक्षकों एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित महिला शिक्षकों के समायोजन में भी परिकल्पना क्रमांक – 8(स.i) के परीक्षण के आधार पर सार्थक अन्तर है तथा ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित पुरूष शिक्षकों एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित महिला शिक्षकों के समायोजन में भी परिकल्पना क्रमांक – 8(स.ii) के परीक्षण के आधार पर सार्थक अन्तर है।

बी0टी0सी0 प्रशिक्षित महिला शिक्षकों एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित पुरूष शिक्षकों का समायोजन लगभग एक समान क्रमशः 337.30 तथा 331.10 है (सारिणी 5.2), जो टेस्ट मैनुअल के अनुसार दोनों ही निम्न श्रेणी के हैं परन्तु परिकल्पना क्रमांक – 8(द) के परीक्षण के आधार पर कहा जा सकता है कि इनके मध्य समायोजन में यह अन्तर सार्थक नहीं है। जबकि शहरी क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित महिला शिक्षकों एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित पुरुष शिक्षकों के समायोजन में परिकल्पना क्रमांक – 8(द.i) के परीक्षण के आधार पर सार्थक अन्तर है, परन्तु ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित महिला शिक्षकों एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित पुरुष शिक्षकों के समायोजन में परिकल्पना क्रमांक – 8(द.ii) के परीक्षण के आधार पर सार्थक अन्तर नहीं है।

15. बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष–महिला) की शिक्षण में रुचि का माध्य 10.75 है, जबकि विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष–महिला) के शिक्षण में रुचि का माध्य 9.20 है (सारिणी 5.1), टेस्ट मैनुअल के आधार पर हम कह सकते हैं कि बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों

(पुरुष–महिला) एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष–महिला) की शिक्षण में रुचि सामान्य स्तर की है। हालांकि बी0टी0सी0 प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षक (पुरुष–महिला) अपने शिक्षण कार्य में विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष–महिला) की तुलना में अधिक रुचि रखते हैं तथा परिकल्पना क्रमांक – 9 के परीक्षण के आधार पर कहा जा सकता है कि इनके मध्य शिक्षण में रुचि में यह अन्तर सार्थक है।

यहाँ यह भी स्पष्ट करना उचित है कि बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित पुरूष शिक्षकों की शिक्षण में रुचि अलग–अलग क्रमशः 11.26 तथा 9.46 है (सारिणी 5.2), जो टेस्ट मैनुअल के अनुसार क्रमशः सामान्य से अच्छी और सामान्य श्रेणी के अन्तर्गत आते हैं। परिकल्पना क्रमांक – 9(अ) के परीक्षण के आधार पर कह सकते हैं कि इनके मध्य शिक्षण में रुचि में सार्थक अन्तर है। जबकि शहरी क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित पुरूष शिक्षकों की शिक्षण में रुचि में परिकल्पना क्रमांक – 9(अ.i) के परीक्षण के आधार पर सार्थक अन्तर नहीं है इसी प्रकार ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित पुरूष शिक्षकों की शिक्षण में रुचि में भी परिकल्पना क्रमांक – 9(अ.ii) के परीक्षण के आधार पर सार्थक अन्तर नहीं है।

बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित महिला शिक्षकों की शिक्षण में रुचि अलग–अलग क्रमशः 10.24 तथा 8.95 है (सारिणी 5.2), जो टेस्ट मैनुअल के अनुसार क्रमशः सामान्य और सामान्य से कम श्रेणी के हैं। परिकल्पना क्रमांक – 9(ब) के परीक्षण के आधार पर कह सकते हैं कि इनके मध्य शिक्षण में रुचि में सार्थक अन्तर नहीं है, जबकि शहरी क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित महिला शिक्षकों की शिक्षण में रुचि में परिकल्पना क्रमांक – 9(ब.i) के परीक्षण के आधार पर सार्थक अन्तर है लेकिन ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित महिला शिक्षकों की शिक्षण में रुचि में परिकल्पना क्रमांक – 9(ब.ii) के परीक्षण के आधार पर कह सकते है कि सार्थक अन्तर नहीं है।

बी0टी0सी0 प्रशिक्षित पुरूष शिक्षकों एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित महिला शिक्षकों की शिक्षण में रुचि अलग–अलग क्रमशः 11.26 तथा 8.95 है (सारिणी 5.2), जो टेस्ट मैनुअल के अनुसार क्रमशः सामान्य से अधिक और सामान्य से कम श्रेणी के हैं। परिकल्पना क्रमांक – 9(स) के परीक्षण के आधार पर कहा जा सकता है कि इनके मध्य शिक्षण में रुचि में सार्थक अन्तर है। इसी प्रकार शहरी क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित पुरूष शिक्षकों एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित महिला शिक्षकों की शिक्षण में रुचि में परिकल्पना क्रमांक – 9(स.i) के परीक्षण के आधार पर सार्थक अन्तर है परन्तु ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित पुरूष शिक्षकों एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित महिला शिक्षकों की शिक्षण में रुचि में परिकल्पना क्रमांक – 9(स.ii) के परीक्षण के आधार पर की सकते है कि सार्थक अन्तर नहीं है।

बी0टी0सी0 प्रशिक्षित महिला शिक्षकों एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित पुरूष शिक्षकों की शिक्षण में रुचि अलग–अलग क्रमशः 10.24 तथा 9.46 है (सारिणी 5.2), जो टेस्ट मैनुअल के अनुसार सामान्य श्रेणी के हैं। परिकल्पना क्रमांक – 9(द) के परीक्षण के आधार पर कह सकते है कि इनके मध्य शिक्षण में रुचि में सार्थक अन्तर नहीं है। जबकि शहरी क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित महिला शिक्षकों एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित पुरुष शिक्षकों की शिक्षण में रुचि में परिकल्पना क्रमांक – 9(द.i) के परीक्षण के आधार पर सार्थक अन्तर है, लेकिन ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित महिला शिक्षकों एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित पुरुष शिक्षकों की शिक्षण में रुचि में परिकल्पना क्रमांक – 9(द.ii) के परीक्षण के आधार पर सार्थक अन्तर नहीं है।

16. बी0टी0सी0 ग्रामीण महिला शिक्षकों, विशिष्ट बी0टी0सी0 ग्रामीण पुरूष शिक्षकों एवं शहरी महिला शिक्षकों का कृत्य–संतोष अच्छा तथा शेष सभी वर्ग के शिक्षकों का कृत्य–संतोष बहुत अच्छा है।

17. बी0टी0सी0 शहरी एवं बी0टी0सी0 ग्रामीण पुरूष शिक्षकों का समायोजन सामान्य स्तर का है शेष सभी वर्ग के शिक्षकों का समायोजन निम्न स्तर का है।

18. विशिष्ट बी0टी0सी0 शहरी महिला शिक्षकों की शिक्षण में रुचि निम्न स्तर की, बी0टी0सी0 ग्रामीण पुरूष शिक्षकों एवं बी0टी0सी0 शहरी महिला शिक्षकों की शिक्षण में रुचि सामान्य से अच्छी स्तर की तथा शेष सभी वर्ग के शिक्षकों की शिक्षण में रुचि सामान्य स्तर की है।

6.2. सुझाव :–

सुझावों को दो श्रेणियों में बाँटा जा रहा है –

6.2.1. शोध से सम्बन्धित सुझाव :–

यह शोध कार्य उत्तर प्रदेश के अन्तर्गत आने वाले बुन्देलखण्ड क्षेत्र तक सीमित था जिसे आगामी शोधों में अन्य क्षेत्रों अथवा प्रदेश स्तर पर किया जा सकता है।

वर्तमान शोध में शिक्षकों के प्रमोशन व अनुभव आदि का ध्यान नहीं रखा जा सका हैं, जबकि शिक्षकों के प्रमोशन व अनुभव में वृद्धि के साथ उनके विचारों, परिस्थितियों, आय आदि में पर्याप्त परिवर्तन होने की सम्भावना रहती है। अतः प्राथमिक सहायक शिक्षक, प्राथमिक प्रधानाध्यापक, उच्च प्राथमिक सहायक शिक्षक एवं उच्च प्राथमिक प्रधानाध्यापकों पर शोध कार्य किये जाने चाहिए।

वर्तमान शोध में शिक्षकों के विषय का ध्यान नहीं रखा गया जबकि कला, विज्ञान, कृषि अथवा कामर्स का छात्र होने के कारण उनकी विचारधारा, समाज के प्रति शोच, उत्तरदायित्व की भावना,

भौतिकता पूर्ण जीवन में विश्वास/अविश्वास आदि में भेद होता है। अतः कला, विज्ञान, कृषि व कामर्स स्नातक शिक्षकों के आधार पर शोध कार्य किया जा सकता है।

बी0पी0एड0 का प्रशिक्षण खेलकूद, व्यायाम, गेम्स आदि के लिए होता है और इस प्रशिक्षण में सिखाया भी यही जाता है परन्तु उनका चयन विशिष्टि बी0टी0सी0 प्रशिक्षण के द्वारा शिक्षण कार्य के लिए किया गया है और उनसे शिक्षण कार्य ही कराया जाता है। ऐसे में उनका कृत्य–संतोष, समायोजन एवं शिक्षण में रुचि में क्या स्थिति है और प्राथमिक शिक्षा में इसका क्या प्रभाव पड़ रहा है आदि का अध्ययन वर्तमान शोध कार्य में नहीं किया जा सका। अतः आगामी शोध कार्य चयन से पूर्व के प्रशिक्षण के आधार बी0एड0, बी0पी0एड0, सी0पी0एड0, डी0पी0एड0, पर किया जा सकता है।

अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर कहा जा सकता है कि प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों की कृत्य–सन्तुष्टि, समायोजन, एवं शिक्षण में रुचि में पर्याप्त अन्तर है, यद्यपि विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों की कृत्य–सन्तुष्टि, समायोजन, एवं शिक्षण में रुचि का स्तर सामान्य है जबकि बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों की कृत्य–सन्तुष्टि, समायोजन, एवं शिक्षण में रुचि का स्तर उच्च्य है। अतः जब प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण के लिए सरकार वचनबद्ध है तथा इस ओर सार्थक प्रयास भी कर रही है तो इसका अभिप्रायः यह नही होना चाहिये कि केवल शिक्षा का विस्तार हो जाए, बल्कि विस्तार के साथ–साथ शिक्षा की गुणवत्ता की ओर भी पर्याप्त ध्यान दिया जाना चाहिये, और शिक्षा में गुणवत्ता तभी होगी जब शिक्षण कार्य को सम्पादित करने वाले शिक्षक पूर्ण मनोयोग से शिक्षण कार्य सम्पादित करें, जिसके लिए शिक्षकों में अपने व्यवसाय के प्रति रुचि, परिस्थितियों से पूर्ण समायोजन एवं सन्तुष्टि प्राप्त हो तथा विद्यालयों में शिक्षक–छात्र का आदर्श अनुपात बना रहे।

वर्तमान शोध में शिक्षकों के वैवाहिक स्तर को आधार नहीं बनाया गया है जबकि तमाम शोधो से यह निष्कर्ष प्राप्त हुए है कि विवाहित व अविवाहित शिक्षक/शिक्षिकाओं के कृत्य–संतोष एवं समायोजन में अन्तर होता है। ऐसे में बी0टी0सी0 प्रशिक्षित तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों का वैवाहिक स्तर के आधार पर भी कृत्य–संतोष, समायोजन तथा शिक्षण में रुचि का अध्ययन किया जा सकता है।

प्रत्येक व्यक्ति अपने आकांक्षा स्तर के आधार पर अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित करता है और उस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आवश्यक योग्यताओं को अर्जित करने का प्रयास करता है। जो छात्र बी0एड0, बी0पी0एड0, सी0पी0एड0, बी0टी0टी0 इत्यादि पाठ्यक्रमों में प्रवेश लेते है उन सब का आकांक्षा स्तर एक सा नहीं हो सकता है। लेकिन उत्तर प्रदेश सरकार की विशिष्ट बी0टी0सी0 योजना के तहत ये सभी लोग एक स्तर पर शिक्षण कार्य कर रहे है। ऐसे में इन सभी प्रकार के शिक्षक–शिक्षिकाओं का आकांक्षा स्तर ज्ञात करके इन्हें विभिन्न आकांक्षा स्तर के वर्गों में विभाजित

करके फिर उनके कृत्य–संतोष, समायोजन तथा शिक्षण में रुचि का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

आज भारत वर्ष में सांस्कृतिक परिवर्तन का दौर चल रहा है। भूमण्डलीकरण के इस युग में सम्पूर्ण विश्व एक–दूसरे देशों की संस्कृति से प्रभावित हो रहा है। भारत भी इससे अछूता नहीं है। हमारे यहाँ भी सांस्कुतिक द्वन्द चल रहा है। एक ओर प्राचीन भारतीय मूल्यों, आदर्शों को बचाने की बात हो रही है तो वहीं दूसरी ओर भौतिकता की दृढ़ हद पार करते प्रतीत हो रहे विश्व के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने की बात की जा रही है। भारत वर्ष में शिक्षकों को प्राचीन काल से ही बड़ा ही आदर एवं प्रतिष्ठा प्राप्त होती रही है दूसरा कारण उनका जीवन दर्शन, जीवन शैली तथा दिशा देने की सोच रही है। उन्होंने हमेशा भारतीय जनमानस को सद्मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी है। भारतीय समाज आज भी शिक्षक से वही अपेक्षा करता प्रतीत हो रहा है। वहीं शिक्षक, चूँकि प्राचीन युग की परिस्थितियाँ अब नही हैं, आदर्शों में बंधने को अन्दर से तैयार प्रतीत नही हो रहा है उस पर भी भौतिकता का प्रभाव पड़ रहा है ऐसे में शिक्षक वर्ग भी दो वर्गों में बँटा हुआ है एक ओर वे शिक्षक हैं जो अभी भी शिक्षण को सेवा भाव से कर रहे है और दूसरी ओर वे शिक्षक हैं जिनमें भौतिकता का प्रभाव अधिक गहरा पड़ा है और उन्होंने शिक्षण को अन्य व्यवसायों की तरह ही, जहाँ अपनी योग्यता के आधार पर लाभ मिलते है, अपना रखा है। ऐसे में आधुनिकीकरण के आधार पर शिक्षकों को दो वर्गों में विभाजित करके उनके कृत्य–संतोष, समायोजन तथा शिक्षण में रुचि का अध्ययन किया जा सकता है।

6.2.2. <u>भावी अध्ययन हेतु सुझाव</u> :–

प्रस्तुत शोध समस्या से मिलती–जुलती निम्न समस्याओं पर भी शोध कार्य सम्पादित किये जा सकते है –

1. प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत विज्ञान एवं कला शिक्षकों के कृत्य–संतोष, समायोजन एवं शिक्षण में रुचि का तुलनात्मक अध्ययन।

2. प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों के कृत्य–संतोष का उनके समायोजन एवं शिक्षण में रुचि पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन।

3. प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षा मित्रों, बी0टी0सी0 प्रशिक्षित एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों की कृत्य–सन्तुष्टि, समायोजन, शिक्षण में रुचि का तुलनात्मक अध्ययन।

4. प्राथमिकं विद्यालयों में कार्यरत पुरुष शिक्षा मित्रों तथा महिला शिक्षा मित्रों की कृत्य–सन्तुष्टि, समायोजन, शिक्षण में रुचि का तुलनात्मक अध्ययन।

5. प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत स्थाई शिक्षकों तथा शिक्षा मित्रों की कृत्य–सन्तुष्टि, समायोजन एवं शिक्षण में रुचि का तुलनात्मक अध्ययन।

6. प्राथमिक शिक्षा में बढ़ते हुये शिक्षा मित्रों के अनुपात का शिक्षा की गुणवत्ता पर प्रभाव का समीक्षात्मक अध्ययन।

7. प्राथमिक शिक्षा में कार्यरत स्थाई शिक्षकों तथा शिक्षा मित्रों की शिक्षण–कुशलता एवं शिक्षण संलग्नता के संदर्भ में छात्रों के दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन।

8. शिक्षा मित्र, स्थाई पुर्व प्राथमिक शिक्षकों, उच्च प्राथमिक शिक्षकों के मध्य कृत्य–सन्तुष्टि एवं उनके जीवन स्तर का तुलनात्मक अध्ययन।

9. शिक्षा मित्रों की सेवा कालीन प्रशिक्षण की ग्राह्यता एवं उपयोग का समीक्षात्मक अध्ययन।

10. बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों का नवाचार के प्रति दृष्टिकोण, ग्राह्यता एवं व्यावहारिक प्रयोग का समीक्षात्मक अध्ययन।

11. शहरी पृष्ठभूमि एवं ग्रामीण पृष्ठभूमि वाले अध्यापकों पर यातायात के साधनों की उपलब्धता एवं विद्यालय की सड़क मार्ग से दूरी का उनके कृत्य–सन्तोष में पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन।

12. मध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत विज्ञान एवं कला शिक्षकों के कृत्य–संतोष, समायोजन एवं शिक्षण में रुचि का तुलनात्मक अध्ययन।

13. स्वःवित्त पोषित महाविद्यालयों एवं सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के शिक्षकों की कृत्य–सन्तुष्टि, समायोजन, शिक्षण में रुचि का तुलनात्मक अध्ययन।

14. स्वःवित्त पोषित महाविद्यालयों एवं सरकारी महाविद्यालयों के शिक्षकों की कृत्य–सन्तुष्टि, समायोजन, शिक्षण में रुचि का तुलनात्मक अध्ययन।

15. स्वःवित्त पोषित महाविद्यालयों एवं सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के शिक्षक शिक्षा–संकाय के शिक्षकों की कृत्य–सन्तुष्टि, समायोजन, शिक्षण में रुचि का तुलनात्मक अध्ययन।

16. स्वःवित्त पोषित महाविद्यालय के कला, विज्ञान, एवं शिक्षक शिक्षा–संकाय के शिक्षकों की कृत्य–सन्तुष्टि, समायोजन, शिक्षण में रुचि का तुलनात्मक अध्ययन।

17. बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय के संदर्भ में "राजकीय, अनुदानित एवं स्व:वित्त पोषित महाविद्यालय के कला, विज्ञान, एवं शिक्षक शिक्षा–संकाय के शिक्षकों की कृत्य–सन्तुष्टि, समायोजन, शिक्षण में रुचि का तुलनात्मक अध्ययन।

18. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान के प्राध्यापकों का विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षण के प्रति दृष्टिकोंण का अध्ययन।

19. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान के प्राध्यापकों का बी0टी0सी0 प्रशिक्षण, विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षण एवं शिक्षा मित्र प्रशिक्षण के प्रति दृष्टिकोंण का तुलनात्मक अध्ययन।

20. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों में विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों की प्रशिक्षण पूर्व एवं प्रशिक्षण पश्चात योग्यता का तुलनात्मक अध्ययन।

6.3. शोध की उपादेयता :–

प्रस्तुत शोध में परिषद्‌ीय प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों के कृत्य–संतोष, समायोजन तथा शिक्षण में रुचि ज्ञात की गयी है और बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों के कृत्य–संतोष, समायोजन तथा शिक्षण में रुचि की तुलना की गयी है।

अध्ययन के निष्कर्ष बतलाते हैं कि बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों का कृत्य–संतोष बहुत अच्छी श्रेणी का है और विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों का कृत्य–संतोष अच्छी श्रेणी का है।

बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों का समायोजन और विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों का समायोजन निम्न श्रेणी का है। इसी प्रकार बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों की शिक्षण में रुचि भी सामान्य श्रेणी की है।

अध्ययन के निष्कर्ष यह भी बताते है कि बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों के कृत्य–संतोष के मध्यमानों में जो अन्तर है वह सार्थक अन्तर नहीं है।

अतः कहा जा सकता है कि बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों का एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों का कृत्य–संतोष, समायोजन एवं उनकी शिक्षण में रुचि एक समान है।

इन निष्कर्षों से उत्तर–प्रदेश सरकार द्वारा चलायी जा रही विशिष्ट बी0टी0सी0 योजना को समर्थन मिलता है। उत्तर–प्रदेश में जो व्यक्ति बी0एड0, एल0टी0, बी0पी0एड0, सी0पी0एड0, की डिग्रीयाँ लेकर शिक्षित बेरोजगारों की संख्या बढ़ा रहे थे। उन सभी को उत्तर–प्रदेश सरकार द्वारा एक निश्चित प्रक्रिया अपनाकर विशिष्ट बी0टी0सी0 का प्रशिक्षण देकर परिषद्‌ीय प्राथमिक विद्यालयों में

रोगजार उ़पलब्ध कराकर एक तरफ तो शिक्षित बेरोजगारों की संख्या में कमी की गयी और दूसरी तरफ प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षकों के अभाव की प्रतिपूर्ति भी की गयी।

चूँकि बी0एड0, एल0टी0, बी0पी0एड0, सी0पी0एड0 माध्यमिक विद्यालयों में सेवा हेतु अर्हता प्रदान करने वाली डिग्रीयाँ हैं और जब इन डिग्रीयों को प्राप्त कर अभ्यर्थी प्राथमिक विद्यालयों में सेवा के लिए तैयार होता है तो यह प्रश्न स्वाभाविक रूप से उत्पन्न होता है कि क्या वह अपने इस निर्णय से संतुष्ट है ? या असंतुष्ट ? हालांकि इस प्रश्न के उत्तर के लिए अभ्यर्थियों के तमाम क्रिया–कलापों का मूल्यांकन किया जाना चाहिए था लेकिन शोधकर्ता ने अपने शोध को अत्यधिक विस्तृत न करते हुए जिन प्रमुख चरों के मापन के आधार पर इस प्रश्न के उत्तर प्राप्त करने का प्रयास किया है उनसे सरकार की इस योजना को निरंतर जारी रखने की आवश्यकता प्रतीत होती है क्योंकि इस योजना से कुछ बेरोजगारों को रोज़गार और उन बच्चों को शिक्षक उपलब्ध हो रहे हैं जो बच्चे सरकार द्वारा संचालित बी0टी0सी0 प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों से ही शिक्षा पाने के चक्कर में अपने मूल अधिकार से ही वंचित हो सकते हैं क्योंकि सरकार जिस गति से बी0टी0सी0 प्रशिक्षण दे रही है उस गति से परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षकों की ससमय पूर्ति एक कठिन लक्ष्य है।

****

- संदर्भ ग्रन्थ-सूची
- परिशिष्ट

संदर्भ-ग्रन्थ सूची

आस्थाना, विपिन : मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन
आगरा; विनोद पुस्तक मन्दिर, 1985

अग्निहोत्री, रवीन्द्र : आधुनिक भारतीय शिक्षा–समस्याएं और समाधान
जयपुर; राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 1987

अग्निहोत्री, ब्रह्मस्वरूप : सर्वेक्षणों के प्रतिचयन सिद्धान्त
लखनऊ; उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, 1981

अग्रवाल, एस0के0 : शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त
मेरठ; मॉडर्न पब्लिसर्स, 1985

अदावाल, सुबोध एवं उनियाल माधवेन्द्र : भारतीय शिक्षा की समस्यायें तथा प्रवृत्तियाँ
लखनऊ; उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, 1982

ओझा, आर0के0 : औद्योगिक मनोविज्ञान
आगरा; विनोद पुस्तक मन्दिर, 1986

ओड, एल0के0 : शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि
जयपुर; राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 1994

ओड, एल0 के0 : शिक्षा के नूतन आयाम
जयपुर; राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 1990

अयोध्या सिंह : भारत का मुक्ति–संग्राम
दिल्ली; नागरी प्रिंटर्स, 2004

भाई योगेन्द्र जीत : बाल मनोविज्ञान
आगरा; विनोद पुस्तक मन्दिर, 1986

भटनागर, ए0बी0 एवं भटनागर मीनाक्षी व अनुराग : भारत में शैक्षिक प्रणाली का विकास
मेरठ; सुर्या पब्लिकेशन, 2006

भटनागर, ए0बी0 एवं भटनागर मीनाक्षी व अनुराग : शैक्षिक एवं मानसिक मापन
मेरठ; आर0लाल बुक डिपो, 2008

भटनागर, ए0बी0 एवं भटनागर मीनाक्षी : मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन
मेरठ; सूर्या पब्लिकेशन, 1997

भटनागर, सुरेश : शिक्षण अधिगम एवं विकास का मनोविज्ञान
मेरठ; इन्टरनेशनल पब्लिसिंग हाउस, 1977

भटनागर, सुरेश : भारत में शिक्षा व्यवस्था का विकास
मेरठ; आर0 लाल बुक डिपो, 2005

भटनागर, आर0पी0 व अन्य : शिक्षा अनुसंधान–विधि एवं विश्लेषण
मेरठ; ईगल बुक्स इन्टरनेशनल, 1995

भटनागर, आर0पी0 एवं भटनागर अनुराग : शिक्षण एवं शोध अभियोग्यता
मेरठ; इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, 2006

भटनागर, सुरेश : आधुनिक भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएं
मेरठ; मेरठ पब्लिशिंग हाऊस, 1991–92

बैस एच0एस0 : शाला प्रशासन
दिल्ली; दोआबा हाउस, 1990

चौबे, सरयू प्रसाद : शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार
आगरा; विनोद पुस्तक मन्दिर, 1972

चौबे, सरयू प्रसाद : ब्रिटिश, रूस, अमेरिका तथा भारतीय–शिक्षा व्यवस्थायें
आगरा; विनोद पुस्तक मन्दिर, 1974

दास, अभिलाष : कबीर अमृतवाणी
इलाहाबाद; कबीर पारख संस्थान, 2001

दीक्षित, सीताशरण : उपनिषद
नई दिल्ली; सस्ता साहित्य मण्डल, 2001

फ्रांसिस जेय ब्राउन : शैक्षिक समाज विज्ञान
लखनऊ; उत्तर प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 1974

गैरिट, हैनरी ई0 : शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग
लुधियाना; कल्याणी पब्लिशर्स, 1984

गुप्ता, एस0पी0 : उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान
इलाहाबाद; शारदा प्रकाशन, 2003

गुप्ता, एस0पी0 : शिक्षा का ताना–बाना
इलाहाबाद; शारदा पुस्तक भवन, 2004

गुप्ता, एस0पी0 : सांख्यिकीय विधियाँ
इलाहाबाद; शारदा पुस्तक भवन, 2003

गुप्ता, एस0पी0 : आधुनिक मापन तथा मूल्यांकन
इलाहाबाद; शारदा पुस्तक भवन, 1997

जगदीश, स्वरूप : कान्स्टीट्यूशन ऑफ इण्डिया (भाग–दो)
इलाहाबाद; डान्डेल वाला पब्लिकेशन्स, 1985

जैन, बी0एम0 : रिसर्च मैथडोलॉजी
जयपुर; रिसर्च पब्लिकेशन, 2003

जैन, किशनचन्द्र : शैक्षिक संगठन, प्रशासन एवं पर्यवेक्षण
जयपुर; राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 1976

जायसवाल, सीताराम : माध्यमिक शिक्षा–सिद्धान्त
लखनऊ; प्रकाशन केन्द्र, 1987

जोशी, धनंजय : नैतिक शिक्षा एवं नागरिक बोध
नई दिल्ली; कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, 2005

कश्यप, सुभाष : हमारा संविधान
नई दिल्ली; नेशनल बुक ट्रस्ट, 2000

कपिल, एच0के0 : अनुसंधान विधियाँ
आगरा; एच0 वी0 भार्गव बुक हाउस, 2006

कपिल, एच0के0 : सांख्यिकी के मूल तत्व
आगरा; विनोद पुस्तक मन्दिर, 1984

कौल, लोकश : शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली
नई दिल्ली; विकास पब्लिसिंग हाउस प्रा0लि0, 2005

कृष्ण कुमार : प्राचीन भारत की शिक्षा पद्धति
नई दिल्ली; श्री सरस्वती सदन, 1999

लाल, रमन बिहारी : भारतीय शिक्षा का विकास एवं उसकी समस्याएं
मेरठ; रस्तोगी पब्लिकेशन्स, 2004

माथुर, एस0एस0 : शिक्षा मनोविज्ञान
आगरा; विनोद पुस्तक मन्दिर, 1986

माहेश्वरी, अमरनाथ	:	अध्यापक शिक्षा में नीतिगत परिदृश्य नई दिल्ली; एन0सी0टी0ई0, 2001
मॉर्गन, सी0टी0 (अनुवाद डॉ0 निर्मल शर्मा)	:	मनोविज्ञान पटना, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 1971
मल्होत्रा, पी0एल0	:	भारत में विद्यालयीय शिक्षा (वर्तमान स्थिति एवं भावी आवश्यकताएं) नई दिल्ली; एन0सी0ई0आर0टी0, 1986
मुखोपाध्याय, मर्मर	:	शिक्षा में सम्पूर्ण गुणवत्ता प्रबन्धन नई दिल्ली; राष्ट्रीय शैक्षिक योजना और प्रशासन संस्थान, 2002
पाण्डेय, रामशकल	:	मूल्य शिक्षा के परिप्रेक्ष्य मेरठ; आर0 लाल बुक डिपो, 2000
पुरवार, हरिमोहन	:	बुन्देली बाल लोक साहित्य उरई; बुन्देलखण्ड संग्रहालय समिति, 2001
पुरवार, हरिमोहन	:	बुन्देली लोक सुभाषित उरई; बुन्देलखण्ड संग्रहालय समिति, 2000
राजपाल एवं बैनर्जी, कल्याण	:	उत्तर प्रदेश में विद्यालीय शिक्षा (अवस्थिति, चुनौतियाँ एवं भावी सम्भावनाऐं) नई दिल्ली, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, 2004
रस्तोगी, के0जी0 एवं मित्तल एम0एल0	:	भारतीय शिक्षा का विकास एवं समस्यायें मेरठ; रस्तोगी पब्लिकेशन्स, (संस्करण पंचम)
राय, पारसनाथ	:	अनुसंधान परिचय आगरा; लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, 2004
रूहेला, सत्यपाल	:	शिक्षा का समाजशास्त्र लखनऊ; उत्तर प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 1972
रूहेला, सत्यपाल एवं देवेन्द्र	:	उभरते भारतीय समाज में शिक्षा नई दिल्ली; आर्य बुक डिपो, 2005
सफाया, आर0 एन0 व अन्य	:	आधुनिक शैक्षिक प्रशासन एवं प्रबन्ध नई दिल्ली; धनपतराय पब्लिसिंग कम्पनी प्रा0लि0, 2005
शर्मा, बी0एल0 एवं सक्सेना, आर0एन0	:	शिक्षा शास्त्र नेशनल एजुकेशनल टेस्ट मेरठ; सूर्या पब्लिकेशन, 2003

शर्मा, जे0डी0 : मनोविज्ञान की पद्धतियाँ एवं सिद्धान्त
आगरा; विनोद पुस्तक मन्दिर (नवीनतम संस्करण)

शर्मा, आर0 ए0 : शिक्षा प्रशासन एवं प्रबन्धन
मेरठ; सूर्या पब्लिकेशन, 2006

शर्मा, आर0 ए0 : भावी शिक्षकों हेतु आधारभूत कार्यक्रम
मेरठ; सूर्या पब्लिकेशन, 2000

शर्मा, आर0ए0 : शिक्षा तथा मनोविज्ञान में परा एवं अपरा सांख्यिकी
मेरठ; आर0 लाल बुक डिपो, 2005

शर्मा, आर0 ए0 : शिक्षा अनुसंधान
मेरठ; आर0 लाल बुक डिपो, 2003

शर्मा, आर0 ए0 : शिक्षा और मनोविज्ञान में प्रारम्भिक सांख्यिकी
मेरठ; आर0 लाल बुक डिपो, 2003

सक्सेना, एन0आर0 : अध्यापक शिक्षा
मेरठ; लायल बुक डिपो, 2001

सिंह, बी0 पी0 : शिक्षण अधिगम एवं विकास के मनोवैज्ञानिक आधार
मेरठ; मॉडर्न पब्लिर्स, 1981–82

सिंह, रामपाल : शिक्षा में नव–चिन्तन
आगरा; विनोद पुस्तक मन्दिर, 1983

सिंह, जगमोहन : प्राथमिक शिक्षा (दिशाएं और सम्भावनाएं)
इलाहाबाद; साहित्य संगम, 2000

सिंह, अरुण कुमार : मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ,
नई दिल्ली; मोतीलाल बनारसीदास, 2006

सिंह, अरुण कुमार : शिक्षा मनोविज्ञान
पटना; भारती भवन, 2007

सिंह, अरुण कुमार : उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान
दिल्ली; मोतीलाल बनारसीदास, 2006

सिंह, द्वारका प्रसाद : सांख्यिकी के मूल आधार
आगरा; हर प्रसाद भार्गव, 1998

सुलैमान, मुहम्मद : शोध प्रणाली विज्ञान
पटना; शुक्ला बुक डिपो, 1995

सुलैमान, मुहम्मद : उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान
नई दिल्ली; श्री जैनेन्द्र प्रेस, 2007

सुखिया, एस0पी0 व अन्य : शैक्षिक अनुसंधान के मूलतत्व
आगरा; विनोद पुस्तक मन्दिर, 1990

सैयदैन, के0जी0 : शिक्षा की पुनर्रचना
दिल्ली; राजकमल प्रकाशन, 1960

स्टिनेट टी0एम0 (अनुवादक–कृष्णचन्द्र) : अध्यापन–वृत्ति
दिल्ली; आत्माराम एण्ड सन्स कश्मीरी गेट, हिन्दी संस्करण, 2000

श्रीवास्तव, रमेशचन्द्र : बुन्देलखण्ड (साहित्यिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक वैभव),
बाँदा; बुन्देलखण्ड प्रकाशन

श्रीवास्तव, डी0एन0 : व्यक्तित्व का मनोविज्ञान
आगरा; विनोद पुस्तक मन्दिर, 2005

श्रीवास्तव, डी0एन0 : अनुसंधान विधियाँ
आगरा; साहित्य प्रकाशन (संस्करण चतुर्थ),

तिवारी, गोविन्द : शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक अनुसंधान के मूलाधार
आगरा; विनोद पुस्तक मन्दिर, 1985

तिवारी, आर0 आर0 : बुन्देलखण्ड दर्शन
आगरा; साहित्य प्रकाशन (द्वितीय संस्करण)

वर्मा महेन्द्र : बुन्देलखण्ड का इतिहास
मेरठ; सुशील प्रकाशन, संवत 2056

वर्मा, रामपाल सिंह : विद्यालय संगठन एवं स्वास्थ्य शिक्षा
आगरा; विनोद पुस्तक मन्दिर, 1985

वर्मा, आर0पी0 : सांख्यिकी परिचय
आगरा; लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, 1975

वात्स्यायन : भारतीय दर्शन की रूपरेखा
दिल्ली; विवेक प्रकाशन, 1987

शब्दकोश –

बाहरी हरदेव : शिक्षक हिन्दी शब्दकोश
दिल्ली; रवीन्द्र प्रेस, 1990

भाटिया, कैलाशचन्द्र : शब्दों का ठीक प्रयोग
दिल्ली; प्रभात प्रकाशन, 1992

मिश्रा, आत्मानन्द : शिक्षा कोश
कानपुर; ग्रन्थम, 1977

शोध–पत्रिकाऐं –

प्राथमिक शिक्षक, (शैक्षिक संवाद पत्रिका)
नई दिल्ली; राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्

भारतीय आधुनिक शिक्षा, (शैक्षिक संवाद पत्रिका)
नई दिल्ली; राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्

शिक्षा चिन्तन,
कानपुर; त्रिमूर्ति संस्थान

शोध–धारा (मानविकी एवं समाज विज्ञान पर केन्द्रित)
उरई–जालौन; शैक्षिक एवं अनुसंधान संस्थान

स्मारिका (एकादश वार्षिक अधिवेशन)
झाँसी; बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय शिक्षक संघ, 2005

राधाकमल मुखर्जी : चिन्तन परम्परा,
बिजनौर; समाज विज्ञान विकास संस्थान,

शिक्षक,
सुल्तानपुर; माध्यमिक शिक्षक संघ

विद्यामेघ,
मेरठ; विद्या प्रकाशन मन्दिर लि0

गुणवत्तापरक शिक्षा अभिप्रेरण, उत्तर प्रदेशीय प्राथमिक शिक्षक संघ द्वारा संचालित (शिक्षा विभाग और यूनीसेफ के सहयोग से)

केन्द्रीय प्रतिवेदन –

बहुरूप गाँधी,
नई दिल्ली; राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान प्रशिक्षण परिषद् 1971

प्राथमिक अध्यापक शिक्षा में गुणवत्ता,
नई दिल्ली; राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद्,

सबके लिए शिक्षा (विश्व मनीटरिंग रिपोर्ट)
नई दिल्ली; राष्ट्रीय शैक्षिक योजना और प्रशासन संस्थान (नीपा), 2002

उत्तर प्रदेश में विद्यालयीय शिक्षा,
नई दिल्ली; राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2004

वार्षिक संदर्भ ग्रन्थ भारत– 2007,
नई दिल्ली; प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार

अध्यापक शिक्षा में नीतिगत परिदृश्य (विवेचन व प्रलेखन)
नई दिल्ली; राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद्

गाँधी के शैक्षिक विचार,
नई दिल्ली; राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद्, 1999

पत्र–पत्रिकाऐं –

क्रॉनिकल इयर बुक भारत 2007,
नई दिल्ली; क्रॉनिकल पब्लिकेशंस, 2007

उत्तर प्रदेश : एक अध्ययन,
कानपुर; प्रतियोगिता साहित्य सीरीज, 2003

उपविद्यालय निरीक्षक भर्ती परीक्षा,
आगरा; साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, 2006

अमर उजाला,
कानपुर संस्करण; 23 जुलाई 2008

दैनिक वार्षिकी,
कानपुर, दैनिक जागरण, 2003

BIBLIOGRAPHY

Aggarwal, J.C. : Education in India, Since 1991, (Significant Documents, Recent Developments, Statistics and Ph.D. Theses) Delhi; Doaba House, 1988

Aggarwal, J.C. : Essentials of Educational Psychology, New Delhi; Vikas Publishing House, Pvt. Ltd., 2005

Allport, G.W. : Attitudes: A Handbook of Social Psychology. Won Chester; Mass Univershal Press, 1935

Anastasi, Ann : Psychological Testing. New York; Mac millan.co.inc, 1976

Aqarari, Y.P. : Statistical Methods : Concept; Applications and Computation Agra; Bhargava Book House.

Association of Indian Universities, : University News, New Delhi; Association of Indian Universities, Theses of The month 3 July 2006- 11 February 2007

Bhandarkar, S.S. : Association of Indian Universities, New Delhi; A.I.U. House, 1985

Bhatnagar, R.P. : Educational Administration Meerut; International Publishing House, 1978.

Best, J.M. and Khan, J.V. : Research in Education. Delhi; Prentice hall of India, 1993

Buch, M.B. : A Survey of Research in Education Baroda; Centre of Advanced Study in Phychology and Education, 1974

Buch, M.B. : Second Survey of Research in Education (1972- 78) Baroda; Society for Educational Research and development, 1979

Buch, M.B. : Third Survey of Research in Education (1978-83) New Delhi; N.C.E.R.T., 1987

Buch, M.B. : Fourth Survey of Research in Education (1983-88) Volume I and II, New Delhi; N.C.E.R.T., 1991.

Chauhan, S.S. : Advanced Education Psychology, Meerut; International Publishing House, 1989

Chopra, Rakesh : Academic, Dictionary of Education, Delhi; Isha Books; 2005

Crow,D. and Crow,A. : Educational Psychology. New Delhi; Eurasia Publishing house, 1963

Cron bach, Lee.J. : Essentials of Psychological Testing. New York; Harpen and Row, 1966

Dembo, M.H. : Teaching for Learning: Applying Educational Psychology in the Classroom, Santa Monica, C.A. Goodyear, 1977

Despande, S.W., and Lodhi, P.H. : Academic Achievment and Some Psychological Variables. J. of The Institute of Education Research, 1981

Engelhart, M.D. : Methods of Educational Research Chicago; Rand Mc Nally & Company, 1972

Garritt, H.E. and Wood Woorthe, R.S. : Statistics in Psychology & Education. Bombay; Vikils Paper and Simon Pvt.Ltd. 1971

Good Carter, V. : Introduction to Educational Research (IInd Edition). New York; Appletion-Centary-Crofts, 1963

Guilford, J.P. : Fundamental Statistics in Psychology and Education New York; Mc Graw hill book Company, 1965

Guilford, J.P. : Psychometric Methods New York; Mc Graw hill book Company, 1954

Gupta, S.P. : Job Satisfaction Among Teachers Allahabad; Sharda Pustak Bhawan, 2006

Kelley, T.L. : Interpretation of Educational Measurement Yonkers; World book Co., 1939

Kerlinger, F. N. : Foundations of Behavioral Research, Delhi; Surjeet Publications, 2004

Kerlinger; F.N. : Fundamental at Behavioural Research, Delhi; Surjeet Publications, 2004

Khan, Mohd. Sarif : Education Research New Delhi; Ashish Publication house, 1990.

Khan, Mohd. Sharif : Educational Administration New Delhi; Ashish Publishing House, 1980.

Khanna, S.D., Saxena, V.K., Lamba, T.P., Murthy, V. : Educational Administration Planning Supervision and Financing, Delhi; Doaba House, 1989

Kothari, R.C. : Research Methodology, New Delhi; New Age International, 2005

Koul, Lokesh : Methodology of Educational Research, New Delhi; Vikas Publishing house Pvt. Ltd.

Lohithakshan, P.N. : Diclionary of Education, Apractical Approach, New Delhi; Kanishka Publishers, Distributors, 2005

Mukerji, S.N. : Education in India Today and Tomarrow Agra; Vinod Pustak Mandir, 1991

Morse, M.C. and Wingo, G.M. : Psychology and Teaching, Bombay; D.B. Taraporevala Sons and co.Pvt.Ltd, 1970

Nanda, S.K. : Education for Competitive Examinations, Delhi; Doaba Book House, 2002

Panday, K.P. : Fundamental of Educational Research Varanasi; Vishwavidyalaya- Prakashan, 2005

Panday, K.P. : Advanced Educational Psychology for Teachers. Ghaziabad; Amitash Prakashan, 1983

Pani, Amarendra : Reforms and innovations in Indian Higher Education New Delhi; A.I.U. 2004

Rai, B.C. : School Organization and Management, New Delhi; Discovery Publishing House, 2002

Rao, D.Bhaskara, and Damera, Sridhar Job-Satisfaction of school Teachers, New Delhi; Discovery Publishing House, 2005

Sabharwal, N. : Studies And Investigations of Teacher Education in India, New Delhi; N.C.E.R.T., 1992

Saxena, N.R. Swaroop : Principles of Education Meerut; International Publishing House, 1983.

Sharma, J.P. : Fifth Survey of Education Research (1988-92) Volume I New Delhi; N.C.E.R.T., 1997

Sharma, J.P. : Fifth Survey of Education Research (1988-92) Volume II New Delhi; N.C.E.R.T., 2000

Sharma, N.K. : Educational and vocational Guidence,
Agra; Vinod Pustak Mandir.

Sharma, Neerja : Evaluating Children in Primary Education
New Delhi; Discovery Publishing House, 2005

Singh, Jyoti : Education and Human Resource Development,
New Delhi; Deep and Deep Publications Pvt. Ltd. 2004

Srivastava, Ashirbadi Lal : For the Effective control of Anaerobic Infection
Agra; Shiv Lal Agarwala and Company, 1969

Stodola, Q. and Stordalil, K. : Basic Educational Tests and Measurements.
New Delhi; Thomson Press (India). Ltd, 1972

Travers, Robert. M.W. : Introduction to Educational Research,
New York, Mac Millan, 1978

Tripathi, C.R. : Research Methodology (methods) and Techniques.

Tuckman, Bruce.W. : Conducting Educational Research.
New York; Harcourt, 1972

Upal, Sweta : Sixth Survey of Educational Research (1993-2000) Vol. I
New Delhi; N.C.E.R.T., 2006

Vashistha, K.K. : Association of Indian Universities,
New Delhi; A.I.U. House, 2002

Yadav, M.S. and Mitra Shiv : Educational Research Methodological Perspectives.
Baroda, Centre of advance study in Education, 1989

Dictionary & Encyclopedia -

Andrew, M. Colman : Oxford Dictionary of Psychology,
United States; Andrew M, Colman, 2005

Brajmohan : Meenakshi, English-Hindi Dictionary
Meerat, Meenakshi Prakashan, 1991

Chopra, Rakesh : Academic Dictionary of Education
Delhi; Isha Books 2005

Good, Carter M.V. : Dictionary of Education
New Yark; M.G. Graw hill Book Company- 1973

Lorin, W.Anderson : InterNational Encyclopedia of Teaching and Teacher Education,
U.K.(Great Britain), Cambridge University Press, 1995

Pandit, B.S. : Amit Student Oxford Dictionary
Delhi; Student Book Dept, 2000

: Indigo Dictionary of Education
New Delhi, Cosmo Publications, 2005

Central document –

Anweshika Indian Journal OF Teacher Education,
New Delhi; N.C.T.E., 2004

Bibliography of Higher Education in India,
New Delhi; A.I.U., 2002

Conceptual Inputs for Secondary Teacher Education,
New Delhi; N.C.E.R.T., 2003

Educational Psychology,
New Delhi; Prentice Hall of India Pvt. Ltd. 1990

Govt. of India- Education Commission Report (1964-66),
New Delhi; Ministry of Human Resources Development, 1992

Govt. of India- National Policy on Education,
New Delhi; Ministry of Human Resources Development, 1986

Govt. of India- Programme of Action,
New Delhi; Department of Education, Ministry of Human
Resources Development, 1992

Indian Educational Review,
New Delhi; N.C.E.R.T., 2007

Journal oF Educational Planing and Administration,
New Delhi; NIEPA, 2006

National Curriculum Framework for school Education,
New Delhi; N.C.E.R.T., 2000

Reforms and Innovations in Higher Education,
New Delhi; Association of Indian Universities (A.I.U.) 2001

Seventh All India School Education Survey,
New Delhi; N.C.E.R.T., June, 2005

Some Specific Issues and Concerns of Teacher Education,
New Delhi; N.C.T.E.,2004

Studies and Investigations on Teacher Education in india (1976-80),
New Delhi; N.C.E.R.T., 1992

Teacher Education for Twenty first century
New Delhi; N.C.T.E., 1985

Valuing Teacher Questioning,
New Delhi; N.C.E.R.T., 2002

Websites :-

http://www.efa.nic.in//Schoolreportcords.in
http://www.upgov.nic.in//upinfo//mandelptrika
www.upscert.org.in

सारणी – 7.1

बी0टी0सी0 शहरी शिक्षक (पुरुष)

क्र0स0	शिक्षक का नाम	प्रा0 वि0 संस्था का नाम	JST	KITS	MTAI
1	परशुराम सिंह	प्रा0 वि0 निवादा – बाँदा	24	16	410
2	कृष्ण बिहारी	प्रा0 वि0 शुकुल कुआं – बाँदा	21	06	420
3	अमर सिंह	प्रा0 वि0 बिवांर – हमीरपुर	24	14	416
4	विष्णुदत्त	प्रा0 वि0 कमासिन – बाँदा	21	05	398
5	रामखेलावन गुप्ता	प्रा0 वि0 कमासिन नवीन – बाँदा	21	08	370
6	राजाराम	प्रा0 वि0 निवादा – बाँदा	24	10	410
7	सुखनन्दन	प्रा0 वि0 निवादा – बाँदा	27	06	420
8	गया प्रसाद अग्रवाल	प्रा0 वि0 कोंच – जालौन	24	13	398
9	शिवमोहन सिंह	प्रा0 वि0 बिवांर – हमीरपुर	23	13	408
10	चन्दू लाल	प्रा0 वि0ऐट – जालौन	26	14	402
11	सत्यनरायन	प्रा0 वि0 बांधुर खुर्द हमीरपुर	24	10	412
12	विनोद कुमार	प्रा0 वि0 सैद नगर – जालौन	26	18	377
13	कोदू प्रसाद	प्रा0 वि0 भरतकूप –चित्रकूट	22	02	318
14	विजय द्विवेदी	प्रा0 वि0 शंकर बाजार कर्वी – चित्रकूट	19	06	352
15	रामलखन सिंह	प्रा0 वि0 शंकर बाजार कर्वी – चित्रकूट	17	06	330
16	राजेन्द्र कुमार शर्मा	प्रा0 वि0 खोही – चित्रकूट	20	05	349
17	प्यारेलाल शुक्ल	प्रा0 वि0 भरतकूप – चित्रकूट	22	12	359
18	रामनरेश करवरिया	प्रा0 वि0 पुरानी बाजार – चित्रकूट	17	05	310
19	देश दीपक खरे	प्रा0 वि0 भरतकूप – चित्रकूट	17	02	339
20	विजय कुमार	प्रा0 वि0 गुरुबाबा क्षेत्र – चित्रकूट	26	17	319
21	रामचन्द्र	प्रा0 वि0 करुइहापुरवा बबेरु '– बाँदा	25	14	460
22	कुलदीप सिंह	प्रा0 वि0 नगर क्षेत्र कर्वी – चित्रकूट	17	11	205
23	यमुना प्रसाद गुबरैले	प्रा0 वि0 गौशाला नगर –क्षेत्र झाँसी	27	13	321
24	शरद कुमार माथुर	प्रा0 वि0 नगर क्षेत्र –झाँसी	22	14	406
25	रमेश चन्द्र गोस्वामी	प्रा0 वि0 गणेश बाजार–नगर क्षेत्र झाँसी	28	08	327

26	अब्दुल सत्तार	प्रा0वि0आतियाँ तालाब नगर क्षेत्र–झाँसी	28	14	422
27	जगदीश सहाँय गुप्त	प्रा0 वि0 पुलिया नं0 1 नगर क्षेत्र– झासी	25	12	406
28	फूल सिंह	प्रा0 वि0 नगर क्षेत्र झाँसी	23	11	410
29	अनवर अली	प्रा0 वि0 नगर क्षेत्र – झाँसी	20	12	410
30	हरीशंकर खरे	प्रा0 वि0 कोछा भावंर नगर क्षेत्र – झाँसी	28	10	412
31	रतिराम राम पाल	प्रा0 वि0 कोछा भावंर नगर क्षेत्र – झाँसी	28	11	410
32	अब्दुल मजीद खाँ	प्रा0 वि0 नई बस्ती झाँसी	26	13	408
33	राजबहादुर	प्रा0 वि0 पोडा – बाग अलीगंज –बाँदा	21	18	402
34	सुरेश चन्द्र कुशवाहा	प्रा0 वि0 खरम्भैरा – नगर क्षेत्र बाँदा	21	20	418
35	आनन्द यादव	प्रा0 वि0 नगर कमासिन – बाँदा	21	20	420
36	मुहम्मद इकबाल	प्रा0 वि0 उनाव गेट – झाँसी	28	09	418
37	चुनका प्रसाद	प्रा0 वि0 अलीगंज बाँदा	21	09	388
38	अशोक कुमार शुक्ल	प्रा0 वि0 घुरेटन पुरवा. कर्वी – चित्रकूट	17	04	325
39	राधेश्याम	प्रा0 वि0 तरांव – चित्रकूट	25	12	303
40	चन्द्रभान	प्रा0 वि0 प्राचीन – बबेरु – बाँदा	24	16	288
41	धीरेन्द्र कुमार	प्रा0 वि0 प्राचीन अतर्रा – बाँदा	24	13	299
42	जफर अली	प्रा0 वि0 नरैनी – बाँदा	24	16	282
		योग =	**858**	**488**	**15357**

सारणी – 7.2

बी0टी0सी0 ग्रामीण शिक्षक (पुरुष)

क्र0स0	शिक्षक का नाम	प्रा0 वि0 संस्था का नाम	JST	KITS	MTAI
1.	श्री गया प्रसाद	प्रा0 वि0 कुइयाँ – जालौन	23	12	399
2.	रवीन्द्र कुमार	प्रा0 वि0 बामौर – जालौन	22	10	398
3.	सुकदेव प्रसाद तिवारी	प्रा0 वि0 कलाँ – जालौन	25	10	333
4.	ओमनारायन	प्रा0 वि0 सैदनगर जालौन	26	08	375
5.	मोहनलाल	प्रा0 वि0 खदानी– जालौन	28	12	362
6.	अनिल कुमार	प्रा0 वि0 कुइयाँ– जालौन	21	09	354
7.	राम्प्रकाश	प्रा0 वि0 पछुवा – जालौन	21	13	420
8.	हरीशंकर सिंह	प्रा0 वि0 आमगॉव– जालौन	24	09	420
9.	मूलचन्द यादव	प्रा0 वि0 सिकन्दरा– जालौन	22	12	204
10.	कृष्णदत्त	प्रा0 वि0 सैदनगर– जालौन	25	07	364
11.	मूलचन्द्र साहू	प्रा0 वि0 पूँछ – जालौन	24	11	418
12.	जगदीश प्रसाद राजपूत	प्रा0 वि0 डकोर– जालौन	26	15	389
13.	प्रयाग नारायण	प्रा0 वि0 फूलपुरा– जालौन	22	14	428
14.	श्री जयनारायण	प्रा0 वि0 डकोर– जालौन	24	13	414
15.	रामजी शरण	प्रा0 वि0 आमगॉव– जालौन	25	10	217
16	हरी सिंह	प्रा0 वि0 आमगॉव– जालौन	20	14	318
17	पूरन सिंह	प्रा0 वि0 खिरवाँ– हमीरपुर	24	17	416
18	बद्रीप्रसाद प्रजापति	प्रा0 वि0 मुस्करा– हमीरपुर	24	12	420
19	हरपाल सिंह	प्रा0 वि0 मुस्करा – हमीरपुर	23	16	418
20	रामकिशन	प्रा0 वि0 मुस्करा – हमीरपुर	24	09	409
21	ओंकार कुशवाहा	प्रा0 वि0 गोंडा – हमीरपुर	19	07	337
22	सन्तराम यादव	प्रा0 वि0 बाँधुर खुर्द मुस्करा– हमीरपुर	24	09	421
23	लालू प्रसाद	प्रा0 वि0 मुस्करा – हमीरपुर	24	15	424
24	भइयालाल	प्रा0 वि0 बिधूनी– हमीरपुर	23	10	422
25	रघुनन्दन प्रसाद	प्रा0 वि0 करगॉव – हमीरपुर	24	14	406
26	रणवीर सिंह	प्रा0 वि0 मुस्करा – हमीरपुर	23	07	412
27	बैजनाथ	प्रा0 वि0 मऊ– हमीरपुर	21	12	408
28	सिद्धगोपाल	प्रा0 वि0 छेडी वसायक– हमीरपुर	23	16	370

29	कामता प्रसाद कुशवाहा	प्रा0 वि0 बाँधुर बुजुर्ग– हमीरपुर	23	13	418
30	अनुरुद्ध सिंह	प्रा0 वि0 करगॉव– हमीरपुर	23	14	421
31	रामखेलावन सिंह	प्रा0 वि0 मुस्करा हमीरपुर	24	15	420
32	पूरन सिंह	प्रा0 वि0 खिरवाँ– हमीरपुर	24	17	416
33	कृष्णकान्त कौशिक	प्रा0 वि0 श्यामपुरा – ललितपुर	27	09	329
34	महावीर शरण श्रीवास्तव	प्रा0 वि0 महर्रा– ललितपुर	24	8	394
35	काशी प्रसाद	प्रा0 वि0 कल्यानपुरा– ललितपुर	24	09	366
36	राजकुमार जैन	प्रा0 वि0 विप्पा खेत– ललितपुर	25	10	414
37	कमलेश कुमार खरे	प्रा0 वि0 कल्यानपुरा– ललितपुर	22	07	360
38	महाराज सिंह	प्रा0 वि0 कल्यानपुरा– ललितपुर	24	07	368
39	अशोक कुमार जैन	प्रा0 वि0 कल्यानपुरा– ललितपुर	21	06	420
40	रामनरेश दत्त	प्रा0 वि0 कल्यानपुरा– ललितपुर	22	09	361
41	निर्देश कुमार सिंह तोमर	प्रा0 वि0 पतारा महुवा – बाँदा	21	19	408
42	अमर सिंह	प्रा0 वि0 तेरा महुवा – बाँदा	11	15	328
43	आशुतोष कत्रपाठी	प्रा0 वि0 बजरंग पुरवॉ, बडोखर– बाँदा	21	02	318
44	देवी प्रसाद त्रिवेदी	प्रा0 वि0 पतारा महुवा – बाँदा	22	06	310
45	महाबीर	प्रा0 वि0 वंशी पुरवा– बाँदा	22	07	362
46	नसीम अंशारी	प्रा0 वि0 पल्हरी– बाँदा	19	07	420
47	हरचरण	प्रा0 वि0 वशिष्ठन पुरवा– बाँदा	22	03	366
48	श्यामकृष्ण तिवारी	प्रा0 वि0 चहितारा– बाँदा	24	19	402
49	कैलाश निरंजन	प्रा0 वि0 बामौर– झाँसी	22	12	395
50	बृजेश कुमार	प्रा0 वि0 मैगाय– झाँसी	27	16	496
51	रामजी शरण	प्रा0 वि0 चितगुवा–झाँसी	20	13	408
52	नरेन्द्र कुमार शर्मा	प्रा0 वि0 बरौरा– झाँसी	25	08	364
53	राजेश कुमार त्रिपाठी	प्रा0 वि0 बामौर– झाँसी	24	12	392
54	जयप्रकाश मिश्र	प्रा0 वि0 लोढवाराँ – चित्रकूट	23	17	311
55	दीनदयाल निरंजन	प्रा0 वि0 बीहर – चित्रकूट	14	10	306
56	हबीब अहमद	प्रा0 वि0 रुरीपारा– महोबा	25	12	408
57	शिवराम	प्रा0 वि0 छेडी वसायक– महोबा	22	13	325
58	राजा भइया सिंह	प्रा0 वि0 रुरीपारा, कन्या – महोबा	24	15	418
		योग =	**1329**	**644**	**22092**

सारणी – 7.3

बी0टी0सी0 शहरी शिक्षक (महिला)

क्र0स0	शिक्षक का नाम	प्रा0 वि0 संस्था का नाम	JST	KITS	MTAI
1	साधना श्रीवास्तव	प्रा0 वि0 बाँदा – बाँदा	28	16	311
2	दमयन्ती	प्रा0 वि0 ऐट – जालौन	24	09	374
3	श्रीमती शान्ती देवी	प्रा0 वि0 मालवीय नगर कोंच–जालौन	21	08	202
4	चन्द्रप्रभा	प्रा0 वि0 शुकुल कुआं – बाँदा	21	04	420
5	कमला देवी	प्रा0 वि0ऐट – जालौन	24	13	372
6	अन्जू चौरसिया	प्रा0 वि0 गिरवाँ – बाँदा	28	16	331
7	प्रतिमा गुप्ता	प्रा0 वि0 गिरवाँ – बाँदा	28	15	331
8	श्रीमती अर्चना नामदेव	प्रा0 वि0 बिवार नवीन – हमीरपुर	26	14	406
9	क्मला देवी	प्रा0 वि0 ऐट – जलौन	21	21	408
10	श्रीमती लक्ष्मी देवी	प्रा0 वि0 कमासिन – बाँदा	20	06	366
11	श्रीमती आशा देवी	प्रा0 वि0 नवीन कमासिन – बाँदा	21	05	360
12	गायत्री देवी	प्रा0 वि0 ऐट – जालौन	24	09	375
13	ब्रजेश कुमारी	प्रा0 वि0 ऐट – जालौन	27	09	379
14	सवित्री गुप्ता	प्रा0 वि0 शुकुल कुआँ – बाँदा	18	05	420
15	श्रीमती चन्द्रकला	प्रा0 वि0 शुकुल कुआँ – बाँदा	18	06	410
16	गीता नायक	प्रा0 वि0 ऐट – जालौन	25	08	376
17	राजलक्ष्मी	प्रा0 वि0 खोही –2 चित्रकूट	25	10	300
18	उर्मिला देवी त्रिपाठी	प्रा0 वि0 खोही – चित्रकूट	15	06	322
19	सुशीला देवी	प्रा0 वि0 क्रुइहापुरवा – बबेरु बाँदा	28	14	347
20	ऊषा उपाध्याय	प्रा0 वि0 करुइहापुरवा – बबेरु बाँदा	23	16	342
21	श्रीमती गीता देवी	प्रा0 वि0 करुइहापुरवा बबेरु – बाँदा	29	16	406
22	श्रीमती पूजा गुप्ता	प्रा0 वि0 नया बजार – कर्वी	13	03	240
23	पिंगला देवी	प्रा0 वि0 करुइहापुरवा बबेरु – बाँदा	27	12	316
24	श्रीमती जानकी गुप्ता	प्रा0 वि0 नया बाजार कर्वी – चित्रकूट	28	14	333
25	संगीता सिंह	प्रा0 वि0 खाँई पार –बाँदा	25	19	320

26	श्रीमती अंगूरी रैकवार	प्रा0 वि0 नगर क्षेत्र – झाँसी	26	11	412
27	श्रीमती मुन्नी देवी तिवारी	प्रा0 वि0 नगर क्षेत्र – झाँसी	26	11	422
28	श्रीमती मिथलेश मित्तल	प्रा0 वि0 नगर क्षेत्र – झाँसी	25	15	402
29	श्रीमती पूनम श्रीवास्तव	प्रा0 वि0 शंकर बाजार कर्वी– चित्रकूट	18	07	316
30	ऊषा जायसवाल	प्रा0 वि0 शिवरामपुर – चित्रकूट	27	11	288
31	श्रीमती शान्ती देवी	प्रा0 वि0 सतीअनुशुइया – चित्रकूट	18	07	317
32	नीरा सैनी	प्रा0 वि0 शिवरामपुर – चित्रकूट	18	07	312
33	श्रीमती लालमणि वर्मा	प्रा0 वि0 शिवरामपुर – चित्रकूट	16	06	305
34	श्रीमती चन्दा गुप्ता	प्रा0 वि0 नया बाजार कर्वी – चित्रकूट	18	04	305
35	श्रीमती सुधा राठौर	प्रा0 वि0 पहाडी – चित्रकूट	20	03	287
36	हेमला श्रीवास्तव	प्रा0 वि0 प्राचीन कर्वी – चित्रकूट	18	04	319
37	श्रीमती गीता जायसवाल	प्रा0 वि0 अहिरनपुरवा कर्वी– चित्रकूट	20	04	298
38	अर्चना रिझारिया	प्रा0 वि0 फुटहा क्षेत्र – चित्रकूट	27	14	308
39	सुधा स्वर्णकार	प्रा0 वि0 ऐट – जालौन	20	11	228
40	श्रीमती गायत्री	प्रा0 वि0 कोंच – जालौन	22	09	225
41	श्रीमती रामवती वामरे	प्रा0 वि0 बदौसा – बाँदा	22	14	312
42	श्री मधु	प्रा0 वि0 बदौसा – बाँदा	24	16	312
43	श्रीमती शकुन्तला	प्रा0 वि0 प्राचीन अतर्रा – बाँदा	24	16	321
44	प्रभा बाजपेई	प्रा0 वि0 चौबेन थोक बबेरु – बाँदा	23	16	230
45	श्रीमती लक्ष्मी देवी	प्रा0 वि0 ऐट – जालौन	24	17	242
46	शारदा देवी	प्रा0 वि0 पनवाडी – महोबा	19	24	392
47	सरला खरे	प्रा0 वि0 बडा गांव – झाँसी	12	21	392
48	शैल कुमारी	प्रा0 वि0 पनवाडी – महोबा	23	13	412
49	रुपरानी	प्रा0 वि0 कन्या पनवाडी– महोबा	25	13	404
50	लक्ष्मी देवी	प्रा0 वि0 कमासिन – बाँदा	23	16	298
		योग =	**1125**	**560**	**16826**

सारणी – 7.4
बी0टी0सी0 ग्रामीण शिक्षक (महिला)

क्र0स0	शिक्षक का नाम	प्रा0 वि0 संस्था का नाम	JST	KITS	MTAI
1	रीता सोलंकी	प्रा0 वि0 आरी. बडागाँव – झाँसी	28	11	430
2	सुषमा देवी	प्रा0 वि0 गुरेह – बाँदा	21	05	422
3	कमला देवी	प्रा0 वि0 गुरेह – बाँदा	19	06	420
4	श्रीमती इन्द्रकुमारी	प्रा0 वि0 बशिष्टनपुरवा – बाँदा	22	06	365
5	शगुफ्ता खातून	प्रा0 वि0 गुरेह – बाँदा	18	04	410
6	सुधा प्रजापति	प्रा0 वि0 पल्हरी – बाँदा	23	05	402
7	नूतन द्विवेदी	प्रा0 वि0 पल्हरी – बाँदा	19	04	420
8	शालिनी जैन	प्रा0 वि0 अमरपुर – ललितपुर	26	13	367
9	श्रीमती जोरावल राजपूत	प्रा0 वि0 चीरा – ललितपुर	26	15	355
10	श्रीमती प्रेमा सेन	प्रा0 वि0 दुर्जनपुरा – ललितपुर	21	10	414
11	श्रीमती ममता गोस्वामी	प्रा0 वि0 कल्यानपुरा – ललितपुर	23	05	357
12	श्रीमती मिथलेश गुप्ता	प्रा0 वि0 शाम्य नगर – जालौन	18	09	318
13	विमलेश सोनी	प्रा0 वि0 बिप्पा खेत – ललितपुर	23	06	410
14	मन्जू जैन	प्रा0 वि0 अमरपुर – ललितपुर	27	15	416
15	श्रीमती शीला वैद्य	प्रा0 वि0 महर्रा – ललितपुर	25	06	365
16	श्रीमती पार्वती देवी	प्रा0 वि0 अनवान बबेरु – बाँदा	24	09	394
17	रन्नो देवी	प्रा0वि0 शोभासिंह कापुरवा कर्वी–चित्रकूट	20	03	336
18	अंजना सिंह राठौढ	प्रा0 वि0 कुंजन पुरवा – चित्रकूट	24	13	308
19	श्रीमती अंशुमाला सिंह	प्रा0 वि0 तरौहा – चित्रकूट	18	09	347
20	ललिता पाण्डेय	प्रा0 वि0 कसहाई – चित्रकूट	26	19	333
21	शकुन्तला	प्रा0 वि0 चितरा गोकुलपुर – चित्रकूट	27	12	315
22	श्रीमती इन्द्रा रैकवार	प्रा0 वि0 रैपुरवा माफी – चित्रकूट	18	07	401
23	सारिका सिंह	प्रा0 वि0 सपटा – चित्रकूट	23	17	211
24	अंजना सिंह	प्रा0 वि0 चन्द्र गहना –2 चित्रकूट	24	14	224
25	तनूजा खरे	प्रा0 वि0 चन्द्र गहना –1 चित्रकूट	22	11	345

26	श्रीमती गीता सिंह	प्रा0 वि0 कुजंन पुरवा – चित्रकूट	25	11	338
27	सरिता सिंह	प्रा0 वि0 राधेश्यामका पुरवा महुवा –बाँदा	16	23	430
28	श्रीमती शशिकला	प्रा0 वि0 कन्या धौर्रा – ललितपुर	26	13	333
29	सीता साहू	प्रा0 वि0 पतारा महुवा – बाँदा	16	02	319
30	दीप्ती रावत	प्रा0 वि0 महुवा – बाँदा	18	10	319
31	श्रीमती सरोज कुमारी जैन	प्रा0 वि0 बंगरिया – ललितपुर	28	12	318
32	श्रीमती रामा मिश्रा	प्रा0 वि0 बरवारा – ललितपुर	23	08	293
33	कुसुम श्रीवास्तव	प्रा0 वि0 कन्या मुरवल – बाँदा	24	16	233
34	शशि प्रभा	प्रा0 वि0 कन्या मुरवल – बाँदा	24	14	222
35	छोटी चौरसिया	प्रा0 वि0 प्रीतमपुरा – झाँसी	17	05	402
36	आराधना देवी	प्रा0 वि0 बरीपुरा – महोबा	17	12	305
37	कृष्णा देवी श्रीवास्तव	प्रा0 वि0 रुन्द करारी – झाँसी	16	07	392
38	मुन्नी देवी	प्रा0 वि0 रिवाई कबरई – महोबा	24	16	321
39	नीता पुरवार	प्रा0 वि0 रुन्द करारी – झाँसी	18	08	396
40	गायत्री देवी	प्रा0 वि0 जैतपुर – महोबा	27	04	272
41	महेश्वरी देवी	प्रा0 वि0 जैतपुर – महोबा	17	06	275
42	हमीदा बेगम	प्रा0 वि0 जैतपुर – महोबा	20	06	280
43	लक्ष्मी बाई	प्रा0 वि0 प्राचीन कुलपहाड – महोबा	17	06	326
44	गुलाब रानी	प्रा0 वि0 प्राचीन कुलपहाड – महोबा	16	03	245
45	श्रीमती मानकुवर	प्रा0 वि0 कन्या प्राचीन. कुलपहाड–महोबा	21	04	270
46	नीरा देवी	प्रा0 वि0 फूलपुरा – जालौन	17	09	281
47	श्रीमती बिमला निरजंन	प्रा0 वि0 फूलपुरा – जालौन	22	09	266
48	श्यामलता	प्रा0 वि0 बादुर खुर्द – हमीरपुर	16	05	286
49	कंचन देवी	प्रा0 वि0 बांदुर खुर्द – हमीरपुर	21	05	284
50	उर्मिला राजपूत	प्रा0 वि0 मुस्करा – हमीरपुर	18	08	283
		योग =	**1069**	**456**	**16774**

सारणी – 7.5

विशिष्ट बी0टी0सी0 शहरी शिक्षक (पुरूष)

क्र0स0	शिक्षक का नाम	प्रा0 वि0 संस्था का नाम	JST	KITS	MTAI
1	राजेन्द्र कुमार गुप्ता	प्राचीन – कर्वी – चित्रकूट	24	18	362
2	रविकान्त बर्मा	बेहटा बडा गांव – झाँसी	21	12	418
3	रोहित चन्द्र	प्राचीन कन्या मोठ – झाँसी	20	08	352
4	जयकरन सिंह यादव	विवार मुस्करा– हमीरपुर	22	09	416
5	राजकुमार	नदीगांव – जालौन	28	16	431
6	रमेश चन्द्र	ऐट – जालौन	27	09	366
7	रमाशंकर	बाँदा – बाँदा	28	16	334
8	कमलेश कुमार अग्निहोत्री	गिरवाँ – बाँदा	24	07	238
9	राघवेन्द्र त्रिपाठी	अलीगंज – बाँदा	23	09	340
10	बिरेन्द्र कुमार पटेरिया	नगर क्षेत्र – झाँसी	26	13	414
11	रामसिंह राजपूत	तिदवारा – ललितपुर	23	20	402
12	दुर्गेश कुमार	मर्दननाका – बाँदा	21	22	414
13	डी0 के द्विवेदी	हरिहरपुर – ललितपुर	20	05	346
14	श्याम सिंह गौतम	अलीगंज – बाँदा	23	16	408
15	जमील खाँ	कल्यानपुरा – ललितपुर	27	08	300
16	शशिकान्त चौरसिया	श्यामपुरा – ललितपुर	25	12	365
17	अलीनवाब	बदौसा – बाँदा	20	13	319
18	तेजराम	प्राचीन – बबेरु	25	12	292
19	ललका सिंह	अतर्रा – बाँदा	22	09	278
20	रामखेलावन गुप्त	नवीन कमासिन – बाँदा	23	18	218
21	विष्णु दत्त	कमासिन – बाँदा	24	12	226
22	रामशकर	कन्या रोशनपुरा – महोबा	18	10	321
23	अजय कुमार	कबरई –महोबा	17	09	272
24	बुद्धबिलास	नवीन शिवरामपुर चित्रकूट	16	05	287
25	नरोत्तम प्रसाद	बी0 आर0 सी0 – चित्रकूट	18	07	283

26	अवध बिहारी	बी0 आर0 सी0 – चित्रकूट	21	10	254
27	मनोज कुमार	बी0 आर0 सी0 – चित्रकूट	19	06	268
28	रामदयाल यादव	शिवरामपुर – चित्रकूट	16	06	284
29	रामस्वरुप विश्वकर्मा	चरखारी – महोबा	24	11	245
30	हरी किशन	कल्यानपुरा – ललितपुर	18	05	286
31	मनोज दिक्षित	बिवांर – हमीरपुर	14	09	272
32	रामशरण	नवीन कबरई – महोबा	15	05	269
33	ज्ञानदीप सिंह	भरुवा सुमेरपुर – हमीरपुर	17	02	269
34	श्याम सिंह	बिवांर – हमीरपुर	17	10	265
35	प्रेम नरायन नायक	कल्यानपुरा – ललितपुर	17	06	262
36	देवकुवर	कबरई – महोबा	19	06	334
37	उमादत्त मिश्र	नवीन – शिवरामपुर चित्रकूट	18	08	274
38	क़रीम बक्स	नवीन – शिवरामपुर चित्रकूट	20	05	273
39	राजबहादुर	शिवरामपुर –चित्रकूट	20	04	274
40	रामदयाल यादव	शिवरामपुर चित्रकूट	17	04	277
41	बाबूलाल	चरखारी – महोबा	20	12	272
42	दयाराम	कल्यानपुरा – ललितपुर	17	09	281
43	किशनदयाल	कबरई – महोबा	23	07	292
44	धीरेन्द्र श्रीवास्तव	भरुवा सुमेरपुर – हमीरपुर	18	04	280
45	रामराज	मौदहा – हमीरपुर	17	04	255
46	ब्रजेश पटेल	मौदहा –हमीरपुर	17	05	254
47	सिया शरण गुप्त	मोठ – झाँसी	17	03	276
48	दिनेश कुमार	मोठ – झाँसी	21	07	268
49	राजीव कुमार सोनी	नवीन मोठ झाँसी	24	03	256
50	हरी मोहन पुरोहित	नवीन मोठ – झाँसी	22	07	271
		योग =	**1053**	**453**	**15213**

सारणी – 7.6
विशिष्ट बी0टी0सी0 ग्रामीण शिक्षक (पुरूष)

क्र0स0	शिक्षक का नाम	प्रा0 वि0 संस्था का नाम	JST	KITS	MTAI
1	मोम्मद स्वेब	पछौवां – जालौन	21	13	386
2	अजय सिंह	सिकरी व्यास – जालौन	23	09	422
3	चन्द्र शरण	खदानी – जालौन	26	06	361
4	रामजी शरण	चितगुवां – जालौन	23	11	418
5	शिवमंगल गोटार्य	सातर – बादा	27	10	349
6	सुरेन्द्र पाल	सातर – बाँदा	25	13	418
7	रामप्रकाश	ब्योजा – बाँदा	22	04	420
8	दयाकरण सिंह	अनवान – बाँदा	26	20	395
9	राजेन्द्र प्रसाद	जल्ला मुस्करा – हमीरपुर	23	10	414
10	उदयकरन राजपूत	परसार –हमीरपुर	21	10	362
11	शिवमोहन सिंह	सातर – प्राचीन बाँदा	23	03	418
12	सुरेन्द्र पाल सिंह	सातर – प्राचीन बाँदा	23	09	408
13	प्रताप सिंह यादव	चितगुवां – जालौन	28	17	375
14	शिवमोहन	पतवन – बाँदा	26	09	400
15	राजेश कुमार	अरथरा – बाँदा	21	05	408
16	शैलेन्द्र कुमार	खदानी – जालौन	26	09	368
17	रामफल विश्वकर्मा	गौरीखानपुर – बाँदा	22	04	364
18	गफ्फार खाँ	गौरीखानपुर – बाँदा	27	12	408
19	शैलेन्द्र कुमार	अछाह – बाँदा	23	10	402
20	रमाशंकर यादव	बांधुर बजुर्ग – हमीरपुर	23	17	420
21	रामफल	गौरीखांनपुर – बाँदा	25	16	397
22	लक्ष्मण सिंह	रयान – बाँदा	22	03	412
23	देवेन्द्र प्रताप सिंह	भभुवा – बाँदा	24	15	362
24	दिनेश चन्द्र	जालौन प्राचीन	26	06	418
25	अशोक कुमार शुक्ल	सुदिनपुर चित्रकूट	14	07	352

26	शिवऔतार सिंह	मछलिया चित्रकूट	19	11	338
27	श्री दयाकरण सिंह	अनवान – बबेरु – बाँदा	22	04	416
28	आशुतोष त्रिपाठी	बजरहापुरवा – बडोखर – बाँदा	18	11	300
29	सौरभ आर्य	रौली कल्यानपुर – जालौन	28	10	327
30	तिलकराज सिंह	नौहाई प्रथम – जालौन	27	24	347
31	आलोक श्रीवास्तव	विरधा – ललितपुर	27	03	333
32	रवि गुप्ता	वीहर – चित्रकूट	21	09	295
33	बी0 बी0 सोनी	गोंडा – बाँदा	15	04	312
34	राजेन्द्र कुमार	गौडामाफी – महुवा – बाँदा	19	04	327
35	अयोध्या प्रसाद	पछौहा – बाँदा	22	06	194
36	अनिल कुमार रावत	अवरार – महोबा	25	08	323
37	प्रमोद कुमार	पसवारा – महोबा	23	12	209
38	महेन्द्र कुमार	आनन्द पुरा – महोबा	24	09	314
39	शाहिद हसन	भूरा कुण्ड – महोबा	23	08	338
40	ब्रजेश दीक्षित	बगौल – महोबा	24	13	307
41	जयराम	धारवार – महोबा	21	17	287
42	राजेन्द्र सोनी	बल्खेडा – महुवा –' बाँदा	24	09	394
43	करण सिंह राजपूत	लिधौरा – महोबा	20	06	380
44	सुरेश कुमार	पचुक्कड महोबा	19	10	412
45	उदयभान	बरीपुरा – महोबा	20	14	375
46	घमण्डीलाल	डिघौरा – महोबा	19	10	402
47	रामफल	विवार – मौदहा हमीरपुर	16	06	282
48	मुहम्मद तारिक	राजघाट – ललितपुर	22	08	244
49	देवेन्द्र सिंह	हरपुरा – झाँसी	17	08	301
50	मदन सविता	रानीपुरा – ललितपुर	13	06	321
		योग =	**1118**	**467**	**17935**

सारणी – 7.7
विशिष्ट बी0टी0सी0 शहरी शिक्षक (महिला)

क्र0स0	शिक्षक का नाम	प्रा0 वि0 संस्था का नाम	JST	KITS	MTAI
1	सुमन शुक्ला	प्रा0 वि0 – बाँदा	28	16	25
2	लक्ष्मी वर्मा	प्रा0 वि0 ऐट – जालौन	21	11	372
3	शमीमा कुरैसी	प्रा0 वि0 झाँसी – झाँसी	26	11	398
4	आरती सिंह	प्रा0 वि0 बिवाँर – हमीरपुर	24	15	398
5	सुधा स्वर्णकार	प्रा0 वि0 ऐट – जालौन	24	05	373
6	चन्द्रप्रभा	प्रा0 वि0 बिवाँर नवीन – हमीरपुर	25	08	424
7	सुषमा परिहार	प्रा0 वि0 जालौन – जालौन	27	15	369
8	श्रीमती सुधा वर्मा	प्रा0 वि0 बडा गाँव – झाँसी	27	11	420
9	सीमा गुप्ता	प्रा0 वि0 नई दुनियां – झाँसी	22	15	422
10	गीता बाथम	प्रा0 वि0 ऐट – जालौन	24	16	309
11	मिथलेश कुमारी	प्रा0 वि0 चौबेन थोक बबेरु – बाँदा	20	13	244
12	श्रीमती आशा देवी	प्रा0 वि0 नवीन. कमासिन – बाँदा	24	07	2.07
13	श्रीमती सुधा दीक्षित	प्रा0 वि0 अतर्रा – बाँदा	24	12	331
14	माधुरी देवी	प्रा0 वि0 पनवाडीं – महोबा	23	13	327
15	पुष्पाजंली पुरोहित	प्रा0 वि0 बरुआ सागर – झाँसी	15	06	396
16	नीलम मिश्रा	प्रा0 वि0 बरुवा सागर – झाँसी	19	06	372
17	अर्चना श्रीवास्तव	प्रा0 वि0 बडागाँव–2 – झाँसी	25	04	400
18	ऊषारानी सविता	प्रा0 वि0 बडागाँव–2 – झाँसी	20	05	374
19	सविता गोस्वामी	प्रा0 वि0 बरुवा सागर – झाँसी	15	02	400
20	राजेश्वरी	प्रा0 वि0 नवीन. कुलपहाड – महोबा	17	14	398
21	श्रीमती देवकुमारी	प्रा0 वि0 कन्या. कुलपहाड – महोबा	14	05	223
22	रूचि सक्सेना	प्रा0 वि0 कन्या. मोंठ – झाँसी	21	08	448
23	कुसुम कली	प्रा0 वि0 कन्या. कबरई – महोबा	22	05	281
24	सुशीला राजपूत	प्रा0 वि0 रामघाट – चित्रकूट	19	03	274
25	रजनी सचान	प्रा0 वि0 कन्या. कुलपहाड – महोबा	17	04	285

26	प्रियवन्दा	प्रा0 वि0 कन्या. मोठ – झाँसी	16	07	282
27	कुमकुम पाण्डेय	प्रा0 वि0 सीपरी – झाँसी	23	04	256
28	रागिनी सचान	प्रा0 वि0 अनौसा. बबेरु – बाँदा	20	07	287
29	अभया रावत	प्रा0 वि0 कन्या. कबरई – महोबा	19	05	272
30	इन्द्रा वर्मा	प्रा0 वि0 प्राचीन. मौदहा – हमीरपुर	22	08	224
31	शोभा मिश्रा	प्रा0 वि0 प्राचीन. मौदहा – हमीरपुर	19	05	272
32	नूपुर श्रीवास्तव	प्रा0 वि0 नवीन. मौदहा – हमीरपुर	18	07	278
33	नीता मिश्रा	प्रा0 वि0 नवीन. मौदहा – हमीरपुर	18	02	298
34	ऊषा देवी अहिरवार	प्रा0 वि0 बन्धवान वार्ड – महोबा	20	07	285
35	मन्जू श्री	प्रा0 वि0 बन्धवान वार्ड – महोबा	25	08	254
36	रंजना देवी	प्रा0 वि0 कन्या. मोंठ – झाँसी	21	08	272
37	राधा शिवहरे	प्रा0 वि0 रामघाट – चित्रकूट	15	09	248
38	सुगन्धा देवी	प्रा0 वि0 सीपरी – झाँसी	21	07	275
39	श्रीमती गुनमाला जैन	प्रा0 वि0 नवीन. तालबेहट – ललितपुर	17	07	269
40	श्रीमती प्रेमा देवी	प्रा0 वि0 नवीन. तालबेहट – ललितपुर	17	10	275
41	शिखा मोदी	प्रा0 वि0 प्राचीन. तालबेहट – ललितपुर	10	08	270
42	शालिनी जैन	प्रा0 वि0 प्रचीन. तालबेहट – ललितपुर	13	10	272
43	श्रीमती मिथला देवी	प्रा0 वि0 कन्या. कबरई – महोबा	16	07	265
44	श्रीमती मोहनी साहू	प्रा0 वि0 नवीन. कुलपहॉड – महोबा	17	14	260
		योग =	**890**	**370**	**13870**

सारणी – 7.8

विशिष्ट बी0टी0सी0 ग्रामीण शिक्षक (महिला)

क्र0स0	शिक्षक का नाम	प्रा0 वि0 संस्था का नाम	JST	KITS	MTAI
1	सीमा बाजपेई	प्रा0 वि0 मुरवां – बाँदा	28	16	296
2	सुलेखा	प्रा0 वि0 लोदीपुर. निवादा – बाँदा	24	19	410
3	सरोज मोदी	प्रा0 वि0 ब्रम्हरौली. मोंठ – झाँसी	26	13	364
4	प्रीती वर्मा	प्रा0 वि0 मुरवां – बाँदा	28	15	328
5	शीला गुप्ता	प्रा0 वि0 डकोर – जालौन	25	08	369
6	श्रीमती अन्जू	प्रा0 वि0 अहार. बबेरु – बाँदा	22	07	410
7	मीरा देवी	प्रा0 वि0 फूलपुरा – जालौन	25	05	422
8	शीला द्विवेदी	प्रा0 वि0 नवीन डकोर – जालौन	26	10	402
9	गिरिजा दमेले	प्रा0 वि0 कुइयां – जालौन	21	20	400
10	श्रीमती पुष्पा देवी	प्रा0 वि0 ब्रम्हरौली मोठ – झाँसी	22	07	349
11	श्रीमती ऊषा गुप्ता	प्रा0 वि0 डकोर – जालौन	22	08	404
12	क्रान्ति साहू	प्रा0 वि0 अलिहा – बाँदा	24	05	420
13	विमला	प्रा0 वि0 फूलपुरा – जालौन	21	12	404
14	मालती चौरसिया	प्रा0 वि0 बिसण्डी खुर्द – बाँदा	27	11	417
15	साधना गुप्ता	प्रा0 वि0 कुइया – जालौन	22	12	399
16	माया देवी	प्रा0 वि0 बिसंडी खुर्द – बाँदा	22	07	418
17	श्रीमती तेजकुँवर	प्रा0 वि0 महर्रा – ललितपुर	27	17	357
18	विमला निरजंन	प्रा0 वि0 फूलपुरा – जालौन	22	09	426
19	स्नेहलता	प्रा0 वि0 कुइयां – जालौन	21	16	426
20	मन्जू रानी	प्रा0 वि0 अलिहा – बाँदा	22	03	410
21	कु0 शकुन्तला गौर	प्रा0 वि0 बमौर – झाँसी	27	11	408
22	श्रीमती बबिता राठौर	प्रा0 वि0 पौथिया – हमीरपुर	21	08	270
23	मधु श्रीवास्तव	प्रा0 वि0 गुरेह – बाँदा	22	04	428
24	श्रीमती रचना यादव	प्रा0 वि0 रिहुटिया – बाँदा	17	11	313
25	श्रीमती तहमीना बेगम	प्रा0 वि0 बंगरिया – ललितपुर	27	12	323
26	श्रीमती फातिमा खातून	प्रा0 वि0 धौर्रा विरधा – ललितपुर	28	08	332
27	ऊषा चौबे	प्रा0 वि0 मादौन – ललितपुर	27	08	325

28	नीरा मिश्रा	प्रा0 वि0 चितरा गोकुलपुर– ललितपुर	27	10	322
29	श्रीमती मिथलेश तिवारी	प्रा0 वि0 धौरा विरधा – ललितपुर	27	13	319
30	मन्जू शुक्ला	प्रा0 वि0 रिवई कबरई – महोबा	27	07	340
31	श्रीमती ललतेश	प्रा0 वि0 शालारपुर – महोबा	21	16	287
32	अलका साहू	प्रा0 वि0 गौ, हाटी – झाँसी	23	08	313
33	सरोज गुबरैले	प्रा0 वि0 रुन्द करारी – झाँसी	20	09	388
34	कमला देवी	प्रा0 वि0 पसवारी – महोबा	14	06	400
35	पदमा देवी पाठक	प्रा0 वि0 खैराक पटरी – महोबा	17	06	398
36	संध्या सक्सेना	प्रा0 वि0 पोहरा – झाँसी	23	05	392
37	वन्दना त्रिपाठी	प्रा0 वि0 कोट – झाँसी	20	03	376
38	उमा सचान	प्रा0 वि0 बरीपुरा – महोबा	15	08	424
39	पदमिनी कंचन	प्रा0 वि0 कन्या सूपा – महोबा	22	03	376
40	माला श्रीवास्तव	प्रा0 वि0 रुन्द करारी – झाँसी	14	18	398
41	सुधा रैकवार	प्रा0 वि0 शीतलपुर –तरौहा चित्रकूट	26	12	312
42	श्रीमती गीता देवी	प्रा0 वि0 अहिरनपुरवा – चित्रकूट	18	10	216
43	श्रीमती कमला देवी	प्रा0 वि0 कसहाई – चित्रकूट	24	05	250
44	श्रीमती कविता वर्मा	प्रा0 वि0 शीतलपुर तरौहा –चित्रकूट	27	06	281
45	पुष्पा गुप्ता	प्रा0 वि0 भैरव गंज – महोबा	15	08	231
46	श्रीमती श्यामा देवी	प्रा0 वि0 भैरव गंज – महोबा	23	05	266
47	रेनू तिवारी	प्रा0 वि0 टेढा मौदहा – हमीरपुर	27	03	267
48	श्रीमती दुर्गा साहू	प्रा0 वि0 टेढा मौदहा – हमीरपुर	26	06	250
49	सुरभि गुप्ता	प्रा0 वि0 मकरांव – हमीरपुर	18	07	249
50	अनामिका देवी	प्रा0 वि0 मकरांव – हमीरपुर	17	03	261
51	सवित्री जैन	प्रा0 वि0 खन्ना मौदहा – हमीरपुर	20	09	277
52	कु0 राखी यादव	प्रा0 वि0 खन्ना मौदहा – हमीरपुर	25	06	255
53	ममता देवी	प्रा0 वि0 बडौरा – ललितपुर	17	23	296
54	श्रीमती मोनिका खरे	प्रा0 वि0 बडौरा – ललितपुर	14	11	254
55	रश्मि दीक्षित	प्रा0 वि0 महर्रा – ललितपुर	17	20	286
56	श्रीमती मीनू तिवारी	प्रा0 वि0 महर्रा – ललितपुर	16	10	318
		योग =	**1246**	**539**	**19232**

सारणी क्रमांक – 7.9

विभिन्न वर्गों के प्राप्तांकों का सांख्यकीय विश्लेषण

परिकल्पना क्रमांक	समान्तर माध्य M_1	समान्तर माध्य M_2	माध्य अन्तर Md	मानक विचलन $S.D_1$	मानक विचलन $S.D_2$	N_1	N_2	क्रान्तिक अनुपात **C.R**
JST 1	22.82	21.80	1.02	3.11	4.11	100	100	1.96
अ	22.93	22.34	0.59	3.61	4.11	42	50	0.73
ब	22.74	21.26	1.48	2.74	3.70	58	50	2.35
MTAI 2	375.89	337.30	38.59	51.40	59.90	100	100	5.33
अ	370.50	337.30	33.20	53.31	58.82	42	50	2.84
ब	379.80	337.30	42.25	49.60	60.96	58	50	3.94
KITS 3	11.26	10.24	1.02	4.16	5.03	100	100	0.31
अ	11.00	11.32	0.32	4.16	5.20	42	50	0.32
ब	11.45	9.16	2.29	3.75	4.61	58	50	2.79
JST 4	21.47	21.29	0.16	3.68	4.25	100	100	0.32
अ	20.54	20.21	0.33	3.63	4.87	50	44	0.37
ब	22.40	22.14	0.26	3.50	4.19	50	56	0.35
MTAI 5	331.10	330.11	0.99	62.38	64.66	100	100	0.11
अ	305.30	314.60	9.30	56.78	66.06	50	44	0.73
ब	356.90	342.30	14.60	56.80	62.36	50	56	1.26
KITS 6	9.46	8.95	0.51	4.60	4.54	100	100	0.78
अ	9.22	8.16	1.06	4.70	4.16	50	44	1.16
ब	9.70	9.57	0.13	4.38	7.44	50	56	0.11

सारणी क्रमांक – 7.10

विभिन्न वर्गों के शिक्षकों के 'कृत्य–संतोष' प्राप्तांकों का सांख्यकीय विश्लेषण

परिकल्पना क्रमांक	समान्तर माध्य M_1	समान्तर माध्य M_2	माध्य अन्तर Md	मानक विचलन $S.D_1$	मानक विचलन $S.D_2$	N_1	N_2	क्रान्तिक अनुपात **C.R**
7 JST	22.31	21.38	0.93	3.68	3.98	200	200	2.45
अ	22.82	21.47	1.35	3.11	3.68	100	100	2.81
i	22.93	20.54	2.39	3.61	3.63	42	50	3.19
ii	22.74	22.40	0.34	2.74	3.50	58	50	0.56
ब	21.80	21.29	0.51	4.11	4.25	100	100	0.86
i	22.34	20.21	2.13	4.11	4.87	50	44	2.27
ii	21.26	22.14	0.88	3.70	4.19	50	56	1.14
स	22.82	21.29	1.53	3.11	4.25	100	100	2.89
i	22.93	20.21	2.72	3.61	4.87	42	44	2.96
ii	22.74	22.14	0.60	2.74	4.19	58	56	0.90
द	21.80	21.47	0.33	4.11	3.68	100	100	0.60
i	22.34	20.54	1.80	4.11	3.63	50	50	2.31
ii	21.26	22.40	1.14	3.70	3.50	50	50	1.58

सारणी क्रमांक – 5.15

विभिन्न वर्गों के शिक्षकों के 'समायोजन' प्राप्तांकों का सांख्यकीय विश्लेषण

परिकल्पना क्रमांक	समान्तर माध्य M_1	समान्तर माध्य M_2	माध्य अन्तर Md	मानक विचलन $S.D_1$	मानक विचलन $S.D_2$	N_1	N_2	क्रान्तिक अनुपात **C.R**
8 MATI	356.10	330.60	25.50	58.46	63.94	200	200	4.16
अ	375.89	331.10	44.79	51.40	62.38	100	100	5.54
i	370.50	305.30	65.20	53.31	56.78	42	50	5.67
ii	379.80	356.90	22.90	49.60	56.80	58	50	2.21
ब	337.30	330.11	7.19	59.90	64.66	100	100	0.82
i	337.30	314.60	22.70	58.82	66.06	50	44	1.74
ii	337.30	342.30	5.00	60.96	62.36	50	56	0.42
स	375.89	330.11	45.78	51.40	64.66	100	100	5.54
i	370.50	314.60	55.90	53.31	66.06	42	44	4.32
ii	379.80	342.30	37.50	49.60	62.36	58	56	3.54
द	337.30	331.10	6.20	59.90	62.38	100	100	0.72
i	337.30	305.30	32.00	58.82	56.78	50	50	2.77
ii	337.30	356.90	19.60	60.96	56.80	50	50	1.66

सारणी क्रमांक – 5.16

विभिन्न वर्गों के शिक्षकों के 'शिक्षण में रूचि' प्राप्तांकों का सांख्यकीय विश्लेषण

परिकल्पना क्रमांक	समान्तर माध्य M_1	समान्तर माध्य M_2	माध्य अन्तर Md	मानक विचलन $S.D_1$	मानक विचलन $S.D_2$	N_1	N_2	क्रान्तिक अनुपात **C.R**
9 KITS	10.75	9.20	1.55	4.64	4.57	200	200	3.36
अ	11.26	9.46	1.80	4.16	4.60	100	100	2.90
i	11.00	9.22	1.78	4.16	4.70	42	50	1.93
ii	11.45	9.70	1.75	3.75	4.38	58	50	2.22
ब	10.24	8.95	1.29	5.03	4.54	100	100	1.90
i	11.32	8.16	3.16	5.20	4.16	50	44	3.26
ii	9.16	9.57	0.41	4.61	7.44	50	56	0.35
स	11.26	8.95	2.31	4.16	4.54	100	100	3.73
i	11.00	8.16	2.84	4.16	4.16	42	44	3.16
ii	11.45	9.57	1.88	3.75	7.44	58	56	1.69
द	10.24	9.46	0.78	5.03	4.60	100	100	1.15
i	11.32	9.22	2.10	5.20	4.70	50	50	2.12
ii	9.16	9.22	0.54	4.61	4.70	50	50	0.60

ग्राफ निरूपण में कुछ शब्द संक्षेप का प्रयोग किया गया है जो कि निम्नवत् हैं –

BTC	:	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक (पुरुष एवं महिला)
BTC.M	:	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक (पुरुष)
BTC.M.A	:	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक (पुरुष) शहरी
BTC.M.R	:	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक (पुरुष) ग्रामीण
BTC.F	:	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक (महिला)
BTC.F.A	:	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक (महिला) शहरी
BTC.F.R	:	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक (महिला) ग्रामीण
S.BTC	:	विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक (पुरुष एवं महिला)
S.BTC.M	:	विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक (पुरुष)
S.BTC.M.A	:	विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक (पुरुष) शहरी
S.BTC.M.R	:	विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक (पुरुष) ग्रामीण
S.BTC.F	:	विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक (महिला)
S.BTC.F.A	:	विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक (महिला) शहरी
S.BTC.F.R	:	विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक (महिला) ग्रामीण